वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं० ६६

जम्बूद्वीप पूजाञ्जलि

प्रकाशक :

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

हस्तिनापुर (मेरठ) उ० प्र०

प्रथम संस्करण कार्तिक पूर्णिमा २३ नवम्बर १६८८ मूल्य
२२०० प्रति वीर नि० सं० २५१५ २५/- रु०

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले
हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड, मराठी आदि भाषाओ के
न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण
आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रन्थों का मूल
एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है।
समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी
लघु पुस्तिकायें भी प्रकाशित
होती रहती है।

ग्रन्थमाला सम्पादक :

ब्र० रवीन्द्र कुमार जैन
बी० ए०, शास्त्री

कु० माधुरी
शास्त्री

मुद्रक : **सुमन प्रिन्टर्स**, कनोहरलाल मार्केट, शारदा रोड, मेरठ-२ फोन : २४३१६

सिद्धान्त वाचस्पति, न्यायप्रभाकर गणिनी आर्यिकारत्न
श्री ज्ञानमती माताजी

जन्म	क्षुल्लिका दीक्षा	आर्यिका दीक्षा
टिकैतनगर (बाराबकी उ प्र)	आ० श्री देशभूषण जी से	आ० श्री वीरसागर जी से
सन् १६३४ वि स १६६१	श्री महावीरजी मे	माधोराजपुरा (राज०) मे
असोज शु १५ (शरद पू०)	वि स २००६ चैत्र कृ १	स २०१३ वैशाख कृ २

आद्य वक्तव्य

—आर्यिका ज्ञानमती

जिनेन्द्र देव ने श्रावको के लिये चार धर्म कहे हैं। यथा—दाणं पूजा सीलमुववासो चेदि चउव्विहो सावयधम्मो[1]।" दान, पूजा, शील और उपवास ये चार श्रावकों के धर्म हैं। आदिपुराण में श्री जिनसेनाचार्य ने पूजा के चार प्रकार बताये है—सदार्चन, चतुर्मुख-सर्वतोभद्र, कल्पद्रुम और आष्टान्हिक। सदार्चन को नित्यमह या नित्यपूजा भी कहते हैं। प्रतिदिन अपने घर से गध, पुष्प, अक्षत, आदि लेकर जिनमदिर मे जाकर विधिवत् भगवान की पूजा करना नित्यमह कहलाता है। महामुकुटबद्ध राजाओ द्वारा जो महायज्ञ-अनुष्ठान किया जाता है उसे चतुर्मुख या सर्वतोभद्र पूजा कहते है। जो चक्रवर्तियों द्वारा किमिच्छिक दान देते हुये महायज्ञ किया जाता है वह कल्पद्रुम पूजा है। चौथा आष्टान्हिक यज्ञ है जो अत्यत प्रसिद्ध है। इसके सिवाय एक ऐन्द्रध्वज महायज्ञ है जिसे इन्द्रगण किया करते है। यह पाँचवी पूजा है[2]।

इस "जम्बूद्वीपपूजांजलि" ग्रथ मे तीनखड है। प्रथम खड मे नित्यपूजायें दी गई है तथा दशलक्षण पर्व आदि दिनो में की जाने वाली पूजायें भी दी गई है।

द्वितीय खंड मे मेरे द्वारा रचित पूजायें दी गई है। इसमें शास्त्र के आधार से पूजामुख विधि, अभिषेक पाठ और पूजा अन्त्य विधि भी दी गई है। इसी खंड मे दीपावली के दिन बहीपूजन के समय की जाने वाली पूजायें भी दी गई हैं। तृतीय खंड में देवदर्शन स्तोत्र, भक्तामर तत्वार्थसूत्र आदि पाठ आरती और भजन के कुछ सकलन है। इस प्रकार यह 'नित्यमह' नाम से प्रथम पूजा विधि की पुस्तक है।

नित्यपूजा की विधि आगम के आधार से—

"पंचामृत अभिषेक पाठ संग्रह" पुस्तक में प्रकाशित श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित "पंचामृत अभिषेक" और उसमें क्षेत्रपाल, दिक्पाल का आह्वानन देखकर मुझे आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा में प्रचलित

---

१. जयधवला प्रथम पुस्तक पृ० १००। २. आदिपुराण पर्व ३८ पृ० २४२।

वर्तमान में प्रसिद्ध-बीसपथ आम्नाय पर बहुत ही श्रद्धा बढ गई । इसमें पंद्रह अभिषेक पाठ सगृहीत है प्रायः सभी आचार्यो द्वारा लिखित होने से प्रामाणिक है । मात्र पंडित प्रवर आशाधर जी द्वारा रचित अभिषेक पाठ ही श्रावक द्वारा रचित है । फिर भी ये आशाधर जी भी बहुत ही प्रामाणिक महापुरुष माने गये है इनके द्वारा बनाये गये "अनगारधर्मामृत" आदि ग्रथ मुनियो को भी मान्य है ।

इन सभी में सर्वप्रथम लिया गया श्री पूज्यपादस्वामी का अभिषेक पाठ मुझे बहुत अच्छा लगा और आबाल गोपाल तक प्रसिद्ध करने की इच्छा रही । मैंने सन् १९७६ मे इन्द्रध्वज विधान को छपाते समय उसमे यह अभिषेक पाठ ज्यो का त्यों सस्कृत का ही दे दिया । यह इद्रध्वज विधान चौथी बार छपा उसमे भी छपाया गया है । श्री पूज्यपाद स्वामी की संस्कृत भी अत्यन्त कठिन है अत. यह अभिषेक पाठ शायद किन्ही विशेष विद्वानो ने भले ही कराया हो किन्तु सामान्य विद्वानो ने इसे नही कराया ।

मेरे मन मे कई वर्षो से यह इच्छा थी कि मैं इसका पद्यानुवाद कर दू तो सबके लिये सरल हो जाय । सन् १९८७ मे मैने इसका पद्यानुवाद किया । इसमे श्लोको का भावानुवाद है और मंत्र ज्यो को त्यो दिये गये है ।

वर्तमान समय की विघ्न बाधाओ को दृष्टि मे रखकर उनके दूर करने हेतु मैंने एक "शांतिधारा" बनायी थी वह भी इसी मे दे दी है ।

पूजामुखविधि व अन्त्यविधि का विधान

श्री पूज्यपादस्वामी ने अभिषेक पाठ में प्रारम्भ में दो श्लोक दिये हैं जिनमें नित्यपूजा के प्रारम्भ में करने योग्य विधि का सकेत दिया है पुनः अन्त में पेंतीस से चालीस श्लोको में से अन्त के चार श्लोको मे अभिषेक के बाद मे करने योग्य पूजा, मत्र-जाप, यक्ष-यक्षी आदि के अर्घ को करने का आदेश दिया है ।

इस प्रकार श्रीपूज्यपादस्वामी के कहे अनुसार सर्वविधि मुझे "प्रतिष्ठातिलक" नाम के ग्रंथ में देखने को मिली ।[1]

इस "प्रतिष्ठातिलक" में "नित्यमह" नाम से जो विषय है उसमें सर्वप्रथम मंत्रस्नान विधि दी गई है । इसे ही अन्यत्र "संध्यावंदनविधि[2]" कहते हैं ।

१ प्रतिष्ठातिलक पृ० १८ । २. यह "सध्यावदन" "मडलपूजन प्रारभ विधि एव हवन विधि ' पुस्तक मे छपी है ।

श्रावको को नित्य ही "जलस्नान" के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर एक कटोरी मे जल लेकर यह 'मत्रस्नान" विधिवत् करना चाहिये। इस "सध्यावंदन" को प० लालाराम जी शास्त्री ने भी छपाया था और "पुरदर विधान" में ब्र० सूरजमल जी ने भी छपाया है। श्रावकों के लिये शास्त्र मे तीन स्नान माने हैं। जलस्नान, मंत्रस्नान और व्रत स्नान। "अभिषेक-पाठ संग्रह" ग्रथ मे भूमिका मे "पूजाविधिः में तीनो स्नान के मंत्र अलग-अलग दिये है। उसमें व्रतस्नान का मत्र निम्न प्रकार है—

"ॐ ह्री हूँ श्री नम: अणुव्रतपचक गुणव्रतत्रय शिक्षाव्रतचतुष्टयं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधून् साक्षीकृत्य सम्यक्त्वपूर्वक सुव्रत दृढव्रत समारूढ भवतु मह्य स्वाहा।"

इस प्रकार तीनों स्नान से शुरू होकर जिनमदिर मे पहुँचकर अभिषेक पूजा करने के लिये पूजामुखविधि करे। इसी ग्रन्थ के आधार से पूजामुखविधि[1] मैंने सक्षेप मे दी है। इसमे सकलीकरण भी शामिल है। उसे यहाँ विस्तार के भय से नही दिया है।

यहाँ "पचामृत अभिषेक पाठ" श्री पूज्यपादस्वामो का दिया है। इसके बाद नवदेवता पूजन देकर "पूजाअन्त्यविधि[2]" दी है। यह भी "प्रतिष्ठातिलक" के आधार से सक्षिप्त करके दी है।

पूजामुखविधि मे जो क्रिया है। वह सब श्रीपूज्यपादस्वामी के अभिषेक पाठ के प्रारम्भिक श्लोको के अनुसार ही है सो देखिये—

"आनम्यार्हंतमादावहमपि विहितस्नानशुद्धिः पवित्रै.।
तोयैः सन्मत्रयत्रैर्जिनपतिसवणाम्भोभिरण्यात्तशुद्धिः ।।
आचम्यार्घ्यं च कृत्वा शुचिधवलदुकूलान्तरीयोत्तरीयः।
श्रीचैत्यावासमानौम्यवनतिविधिना त्रिःपरीत्य क्रमेण ।।१।।
द्वारं चोद्घाट्य वक्त्राम्बरमपि विधिनेर्यापथाख्यां च शुद्धि।
कृत्वाह सिद्धभक्तिं बुधनुतसकलीसत्क्रियां चादरेण ।।
श्री जैनेन्द्रार्चनार्थं क्षितिमपि यजनद्रव्यपात्रात्मशुद्धि।
कृत्वा भक्त्या त्रिशुद्ध्या महमहमधुना प्रारभेय जिनस्य ।।२।।

"पूजा अभिषेक के प्रारम्भ मे स्नान करके शुद्ध हुआ मैं अर्हन्त देव को नमस्कार करके पवित्र जलस्नान से, मत्रस्नान से और व्रत स्नान से शुद्ध होकर आचमन कर, अर्घ्य देकर, धुले हुए सफेद धोती और दुपट्टा को

१ प्रतिष्ठातिलक पृ० २६।   २. प्रतिष्ठातिलक पृ० ७७।

धारण कर, वंदना विधि के अनुसार तीन प्रदक्षिणा देकर जिनालय को नमस्कार करता हूँ।

तथा द्वारोद्घाटन कर और मुख वस्त्र हटाकर विधिपूर्वक ईर्यापथ शुद्धि करके, सिद्धभक्ति करके, सकलीकरण करके, जिनेन्द्रदेव की पूजा के लिए भूमिशुद्धि, पूजा द्रव्य की शुद्धि, पूजा पात्रो की शुद्धि और आत्म शुद्धि करके भक्तिपूर्वक मन, वचन, काय की शुद्धि से अब जिनेन्द्रदेव का महामह अर्थात् अभिषेक-पूजा प्रारम्भ करता हूँ।"

इस कथित विधि के अनुसार आचार्य श्री नेमिचन्द्र कृत प्रतिष्ठा-तिलक में क्रम से सर्वविधि का वर्णन है। प्रारम्भ मे जलस्नान के अनंतर "मंत्रस्नान" विधि का वर्णन है। अनंतर "पूजा मुखविधि" शीर्षक में मंदिर में प्रवेश करने से लेकर सिद्धभक्ति तक का वर्णन है। अर्थात् मंदिर में प्रवेश करना, प्रदक्षिणा देना, जिनालय की तथा जिनेन्द्रदेव की स्तुति करना, ईर्या शुद्धि करके सकलीकरण करना, द्वाररोद्घाटन, मुखवस्त्र उत्सारण (वेदी के सामने का वस्त्र हटाना) पुनः सामायिक विधि स्वीकार कर विधिवत् कृत्य विज्ञापना करके सामायिक दडक, कायोत्सर्ग और थोस्सामि करके लघु सिद्धभक्ति करना यहाँ तक पूजा मुखविधि होती है।

पुनः विधिवत् अभिषेक करने का विधान है। अनंतर नित्य पूजा के बाद अत में जो विधि करनी चाहिये उसके लिये "अभिषेक पाठ" मे ही अत मे चार श्लोक दिये गये है उन्हें देखिये—

निष्ठाप्यैवं जिनानां सवनविधिरपि प्राच्यभूभागमन्य।
पूर्वोक्तैर्मंत्रयत्रैरिव भुवि विधिनाराधनापीठयत्रम्॥
कृत्वा सच्चदनाद्यैर्वसुदलकमलं कर्णिकाया जिनेन्द्रान्।
प्राच्यां सस्थाप्य सिद्धानितरदिशि गुरून् मन्त्ररूपान् निधाय॥३७॥

जैनं धर्मागमार्चानिलयमपि विदिक्पत्रमध्ये लिखित्वा।
बाह्ये कृत्वाथ चूर्णं प्रविशदसदकैः पचकं मंडलानाम्॥
तत्र स्थाप्यास्तिथीशा ग्रहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याह्रियन्ते॥३८॥

एव पचोपचारैरिह जिनयजनं पूर्ववन्मूलमंत्रे-
णापाद्यानेकपुष्पैरमलमणिगणैरगुलीभिः समंत्रैः॥
आराध्यार्हतमष्टोत्तरशतममलं चैत्यभक्त्यादिभिश्च।
स्तुत्वा श्रीशांतिमंत्रं गणधरवलय पचकृत्वः पठित्वा॥३९॥

पुण्याहं घोषयित्वांतदनु जिनपतेः पादपद्मार्चितां श्री-
शेषां संधार्य मूर्ध्ना जिनपतिनिलयं त्रिःपरीत्य त्रिशुद्ध्या।
आनम्येशं विसृज्यामरगणमपि यः पूजयेत् पूज्यपादं
प्राप्नोत्येवाशु सौख्यं भुवि दिवि विबुधो देवनंदीडितश्रीः ॥४०॥

अर्थ—इस प्रकार जिनेंद्रदेव की पूजा विधि को पूर्ण करके पूर्वोक्त मंत्र-यंत्रो से विधि पूर्वक आराधनापीठ यत्र की पूजा करे। पुनः चंदन आदि के द्वारा आठ दल का कमल बनाकर कर्णिका में श्री जिनेंद्रदेव को स्थापित कर पूर्वदिशा में सिद्धों को, शेष तीन दिशा में आचार्य, उपाध्याय और साधु को विराजमान करके पुनः विदिशा के दलों में क्रम से जैनधर्म, जिनागम, जिनप्रतिमा और जिनमदिर को लिखकर बाहर में चूर्ण से और धुले हुये उज्ज्वल चावल आदि से पचवर्णी मडल बना लेवे। इस कमल के बाहर पचदश तिथिदेवता को, नवग्रहो को, बत्तीस इद्रो को, चौबीस यक्षों को, चौबीस यक्षिणी को, तथा द्वारपालो को और लोकपालों को विधिवत् मत्रपूर्वक मैं आह्वानन विधि से बुलाता हूँ।

इस तरह पचोपचारों से मन्त्रपूर्वक जिन भगवान् का पूजन कर पूर्ववत् मूल मन्त्रों द्वारा अनेक प्रकार के पुष्पो से, निर्मल मणियो की माला से या अगुली से एक सौ आठ जाप्य करके अरहंतदेव की आराधना करे। पुनः चैत्यभक्ति आदि शब्द से पंचगुरु भक्ति और शाति भक्ति के द्वारा स्तवन करके शांतिमत्र और गणधरवलय मत्रो को पाँच बार पढकर पुण्याहवाचन की घोषणा करना, इसके बाद जिनेन्द्रदेव के चरणकमलो से पूजित श्रीशेषा-आसिका को मस्तक पर चढाकर जिनमंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर, मन, वचन, काय की शुद्धि पूर्वक जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके और अमरगण अर्थात् पूजा के लिए बुलाए गए देवो का विसर्जन करके जो व्यक्ति "पूज्यपाद" जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करता है वह "देवनन्दी" से पूजित श्री विद्वान् मर्त्यलोक और देवलोक मे शीघ्र ही सुख को प्राप्त करता है।(३७ से ४०)

पूजा मुखविधि-पूजाअन्त्यविधि—इस पूजांजलि में पूजामुखविधि व पूजाअन्त्य विधि जो दी गई है वह 'प्रतिष्ठातिलक' ग्रथ के आधार से सक्षिप्त में दी गई है। जैसा कि यहाँ श्री पूज्यपादस्वामी ने कहा है। अतः यह पूजामुख विधि करके विधिवत् पंचामृत अभिषेक करें। अनतर पूजन करके पूजा अन्त्यविधि करके पूजन पूर्ण करे तभी आगमोक्त विधि से पूजा होगी।

देवपूजा सहित सामायिक –

पूजामुख विधि करके विधिवत् पचामृत अभिषेक करे अनंतर

नवदेवता पूजा आदि पूजाये करके पूजा अन्त्य विधि करे। यही श्रावक-श्राविकाओं की प्रातः कालीन सामायिक है। भावसंग्रह (संस्कृत) ग्रंथ में यही विधि बतलाई गई है वह श्रावकों के सामायिक के प्रकरण में ली गई है और वहाँ एक पंक्ति आई है कि—

"देवपूजां बिना सर्वा दूरा सामायिकी क्रिया।"

देवपूजा के बिना श्रावकों की सामायिक क्रिया दूर ही है—पूर्ण नहीं होती है। अतः इस विधि के अनुसार पूजा करके सामायिक कर सकते हैं।

दीपावली पूजाविधि—

इसी द्वितीय खंड में दीपावली पूजा की विधि है। आजकल बहुत से श्रावक भी लक्ष्मी और गणेश की मूर्ति रखकर दीपावली की रात्रि में वही पूजा करते हैं। इस मिथ्यात्व को दूर करने के लिये मैंने सच्चे गणेश-गणधरदेव-श्री गौतम स्वामी की और लक्ष्मी के स्थान में केवल ज्ञान महा-लक्ष्मी की पूजा बनाई है। उन्हे ही करना चाहिये। पूरी विधि यथा स्थान दी गई है।

सामायिक पाठ—

तृतीय खड में एक पद्यानुवाद रूप सामायिक पाठ दिया गया है। जयधवला, मूलाचार, आचारसार, चारित्रसार और अनगार-धर्मामृत इन ग्रथो मे मुनियो की आवश्यक क्रिया मे सामायिक को देववदना नाम से लिया है। उसमें चैत्यभक्ति और पंचमहागुरु भक्ति को विधिवत् करने का विधान किया है। उसी का मैंने पद्यानुवाद कर दिया है। प्रत्येक व्रती श्रावक और श्राविकाये इसे ही सामायिक मे पढ़े। हाँ, यदि प्रात अभिषेक और देवपूजा पूर्वक सामायिक करे वे भी मध्यान्ह और सायकाल मे इसी सामायिक पाठ को पढ़ते हुये विधिवत् सामायिक करे।

इस प्रकार जो श्रावक और श्राविकाये प्रतिदिन भगवान की पूजा, सामायिक आदि क्रियाये करते हुये अपने परिणामो को उज्ज्वल बनायेगे वे एक न एक दिन अवश्य ही अपनी आत्मा को पवित्र करके पूज्य बन जायेगे। यह जिनभक्ति ही सच्चे भक्त को भगवान बनाने के लिये अमोघ शक्ति है इसमे कोई सदेह नही है। सभी भक्तिक गण इस पूजांजलि रूपी भक्ति गगा से अपने मन को पवित्र करते रहे यही मेरी मगल भावना है।

प्रस्तावना

एकापि समर्थेय, जिनभक्तिर्दुर्गति निवारयितुम् ।
पुण्यानि च पूरयितु, दातु मुक्तिश्रियं कृतिनः ।।

जिनेन्द्र भक्ति संसार मे एक अमोघ शक्ति मानी गई है जो कि दुर्गति के निवारण मे समर्थ है, पुण्य का बध कराने वाली है एवं मुक्ति-लक्ष्मी को प्राप्त कराने वाली है ।

साधु और गृहस्थ श्रावक अपनी-अपनी सीमानुसार भक्तिमार्ग मे प्रवृत्त रहते है। निर्विकल्प समाधि मे स्थित होने से पूर्व अवस्था तक सभी के लिए भक्ति मार्ग ग्रहणीय है । प्रत्येक गृहस्थ के लिए दैनिक षट्क्रियाएँ बतलाई गई हैं—देव पूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान । इनमें देव-पूजा श्रावक धर्म का प्रमुख अग है ।

इस "जम्बूद्वीप पूजाञ्जलि" नामक जिनवाणी संग्रह में जनोपयोगी समस्त पूजाएँ है । काफी दिनो से लोगो की माँग थी कि प्राचीन पूजाओ के साथ-साथ पू० ज्ञानमती माता जी द्वारा रचित सरस पूजाओ का सकलन किसी जिनवाणी मे होना चाहिए अत. उसी कमी की पूर्ति के लिए दि० जैन त्रिलोक शोध सस्थान लम्बे अरसे से प्रयत्नशील था ।

इस जिनवाणी में ३ खड है जिसमे प्रथम खड मे वर्तमान की प्रचलित पद्धति अनुसार अभिषेक पाठ एव नित्य नैमित्तिक पूजाएँ है, द्वितीय खड मे पू० ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित नवीन पूजाएँ है तथा तृतीय खड दैनिक स्तोत्रपाठ आरती भजन आदि दिए गए है जिसमे निर्वाण कांड, त्रैलोक्य चैत्य वदना आदि पू० माताजी की काव्यकृतियाँ भी सम्मिलित है । इस पूजाजलि में द्वितीय खड के अत मे एक "जेठ जिनवर पूजा" दी गई है जिसके रचयिता का नाम अज्ञात है किन्तु गुजरात प्रान्त एव अवध प्रान्त मे जेठ जिनवर जयमाला को बड़ी श्रद्धा से पढकर भगवान् आदिनाथ का अभिषेक करने की परम्परा है । अत: उसे इस जिनवाणी मे स्थान दिया गया है । प्रथम खण्ड मे विस्मृति के कारण वहाँ नही छप सकी तो द्वितीय खण्ड के अन्त में दी गई है अत. पाठकगण ध्यानपूर्वक उसे वही पर पढ़कर सदुपयोग करें ।

दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान ऐसे लोकोपयोगी प्रकाशनों के लिए सदैव कटिबद्ध रहता है और समय-समय पर लाखों की संख्या में यहाँ से साहित्य प्रकाशित हुआ है।

इस संस्था का जन्म सन् १९७२ में हुआ। परम पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माता जी की सत्प्रेरणा से निर्मित इस संस्थान का नाम "दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान रखा गया था। तब से लेकर आज तक इस शोध संस्थान ने हस्तिनापुर को अपना केन्द्र बनाकर दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि की है।

लोकप्रिय जम्बूद्वीप रचना का निर्माण, श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन एवं भारत भ्रमण, आचार्य वीरसागर सस्कृत विद्यापीठ, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका, वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला, राष्ट्रीयस्तर के सेमिनार शिविरो का आयोजन आदि त्रिलोक शोध सस्थान की ही देन है।

परमपूज्य ज्ञानमती माताजी स्वयं साहित्य सेवा मे सदैव सलग्न रहती है। आपकी लेखनी से लगभग डेढ़ सौ ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं जिनमे से लगभग १०० ग्रन्थो का प्रकाशन हो चुका है। पू० माता इस शताब्दी की वह महिलारत्न हैं जिन्होने नारी जाति के इतिहास को बदल दिया है। ऐसी पू० माताजी के चरणो में शत-शत वदन करते हुए जम्बूद्वीप पूजाञ्जलि का यह पुष्प भक्ति रसिको के हाथो मे पहुँचाया जा रहा है आशा है इसके द्वारा जनमानस को प्राचीन एव नवीन पूजाओ का रसास्वादन प्राप्त होगा।

इति शुभम्

—कु० माधुरी शास्त्री

विषयानुक्रमणिका

द्वितीय खण्ड

तृतीय खण्ड

卐——卐

आभार

वर्तमान में आचार्य श्री कुन्दकुन्द द्विसहस्रादि समारोह सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा मनाया जा रहा है। उन्ही कुन्दकुन्द स्वामी ने श्रावको के दैनिक कर्त्तव्य की व्याख्या करते हुए रयणसार में "दाणं पूजा मुक्खो" दान और पूजा को मुख्य कर्त्तव्य बताया है। आज भी अनेक श्रावक ऐसे हैं जो चारों प्रकार के दान मे रुचि रखते है और शक्ति अनुसार विभिन्न योजनाओ में दान देकर पुण्योपार्जन करते रहते है।

दान की इसी परम्परा मे हैदराबाद निवासी श्री गुलाबचद जी जैन बज के सुपुत्र श्री मांगीलाल जो, धर्मचद जी, स्वरूपचंद जी, तथा श्री महावीर प्रसाद जी जैन ने इस इस जम्बूद्वीप पूजाजलि ग्रन्थ के निमित्त ५५०१ रु० ग्रन्थमाला को देकर सहयोग प्रदान किया है। इसके लिये सस्थान आपका बहुत आभारी है।

आप अत्यन्त धर्मनिष्ठ, देवशास्त्र, गुरु भक्त एवं उदारमना श्रावक गण हैं। इसी प्रकार संस्थान की योजनाओ मे आपका सहयोग प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

इसी प्रकार सुमन प्रिन्टर्स, मेरठ के मालिक श्री हरीश चन्द जैन भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होने इस ग्रन्थ की सही समय तथा सुन्दर छपाई करके संस्थान को सहयोग दिया है।

मंगल कामना सहित

—रवीन्द्र कुमार जैन
(संपादक)

जंबूद्वीप पूजाञ्जलि

महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥१॥

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥२॥

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराः विंशति—
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥३॥

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।५।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।७।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।८।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

।। इति श्रीमंगलाष्टकम् ।।

卐—卐

पंचामृत अभिषेक पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम्
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ।।१।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तावनाय पुष्पाञ्जलिः ।।१।।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर आभूषण और यज्ञोपवीत धारण करना ।)

श्रीमन्मन्दरसुन्दरे (मस्तके) शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जन्माभिषेकोत्सवे ।।२।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनमनोरञ्जिनि परिधानोत्तरीयं धारिणि ह ह झ झ स सं त त प पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा । ॐ नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अर्ह रत्नत्रयस्वरूप यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्र पवित्र भवतु ह्रीं नमः स्वाहा ।

(तिलक लगाने का श्लोक)

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्यं
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम् ।।३।।

(भूमि प्रक्षालन का श्लोक)

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागा प्रभूतबलदर्पयुता भुवोऽधः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ।।४।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धि करोमि स्वाहा ।।४।।

(पीठ प्रक्षालन का श्लोक)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।
अत्युद्यमद्य तदहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ।।५।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा ।।५।।

(पीठ पर श्रीकार वर्ण लेखन)

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं
श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं ।
श्रीमत्स्वयं क्षपति तस्य विनाशविघ्नं
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा ।।६।।

(अग्निप्रज्वालनक्रिया)

दुरन्तमोहसन्तानकान्तारदहनक्षमम्
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लवितांम्बरम् ।।७।।

ॐ ह्रीं अग्नि प्रज्वालयामि स्वाहा ।।७।।

(दशदिक्पालको आह्वान)

इन्द्राग्निदंडधरनैऋतपाशपाणि—
वायूत्तरेण शशिमौलिफणींद्रचन्द्राः ।
आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिह्नाः ।
स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ।।८।।

(दशदिक्पालके मंत्र)

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इन्द्राय स्वाहा ।।१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा ।।२।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ यमाय स्वाहा ॥३॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋर्त आगच्छ आगच्छ नैऋताय स्वाहा ॥४॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ वरुणाय स्वाहा ॥५॥
ॐ आं क्रौ ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ पवनाय स्वाहा ॥६॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ आगच्छ कुबेराय स्वाहा ॥७॥
ॐ आं क्रौ ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ ऐशानाय स्वाहा ॥८॥
ॐ आं क्रौ ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ आगच्छ धरणेद्राय स्वाहा ॥९॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा ॥१०॥

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दशप्रकार—
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय ।
अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय,
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ॥९॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलि स्वस्तिकं अक्षत यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ॥९॥

(क्षेत्रपाल को अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनपप्रतिमांकभाल ।
दंष्ट्राकराल जिनशासनरक्षपाल ॥
तैलाहिजन्मगुडचन्दनपुष्पधूपै-
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले ॥

विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतोघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः ।
पटहपटुतरौघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः,
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ॥१०॥

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र-वीरभद्र-माणिभद्र-भैरवापराजित-पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा ॥

(दिक्पाल और क्षेत्रपाल को पुष्पाञ्जली)

जन्मोत्सवादिसमयेषु　यदीयकीर्ति,

सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।

तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया

पुष्पांजलिं　मलयजार्द्रमुपाक्षिपेऽहम् ॥११॥

[जहाँ भगवान विराजमान करेंगे] इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥११॥

(कलशस्थापन और कलशो में जलधार देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य-

ताम्रारकूटघटितान्　पयसा सुपूर्णान् ।

संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्

संस्थापयामि　कलशान् जिनवेदिकांते ॥१२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिञ्छ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजल सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरित नवरत्नगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ॥

(अभिषेक के लिये प्रतिमाजी को अर्घ चढ़ाना)

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।

धवलमंगलगानरवाकुले,　जिनगृहे　जिननाथमहं यजे ॥१३॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

(बिम्बस्थापना)

यं पांडुकामलशिलागतमादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बम् ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा ।

(मुद्रिकास्वीकार)

प्रत्युप्तनीलकुलिशोपलपद्मराग-
निर्यत्करप्रकरबद्धसुरेन्द्रचापम् ।
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले ।
रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मुद्रिकाधारण ।।१५।।

(जलाभिषेक १)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि-
संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम्
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैः-
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ।।१६।।

मंत्र—(१) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं झ्वी झ्वीं क्ष्वी क्ष्वी द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

मंत्र—(२) ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे····· देशे·········नाम नगरे एतद्·········जिनचैत्यालये स·········मासोत्तम मासे······ पक्षे तिथौ·········वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा । इति जलस्नपनम् ।

नोट—पिछले पृष्ठ के दोनों मंत्रों में से कोई एक मत्र बोलना चाहिये।

अर्घ—उदक चदन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(शर्करारसाभिषेक २)

मुक्त्यंगनानर्मविकीर्यमाणैः पिष्टार्थकर्पूररजोविलासैः।
माधुर्यधुर्यैर्वरशर्करौघैर्भक्त्या जिनस्य वर संस्नपनं करोमि॥१७॥

मन्त्र—ॐ ह्रीं·······इति शर्करास्नपनम्।

अर्घ—उदकचन्दन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः,
हस्तैः स्तुता सुरवरासुरमर्त्यनाथैः।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा,
सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान्॥१८॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·········इति इक्षुरसस्नपनम्।

अर्घ—उदकचन्दन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः॥१९॥

मन्त्र—ॐ ह्रीं·········इति नालिकेररसस्नपनम्।

अर्घ—उदकचन्दन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकारिभिः।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः॥२०॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·········इति आम्ररसस्नपनम्।

अर्घ—उदकचन्दन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(घृताभिषेक ३)

उत्कृष्टवर्ण-नव-हेम-रसाभिराम—
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम्।

धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां
वन्देऽर्हतां सरभसं स्नपनोपयुक्ताम् ॥२१॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·········इति घृतस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचन्दन ········ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दुग्धाभिषेक ४)

सम्पूर्ण-शारद-शशांकमरीचिजाल–
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः ।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्यमानाः ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥२२॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·········इति दुग्धाभिषेकस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचन्दन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दध्यभिषेक ५)

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि-
पाण्डुत्वकांतिमवधीरयतामतीव ।
दध्नां गता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा,
सम्पद्यतां सपदि वाञ्छितसिद्धये वः ॥२३॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·········इति दधिस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचंदन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(सर्वौषधि ६)

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्ज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला-
कालीयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ॥२४॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·········इति सर्वौषधिस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचंदन·········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(चतुःकोणकुभकलशाभिषेकः ७)

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलावसानम् ।
संसारसागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ॥२५॥

मंत्र—ॐ ह्रीं·······इति चतुःकोणकुम्भकलशस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचंदन······· अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

(चन्दनलेपनम् ८)

संशुद्धशुद्धया परया विशुद्धया कर्पूरसम्मिश्रितचन्दनेन ।
जिनस्य देवासुरपूजितस्य विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ॥२६॥

मंत्र—ॐ ह्रीं······इति चदनलेपन करोमीति स्वाहा ।
अर्घ—उदकचदन··· अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पुष्पवृष्टि ९)

यस्य द्वादशयोजने सदसि सद्गंधादिभिः स्वोपमा-
नप्यर्थान्सुमनोगणान्सुमनसा वर्षति विश्वक् सदा ।
यः सिद्धिं सुमनः सुखं सुमनसां स्वं ध्यायतामावह-
त्तं देवं सुमनोमुखैश्च सुमनोभेदैः समभ्यर्चये ॥२७॥

मत्र—ॐ ह्रीं सुमनः सुखप्रदाय पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा ॥

(मगल आरति १०)

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।
त्रैलोक्यमंगल सुखालयकामदाहमारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ॥२८॥

(इति मगल आरति अवतरणम्)

(पूर्णसुगधितकलशाभिषेक ११)

द्रव्यैरनल्पघनसार चतुःसमाढ्यैरामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः
मिश्रीकृतेनपयसा जिनपुंगवानां त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनंकरोमि ॥२९॥

ॐ ह्रीं··· ···इति पूर्णसुगधितजलस्नपनम् ।
अर्घ – उदकचदन······अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ शांतिमन्त्रः प्रारभ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते। श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय। सर्वज्ञाय। स्वयंभुवे। सिद्धाय। बुद्धाय। परमात्मने। परमसुखाय। त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय। अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय। अनंतदर्शनाय। अनतज्ञानाय। अनन्तवीर्याय। अनन्तसुखाय सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाप्रमुख-चतुरसंघोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय अघातिकर्मविनाशनाय, अपवायं छिद छिद, भिंद भिंद। मृत्यु छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। अतिकाम छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। रतिकाम छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। क्रोध छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। अग्नि छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वशत्रु छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वोपसर्गं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वविघ्न छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वभय छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वराजभय छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वचोरभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वदुष्टभय छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमृगभय छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमात्मचक्रभय छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वपरमत्रं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वशूलरोग छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वक्षयरोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वकुष्ठरोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वक्रूररोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वनरमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व गजमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वाश्वमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वगोमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमहिषमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व धान्यमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्ववृक्षमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वगलमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व पत्रमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वपुष्पमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वफलमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वराष्ट्रमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वदेशमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व विषमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व वेतालशाकिनीभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्ववेदनीय छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमोहनीयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व कर्माष्टकं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द।

ॐ सुदर्शन-महाराज-चक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यशांतिं कुरु कुरु। सर्वजनानन्दनं कुरु कुरु। सर्वभव्यानन्दनं कुरु कुरु। सर्वगोकुलानन्दन कुरु

कुरु। सर्वग्रामनगरखेटकर्वटमटंबपत्तनद्रोणमुखसंवाहानंदनं कुरु कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु। सर्व देशानन्दनं कुरु कुरु। सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु। सर्व दुःखं, हन हन,दह दह, पच पच, कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यंसनवर्जितं।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते॥

शिवमस्तु। कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्यमल्लि-वर्द्धमान पुष्पदन्त शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहशान्त्यर्थं गन्धोदकधारावर्षणम्॥)

(गन्धोदकवन्दनमत्रः)

निर्मलं निर्मलीकारं पवित्रं पापनाशनम्।
जिनगन्धोदकं वन्दे कर्माष्टकनिवारणम्॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षा-मडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हं नमः सर्वशांति कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

इति महाशांतिमंत्र।

卐—卐

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं—अरहंत मंगलं,
सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा॥
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥
एसो पंच-णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥४॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

(पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥१॥

ॐ ह्री श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥२॥

ॐ ह्री श्री अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्रनाम पढकर दश अर्घ देना चाहिये । नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ चढाना चाहिये ।)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे ॥३॥

ॐ ह्री श्रीभगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(स्वस्ति मंगलं)

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम् ।

श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाऽभ्यधायि ।।१।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्जितं-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ।।२।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।।३।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं ।।४।।

अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पाञ्जली क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ।

श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः ।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमङ्गलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नित्याप्रकंपाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये ।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः ॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥४॥

जंघावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः ।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि ।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथा प्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च ।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः ।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१०॥

इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं ।

卐—卐

पूजा प्रारम्भ विधि

हिन्दी पद्यानुवाद
—कुमारी माधुरी

ॐ जय जय जय । नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मन्त्रेभ्यो नमः । (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं—अरहंत मंगलं,
सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंत सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना)

छंद—हे दीनबन्धु ....

अपवित्र या पवित्र हो जिस स्थिति में हो ।
वे पंचनमस्कार जपें पाप दूर हो ॥
अपवित्र या पवित्र अवस्था भी प्राप्त हो ।
परमात्म भजें बाह्य अंतरंग साफ हो ॥१॥

सब विघ्न विनाशक अजेय मंत्र प्रभावी ।
सब मंगलों में है प्रथम मंगल ही स्वभावी ॥
यह पंचनमस्कार सर्वपाप प्रणाशी ।
सब मंगलों में है प्रथम मंगल ये प्रभासी ॥२॥

परमेष्ठि परमब्रह्म का वाचक है पद अर्हम् ।
सिद्धों के बीज रूप पद को है नमस्कारम् ॥
जो अष्ट कर्म मुक्त मुक्तिरमा मन्दिरम् ।
सम्यक्त्व आदि गुण से सिद्धचक्र सुन्दरम् ॥३॥

विघ्नों का नाश होता है जिनेन्द्र नाम से ।
भूतादि का भय भी समाप्त प्रभु गान से ॥
विष भी हुआ निर्विष जिनेन्द्र के प्रताप से ।
जिनदेव के दर्शन समस्त पाप टारते ॥४॥

इति पुष्पांजलिः ।

पंचकल्याणक अर्घ्य—

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य—

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्रनाम पढकर दश अर्घ देना चाहिये । नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ चढ़ाना चाहिये ।)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे ॥३॥
ॐ ह्री श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्ति मंगल

शंभु छन्द—

त्रैलोक्यईश स्याद्वाद परम नायक प्रभु का वंदन करके ।
सुअनंतचतुष्टय से संयुत अर्हंत् परमेष्ठी को नम के ॥
श्रीमूलसंघ आम्नायों में सम्यग्दृष्टी के पुण्य हेतु ।
जैनेन्द्र यज्ञ पूजन विधि मैं कहता हूँ जो संसारसेतु ॥१॥
त्रैलोक्यगुरू इन्द्रियविजयी मुनिपुंगव का मंगल होवे ।
स्वाभाविक महिमोदय सुस्थित जिनवर का भी मंगल होवे ॥
जो सहजप्रकाशसमन्वित केवलदर्शनयुत मंगल होवे ।
अद्भुत वैभवयुत समवशरण संयुत जिनका मंगल होवे ॥२॥
जो निर्मल केवलज्ञान रूप अमृत में सदा तैरते हैं ।
जो स्वपरभाव के परकाशक निज में ही तृप्त सु रहते हैं ॥
जो तीनलोक में व्याप्त एक चैतन्य रूप प्रगटाते हैं ।
त्रैकालवर्ति तत्वज्ञ जिनेश्वर ही मंगल कर पाते हैं ॥३॥
निज भावशुद्धि से परमशुद्धता पाने का अभिलाषी हूँ ।
इसलिये जलादिक द्रव्यों की शुद्धि का मैं अभ्यासी हूँ ॥
ले और अनेकों अवलंबन जिनवर की स्तुति करता हूँ ।
भूतार्थ यज्ञ अरहंत आदि की पूजा अर्चा करता हूँ ॥४॥
हे अर्हन् ! मैं अज्ञानी इन जल आदि द्रव्य को लाया हूँ ।
हे पुरुषपुराण ! द्रव्य का मैं आलम्बन लेकर आया हूँ ॥

हे पुरुषोत्तम ! संपूर्ण पुण्य एकत्रित करके लाया हूँ ।
फिर केवल ज्ञान अग्नि में, सब पूर्णाहुति करने आया हूँ ।।५।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः ।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः ।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनंतः ।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः ।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः ।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।
(प्रत्येक श्लोक की समाप्ति के बाद पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

शंभु छंद

जो नित्य अकंपित अविनाशी केवल ज्ञानी परमात्मा हैं ।
देदीप्यमान मणि किरण मनः पर्ययज्ञानी शुद्धात्मा हैं ।।
निज अवधिज्ञान की दिव्य प्रभा से जग को शांति प्रदाता हैं ।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ।।१।।
जो कोष्ठबुद्धि औ एक बीज ऋद्धी को धारण करते हैं ।
संभिन्नश्रोतृ पादानुसारि से सबको तृप्ति करते हैं ।।

इन चारों बुद्धिऋद्धि संयुत भविजन को सिद्धि प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥२॥

जो दिव्य मतिज्ञानी इंद्रिय विषयों से अधिक जानते हैं।
संस्पर्शन श्रवणास्वादन घ्राण विलोकन ज्ञान धारते हैं ॥
पंचेंद्रिय विषयों के ज्ञानी जो अतिशय बुद्धिप्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥३॥

जो प्रज्ञाश्रमण महामुनिवर प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि से युत।
चौदशपूर्वी ज्ञानी प्रकृष्टवादी अभिन्नपूरब संयुत ॥
अष्टांगमहानिमित्त ज्ञाता भविजन को सिद्धि प्रदाता है।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता है ॥४॥

जो जंघा अग्निशिखा श्रेणी फल जल आदिक ऋद्धी वाले।
फल पुष्प तन्तु बीजादिक पर चलकर भी संयम को पाले ॥
जो चारणऋद्धि समन्वित हो निजऋद्धी से जगत्राता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करे सुखदाता हैं ॥५॥

जो अणिमा महिमा ऋद्धि सहित काया कृश करते रहते हैं।
लघिमा गरिमा में कुशल मुनी निज आत्मा में ही रमते हैं ॥
मनवचकायाबल ऋद्धी के धारक गुरू शान्ति प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥६॥

जो कामरूप वश ईश और प्राकाम्य ऋद्धि के धारी हैं।
अन्तर्धि आप्ति से युक्त ऋषी सारे जग के उपकारी हैं ॥
अप्रतीघात गुण में प्रधान मुनिपुंगव सब सुखदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥७॥

जो दीप्ति महातप तप करके उग्रोग्र तपस्या करते हैं।
वे घोर पराक्रम के बल से मुक्ती कन्या को वरते हैं ॥

आत्मार्थी घोर ब्रह्मचारी सहजात्म स्वरूप प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥८॥
आमौषधि सर्वोषधि ऋद्धी संयुत जो परमेष्ठी होते।
आशीविष दृष्टिविषा को भी निर्विष कर स्वयं शुद्ध होते ॥
विडजल्ल मलौषधि ऋद्धी युत त्रिभुवन जनसौख्य प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥९॥
क्षीरस्रावी घृतस्रावी मधुस्रावी ऋद्धी को भी पाकर।
अमृत का पान करें निज में अमृतस्रावी गुण को लाकर ॥
अक्षीणमहानस संवासं सब ऋद्धि सहित निजज्ञाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका कल्याण करें सुखदाता हैं ॥१०॥
इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं……।

卐—卐

अथ देव-शास्त्र-गुरु पूजा

अडिल्ल छन्द

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धांत जू,
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पन्थ जू,
तीन रतन जग माँहि सो ये भवि ध्याइये,
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ।।

दोहा

पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार ।।१।।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु-समूह ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापन ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

गीता छन्द

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, बन्दनीक सुपद-प्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छबि मोहित सभा ।।
वर नीर क्षीरसमुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूँ ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

दोहा

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।१।।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० ।।१।।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ।।

तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूँ ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

दोहा

चंदन शीतलता करं, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ।।२।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः ससार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्व० ।।२।।

यह भवसमुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई ।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भवित वर नौका सही ।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूं ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।

दोहा

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।३।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपा० स्वाहा ।।३।।

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अंबुजप्रकाशन भान है ।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमांहि प्रधान हैं ।।
लहि कुंद कमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसों बचूं ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।

दोहा

विविध भांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।४।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ।।४।।

अति सबल मद-कंदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है ।
दुस्सह भयानक तासु नाशन को सु गरुड़ समान है ।।

उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ निज पूजा रचूँ ॥

दोहा

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥५॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ॥५॥

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने मोहतिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाश जोति प्रभावली ॥
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन के सुभाजन में खचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

दोहा

स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीप निर्व० ॥६॥

जो कर्म-इंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धता करि, सकल परिमलता हंसै ॥
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलनमाहिं नहीं पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

दोहा

अग्निमांहि परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥७॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वसनाय धूपं निर्व० ॥७॥

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ॥

सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा

जे प्रधान फल फलविषें, पंचकरण-रस लीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥८॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निवपामीति स्वाहा ॥

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूं ॥
इहि भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥
वसुविधि अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥९॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ।।

जयमाला

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुण विस्तार ॥

पद्धरी छन्द

कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि,
जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर,
कहवत के छ्यालिस गुण गंभीर ॥२॥
शुभ समवशरण शोभा अपार,
शत इंद्र नमत कर सीस धार।
देवाधिदेव अरहंत देव,
वंदो मन-वच-तन करि सु सेव ॥३॥

जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप,
निर-अक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभाषा समेत,
लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥४॥

सो स्याद्वादमय सप्तभंग,
गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय,
सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ॥५॥

गुरु आचारज उवझाय साध,
तन नगन रतनत्रय-निधि अगाध।
संसारदेह वैराग्य धार,
निरवांछि तपै शिवपद निहार ॥६॥

गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस,
भवतारन तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय,
गुरु-नाम जपों मन-वचन-काय ॥७॥

सोरठा

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
द्यानत सरधावान, अजर अमरपद भोगवै ॥८॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनके परसाद तैं सुखी रहैं सब जीव।
यातै तन मन वचन तैं सेवो भव्य सदीव ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

卐 – 卐

श्री बीस तीर्थंकर पूजा भाषा

दीप अढ़ाई मेरु पन, अब तीर्थङ्कर बीस।
तिन सबकी पूजा करूं, मनवचतन धरि शीश ।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थकराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थकराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थकराः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। अथाष्टक ।।

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मल धारी,
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी।
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजों तृषा निहार,
सीमंधर जिन आदिदे स्वामी, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ।।१।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्व०।

(इस पूजा में बीस पुज करना हों तो प्रत्येक द्रव्य चढ़ाते समय इस प्रकार मंत्र बोलना चाहिए)

ॐ ह्रीं सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, सजात, स्वयंप्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सूरप्रभ, विशालकीर्ति, वज्रधर, चन्द्रानन, चंद्रबाहु, भुजंगम, ईश्वर, नेमिप्रभ, वीरसेन, महाभद्र, देवयशोऽजितवीर्येति-विंशति विद्यमानतीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व० ।।१।।

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये,
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये।
बावन चंदनसों जजूं, (हो) भ्रमन-तपन निरवार,

सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ॥२॥

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी,
तातैं तारें बड़ी, भक्ति-नौका जग नामी।
तन्दुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार,
सीमंधर० ॥३॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ॥३॥

भविक-सरोज, विकाश, निंद्यतमहर रविसे हो,
जति श्रावक आचार, कथन को, तुम ही बड़े हो।
फूल सुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार,
सीमंधर० ॥४॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो कामबाणविध्वसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो,
क्षुधा महादवज्वाल, तासको मेघ लहे हो।
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूख विडार,
सीमंधर० ॥५॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्व० ॥५॥

उद्यम होन न देत, सर्व जग मांहि भरयो है,
मोह महातम घोर, नाश परकाश करयो है।
पूजों दीप प्रकाशसों (हो) ज्ञान ज्योति करतार,
सीमंधर० ॥६॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० ॥६॥

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा,
ध्यान अगनि कर प्रकट सरब कीनो निरवारा।
धूप अनूपम खेवतें (हो), दुःखजलें निरधार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ॥७॥

ॐ ह्री विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूप निर्व० ॥७॥

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं,
सबको छिनमें जीत जैन के मेरु खरे हैं।
फल अति उत्तमसों जजों (हो) वांछित फलदातार,
सीमंधर० ॥८॥

ॐ ह्री विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फल निर्व० ॥८॥

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीतिधरी है,
गणधर इन्द्रनहूतै, थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतें लेहु निकार,
सीमंधर० ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्व० ॥९॥

जयमाला

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चंद, भविक खेतहित मेघ हो,
भ्रम-तम-भान अमंद, तीर्थङ्कर बीसों नमों।

चौपाई १६ मात्रा

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी।
बाहु बाहु जिन जग जन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥१॥
जात सुजात सुकेवलज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं।
ऋषभानन ऋषिभानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं ॥२॥

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं ॥३॥
भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता ।
ईश्वर सब के ईश्वर छाजें, नेमिप्रभु जस नेमि विराजें ॥४॥
वीर सेन वीरं जग जाने, महाभद्र महाभद्र वखाने ।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजितवीरज बलधारी ॥५॥
धनुष पांचसै काय विराजै, आयु कोड़ि पूरब सब छाजै ।
समवशरण शोभित जिनराजा, भव-जल-तारनतरन जिहाजा ।
सम्यकरत्नत्रय निधिदानी, लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी ।
शतइन्द्रनि कर वंदित सोहैं, सुर नर पशु सबके मन मोहैं ।

दोहा—तुमको पूजै वंदना, करैं धन्य नर सोय ।
द्यानत सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्
वंदे भावन-व्यंतरान्-द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ।
सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलै
र्नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ॥१॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसबंधिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ॥

वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु ।
यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां ॥२॥

अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वनभवनगतानां दिव्य-वैमानिकानां ।
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥

जंबू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षेत्रत्रये ये भवाः,
चन्द्रांभोज-शिखंडिकण्ठ-कनकप्रावृड्घनाभाजिनाः ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्रलक्षणधरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धनाः ।
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबूवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुंडले मानुषांके ।
इष्वाकारेंजनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविंद्रनील-प्रभौ,
द्वौ बंधूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधि-कृत्याकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ॥

(इच्छामि भक्ति बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु वि लोयेसु भवणवासिय वाण-विंतर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति

चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ण्हाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये ।)

卐—卐

अथ सिद्ध पूजा (द्रव्याष्टक)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्म-स्वरावेष्टितं,
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दलं तत्संधि-तत्वान्वितं ।
अंतः पत्र-तटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभ-कण्ठी-रवः ॥१॥

ॐ ह्री श्रीसिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्री श्रीसिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

निरस्त-कर्म-सम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तमनुपद्रवम् ॥१॥

(सिद्धयन्त्र की स्थापना)

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म-गम्यं
हान्यादि भावरहितं भव-वीत-कायम् ।
रेवापगा-वर-सरो-यमुनोद्भवानां
नीरैर्यजे कलशगैर्-वरसिद्ध-चक्रम् ॥१॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व० ॥१॥

आनन्द-कन्द-जनकं घन-कर्म-मुक्तं
सम्यक्त्व-शर्म-गरिमं जननार्तिवीतम् ।
सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चन्दनानां
गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥२॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० ॥२॥

सर्वावगाहन-गुणं सुसमाधि-निष्ठं
सिद्धं स्वरूप-निपुणं कमलं विशालम् ।
सौगन्ध्य-शालि-वनशालि-वराक्षतानां
पुंजैर्यजे-शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ॥३॥

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादिसंज्ञं
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दार-कुन्द-कमलादि-वनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

ऊर्द्ध-स्वभाव-गमनं सुमनो-व्यपेतं
ब्रह्मादि-बीज-सहितं गगनावभासम् ।
क्षीरान्न-साज्य-वटकै रसपूर्णगर्भै—
नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ॥५॥

आतङ्क-शोक-भयरोग-मद प्रशान्तं
निर्द्वन्द्व-भाव-धरणं महिमा-निवेशम् ।
कर्पूर-र्वात-बहुभिः कनकावदातै—
र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व० ॥६॥

पश्यन्समस्त-भुवनं युगपन्नितान्तं
त्रैकाल्य-वस्तु-विषये निविड-प्रदीपम् ।
सद्द्रव्यगन्ध-घनसार-विमिश्रितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥७॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

सिद्धासुरादिपति-यक्ष-नरेन्द्रचक्रै—
र्ध्येयं शिवं सकल-भव्य-जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिङ्ग-पूग-कदली-फलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥८॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः सङ्गं वरं चन्दनं,

पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम् ।

धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,

सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितम् ॥९॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं

सूक्ष्म-स्वभाव-परमं यदनन्तवीर्यम् ।

कर्मौघ-कक्ष-दहनं सुख-शस्यबीजं

वन्दे सदा निरुपमं वर-सिद्धचक्रम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

त्रैलोक्येश्वर-वन्दनीय-चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं

या नाराध्य निरुद्ध-चण्ड-मनसः सन्तोऽपि तीर्थंकरा ।

सत्सम्यक्त्व-विबोध-वीर्य्य-विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणै—

र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥११॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ जयमाला

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस ।

सुधाम विबोध-निधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥१॥

विदूरित-संसृति-भाव निरंग, समामृत-पूरित देव विसंग ।

अबंध कषाय-विहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥२॥

निवारित-दुष्कृतकर्म-विपाश, सदामल-केवल-केलि-निवास ।
भवोदधि-पारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥३॥
अनंत-सुखामृत-सागर-धीर, कलंक-रजो-मल-भूरि-समीर ।
विखण्डित-कामविराम-विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४॥
विकार विवर्जित तर्जितशोक, विबोध-सुनेत्र-विलोकित-लोक ।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥५॥
रजोमल-खेद-विमुक्त विगात्र, निरंतर नित्य सुखामृत-पात्र ।
सुदर्शन राजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥६॥
नरामर-वंदित निर्मल-भाव, अनंत-मुनीश्वर पूज्य विहाव ।
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥७॥
विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकर सारवितंद्र ।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥८॥
जरा-मरणोज्झित-वीत-विहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार ।
अचिन्त्य-चरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥९॥
विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०॥

घत्ता

असम-समयसारं चारु-चैतन्य चिन्हं,
पर-परणति-मुक्तं पद्मनंदीन्द्र-वन्द्यम् ।
निखिल-गुण-निकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद

अविनाशी अविकार परम-रस-धाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्धबुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगत-शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥१॥
ध्यान अग्निकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजन देव स्वरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायक के आकार ममत्व निवारकें।
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायकें ॥२॥
अविचल ज्ञान प्रकाशते, गुण अनंत की खान।
ध्यान धरें सो पाइए, परम सिद्ध भगवान ॥३॥
अविनाशी आनन्द मय, गुण पूरण भगवान।
शक्ति हिये परमात्मा, सकल पदारथ ज्ञान ॥४॥
इत्याशीर्वादः।

卐—卐

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय।
चंद्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।

भरि कनक कटोरी धीर, दीनो धार धरा ।।

चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।

पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि० ।।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी ।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी ।।चौ०२।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दन निर्व० ।।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे ।
मुक्ताफल की उनमान, पुञ्ज धरौं प्यारे ।।चौ०३।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ।।

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम-कलंक हरे ।।चौ०४।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ।।

मनमोहक मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रस पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ।।चौ०५।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरातेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्व० ।।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे ।।
चौबीसों श्रीजिनचंद आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ।।चौ०६।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।।

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों ।।चौ०७।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ।।

शुचिपक्वसरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो ।।चौ०८।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल निर्व० ।।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफद, पावत मोक्ष मही ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरातेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।।

जयमाला

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हितहेत ।
गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ।।१।।

छन्द घत्तानन्द

जय भवतम भंजन जनमनकजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा ।
शिव मग परकाशक, अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा ।।२।।

छन्द पद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगण नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनन्दपूर ॥३॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मद्युति तनरसाल।
जय जय सुपार्श्व भवपास नाश, जय चंद चंदतनदुति प्रकाश ॥४॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुणनिकेत।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥५॥
जय विमल विमलपददेनहार, जय जय अनन्त गुणगण अपार।
जय धम धर्म शिव शर्म देत, जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत ॥६॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अर जिनवसुअरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल ॥७॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥८॥

छन्द घत्तानन्द

चौबीस जिनंदा आनंदकंदा, पापनिकन्दा सुखकारी।
तिन पद जुगचन्दा उदय अमन्दा, वासव-वन्दा हितधारी ॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥१०॥
इत्याशीर्वादः।

अर्घावली

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है ॥
दीप अढ़ाई सरस राज, क्षेत्र दश ताविषै छाजै।
सातशत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै ॥१॥

ॐ ह्रीं पांच भरत, पांच ऐरावत, दस क्षेत्र के विषैं तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनहूतें, थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेयक जानके (हो) जगतें लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ॥

ॐ ह्रीं विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्व० ॥

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधर-युगमधर-बाहु-सुबाहु-सजात-स्वयप्रभ-ऋषभानन अनन्त-वीर्य सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-चंद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयश-अजितवीर्येति विंशतिविद्यमान तीर्थङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी (संस्कृत)

गन्धाढ्यं सुपयो मनुव्रत-गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम्।

धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम् ।।

ॐ ह्री सिद्ध-चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सिद्ध परमेष्ठी (भाषा)

जल फल वसुवृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा ।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम वंदा ।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी ।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी ।।

ॐ ह्री श्रीअनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

पाँच बालयति

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग ताहि नशावत हैं ।
श्री वासूपूज्य मलि नेम पारस वीर अती,
नमूँ मन वच तन धरि प्रेम पाँचों बालयती ।।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पचबालयति तीर्थंकरेभ्य अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपा० ।

समुच्चय चौबीसी

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसौं श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं ।

पंचमेरु जिनालय

आठ दरबमय अरघ बनाय 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालि-पचमेरु-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वरद्वीप जिनालय

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों ।।
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों ।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्द भाव धरों ।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशलक्षणधर्म

आठो दरब संभार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलहकारण

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद-पाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं ।

सप्तर्षि

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥
मन्वादि चारण ऋद्धि-धारक, मुनिनकी पूजा करूं।
ता करें पातक हरे सारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभव जगतसों, जोर कर विनती करौं॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाशकों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंश ततीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्व०।

सरस्वती

जल चंदन अक्षत फूल चरू, अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै॥
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वाणी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई॥
ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिनेन्द्र

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घं सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलिबलि जाऊं मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र

जल गन्ध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही।
कन थाल अर्घ बनाय शिव सुख 'रामचन्द' लहै सही ।।
श्रीचन्द्रप्रभ दुतिचन्द को पद कमल नखससिलगि रह्यो ।
आतंक दाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ।।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व० ।

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्व० ।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाये मंगल गाय ।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय ।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पाप पाय ।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुख दारिद जाय ।।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्व० ।

श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र

जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्ठम छितिके राज करनको, जजों अंग वसु नाय ।।
दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता०
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व० ।

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ ते जजीजिये ।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा ।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री महावीर जिनेन्द्र

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति द्रायक हो ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व० ।

श्रीरत्नत्रय

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूं ।।

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० ।

श्री ऋषि-मण्डल

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवन् वारि तुम पद में दिया ।।
जहां सुभग ऋषिमंडल विराजै पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय, रोग-शोक-सर्व-संकट हराय, सर्वशान्ति-पुष्टि-कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरहंतादि

पंचपद, दर्शन-ज्ञान-चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधि-धारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि, बीस चार सूर, तीन ह्री, अर्हंतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों ।।१।।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गनी ।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी ।।२।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा ।
जजुं भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहीं कदा ।।३।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ ।
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजत भजूँ ।।४।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ।।५।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस-वसु जपि होय पति शिव गेह के ।।६।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय ।
सर्वपूज्य पद पूज हूँ बहुविधि भक्ति बढ़ाय ।।७।।

ॐ ह्रीं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ शांति पाठ स्तुति

(शांति पाठ बोलते समय दोनो हाथो से पुष्प वृष्टि करते रहें)

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शील-गुणव्रत-संयम पात्रं ।
अष्टशतार्चित-लक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रं ।।१।।

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्रनरेन्द्र गणैश्च ।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ।।२।।

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामर युग्मे यस्य विभाति च मंडल तेजः ।।३।।

तं जगदर्चित शांति-जिनेन्द्र शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं मह्यमरं पठते परमां च ।।४।।

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुन्डल-हार-रत्नैः शक्रादिभिःसुरगणैः
स्तुतिपादपद्माः ।

ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपास्तीर्थंकरा सततशांति-
करा भवन्तु ।।५।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ।।६।।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम् ।।

दुर्भिक्षं चौर-मारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीव लोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।।७।।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतां शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ।।८।।

यथेष्ट प्रार्थना

प्रथम करण चरणं द्रव्यं नमः ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोष-वादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावना चात्मतत्त्वे ।
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाण-सम्प्राप्तिः ॥१०॥

अक्खर-पयत्थहीणं मत्ता-हीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेवय मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु ॥११॥

दुक्खखओ कम्म खओ समाहिमरणं च बोहिलाहोय ।
मम होउ जगद्बांधव ! तव जिणवर चरणसरणेण ॥१२॥

विसर्जन पाठ

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वरः ॥१॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः ॥२॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥३॥
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम् ।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितं ॥४॥

सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारकं ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम् ॥५॥

शांतिपाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमल दल लाजैं ॥१॥

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक ॥२॥

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥३॥

शांतिजिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ै तिन्हें पुनि चार संघ को ॥४॥

पूजें जिन्हें मुकुट-हार किरीट लाके,
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहु शांति सदा अनूप ॥५॥

संपूजकों की प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिनशांति को दे ॥६॥

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा ॥
होवे चोरी न जारी, सुसमय बरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी ॥७॥

घाति कर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शांति करें ते जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥८॥

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके दोष ढाकूँ सभी का ।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके आपका रूप ध्याऊँ ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जो लौं न पाऊँ ।।

आर्या छन्द

तव पद मेरे हिय में मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तब लौं लीन रहौ प्रभु जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने ।
अक्षर पद मात्रा से दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से ।
हे जगबन्धु जिनेश्वर पाऊँ तव शरण चरण बलिहारी ।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ।
(तीन बार शांतिधारा देवें तथा नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

बिन जाने या जानके रही टूट जो कोय ।
तुम प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय ।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान ।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान ।।
मंत्र-हीन धन-हीन हूँ क्रिया हीन जिनदेव ।
क्षमा करहुँ राखहु मुझे देहु चरण की सेव ।।
आये जो-जो देवगण पूजें भक्ति प्रणाम ।
सो अब जावहु कृपा कर अपने-अपने थान ।।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

नाभिराय मरुदेविके नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वारथसिद्धतें आप पधारे, मध्यम लोक माँहि जिनराज॥
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिलकरके, अपने कर पूजें प्रभु पांय॥
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय॥
श्रीआदिनाथकेचरणकमलपर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातें मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि० ॥१॥

मलियागिरि चंदन दाह निकंदन, कंचन झारी में भर ल्याय।
श्रीजीके चरणचढ़ावो भविजन, भवआताप तुरतमिटजाय ॥श्री०
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदन निर्व० ॥२॥

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजीके चरणचढ़ावो भविजन, अक्षय पद को तुरतउपाय ॥श्री०
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपा० ॥३॥

कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मँगाय।
श्रीजीके चरणचढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसिजाय ॥श्री०
ॐ ह्वी श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥४॥

नेवज लीना तुरत रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय ।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, जिन गुण गावत मन हरषाय ।।
श्रीआदिनाथके चरण कमल पर, बलिबलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ।।५।।

जगमग जगमग होत दशोंदिस, ज्योति रही मंदिर में छाय ।
श्रीजीके सन्मुख करत आरती मोह तिमिर नासे दुखदाय ।।श्री०
ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।।६।।

अगर कपूर सुगंध मनोहर चंदन कूट सुगंध मिलाय ।
श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहुंगति मिटजाय ।।श्री०
ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ।।७।।

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय ।
महामोक्षफल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजीके पाय ।।श्री०
ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति० ।।८।।

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।।श्री०
ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति० ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ

दोहा

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय ।
दोज असित आषाढ़ की, जजूं तिहारे पाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीआषाढ़-कृष्ण-द्वितीयायां गर्भ-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत वदी नौमी दिना, जन्म्यां श्री भगवान ।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजों धरि ध्यान ।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं० ।

तृणवत् ऋधि सब छांडिके तप धारघो वन जाय ।
नौमी चैत्र असेत की जजूं तिहारे पाय ।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं० ।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान ।।

ॐ ह्री श्रीफाल्गुणकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घं० ।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान् ।
भवि जीवों को बोधिके, पहुँचे शिवपुर थान ।।

ॐ ह्री माघकृष्णचतुर्दश्या मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिमाय अर्घ० ।

अथ जयमाला

आदीश्वर महाराज, मै विनती तुम से करूँ,
चारों गति के मांहि, मैं दुख पायो सो सुनो ।
अष्ट कर्म मैं एकलो यह दुष्ट महादुख देत हो,
कबहूं इतर निगोद मैं मोकूं पटकत करत अचेत हो ।।

म्हारी दीनतनी सुन बीनती ।।१।। प्रभु कबहुंक पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुख पाय हो । निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो ।। म्हारी० ।।२।।

प्रभु नरकतणा दुख अब कहूँ जठे करत परस्पर घात हो ।
कोइयक बांध्यो खंभस्यों पापी दे मुद्गर की मार हो ।।

कोइ इक काटें करोंतसों, पापी अंगतणी दोय फाड़ हो ॥
म्हारी ॥३॥ प्रभु इहविधि दुख भुगत्या घणां, फिर गति पाई
तिरियंच हो । हिरण बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हो ।
पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो ॥म्हारी०॥४॥
प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लादियो भार अपार हो । नहीं
चाल्यो जठे गिर परचो, पापी दे सोटन की मार हो ॥
म्हारी० ॥५॥ प्रभु कोइयक पुण्य संयोग सूं मैं तो पायो स्वर्ग
निवास हो । देवांगना संग रम रह्यौ जठे भोगनि को परकास हो ॥
म्हारी० ॥६॥ प्रभु संग अप्सरा रमि रह्यो कर कर अति अनुराग
हो । कबहुँक नंदन वनविषे, प्रभु कबहुँक वनगृह माहिं हो ॥
म्हारी० ॥७॥ प्रभु यहि विधि काल गमायके, फिर माला गई
मुरझाय हो । देव थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार
हो । सोच करता तन खिर पड़यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय
हो ॥ म्हारी० ॥८॥ प्रभु गर्भतणा दुख अब कहूँ, जठे सकुडाई की
ठौर हो । हलन चलन नहिं करसक्यो जठे सघन कीच घनघोर
हो ॥ म्हारी० ॥९॥ माता खावे चरपरो फिर लागे तन संताप
हो । प्रभु जो जननी तातो भखै, फेर उपजै तन संताप हो ॥
म्हारी० ॥१०॥ औंधे मुख झूलो रह्यो फेर निकसन कौन
उपाय हो । कठिन कठिन कर नीसरो, जैसे निसरै जंत्री में तार
हो ॥ म्हारी० ॥११॥ प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पड़यो फिर
लागी भूख अपार हो । रोय-रोय बिलल्यो घनो, दुख वेदन को
नहिं पार हो ॥ म्हारी० ॥१२॥ प्रभु दुख मेटन समरथ धनी,
यातैं लागूँ तिहारे पांय हो । सेवक अर्ज करै प्रभु, मोकूं भवोदधि
पार उतार हो ॥ म्हारी दीनतनी सुन बीनती ॥१३॥

दोहा—श्रीजी की महिमा अगम है, कोई न पावै पार ।
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करे विस्तार ॥

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनती ऋषभ जिनेशकी, जो पढसी मन ल्याय ।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

श्रीचन्द्रप्रभजिन पूजा

छप्पय—अनौष्ठ्य यमकालकार तथा शब्दालंकार शांतरस ।

चारुचरन आचरन, चरन चितहरन चिहनचर ।
चंद-चंद-तनचरित, चंदथल चहत चतुर नर ॥
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर ।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरधर ॥
चर अचर हितू तारन तरन, सुनत चहकि चिर नंद शुचि ।
जिनचंद चरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चि रुचि ॥१॥

दोहा—धनुष डेड़सौ तुङ्ग तन, महासेन नृपनंद ।
मातु लछमना उर जये, थापों चंद जिनंद ॥२॥

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक

चाल—द्यानतराय कृत नंदीश्वराष्टक की अष्टपदी तथा होली की ताल में,
तथा गरवा आदि अनेक चालों में।

गंगाह्रद निरमल नीर, हाटक भृंग भरा।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जनम जरा ॥
श्री चंदनाथद्युति चंद, चरनन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ॥१॥

श्रीखण्ड कपूर सुचंग, केशर रंग भरी।
घसि प्रासुक जल के संग, भवआताप हरी ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन नि० ॥२॥

तंदुल सित सोमसमान, सो ले अनियारे।
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ॥३॥

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलि आवैं।
तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावैं ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥४॥

नेवज नाना परकार, इंद्रिय बलकारी।
सो ले पद पूजों सार, आकुलता-हारी ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ॥५॥

तमभंजन दीप सँवार, तुम ढिग धारतु हों।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुण धारतु हों ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीप नि० ॥६॥

श्री चंदनाथदुति चंद, चरनन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै॥
दसगंध हुतासन माहिं, हे प्रभु खेवतु हों।
मम करम दुष्ट जरि जाहिं, यातें सेवतु हों॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥७॥

अति उत्तम फल सु मंगाय, तुम गुण गावतु हों।
पूजों तनमन हरषाय, विघन नशावतु हों ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि० ॥८॥

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि० ॥९॥

पंच कल्याणक छन्द तोटक (वर्ण १२)

कलि पंचम चैत सुहात अली।
गरभागम मंगल मोद भरी॥
हरि हर्षित पूजत मातु पिता।
हम ध्यावत पावत शर्मसिता॥१॥

ॐ ह्री चैत्रकृष्णपचम्यां गर्भमगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं०।

कलि पौष एकादशि जन्म लयो।
तब लोकविषै सुखथोक भयो॥
सुरईश जजैं गिरशीश तबै।
हम पूजत हैं नुत शीश अबै॥२॥

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं०।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा।
कलिपौष एकादशि पर्व वरा॥
निज ध्यान विषै लवलीन भये।
धनि सो दिन पूजत विघ्न गये॥३॥

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्या निःक्रमणमहोत्सव मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ नि० स्वाहा।

वर केवल भानु उद्योत कियो।
तिहुँलोकतणों भ्रम मेट दियो॥
कलि फाल्गुण सप्तमि इंद्र जजैं।
हम पूजहिं सर्व कलंक भजैं॥४॥

ॐ ह्री फाल्गुणकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ नि० स्वाहा।

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये।
गुणवंत अनंत अबाध भये॥
हरि आय जजे तित मोद धरे।
हम पूजत ही सब पाप हरे॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधर से नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार॥१॥

पै तुम भगति हिये मम, प्रेरे अति उमगाय।
तातें गाऊँ सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय ॥२॥

छन्द पद्धरी (१६ मात्रा)

जय चंद्र जिनेन्द्र दयानिधान।
भवकाननहानन दव प्रमान ॥
जय गरभ जनम मंगल दिनंद।
भवि-जीव विकाशन शर्म कन्द ॥३॥

दशलक्ष पूर्व की आयु पाय।
मनवांछित सुख भोगे जिनाय ॥
लखि कारण ह्वै जगतें उदास।
चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुख निवास ॥४॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग।
हरि शिविका सजि धरियो अभोग ॥
तापै तुम चढ़ि जिनचंदराय।
ताछिन की शोभा को कहाय ॥५॥

जिन अंग सेत सितचमर ढार।
सित छत्र शीस गल गुलक हार ॥
सित रतन जड़ित भूषण विचित्र।
सित चन्द्र चरण चरचैं पवित्र ॥६॥

सित तनद्युति नाकाधीश आप।
सित शिविका कांधे धरि सुचाप ॥
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व।
सित चितमें चिंतत जात पर्व ॥७॥

सित चंद्र नगरतैं निकसि नाथ।
सित वन में पहुंचे सकल साथ।।
सितशिला शिरोमणि स्वच्छ छाँह।
सित तप तित धारयो तुम जिनाह।।८।।

सित पयको पारण परम सार।
सित चन्द्रदत्त दीनों उदार।।
सित कर में सो पय धार देत।
मानो बांधत भवसिंधु सेत।।९।।

मानो सुपुण्य धारा प्रतच्छ।
तित अचरजपन सुर किय ततच्छ।।
फिर जाय गहन सित तप करंत।
सित केवलज्योति जग्यो अनन्त।।१०।।

लहि समवसरन रचना महान।
जाके देखत सब पाप हान।।
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग।
सब शोक तनों चूरै प्रसंग।।११।।

सुर सुमन वृष्टि नभतें सुहात।
मनु मन्मथ तजि हथियार जात।।
बानी जिनमुखसों खिरत सार।
मनु तत्व प्रकाशन मुकुर धार।।१२।।

जहँ चौंसठ चमर अमर ढुरंत।
मनु सुजस मेघ झरि लगिय तंत।।

सिंहासन है जहँ कमल जुक्त।
मनु शिव सरवरको कमल-शुक्त ॥१३॥

दुंदुभि जित बाजत मधुर सार।
मनु करमजीत को है नगार॥

शिर छत्र फिरें त्रय श्वेत वर्ण।
मनु रतन तीन त्रय ताप हर्ण ॥१४॥

तन प्रभातनों मंडल सुहात।
भवि देखत निज भव सात सात॥

मनु दर्पण द्युति यह जगमगाय।
भविजन भव मुख देखत सु आय ॥१५॥

इत्यादि विभूति अनेक जान।
बाहिज दीसत महिमा महान॥

ताको वरणत नहिं लहत पार।
तौ अंतरंग को कहै सार ॥१६॥

अनअंत गुणनिजुत करि विहार।
धरमोपदेश दे भव्य तार॥

फिर जोग निरोधि अघातिहान।
सम्मेदथकी लिय मुकतिथान ॥१७॥

'वृन्दावन' वंदत शीश नाय।
तुम जानत हो मम उर जु भाय॥

तातें का कहों सु बार बार।
मनवांछित कारज सार सार ॥१८॥

घत्तानन्द छन्द

जय चंदजिनंदा, आनन्दकन्दा।
भवभयभंजन राजे हैं॥
रागादिक द्वंदा, हरि सब फंदा।
मुकति मांहि थिति साजे हैं॥१९॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द चौबोला

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं।
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तिसार सुख ताहि सजैं॥२०॥
जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातें शिवपुरि राज रजैं॥२१॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलि क्षिपेत्।

卐—卐

श्री शीतलनाथ पूजा

स्थापना—गीताछन्द

है नगर भद्दिल भूप द्रढ़रथ, सुष्टुनन्दा ता तिया।
तजि अचुतदिवि[1] अभिराम[2] शीतलनाथ सुत ताके प्रिया॥
इक्ष्वाकु, वंशी अंक[3] श्रीतरू, हेमवरण शरीर है।
धनु नवे उन्नत पूर्व लख इक, आयु सुभग परी रहे॥

१. स्वर्ग, २. सुन्दर, ३. चिह्न।

सोरठा

सो शीतल सुखकन्द, तजि परिग्रह शिवलोक गे।
छूट गयो जगधन्द[1], करियत तो[2] आह्वान अब ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

(इति सन्निधीकरणम्)

अष्टक, गीताछन्द

नत[3] तृषा[4] पीड़ा करत अधिकी, दाव अबके पाइयो।
शुभ कुम्भ कंचन जड़ित गंगा, नीर भरि ले आइयो ॥
तुम नाथ शीतल करो शीतल, मोहि भवकी तापसों।
मैं जजों युगपद[5] जोरि करि[6] मो, काज सरसी आपसों ॥

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम्।

जाको महक सों नीम आदिक, होत चन्दन जानिये।
सो सूक्ष्म घसि के मिला केसर, भरि कटोरा आनिये ॥तुम०॥

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्।

मैं जीव संसारी भयो अरू, मरयो ताको पार ना।
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे, अखयपद के कारना ॥तुम०॥

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

इन मदन मोरी सकति थोरी, रह्यो सब जग छाय के।
ता नाश काग्न सुमन ल्यायो, महाशुद्ध चुनाय के ॥तुम०॥

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम्।

---

१. सुन्दर, 2 इसलिए, ३. हमेशा, ४. प्यास, ५. दोनों चरण, ६. हाथ जोडकर।

क्षुध रोग मेरे पिंड लागो, देत मांगे ना[1] घरी।
ताके नसावन काज स्वामी, ले चरू आगे धरी ॥
तुम नाथ शीतल करो शीतल, मोहि भवकी तापसों।
मैं जजों युगपद जोरि करि मो, काज सरसी आपसों ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।
अज्ञान तिमिर महान अंधा-कार, करि राखो सबै।
निजपर सुभेद पिछान कारण, दीप ल्यायो हूँ अबै ॥तुम०॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपम्।
जे अष्टकर्म महान अतिबल, घेरि मो चेरा कियो।
तिन केरनाश विचारिके ले, धूप प्रभु ढिग क्षेपियो ॥तुम०॥
ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।
शुभ मोक्ष मिलन अभिलाष मेरे, रहत कब को नाथजू।
फलमिष्ट नानाभांति सुथरे, ल्याइयो निजहाथ जू ॥तुम०॥
ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
जल गन्ध अक्षत फूल चरू, दीपक सुधूप कहो महा।
फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हों, दोष सों वर्जित कहा ॥तुम०॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम्।

पंचकल्याणक, गाथाछन्द

चैत वदी दिन आठे, गर्भावतार लेत भये स्वामी।
सुर नर असुर जानी, जजजूँ शीतल प्रभू नामी ॥
ॐ ह्री चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।
माघ वदी द्वादशि को, जन्मे भगवान् सकल सुखकारी।
मति श्रुत अवधि विराजे, पूजों जिनचरण हितकारी ॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

१. क्षुधा मेटने के अर्थ सारे समय लगा रहता है, कोई घड़ी भी नहीं बचती।

द्वादशि माघ वदी में, परिग्रह तजि वन बसे जाई।
पूजत तहां सुरासुर, हम यहां पूजत गुण गाई ।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

चौदशि पौष वदी में, जगगुरू केवल पाय भये ज्ञानी।
सो मूरति मनमानी, मैं पूजों जिनचरण सुखखानी ।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

आश्विन सुदि अष्टमिदिन, मुक्ति पधारे समेद गिरिसेती।
पूजा करत तिहारी, नसत उपाधि जगत की जेती ।।
ॐ ह्रीं आश्विनशुल्काष्टम्या मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

जयमाला त्रिभंगी छन्द

जय शीतल जिनवर, परम धरमधर, छविके[1] मंदिर, शिव भरता[2]।
जय पुत्र सुनन्दा, के गुण-वृन्दा[3], सुख के कन्दा[4], दुख-हरता ।।
जय नासा-दृष्टी, हो परमेष्ठी[5], तुम पद नेष्ठी[6], अलख[7] भये।
जय तपो चरनमा, रहत चरनमा, सुआ चरणमा, कलुष गये ।।

स्त्रग्विणी छन्द

जय सुनन्दा के नन्दा तिहारी कथा।
भाषि को पार पावे कहावे यथा ।।
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना।
इष्ट वीयोग अनिष्टसंयोग ना ।।

---

१ शोभा के स्थान, २. मोक्ष लक्ष्मी के स्वामी, ३. गुण का समूहकारी, ४. मूल, ५. चरण में लीन, ६. परमात्मा, ७. जन्म मरण संसार।

अग्नि के कुण्ड में बल्लभा राम की।
नाम तेरे बची सो सती काम की ॥
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना।
इष्ट वीयोग अनिष्टसंयोग ना ॥
द्रौपदी-चीर बाढ़ो तिहारी सही।
देव जानी सबों में सुलज्जा रही ॥नाथ०॥
कुष्ठ राखो न श्रीपाल को जो महा।
अब्धि से काढ़ लीनो सिताबी तहां ॥नाथ०॥
अंजना काटि फांसी, गिरो जो हतो।
औ सहाई तहां, तो बिना को हतो ॥नाथ०॥
शैल फूटो गिरो, अंजनीपूत[1] के।
चोट जाके लगी, न तिहारे तके ॥नाथ०॥
कूदियो शीघ्र ही, नाम तो गाय के।
कृष्ण कालो नथो, कुंड में जाय के ॥नाथ०॥
पांडवा जे घिरे, थे लखागार[2] में।
राह दीन्हीं तिन्हें, ते महाप्यार में ॥नाथ०॥
सेठ को शूलिका, पै धरो देख के।
कीन्ह सिंहासन, आपनो लेख के ॥नाथ०॥
जो गनाये इन्हें, आदि देके सबै।
पाद परसाद ते, भे सुखारी[3] सबै ॥नाथ०॥
बार मेरी प्रभू, देर कीन्हीं कहा।
कीजिये दृष्टि दाया, कि मोपे अहा ॥नाथ०॥

---

१. हनुमान, २. लाख के महल मे, ३. सुख भोगने वाले,

धन्य तू धन्य तू, धन्य तू मैन[1] हा ।
जो महा पंचमो, ज्ञान नीके लहा ।।
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना ।
इष्ट वीयोग अनिष्टसंयोग ना ।।
कोटि तीरथ हैं, तेरे पदों के तले ।
रोज ध्यावें मुनी, सो बतावें भले ।।नाथ०।।
जानि के यों भली, भाँति ध्याऊँ तुझे ।
भक्ति पाऊँ यही, देव दीजे मुझे ।।नाथ०।।

गाथा

आपद सब दीजे भार झोंकि यह, पढ़त सुनत जयमाल ।
होय पुनीत करण अरू जिह्वा, वरते आनंदजाल ।।
पहुँचे जहँ कबहूँ पहुँच नहीं, नहिं पाई सो पावे हाल ।
नहीं भयो कभी सो होय सबेरे, भाषत मनरंगलाल ।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यम् नि० ।

सोरठा

भो शीतल भगवान, तो पदपक्षी जगत में ।
हैं जेते परवान, पक्ष रहे तिन पर बनी ।।
इत्याशीर्वाद: ।

"ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नम:" अनेन मन्त्रेण जाप्यं देयम् ।

卐—卐

---

१. काम को नष्ट करने वाला ।

श्रीनेमिनाथ पूजा

छंद लक्ष्मी तथा अर्द्धलक्ष्मीधरा

जैतिजै जैतिजै जैतिजै नेमकी, धर्म औतार दातार श्यौचैनकी ।
श्री शिवानंद भौफंद निकन्द ध्यावै, जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी ।।
परमकल्यानके देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करौं ऐनकी ।
थापि हौं वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धताधार भौपारकूं लेनकी ।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

चाल होली, ताल जत

दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ।।टेक।।
निगम नदी कुश प्राशुक लीनौ, कंचनभृंग भराय ।
मनवचतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय ।।
दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ।।१।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन, कुंकुम सङ्ग घसाय ।
विघनतापनाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय ।।दा०२।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।

पुण्यराशि तुमजस सम उज्जल, तंदुल शुद्ध मंगाय ।
अखय सौख्य भोगन के कारन, पुंज धरों गुनगाय ।।दा०३।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

पुण्डरीक तृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगंधितलाय।
दर्पक मनमथभंजनकारन, जजहुं चरन लवलाय॥
मनवतनतें धार देत ही सकल कलंक न शाय।
दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥दा०४॥
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।
घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरत मँगाय।
क्षुधावेदनी नास करनको, जजहुँ चरन उमगाय॥दा०५॥
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।
कनक दीप नवनीत पूरकर, उज्जल जोति जगाय।
तिमिरमोहनाशक तुमकों लखि, जजहुँ चरन हुलसाय॥दा०६॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।
दशविध गंध मँगाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय।
दशों बंध जारन के कारन, खेवों तुमढिग लाय॥दा०७॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं।
सुरस वरन रसना मनभावन, पावन फल सु मंगाय।
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुमपाय॥दा०८॥
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं।
जलफलआदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्ठम छितिके राज करनको, जजों अंग वसु नाय॥दा०९॥
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं।

पंचकल्याणक

पाइता छंद

सित कातिक छट्ठ अमंदा। गरभागम आनन्दकन्दा।
शचि सेय सिवापद आई। हम पूजत मनवचकाई॥१॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

सित सावन छट्ठ अमन्दा। जनमें त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद्र महासुख पायो। हम पूजत विघन नशायो ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

तजि राजमती व्रत लीनों। सित सावन छट्ठ प्रवीनों।
शिवनारि तबै हरषाई। हम पूजें पद शिरनाई ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

सित आश्विन एकम चूरे। चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा। हम पूजें पद अष्टप्रकारा ॥४॥
ॐ ह्रो आश्विन शुक्ल प्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

सितषाढ़ अष्टमी चूरे। चारों अघातिया कूरे।
शिव उर्ज्जयन्ततें पाई। हम पूजै ध्यान लगाई ॥५॥
ॐ ह्री आषाढ़शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

जयमाला

दोहा

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम।
शंख चिह्नपद में निरखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥१॥

पद्धरी छन्द (१६ मात्रा लटबन्त)

जै जै जै नेमि जिनिंद चन्द। पितु समुद देन आनन्दकन्द।
शिवमात कुमुदमनमोददाय। भविवृन्द चकोर सुखी कराय ॥२॥
जयदेव अपूरव मारतंड। तम कौन ब्रह्मसुत सहस खंड।
शिवतियमुखजलजविकाशनेश। नहिंरहोसृष्टिमेंतम अशेष ॥३॥

भविभीत कोक कीनों अशोक । शिवमग दरशायो शर्मथोक ।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर । तुम आगम निपुन पुनीत धीर ।।४।।

तुम केवल जोति विराजमान । जै जै जै जै करुनानिधान ।
तुम समवसरन में तत्वभेद । दरशायो जाते नशत खेद ।।५।।

तित तुमकों हरि आनंदधार । पूजत भगतीजुत बहु प्रकार ।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय । जै बल अनंत गुनवंतराय ।।६।।

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश । जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ।
जय कुमतिमतंगनको मृगेन्द्र । जय मदनध्वांतकों रविजिनेंद्र ।।७।।

जय कृपासिंधु अविरूद्ध बुद्ध । जय रिद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध ।
जय जगजनमनरंजन महान । जय भवसागरमहं सुष्टुयान ।।८।।

तुव भगतिकरे ते धन्य जीव । ते पावें दिव शिवपद सदीव ।
तुमरो गुनदेव विविधप्रकार । गावत नित किन्नरकी जु नार ।।९।।

वर भगतिमांहि लवलीन होय । नाचें ताथेइ थेइ थेइ बहोय ।
तुम करुणासागर सृष्टिपाल । अब मोकोंबेगि करों निहाल ।।१०।।

मैं दुख अनंत वसुकरमजोग । भोगे सदीव नहिं और रोग ।
तुमको जगमें जान्यों दयाल । हो वीतराग गुनरतनमाल ।।११।।

तातें शरना अब गही आय । प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ।
यह विघनकरम मम खंडखंड । मनवांछितकारज मंडमंड ।।१२।।

संसारकष्ट चकचूर चूर । सहजानन्द मम उर पूर पूर ।
निजपर प्रकाशबुधिदेइ देई । तजिके विलंब सुधि लेई लेई ।।१३।।

हम जांचत हैं यह बार बार । भवसागरतें मो तार तार ।
नहिंसह्योजात यहजगत दुःख । तातें विनवों हे सुगुनमुक्ख ।।१४।।

घत्तानन्द

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं ।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं ॥१५॥

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मालिनी (१५ वर्ण)

सुखधनजससिद्धी पुत्रपौत्रादि वृद्धी ।
सकल मनसि सिद्धी होतु है ताहि रिद्धी ॥
जजत हरषधारी नेमि को जो अगारी ।
अनुक्रम अरिजारी सो वरे मोच्छनारी ॥१६॥

इत्याशीर्वादः । पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

卐—卐

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

गीता छन्द

घर स्वर्ग प्राणत को विहाय, सुमात वामा सुत भये ।
विश्वसेन के पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये ॥
नव हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं ।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो करम मेरे सब नसैं ॥१॥

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथाष्टक—छंद नाराच

क्षीरसोम के समान अम्बुसार लाइये।
हेमपात्र धारिकैं सु आपको चढ़ाइये॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०।

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये।
आप चरण चर्च मोहताप को हनीजिये॥पार्श्व०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदन नि०।

फेन चंद के समान अक्षतान् लाइकें।
चर्नके समीप सार पुंजको रचाइकें॥पार्श्व०॥३॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वं०।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइकें।
धार चर्नके समीप कामको नसाइकें॥पार्श्व०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्प निर्वं०।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने।
आप चर्न चर्चतें क्षुधादिरोग को हने॥पार्श्व०॥५॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वं०।

लाय रत्न दीपको सनेहपूर के भरूं।
वातिका कपूर बारि मोह ध्वांतको हरूं॥पार्श्व०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वं०।

धूप गंध लेयकें सुअग्निसंग जारिये।
तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये॥पार्श्व०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वं०।

खारिकादि चिरभटादि रत्न थाल में भरूं ।
हर्ष धारिकें जजूं सुमोक्ष सौख्य को वरूं ।।
पार्श्व नाथ देव सेव आपकी करूं सदा ।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।।८।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घं तैं जजीजिये ।।पार्श्व०।।९।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व० ।

पंचकल्याणक

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।
वैशाख तनी दुतिकारी, हम पूजें विघ्न निवारी ।।१।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ।।२।।

ॐ ह्री पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई ।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजें चरन जजीना ।।३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल ज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना ।।४।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजें मोक्ष कल्याना ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावण-शुक्ल-सप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौन भखी जरते सुन पाये ।
करयो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये ।।
नाम प्रताप टरें संताप सु, भव्यन को शिवशर्म दिखाये ।
हे विश्वसेन के नंद भले, गुण गावत हैं तुमरे हर्षाये ।।१।।

दोहा

केकी-कंठ समान छबि, वपु उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहार पग, वंदों पारसनाथ ।।

पद्धरी छन्द

रची नगरी छह मास अगार । बने चहुँ गोपुर शोभ अपार ।
सु कोट तनी रचना छबि देत । कंगूरन पै लहकें बहुकेत ।।३।।

बनारस की रचना जु अपार । करी बहु भाँति धनेश तैयार ।
तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार । करें सुख वाम सु दे पटनार ।।४।।

तज्यो तुम प्रानत नाम विमान । भये तिनके वर नंदन आन ।
तबै सुर इंद्र नियोगनि आय । गिरिंद करी विधि न्हौन सुजाय ।।५।।

पिता-घर सौंपि गये निज धाम । कुबेर करै वसु जाम सुकाम ।
बढ़े जिन दोज मयंक समान । रमैं बहु बालक निर्जर आन ।।६।।

भए जब अष्टम वर्ष कुमार। धरे अणुव्रत्त महा सुखकार।
पिता जब आन करी भरदास। करो तुम ब्याह वरो ममआस ।।७।।

करी तब नाहिं रहे जग चंद। किये तुम काम कषाय जुमंद।
चढ़े गज राज कुमारन संग। सुदेखत गंगतनी सुतरंग ।।८।।

लख्यो इक रंक करै तप घोर। चहूँविशि अगनि बलै अति जोर।
कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात। करै बहु जीवन की मत घात ।।९।।

भयो तब कोप कहै कित जीव। जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय। नये दिव ब्रह्मरिषीसुर आय ।।१०।।

तबहिं सुर चार प्रकार नियोग। धरी शिविका निज कंध मनोग।
कियो वन माहिं निवास जिनंद। धरे व्रत चारित आनंदकंद ।।११।।

गहे तहँ अष्टम के उपवास। गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महासुखकार। भई पन वृष्टि तहां तिहिं बार ।।१२।।
गये तब कानन माहिं दयाल। धरयो तुम योग सबहिं अघ टाल।
तबै वह धूम सुकेतु अयान। भयो कमठाचर को सुर आन ।।१३।।
करै नभ गौन लखे तुम धीर। जु पूरब बैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर। चली बहु तीक्षण पवन झकोर ।।१४।।
रह्यो दशहूँ दिश में तम छाय। लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुण्डन के बिन मुण्ड दिखाय। पड़ै जल मूसलधार अथाय ।।१५।।
तबै पद्मावति-कंत धनिंद। नये जुग आय जहाँ जिनचंद।
भग्यो तब रंक सुदेखत हाल। लह्यो तब केवलज्ञानविशाल ।।१६।।
दियो उपदेश महा हितकार। सुभव्यन बोध समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध। वरी शिवनारि लही वसुरिद्ध ।।१७।।

जजूं तुम चरन दोउ कर जोर। प्रभूलखिये अबही मम ओर।
कहै 'बखतावर' रत्नबनाय। जिनेश हमें भव पार लगाय ॥१८॥

घत्ता

जय पारस देवं सुरकृत सेवं। वंदत चर्न सुनागपती।
करुणा के धारी पर उपकारी। शिवसुखकारी कर्महती ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल–जो पूजें मन लाय भव्य पारस प्रभु नितही।
ताके दुख सब जांय भीति व्यापै नहिं कितही॥
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे।
अनुक्रमसों शिव लहै, 'रत्न' इमि कहै पुकारे ॥२०॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

श्री महावीर जिनपूजा

मत्त गयंद

श्रीमत वीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सुआई॥
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्तिसमेत हिये हरखाई।
हे करुणा-धन-धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(चाल-द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टकादिक अनेक रागों में बनती है)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करों ।।
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ।।१।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०।

मलयागिर चन्दनसार, केसर संग घसों ।श्रीवीर०।।
प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसों ।।श्रीवीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ।।श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पं नि०।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ।।श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०।

तमखंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ।।श्रीवीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा॥
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०।

रितुफल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरों।
शिव फलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरों॥श्रीवीर०॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों॥श्रीवीर०॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०।

पंचकल्याणक—राग टप्पा

मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमानजिनरायजी, मोहि राखो०॥
गरभ साढ़सित छट्ट लियो तिथि, त्रिसला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करौ नित, मैं पूजूँ भवतरना॥मोहि०॥

ॐ ह्री आषाढ शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कनवरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना॥
मोहि राखो हो०॥

ॐ ह्री चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना॥
मोहि राखो हो०॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकलदशैं बैशाख दिवस अरि, घात चतुकक्षय करना।
केवललहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना॥
मोहि राखो हो सरना, श्री बर्द्धमानजिनरायजी, मोहि राखो हो०॥

ॐ ह्रीं बैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावश शिवतिय, पावापुरतें वरना।
गणफनिवृन्द जजें तित बहुविध, मैं पूजों भयहरना॥
मोहि राखो हो०॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला—छन्द हरिगीता, २८ मात्रा

गणधर अशनिधर, चक्रधर हलधर, गदाधर वरवदा।
अरु चापधर, विद्यासुधर तिरशूलधर सेवहिं सदा॥
दुखहरन आनन्दभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुण मणिमाल उन्नत भालकी जयमाल है॥१॥

छन्द घत्तानन्द

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं।
भवतापनिकंदन, तनकनमंदन, रहित सपंदन नयन धरं॥२॥

छन्द त्रोटक

जय केवलभानु-कला-सदनं। भवि-कोक-विकाशन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञान-दृगांवर चूर करं॥१॥
गर्भादिक-मंगलमंडित हो। दुखदारिदको नितखंडित हो।
जगमांहि तुम्हीं सतपंडित हो। तुमहीभवभाव-विहंडित हो॥२॥

हरिवंश सरोजनको रवि हो । बलवंत महंत तुम्ही कवि हो ।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो । अबलों सोइमारग राजतियो ॥३॥
पुनि आप तने गुण मांहि सही । सुरमग्न रहैं जितने सबहीं ।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं । लय मान निसोंमनभावत हैं ॥४॥
पुनि नाचत रंग उमंग-भरी । तुम भक्ति विषैं पग एम धरी ।
झननं झननं झननं झननं । सुर लेत तहाँ तननं तननं ॥५॥
घननं घननं घनघंट बजें । दृमदं दृमदं मिरदंग सजें ।
गगनांगन-गर्भगता सुगता । ततता ततता अतता वितता ॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है । सुरताल रसालजु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभमें । इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें ॥७॥
कई नारि सुबीन बजावत हैं । तुमरो जस उज्जवल गावत हैं ।
करताल विषै करताल धरैं । सुरताल विशाल जुनाद करैं ॥८॥
इन आदि अनेक उछाह भरी । सुरभक्ति करे प्रभुजी तुमरी ।
तुमही जग जीवन के पितु हो । तुमही बिनकारन के हितु हो ॥९॥
तुम ही सब विघ्न विनाशन हो । तुमही निज आनंदभासन हो ।
तुमही चितचिंतितदायक हो । जगमांहितुम्हींसबलायक हो ॥१०॥
तुमरे पन मंगल मांहिं सही । जिय उत्तम पुण्य लियो सबही ।
हमको तुमरी शरणागत है । तुमरे गुण में मन पागत है ॥११॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये । जबलों वसु कर्म नहीं नसिये ।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो । तबलों श्रुतिचतन चित्त रतो ॥१२॥
तबलों व्रत चारित चाहतु हों । तबलों शुभभाव सुगाहतु हों ।
तबलों सतसंगति नित्त रहो । तबलों मम संजम चित्त गहो ॥१३॥
जबलों नहिं नाश करों अरि को । शिव नारि वर समतों धरिको ।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी । हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४॥

घत्ता

श्रीवीरजिनेशा नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा ।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, बांछित पावै शर्म वरा ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय महार्घनिर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—श्री सन्मति के जुगल पद, जो पूजैं धर प्रीत ।
वृन्दावन सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ।।

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

सोलहकारण पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

सोलह कारण भाय तीर्थंकर जे भये ।
हरषे इन्द्र अपार मेरुपै ले गये ।।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं ।
हमहू षोडश कारन भावैं भावसौं ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि ! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट् ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् ।

कंचन-झारी निरमल नीर पूजों जिनवर गुन-गंभीर ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि १. विनयसम्पन्नता २. शीलव्रतेष्वनतीचार ३. अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४. संवेग ५. शक्तितस्त्याग ६. शक्तितस्तप ७. साधु

समाधि ८. वैयावृत्यकरण ९. अर्हद्भक्ति १०. आचार्यभक्ति ११. बहुश्रुत-भक्ति १२. प्रवचनभक्ति १३. आवश्यकापरिहाणि १४. मार्गप्रभावना १५. प्रवचन वात्सल्य १६. इतिषोडशकारणेभ्यो नमः जलं ॥१॥

चंदन घसौं कपूर मिलाय पूजौं श्रीजिनवरके पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः ससारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

तंदुल धवल सुगंध अनूप पूजौं जिनवर तिहुं जग-भूप ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

फूल सुगंध मधुप-गुंजार पूजौं जिनवर जग-आधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥

ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

सद नेवज बहुविधि पकवान पूजौं श्रीजिनवर गुणखान ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥

ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीपक-ज्योति तिमिर छयकार पूजूं श्रीजिन केवलधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥

ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

अगर कपूर गंध शुभ खेय श्रीजिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद-दाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूप ॥७॥

श्रीफल आदि बहुत फलसार पूजों जिन वांछित-दातार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥दरश०॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल ॥८॥

जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मन लाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥दरश०॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं ॥९॥

सोलह अंगों के सोलह अर्घ

सवैया तेईसा

दर्शन शुद्ध न होवत जो लग, तो लग जीव मिथ्याती कहावे।
काल अनंत फिरो भवमें, महादुःखनको कहुँ पार न पावे॥
दोष पचीस रहित गुण-अम्बुधि, सम्यकदरशन शुद्ध ठरावे।
'ज्ञान' कहे नर सोहि बड़ो, मिथ्यात्व तजे जिन-मारग ध्यावे॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावनायै नमः अर्घं ॥१॥

देव तथा गुरुराय तथा, तप संयम शील व्रतादिक-धारी।
पापके हारक कामके छारक, शल्य-निवारक कर्म-निवारी॥
धर्म के धीर कषायके भेदक, पंच प्रकार संसार के तारी।
'ज्ञान' कहे विनयो सुखकारक, भाव धरो मन राखो विचारी॥
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावनायै नमः अर्घं ॥२॥

शील सदा सुखकारक है, अतिचार-विवर्जित निर्मल कीजे।
दानव देव करें तसु सेव, विषानल भूत पिशाच पतीजे॥

शील बड़ो जगमें हथियार, जु शीलको उपमा काहेकी दीजे ।
'ज्ञान' कहे नहिं शील बराबर, तातें सदा दृढ़ शील धरीजे ॥
ॐ ह्रीं निरतिचार शीलव्रत भावनायै नम. अर्घं ॥३॥

ज्ञान सदा जिनराजको भाषित, आलस छोड़ पढ़े जो पढ़ावे ।
द्वादस दोउ अनेकहुँ भेद, सुनाम मती श्रुति पंचम पावे ॥
चारहुँ भेद निरन्तर भाषित, ज्ञान अभीक्षण शुद्ध कहावे ।
'ज्ञान' कहे श्रुत भेद अनेक जु, लोकालोक हि प्रगट दिखावे ॥
ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै नम. अर्घ ॥४॥

भ्रात न तात न पुत्र कलत्र न, संयम सज्जन ए सब खोटो ।
मन्दिर सुन्दर काय सखा, सबको इसको हम अंतर मोटो ॥
भाउके भाव धरी मन भेदन, नाहिं संवेग पदारथ छोटो ।
'ज्ञान' कहे शिव-साधनको जैसो, साहको कामकरे जु बणोटो ॥
ॐ ह्रीं संवेग भावनायै नम. अर्घं ॥५॥

पात्र चर्तुविध देख अनूपम, दान चर्तुविध भावसुं दीजे ।
शक्ति-समान अभ्यागतको, अति आदरसे प्राणिपत्य करीजे ॥
देवत जे नर दान सुपात्रहिं, तास अनेकहिं कारण सीजे ।
बोलत 'ज्ञान' देहि शुभ दान जु, भोग सुभूमि महासुख लीजे ॥
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावनायै नमः अर्घं ॥६॥

कर्म कठोर गिरावन को निज, शक्ति-समान उपोषण कीजे ।
बारह भेद तपे तप सुन्दर, पाप जलांजलि काहे न दीजे ॥
भाव धरी तप घोर करो, नर, जन्म सदा फल काहे न लीजे ।
'ज्ञान' कहे तप जे नर भावत, ताके अनेकहिं पातक छीजे ॥
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै नमः अर्घं ॥७॥

साधुसमाधि करो नर भावक, पुण्य बड़ो उपजे अघ छीजे ।
साधु की संगति धर्मको कारण, भक्ति करे परमारथ सीजे ।।
साधुसमाधि करे भव छूटत, कीर्ति-छटा त्रैलोक में गाजे ।
'ज्ञान' कहे यह साधु बड़ो, गिरिशृङ्ग गुफा बिच जाय विराजे ।।
ॐ ह्री साधुसमाधि भावनायै नमः अर्घं ।।८।।

कर्म के योग व्यथा उदई मुनि, पुंगव कुन्तसभेषज कीजे ।
पीत कफान लसास भगन्दर, तापको सूल महागद छीजे ।।
भोजन साथ बनायके औषध, पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे ।
'ज्ञान' कहे नित ऐसी वैय्यावृत्य करे तस देव पतीजे ।।
ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरण भावनायै नम. अर्घं ।।६।।

देव सदा अरिहन्त भजो जई, दोष अठारा किये अति दूरा ।
पाप पखाल भये अति निर्मल, कर्म कठोर किए चकचूरा ।।
दिव्य अनन्त-चतुष्टयशोभित, घोर मिथ्यान्ध-निवारण सूरा ।
'ज्ञान' कहे जिनराज अराधो, निरन्तर जे गुण-मन्दिर पूरा ।।
ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावनायै नम. अर्घं ।।१०।।

देवत ही उपदेश अनेक सु, आप सदा परमारथ-धारी ।
देश विदेश विहार करें, दश धर्म धरें भव-पार उतारी ।।
ऐसे अचारज भाव धरी भज, सो शिव चाहत कर्म निवारी ।
'ज्ञान' कहे गुरु-भक्ति करो नर, देखत ही मनमांहि विचारी ।।
ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावनायै नमः अर्घं ।।११ ।

आगम छन्द पुराण पढ़ावत, साहित तर्क वितर्क बखाने ।
काव्य कथा नव नाटक पूजन, ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाने ।।
ऐसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर, जो मनमें दोउ भाव न आने ।
बोलत 'ज्ञान' धरी मनसान जु, भाग्य विशेषते जानहिं जाने ।।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति भावनायै नमः अर्घं ।।१२।।

द्वादस अंग उपांग सदागम, ताकी निरन्तर भक्ति करावे ।
वेद अनूपम चार कहे तस, अर्थ भले मन मांहि ठरावे ।।
पढ़ बहुभाव लिखो निज अक्षर, भक्ति करी बड़ि पूज रचावे ।
'ज्ञान' कहे जिन आगम-भक्ति, करो सद्-बुद्धि बहुश्रुत पावे ।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावनायै नमः अर्घं ।।१३।।

भाव धरे समता सब जीवसु, स्तोत्र पढ़े मुख से मनहारी ।
कायोत्सर्ग करे मन प्रीतसुं, वंदन देव-तणों भव तारी ।।
ध्यान धरी मद दूर करी, दोउ बेर करे पड़कम्मन भारी ।
'ज्ञान' कहे मुनि सो धनवन्त जु, दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी ।।
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावनायै नम. अर्घ ।।१४।।

जिन-पूजा रचो परमारथसूं, जिन आगे नृत्य महोत्सव ठाणों ।
गावत गीत बजावत ढोल, मृदंगके नाद सुधांग बखाणो ।।
संग प्रतिष्ठा रचो जल-जातरा, सद्गुरुको साहमो कर आणो ।
'ज्ञान' कहे जिन मार्ग-प्रभावन, भाग्य-विशेषसुं जानहिं जाणो ।।
ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै नमः अर्घं ।।१५।।

गौरव भाव धरो मनसे मुनि-पुङ्गवको नित वत्सल कीजे ।
शीलके धारक भव्यके तारक, तासु निरंतर स्नेह धरीजे ।।
धेनु यथा निजबालकके अपने जिय, छोड़ि न और पतीजे ।
'ज्ञान' कहे भवि लोक सुनो, जिन वत्सल भावधरे अघ छीजे ।।
ॐ ह्रीं प्रवचन-वात्सल्य भावनायै नम· अर्घं ।।१६।।

जाप—ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः, ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः, ॐ ह्रीं शीलव्रताय नमः, ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः, ॐ ह्रीं संवेगाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः, ॐ ह्रीं साधु-समाध्यै नमः, ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ॐ ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचन-भक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नमः, ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ।।१६।।

जयमाला

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-वास।
पाप पुण्य सब नाशके, ज्ञान-भान परकाश॥

चौपाई १६ मात्रा

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारै जो प्राणी, शिव-वनिताकी सखी बखानी॥
शील सदा दिढ जो नर पालै, सो औरनकी आपद टालै।
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं, ताके मोह-महातम नाहीं॥
जो संवेग-भाव विसतारै, सुरग-मुकति-पद आप निहारै।
दान देय मन हरष विशेखं, इह भव जस, परभव सुख देखं॥
जो तप तपै खपे अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा।
साधु-समाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै॥
निश-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव-नीर तिरैया।
जो अरहंत-भगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै॥
जो आचरज-भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है।
बहुश्रुतवंत-भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई॥
प्रवचन-भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानंद-दाता।
षट् आवश्य काल जो साधै, सो ही रत्न-त्रय आराधै॥
धरम-प्रभाव करैं जे ज्ञानी, तिन-शिव-मारग रीति पिछानी।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै॥

दोहा

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय।
देव-इन्द्र-नर-वंद्य-पद, 'द्यानत' शिव-पद होय॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यः पूर्णार्घं निर्व०।

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै।
कर्म अनेक हने अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै॥
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव-सागरको पर पार उतारै।
'ज्ञान' कहे यही षोडशकारण कर्म निवारण सिद्ध सुधारै॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

पंचमेरु पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

गीता छन्द

तीर्थंकरोंके न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंच मेरुनकी सदा।
दो जलधि ढाई द्वीपमें सब गनत-मूल विराजहीं,
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुखभाजहीं॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्रावत-रावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

चौपाई आँचलीबद्ध

सीतल-मिष्ट-सुबास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रनाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालि-पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो चन्दनं ॥२॥

अमल अखण्ड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अक्षतम् ॥३॥

बरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं ॥४॥

मन वांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

तम-हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो दीपं ॥६॥

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिमबिम्बेभ्यो धूपं ॥७॥

सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजों श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रनाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो फलं ।।८।।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।पाँचों०।।
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं ।।९।।

जयमाला

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मंदर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंच मेरु जगमें प्रगट ।।

केसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ।।
ऊपर पंच-शतकपर सोहै, नंदन-वन देखत मन मोहै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ।।
ऊँचा जोजन सहस-छतीसं, पाण्डुक-वन सोहै गिरि-सीसं ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ।।
चारों मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहुं जाने ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ।।

ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारों नंदनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ॥
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सोमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ॥
उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ॥
सुर नर चारन बंदन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ॥

दोहा

पंच मेरुकी आरती, पढ़े सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभु, तुरत महासुख होय ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं नि०।

卐—卐

नन्दीश्वरद्वीप-पूजा

[कविवर द्यानतरायजी]

सरब परब में बड़ो अठाई परब है।
नंदीश्वर सुर जाहिं लिये वसु दरब है॥
हमैं सकति सो नाहिं इहां करि थापना।
पूजें जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना॥
ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

कंचन-मणि मय-भृंगार, तीरथ-नीर भरा ।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा ॥
नंदीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव-धरों ॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिणदिक्षु द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ॥१॥

भव-तप-हर शीतल वास, सो चंदन नाहीं ।
प्रभु यह गुन कीजै सांच, आयो तुम ठांहीं ॥नंदी०॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो भवताप-विनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहै ।
सब जीते अक्ष-समाज, तुमसम, अरु को है ॥नंदी०॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलनसौं ।
लहुं शील-लच्छमी एव, छूटूँ सूलनसों ॥नंदी०॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो कामबाण-विध्वसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

नेवज इन्द्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा ।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ॥नंदी०॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीपककी ज्योति-प्रकाश, तुम तन मांहि लसै ।
टूटे करमनकी राश, ज्ञान-कणी दरसै ॥
नंदीश्वर द्वीप महान चारों दिशि सोहें ।
बावन जिन मन्दिर जान सुर नर मन मोहें ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

कृष्णागरु-धूप सुवास, दश-दिशि नारि वरें ।
अति हरख-भाव परकाश, मानों नृत्य करें ॥नंदी०॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनँद राचत हैं ।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं ॥नंदी०॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत भूमि समरपतु हों ॥नंदी०॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वोपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६॥

जयमाला

दोहा

कार्तिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिन मांहि ।
नंदीस्वर सुर जात हैं, हम पूजें इह ठांहि ॥१॥
एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा ।
लाख चौरासिया एक दिशमें लहा ॥
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥

चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं।
सहज चौरासिया एक दिश छाजहीं॥
ढोल सम गोल ऊपर तले सुन्दरं।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं॥३॥

एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी॥
चहु दिशा चार वन लाख जोजन वरं॥भौन०॥४॥

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं।
सहस दश महाजोजन लखत ही सुखं॥
बावरी कौन दो माहि दो रतिकरं॥भौन०॥५॥

शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे।
चार सोलै मिले सर्व बावन लहे॥
एक इक सीस पर एक जिनमन्दिरं॥भौन०॥६॥

बिंब अठ एक सौ रतनमयि सोहहीं।
देव देवी सरव नयन मन मोहहीं॥
पांचसै धनुष तन पद्म-आसन परं॥भौन०॥७॥

लाल नखमुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं।
स्याम-रंग भौंह सिर केश छबि देत हैं॥
बचन बोलत मनों हंसत कालुष हरं॥भौन०॥८॥

कोटि-शशि-भानु-दुति-तेज छिप जात है।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है॥
वयन नहिं कहै लखि होत सम्यकधरं।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं॥९॥

सोरठा

नंदीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिणदिक्षु द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

[इत्याशीर्वादः। पुष्पाञ्जलि क्षिपामि]

卐-卐

दशलक्षणधर्म-पूजा

[कविवर द्यानतरायजी]

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतें काढ़ि मुकति करतार हैं।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

हेमाचलकी धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजौं सदा।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-सत्य-शौचसंयम-तपस्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥२॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखंडित सार, तंदुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥३॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महके ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥४॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट-रस-संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥५॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपक-जोति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥६॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्राण-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥८॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय फल निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥९॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

卐—卐

अंगपूजा

सोरठा

पीड़ें दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करें।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा ।।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ।।
कहि है अयानो वस्तु छीनें, बाँध मार बहुविधि करें।
धरतें निकारें तन विदारें, बैर जो न तहाँ धरें ।।
ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ।।
ॐ ह्रीं उत्तम-क्षमा-धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

मान महाविषरूप, करहि नीच गति-जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ।।

उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
वस्यो निगोद माहितें आया, दमरी रूकन भाग बिकाया ।।
रूकन बिकाया भाग-वशतें, देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हूवा, भूप कीड़ों में गया ।।
जीतव्य जीवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जनकी, ज्ञान का पावैं उदा ।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

कपट न कीजं कोय, चोरनके पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा ।।

उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रन्चक दगा बहुत दुखदानी।
मनमें हो सो बचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये ।।

करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अंगारसी॥
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, कर्म-बंध-विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता॥

ॐ ह्रीं उत्तमार्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

कठिन वचन मत बोल, पर निंदा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी॥
उत्तम सत्य-वरत पालीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा सांच गुण लख लीजिये॥
ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
बच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देहसों।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में॥
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावैं सन्तोषी प्रानी॥
प्रानी सदा शुचि शील जप, तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं॥
ऊपर अमल मल भर्‌यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधु लहै॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संयम-रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं ॥

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भवके भाजें अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगतिमें नाहीं, आलस-हरन-करन सुख ठाहीं ॥
ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ॥
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम-मुख बीच में ॥
ॐ ह्री उत्तम सयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

तप चाहे सुरराय, करम-सिखरकों वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम ॥

उत्तम तप सब माँहि बखाना, करम-शैलको वज्र समाना।
वस्यो अनादि-निगोद-मँझारा, भू-विकलत्रय-पशु-तन धारा ॥
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता ॥
अति महा दुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै।
नर-भव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरै ॥
ॐ ह्री उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

दान चार परकार, चार संघ को दीजिये।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिये ॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै ॥

दोनों संभारे कूप-जलसम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे खाय खोया बह गया॥
धनि साध शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहै नाहीं बोध को॥
ॐ ह्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

परिग्रह चौबिस भेद त्याग करैं मुनिराज जी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइये॥
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिंता दुख ही मानो।
फाँस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरै।
धनि नगन पर तन-नगन ठाढ़े, सुर-असुर पायनि परै॥
घरमांहि तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसौं॥
ॐ ह्री उत्तमाकिञ्चन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा॥
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहै बान-बरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे॥
कूरे तियाके अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हि मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं॥
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दस पैंडि चढ़िकै, शिव महल में पग धरा॥
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

समुच्चय-जयमाला

दोहा

दस लच्छन बन्दों सदा, मन वांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाव ।।

वेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहाँ मन होइ, अंतर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै ।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ।।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रत्न भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता ।।
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई ।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विस्तारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकति-फल पावै ।।

दोहा

करै करमकी निरजरा, भव पींजरा विनाश।
अजर अमर पद को लहै, 'द्यानत' सुखकी राश ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दश-लक्षण-धर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

卐—卐

रत्नत्रय-पूजा

चहुँगति-फनि-विष-हरन-मणि दुख-पावक-जल-धार।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक-त्रयी निहार॥

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक (सोरठा छन्द)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ॥१॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्व०।

चंदन-केसर गारि, परिमल-महा-सुरंग-मय।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ॥२॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्व०।

तंदुल अमल चितार, वासमती-सुखदासके।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ॥३॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।

महकें फूल अपार, अलि गुंजैं ज्यों थुति करैं।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ॥४॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ॥५॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ॥६॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०।

धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूरकी।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूं ॥७॥
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूं ॥८॥
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्व०।

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूं ॥९॥
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०।

सम्यक् दरशनज्ञान, व्रत शिव-मग-तीनों मयी।
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजों व्रतसहित ॥१०॥
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

卐—卐

सम्यग्दर्शन-पूजा

दोहा

सिद्ध अष्ट-गुनमय प्रगट, मुक्त-जीव-सोपान।
ज्ञान चरित जिहं बिन अफल, सम्यक्दर्श प्रधान॥
ॐ ह्री अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।१।।
ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।२।।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाश सुख भरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।३।।
ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।४।।
ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।५।।
ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-ज्योति तमहार, घट पट परकाशै महा।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।६।।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।७।।
ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव-फल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।८।।
ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजों सदा ।।६।।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

आप आप निहचै लखै, तत्त्व-प्रीति व्योहार ।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार ।।१।।
सम्यक् दरशन-रत्न गहीजै, जिन-वचमें संदेह न कीजै ।
इह भवविभव-चाह दुखदानी, पर-भव भोग चहै मत प्रानी ।।
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिये ।
पर-दोष ढकिये, धरम डिगते को सुथिर कर, हरखिये ।।
चहुं संघको वात्सल्य कीजै, धरमकी परभावना ।
गुन आठसों गुन आठ लहिकै, इहाँ फेर न आवना ।।
ॐ ह्रीं अष्टांगसहित पंचविंशति दोषरहित सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं ।

卐—卐

सम्यग्ज्ञान पूजा

दोहा

पंच भेद जाके प्रकट, ज्ञेय-प्रकाशन-भान ।
मोह-तपन-हर चंद्रमा, सोई सम्यकज्ञान ।।१।।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥१॥
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ-भेद पूजौं सदा ॥२॥
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय चदन निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥३॥
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौ सदा ॥४॥
ॐ ह्रीं अष्टविध सन्यग्ज्ञानाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥५॥
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-जोति तम-हार, घट-पट परकाशै महा।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥६॥
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥७॥
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव फल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥८॥
ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजों सदा ।।६।।
ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

आप आप जानै नियत, ग्रन्थ पठन व्योहार ।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार ।।
सम्यक् ज्ञान-रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर शुद्ध अर्थ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय संग जानो ।।
जानो सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये ।
तप रीति गहि बहु मौन देकै, विनय गुण चित लाइये ।।
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पण देखना ।
इस ज्ञान ही सों भरत सीझा, और सब पटपेखना ।।
ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

卐—卐

सम्यक्-चारित्र पूजा

दोहा

विषय-रोग औषध महा, दव-कषाय-जल-धार ।
तीर्थंकर जाको धरै सम्यक्चारित सार ।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥१॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥२॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥३॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥४॥
ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय पुष्प निर्व०।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥५॥
ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-जोति तम-हार, घट पट परकाशै महा।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥६॥
ॐह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥७॥
ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिव फल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥८॥
ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ।।८।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्‌चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

आप आप थिर नियत, तप संजम व्यौहार ।
स्व-पर-दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ।।

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यकचारित रतन सँभालौ, पाँच पाप तजिके व्रत पालौ ।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै, नरभव सफलकरहु तनछीजै ।।
छीजै सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये ।
बहु रुल्यो नरक-निगोद माहीं, विषय-कषायनि टालिये ।।
शुभ करम जोग सुघाट आयो, पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ।।२।।
ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्‌चारित्राय महार्घ्यं निर्बपामीति स्वाहा ।

समुच्चय-जयमाला

दोहा

सम्यकदरशन-ज्ञान-व्रत, इन बिन मुकति न होय ।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय ।।१।।

चौपाई १६ मात्रा

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करम-बंध कट जावै ।
तासों शिव-तिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै ।।
ताको चहुं गति के दुख नाहीं, सो न परै भव-सागर माहीं ।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै ।।
सोई दश लच्छनको साधै, सो सोलह कारण आराधै ।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै ।।
सोई शक्र-चक्रिपद लेई, तीन लोकके सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै ।।
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विस्तारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै ।।
दोहा—एक स्वरूप-प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्योहर सब, 'द्यानत' को सुखदाय ।।७।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

卐—卐

अनंत व्रत पूजा

रचयित्री—पू० १०५, आर्यिका श्री अभयमती माताजी

दोहा

चौदह तीर्थंकर नमूँ, शुद्ध निरंजन रूप ।
आह्वानन कर थापना, शीघ्र तिरूं भव रूप ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनंतनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेंद्राः अत्र अवतरत-अवतरत संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहिता भवतभवत वषट् सन्निधिकरणं ।

सखी छंद

चरणों में धार चढ़ाऊं, सब रोग शोक विनशाऊं।
वृषभादि अनन्त जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

केशर घनसार मिलाऊं, चन्दन शुभ शुद्ध घिसाऊं।
वृषभादि अनन्त जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

उज्जवल शुभ शालि मंगाऊं, अक्षय हितु पुंज चढ़ाऊं।
वृषभादि अनन्त जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

वर कुसुम विविध मंगवाऊं, इंद्रियों के भोग नशाऊँ।
वृषभादि अनंत जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

नेवज पकवान बनाऊँ, मम क्षुधा रोग विनशाऊँ।
वृषभादि अनन्त जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीप की ज्योति जगाऊँ, मिथ्यातम दूर भगाऊँ।
वृषभादि अनन्त जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

कृष्णागुरु धूप बनाऊँ, खेवत वसु कर्म उड़ाऊँ।
वृषभादि अनंत जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

ऋतुफल बहु सरस मंगाऊं, मम शिवहित भेंट चढ़ाऊं।
वृषभादि अनंत जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

बहुविध वसु द्रव्य सजाऊँ, निजसुखहित अर्घ चढ़ाऊं।
वृषभादि अनंत जिनेशा, मैं पूजूं मिटे कलेशा ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

जयमाला

दोहा

वृषभ देव को आदि ले, श्री अनंत प्रभुनाम।
गाऊं गुण जयमालिका, जिससे हो कल्याण ।।

पद्धरी छंद

जय वृषभनाथ कर धर्म शर्म, जय अजितनाथ जीते कुकर्म।
जय संभव भव भय करें दूर, जय अभिनदन आनंद शूर ।।१।।

जय सुमतिनाथ देवें सुबुद्धि, जय पद्मप्रभ करते सुसिद्धि।
जय जय सुपार्श्व प्रभु नशें पाप, जयचंद्रप्रभ मन करें साफ ।।२।।

जय पुष्पदंत कन्दर्प नाश, जय जय सुपुष्प शोभित प्रकाश।
जय शीतल हर संसार ताप, सबका मन शीतल करें सांच ।।३।।

जय जय श्रेयांस प्रभु करें श्रेय, दुःखित प्राणी का दुख हरेय।
जय वासुदेव प्रभु करें सेव, सुर नर किन्नर झुकते स्वमेव ॥४॥
जय विमल विमल सब हरें मैल, कर्मों के नाशक वज्र शैल।
जय जय अनंत प्रभु गुण अनंत, संसार दुःख का करें अंत ॥५॥

सोरठा

चौबीसों जिनदेव, बारंबार नमूं सदा।
"अभयमती" कर ध्यान, पहुँचें शिवपुर धाम में॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

卐—卐

निर्वाण क्षेत्र-पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

सोरठा

परम पूज्य चौबीस, जिहं जिहं थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन वच तन पूजा करौं ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत सन्निधिकरणं स्थापनं।

गीता-छन्द

शुचि छीर-दधि-सम नीर निरमल, कनक-झारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों ।।१।।
ॐ ह्री श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व०।

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भव-तापको संताप मेटो, जोर कर विनती करौं ।।सं०।।
ॐ ह्री श्रीचतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो चन्दन निर्व०।

मोती-समान अखंड तंदुल, अमल आनंद धरि तरौं।
औगुन हरौं गुन करौं हमको, जोर कर विनती करौ ।।सं०।।
ॐ ह्री श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्व०।

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मनकी हरौं।
दुख-धाम-काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं ।।सं०।।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्प निर्व०।

नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भय परिहरौं।
मम भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं ।।सं०।।
ॐ ह्री श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्य निर्व०।

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशय-विमोह-विभरम-तम-हर, जोर कर विनती करौं ।।सं०।।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्व०।

शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।
सब करम-पुंज जलाय दीज्यौ, जोर कर विनती करौं ।।सं०।।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्व०।

बहु फल मंगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं ।
निहचै मुकति-फल देहु मोको, जोर कर विनती करौं ॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकों
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों ॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो फलं निर्व० ।
जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं ॥सं०॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्व० ।

जयमाला

सोरठा

श्रीचौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों ।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥१॥

चौपाई १६ मात्रा

नमो ऋषभ कैलासपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं, सन्मति पावापुर अभिनंदौं ॥२॥

वंदौं अजित अजित पद-दाता, वंदौं संभव भव-दुख-घाता ।
वंदौं अभिनंदन गुण-नायक, वंदौं सुमति सुमतिके दायक ॥३॥

वंदौं पदम मुकति-पदमाकर, वंदौं सुपास आश-पासाहर ।
वंदौं चंद्रप्रभ प्रभु चंदा, वंदौं सुविधि सुविधि-निधि-कंदा ॥४॥

वंदौं शीतल अघ-तप-शीतल, वंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
वंदौं विमल विमल उपयोगी, वंदौं अनंत अनंत-सुखभोगी ॥५॥

वंदौं धर्म धर्म-विस्तारा, वंदौं शांति शांति-मन-धारा ।
वंदौं कुंथ कुंथ-रखवालं, वंदौं अर अरि-हर गुण मालं ॥६॥

वंदौं मल्लि काम-मल-चूरन, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत-पूरन।
वंदौं नमि जिन नमित-सुरासुर, वंदौं पास पास-भ्रम-जग-हर ॥७॥
बीसौं सिद्धिभूमि जा ऊपर, शिखरसम्मेद-महागिरि भूपर।
भावसहित बंदे जो कोई, ताहि नरक-पशु-गत-नहिं होई ॥८॥
नरपति नृप सुर शुक्र कहावें, तिहुं जग-भोग भोगि शिव पावें।
विघन-विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वंदौं भव तारी ॥९॥

घोहा

जो तीरथ जावें पाप मिटावे, ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै ॥
ॐ ह्री श्रीचतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व०।

卐—卐

सरस्वती पूजा

घोहा

जनम जरा मृतु, क्षय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भव-सागरसों ले तिरै, पूजै जिन वच प्रीति ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वत्यै पुष्पांजलिः।

छीरोदधि गंगा विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा।
भरि कंचनझारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा ॥
तीर्थंकर को ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ॥
ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै जलं निर्व० ॥१॥

करपूर मंगाया चन्दन आया, केशर लाया रंग भरी ।
शारद-पद वंदों, मन अभिनंदों, पाप निकंदों दाह हरी ॥
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ॥
॥ चंदनम् ॥२॥

सुखदास कमोदं, धारक मोदं अति अनुमोदं चंदसमं ।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ॥
तीर्थं० ॥ अक्षतान् ॥३॥

बहु फूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनंद रासं लाय धरे ।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो दोष हरे ॥
तीर्थं० ॥ पुष्पं ॥४॥

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विध भाया मिष्ट महा ।
पूजूं थुति गाऊं, प्रीति बढ़ाऊँ, क्षुधा नशाऊँ हर्ष लहा ॥
तीर्थं० ॥ नैवेद्यं ॥५॥

कर दीपक-जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै ।
तुम हो परकाशक, भरम-विनाशक हम घट भासक, ज्ञानबढ़ै ॥
तीर्थं० ॥ दीपं ॥६॥

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं ।
सब पाप जलावे, पुण्य कमावे, दास कहावे सेवत हैं ॥
तीर्थं० ॥ धूपम् ॥७॥

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं ।
मन वांछित दाता मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हैं ॥
तीर्थं० ॥ फलम् ॥८॥

नयनन सुखकारी, मृदु गुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोलधरै ।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करै ॥
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सोजिनवर वानी, शिव सुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ॥
॥ अर्घ्यम् ॥९॥

जल चंदन अक्षत फूल चरू, अरु दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुखपावै ॥
तीर्थं० ॥ अर्घ्यम् ॥१०॥

जयमाला

सोरठा

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांग वाणी विमल ।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै ॥
पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ॥
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बयालिस पद सरधानं ।
चौथो समवायांग निहारं, चौंसठ सहस लाख इक धारम् ॥
पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पांच लाख छप्पन हज्जारं ॥
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारलख भंगं ।
अष्टम अंतकृतं दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं ॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं ।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं ॥
ग्यारम सूत्र विपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं ।
चार कोड़ि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥

द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं ॥
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने ॥
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साढ़े इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये ॥

जा बानी के ज्ञान ते, सूझे लोक अलोक।
'द्यानत' जग जयवंत हो, सदा देत हूँ धोक ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सरस्वती स्तवन

जगन्माता ख्याता जिनवर मुखांभोज उदिता।
भवानी कल्याणी मुनि मनुज मानी प्रमुदिता ॥
महादेवी दुर्गा दरनि दुःखदाई दुरगती।
अनेका एकाकी द्वयुत दशांगी जिनमती ॥१॥
कहें माता तो को यद्यपि सबही ऽनादि निधना।
कथंचित् तो भी तू उपजि विनशै यों विवरना ॥
धरैं नाना जन्म प्रथम जिनके बाद अबलों।
भयो त्यों विच्छेद प्रचुर तुव लाखों बरसलों ॥
महावीर स्वामी जब सकल ज्ञानी मुनि भये।
बिडौजा के लाये समवसृत में गौतम गये ॥
तबै नौका रूपा भव जलधि मांही अवतरी।
अरूपा निर्वर्णा विगत भ्रम सांची सुखकारी ॥

धरें हैं जे प्राणी नित जननि तो को हृदय में।
करे हैं पूजा व मन बचन काया कहि नमें॥
पढ़ावें देवें जो लिखि लिखि तथा ग्रन्थ लिखवा।
लहें ते निश्चय सों अमर पदवी मोक्ष अथवा॥
(यह सरस्वती स्तवन पढ़कर पुष्प-क्षेपण करे)

गौतम स्वामीजी का अर्घ्य

गौतमादिक सर्वे एक दश गणधरा।
वीर जिन के मुनि सहस चौदह वरा॥
नीर गंधाक्षतं पुष्प चरु दीपकं।
धूप फल अर्घ्य ले हम जजे महर्षिकं॥

卐—卐

क्षमावाणी पूजा

छप्पयछंद—अंग क्षमा जिन धर्म तनों दृढ़ मूल बखानो।
सम्यक रतन संभाल हृदय में निश्चय जानो॥
तज मिथ्या विष मूल और चित निर्मल ठानो।
जिनधर्मी सों प्रीति करो सब पातक भानो॥
रत्नत्रय गह भविक जन, जिन आज्ञा सम चालिए।
निश्चय कर आराधना, कर्म राशि को जालिए॥

ॐ ह्री सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रयाय नमः अत्राव-तरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टकम्

क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।।टेक।।
नीर सुगन्ध सुहावनो, पद्म द्रह को लाय ।
जन्म रोग निरवारिये, सम्यक् रत्न लहाय ।।क्षमा०।।१।।

केसर चन्दन लीजिये, संग कपूर घसाय ।
अलि पंकति आवत घनी, बास सुगन्ध सुहाय ।।क्षमा०।।२।।

ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्-चारित्रेभ्यो नमः चन्दनं निर्वपामि० ।।२।।

शालि अखंडित लीजिए, कंचन थाल भराय ।
जिनपद पूजों भावसों, अक्षयपद को पाय ।।क्षमा०।।३।।

ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदश विध सम्यक्-चारित्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि० ।।३।।

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगन्ध गुलाब ।
श्रीजिन चरण सरोजकूं, पूज हरष चित चाव ।।क्षमा०।।४।।

ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्-चारित्रेभ्यो नमः पुष्प निर्वपामि० ।।४।।

शक्कर घृत सुरभी तनों, व्यंजन षट्रस स्वाद ।
जिनके निकट चढ़ाय कर, हिरदे धरि आह्लाद ।।क्षमा०।।५।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नम· नैवेद्यं निर्वपामि० ।।५।।

हाटकमय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार ।
शोधक घृतकर पूजिये, मोह तिमिर निरवार ।।क्षमा०।।६।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः दीपं निर्वपामि० ।।६।।

कृष्णागर करपूर हो, अथवा दश विध जान ।
जिन चरणां ढिग खेइये, अष्ट करम की हान ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ॥७॥

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः धूपं निर्वपामि० ॥७॥

केला अम्ब अनार हो, नारिकेल ले दाख ।
अग्र धरों जिन पद तने, मोक्ष होय जिन भाख ॥क्षमा०॥८॥

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः फलं निर्वपामि० ॥८॥

जल फल आदि मिलाइके, अरघ करो हरषाय ।
दुःख जलांजलि दीजिए, श्रीजिन होय सहाय ॥क्षमा०॥९॥

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामि० ॥९॥

जयमाला

दोहा

उनतिस अंग की आरती, सुनो भविक चित लाय ।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय ॥१॥

चौपाई

जैनधर्म में शंक न आनै, सो निःशंकित गुण चित ठानै ।
जप तप कर फल वांछे नाहीं, निःकांक्षित गुण हो जिस माहीं ॥२॥
परको देखि गिलान न आने, सो तीजा सम्यक् गुण ठाने ।
आन देवको रंच न माने, सो निर्मूढता गुण पहिचाने ॥३॥
परको औगुण देख जु ढाके, सो उपगूहन श्रीजिन भाखे ।
जैन धर्म तें डिगता देखे, थापे बहुरि थिति कर लेखे ॥४॥

जिनधर्मी सों प्रीति निवहिये, गऊ बच्छावत् वच्छल कहिये ।
ज्यों त्यों जैन उद्योत बढ़ावे, सो प्रभावना अंग कहावे ॥५॥

अष्ट अंग यह पाले जोई, सम्यग्दृष्टि कहिये सोई ।
अब गुण आठ ज्ञान के कहिये, भाखे श्रीजिन मन में गहिये ॥६॥

व्यंजन अक्षर सहित पढ़ीजे, व्यंजन व्यजित अंग कहीजे ।
अर्थ सहित शुध शब्द उचारे, दूजा अर्थ समग्रह धारे ॥७॥

तदुभय तीजा अंग लखीजे, अक्षर अर्थ सहित जु पढ़ीजे ।
चौथा कालाध्ययन विचारें काल समय लखि सुमरण धारे ॥८॥

पंचम अंग उपधान बतावै, पाठ सहित तब बहु फल पावे ।
षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजे, वानी विनय युक्त पढ़लीजे ॥९॥

जापै पढ़ै न लोपें जाई, सप्तमअंग गुरुवाद कहाई ।
गुरुकीबहुतविनयजु करीजे, सो अष्टम अंग धर सुख लीजे ॥१०॥

यह आठों अंग ज्ञान बढ़ावें, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावें ।
अब आगे चारित्र सुनीजे, तेरह विध धर शिव सुख लीजे ॥११॥

छहों कायकी रक्षा कर है, सोई अहिंसाव्रत चित धर है ।
हितमितसत्य वचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल लहिये ॥१२॥

मन वच काय न चोरी करिये, सोई अचौर्यव्रत चित धरिये ।
मन्मथ भय मन रंच न आने, सो मुनि ब्रह्मचर्य व्रत ठाने ॥१३॥

परिग्रह देख न मूर्छित होई, पंच महाव्रत धारक सोई ।
ये पांचों महाव्रत सु खरे हैं, सब तीर्थंकर इनको करे हैं ॥१४॥

मनमें विकलप रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई ।
वचन अलीक रंच नहिं भाखें, वचनगुप्तिसो मुनिवर राखें ॥१५॥

कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं, ता मुनि कायगुप्ति जिन कहि हैं।
पंच समिति अब सुनिए भाई, अर्थ सहित भाषे जिनराई ।।१६।।

हाथ चार जब भूमि निहारे, तब मुनि ईर्य्या मग पद धारे।
मिष्ट वचन मुख बोले सोई, भाषा समिति तास मुनि होई ।।१७।।

भोजन छ्यालिस दूषण टारे, सो मुनि एषण शुद्धि विचारे।
देखके पोथी ले अरु धरि हैं, सो आदान निक्षेपन वरि हैं ।।१८।।

मल मूत्र एकान्त जु डारे, परतिष्ठापन समिति संभारे।
यह सब अंग उनतीस कहे हैं, श्रीजिन भाखे गणेश गहे हैं ।।१९।।

आठ आठ तेरह विध जानों, दर्शन ज्ञान चारित्र सुठानो।
तातें शिवपुर पहुँचो जाई, रत्नत्रय की यह विधि भाई ।।२०।।

रत्नत्रय पूरण जब होई, क्षमा क्षमा करियो सब कोई।
चैत माघ भादों त्रय वारा, क्षमा क्षमा हम उरमें धारा ।।२१।।

दोहा

यह क्षमावाणी आरती, पढ़ें सुने जो कोय।
कहे 'मल्ल' सरधा करो, मुक्ति श्रीफल होय ।।२२।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपा० ।।१०।।

सोरठा

दोष न गहिये कोय, गुण गण गहिये भावसों।
भूल चूक जो होय, अर्थ विचारि जु शोधिये ।।

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

सलूना पर्व पूजा

श्री अकम्पनाचार्यादि सप्त-शत-मुनि-पूजा

(चाल जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु-शिरोमणि सात-शतक मुनि ज्ञानी ।
आ हस्तिनापुर के कानन में हुए अचल दृढ़ ध्यानी ॥
दुखद सहा उपसर्ग भयानक सुन मानव घबराये ।
आत्म-साधना के साधक वे, तनिक नहीं अकुलाये ॥
योगिराज श्री विष्णु त्याग तप, वत्सलता-वश आये ।
किया दूर उपसर्ग, जगत-जन मुग्ध हुए हर्षाये ॥
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन शुभ दिन था सुख दाता ।
पर्व सलूना हुआ पुन्य-प्रद यह गौरवमय गाथा ॥
शान्ति दया समताका जिनसे नव आदर्श मिला है ।
जिनका नाम लिये से होती जागृत पुण्य-कला है ॥
करूं वन्दना उन गुरुपद की वे गुण मैं भी पाऊं ।
आह्वानन संस्थापन सन्निधिकरण करूं हर्षाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टकम्

गीता छन्द

मैं उर-सरोवर से विमल जल भाव का लेकर अहो ।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊँ मृत्यु जनम जरा न हो ॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

सन्तोष मलयागिरिय चन्दन निराकुलता सरस ले।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊँ विश्वताप नहीं जले ॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः संसारतापविनाशनाय चदनम् निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

तंदुल अखंडित शुद्ध आशा के नवीन सुहावने।
नत पाद पद्मोंमें चढ़ाऊँ दीनता क्षयता हने ॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

ले विविध विमल विचार सुन्दर सरस सुमन मनोहरे।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊँ काम की बाधा हरे ॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

शुभ भक्ति घृतमें विनय के पकवान पावन मैं बना।
नत पाद-पद्मों में चढ़ा मेटूं क्षुधाकी यातना ॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

उत्तम कपूर विवेक का ले आत्म-दीपक में जला।
कर आरती गुरु की हटाऊँ मोह-तमकी यह बला॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

ले त्याग-तपकी यह सुगन्धित धूप मैं खेऊं अहो।
गुरुचरण-करुणा से करमका कष्ट यह मुझको न हो॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

शुचि-साधना के मधुरतम प्रिय सरस फल लेकर यहाँ।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊं मुक्ति मैं पाऊं यहाँ॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दे।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा स्नेह से पुलकित हृदय।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊं भव-पार मैं होऊं अभय॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें ।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ।।
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

जयमाला

सोरठा

पूज्य अकम्पन आदि, सात शतक साधक सुधी ।
यह उनकी जयमाल, वे मुझको निज भक्ति दें ।।

पद्धड़ी छन्द

वे जीव दया पालें महान, वे पूर्ण अहिंसक ज्ञानवान ।
उनके न रोष उनके न राग, वे करें साधना मोह त्याग ।।
अप्रिय असत्य बोलें न वैन, मन वचन कायमें भेद है न ।
वे महासत्य धारक ललाम, है उनके चरणों में प्रणाम ।।
वे लें न कभी तृणजल, अदत्त, उनके न धनादिक में ममत्त ।
वे व्रत अचौर्य दृढ़ धरें सार, है उनको सादर नमस्कार ।।
वे करें विषय की नहीं चाह, उनके न हृदय में काम दाह ।
वे शील सदा पालें महान, सब मग्न रहें निज आत्मध्यान ।।
सब छोड़ वसन भूषण निवास, माया ममता स्नेह आस ।
वे धरें दिगम्बर वेष शान्त, होते न कभी विचलित न भ्रांत ।।
नित रहें साधना में सुलीन, वे सहें परीषह नित नवीन ।
वे करें तत्व पर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार ।।

पंचेंद्रिय दमन करें महान, वे सतत बढ़ावें आत्म ज्ञान ।
संसार देह सब भोग त्याग, वे शिव-पथ साधें सतत जाग ॥
''कुमरेश'' साधु वे हैं महान, उनसे पाये जग नित्य त्राण ।
मैं करूं वंदना बार बार, वे करें भवार्णव मुझे पार ॥
मुनिवर गुण-धारक पर-उपकारक, भव दुखकारक सुख-कारी ।
वे करम नशायें सुगुण दिलायें, मुक्ति मिलायें भव-हारी ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो महार्घं निर्व० ।

सोरठा

श्रद्धा भक्ति समेत, जो जन यह पूजा करे ।
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत दुख ॥

इत्याशीर्वादः

卐—卐

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

(लावनी छन्द)

श्री योगी विष्णुकुमार बाल वैरागी ।
पाई वह पावन ऋद्धि विक्रिया जागी ॥
सुन मुनियों पर उपसर्ग स्वयं अकुलाये ।
हस्तिनापुर वे वात्सल्य-भरे हिय आये ॥
कर दिया दूर सब कष्ट साधना-बल से ।
पा गये शान्ति सब साधु अग्निके झुलसे ॥

जन जन ने जय-जयकार किया मन भाया ।
मुनियों को दे आहार स्वयं भी पाया ।।
हैं वे मेरे आदर्श सर्वदा स्वामी ।
मैं उनकी पूजा करूं बनूं अनुगामी ।।
वे दें मुझमें यह शक्ति भक्ति प्रभु पाऊं ।
मैं कर आतम कल्याण मुक्त हो जाऊं ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुने अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(चाल जोगीरासा)

श्रद्धा की वापी से निर्मल, भावभक्ति जल लाऊं ।
जनम मरण मिट जाये मेरे इससे विनत चढ़ाऊं ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

मलयागिरि धीरज से सुरभित समता चन्दन लाऊं ।
भव-भवकी आताप न हो यह इससे विनत चढ़ाऊं ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।।२।।

चन्द्रकिरण सम आशाओं के अक्षत सरस नवीने ।
अक्षय पद मिल जाये मुझको गुरु सन्मुख धर दीने ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व० ।।३।।

उर उपवनसे चाह सुमन चुन विविध मनोहर लाऊं।
व्यथित करे नहिं काम वासना इससे विनत चढ़ाऊं ॥
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ॥
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि० ॥४॥

नव नव व्रत के मधुर रसीले मै पकवान बनाऊं।
क्षुधा न बाधा यह दे पाये इससे विनत चढ़ाऊं ॥
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ यति रक्षा-हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ॥
ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ॥५॥

मैं मन का मणिमय दीपक ले ज्ञान-वातिका जारूं।
मोह-तिमिर मिट जाये मेरा गुरु सन्मुख उजियारूं ॥
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ॥
ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये मोहतिमिरविनाशनाय दीपं नि० ॥६॥

ले विराग की धूप सुगन्धित त्याग धूपायन खेऊं।
कर्म आठ का ठाठ जलाऊं गुरु के पद नित सेऊं ॥
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ॥
ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ॥७॥

पूजा सेवा दान और स्वाध्याय विमल फल लाऊं।
मोक्ष विमल फल मिले इसी से विनत गुरू पद ध्याऊं ॥
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ॥
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ॥८॥

यह उत्तम वसु द्रव्य संजोये हर्षित भक्ति बढ़ाऊं ।
मैं अनर्घपद को पाऊं गुरुपद पर बलि बलि जाऊं ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।।
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व० ।।६।।

जयमाला

दोहा

श्रावण-शुक्ला पूर्णिमा, यति रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णु मुनीश की, यह गुणमाल महान ।।

पद्धड़ी छन्द

जय योगिराज श्रीविष्णु धीर, आकर तुम हर दी साधु-पीर ।
हस्तिनापुर में आये तुरन्त, कर दिया विपतका शीघ्र अन्त ।।
वे ऋद्धि सिद्धि-साधक महान्, वे दयावान वे ज्ञानवान ।
धर लिया स्वयं वामन सरूप, चल दिये विप्र बनकर अनूप ।।
पहुंचे बलि नृप के राजद्वार, वे तेज-पुञ्ज धर्मावतार ।
आशीष दिया आनन्दरूप, हो गया मुदित सुन शब्द भूप ।।
बोला वर मांगो विप्रराज, दूंगा मनवांछित द्रव्य आज ।
पग तीन भूमि याची दयाल, बस इतना ही तुम दो नृपाल ।।
नृप हँसा समझ उनको अजान, बोला यह क्या, लो और दान ।
इससे कुछ इच्छा नहीं शेष, बोले वे बे ही दो नरेश ।।
संकल्प किया दे भूमिदान, ली वह मन में अति मोद मान ।
प्रगटाई अपनी ऋद्धि सिद्धि, हो गई देह की विपुल वृद्धि ।।

दो पग में नापा जग समस्त, हो गया भूप बलि अस्त-व्यस्त ।
इक पग को दो अब भूमिदान, बोले बलि से करुणा-निधान ।।
नत मस्तक बलि ने कहा अन्य, है भूमि न मुझ पर हे अनन्य ।
रख लें पग मुझ पर एक नाथ, मेरी हो जाये पूर्ण बात ।।
कहकर तथास्तु पग दिया आप, सह सका न बलि वह भार-ताप ।
बोला तुरन्त ही कर विलाप, करदें अब मुझको क्षमा आप ।।
मैं हूँ दोषी मैं हूँ अजान, मैंने अपराध किया महान् ।
ये दुखित किये सब साधु-सन्त, अब करो क्षमा हे दयावन्त ।।
तब की मुनिवर ने दया-दृष्टि, हो उठी गगन से महावृष्टि ।
पा गये दग्ध वे साधु-त्राण, जन-जन के पुलकित हुए प्राण ।।
घर घर में छाया मोद-हास, उत्सव ने पाया नव प्रकाश ।
पीड़ित मुनियों का पूर्णमान, रख मधुर दिया आहार दान ।।
युग युग तक इसको रहे याद, कर सूत्र बंधाया साह्लाद ।
बन गया पर्व पावन महान, रक्षाबन्धन सुन्दर निधान ।।
वे विष्णु मुनीश्वर परम सन्त, उनकी गुण-गरिमाका न अन्त ।
वे करें शक्ति मुझको प्रदान, 'कुमरेश' प्राप्त हो आत्मज्ञान ।।

घत्ता

श्री मुनि विज्ञानी आतम-ध्यानी ।
मुक्ति-निशानी सुख-दानी ।
भव-ताप विनाशे सुगुण प्रकाशे ।
उनकी करुणा कल्यानी ।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

विष्णुकुमार मुनीशको, जो पूजे धर प्रीत ।
वह पावे 'कुमरेश' शिव, और जगत में जीत ।।
इत्याशीर्वादः

卐—卐

श्री रविव्रत पूजा

अडिल्ल छन्द

यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही ।
करहु भव्यजन सर्व, सुमन देके सही ।।
पूजो पार्श्व जिनेन्द्र, त्रियोग लगायके ।
मिटैं सकल सन्ताप, मिलै निधि आयके ।।
मतिसागर इक सेठ, सुग्रन्थन में कहो ।
उनने भी यह पूजा कर आनन्द लहो ।।
तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये ।
सुख सम्पति संतान, अतुल निधि लीजिये ।।
प्रणमों पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ सिर नाय ।
परभव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय ।।
रवीवार व्रत के दिना, येही पूजन ठान ।
ता फल सम्पति को लहैं, निश्चय लीजे मान ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

उज्जल जल भरकें अतिलायो, रतन कटोरन माहीं ।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत, जन्म जरा मिट जाहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजो, रविव्रत के दिन भाई ।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरतही, आनन्द मंगल दाई ॥१॥
ॐ ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ॥१॥

मलयागिर केशर अतिसुन्दर, कुंकुम रङ्ग बनाई ।
धार देत जिन चरनन आगे, भव आताप नशाई ॥पारस०॥
ॐ ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन ॥२॥

मोतीसम अति उज्ज्वल तंदुल, लावो नीर पखारो ।
अक्षयपद के हेतु भावसों, श्री जिनवर ढिग धारो ॥पारस०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ॥३॥

बेला अरु मचकुंद चमेली, पारिजात के ल्यावो ।
चुनचुन श्रीजिन अग्र चढ़ाऊं, मनवांछित फल पावो ॥पारस०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ॥४॥

बावर फैनी गुजिया आदिक, घृत में लेत पकाई ।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढ़ाई ॥पारस०॥
ॐ ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ॥५॥

मणिमय दीप रतनमय लेकर, जगमग जोति जगाई ।
जिनके आगे आरति करके, मोहतिमिर नश जाई ॥पारस०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ॥६॥

चूरन कर मलयागिर चंदन, धूप दशांग बनाई ।
तट पावक में खेय भाव सों, कर्मनाश हो जाई ॥पारस०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ॥७॥

श्रीफल आदि बदाम सुपारी, भांति भांति के लावो ।
श्रीजिन चरन चढ़ाय हरषकर, ताते शिव फल पावो ॥पारस०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ॥८॥

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, अर्घ बनावो भाई।
नाचत गावत हर्षभाव सों, कंचन थार भराई॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजो, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरतही, आनन्द मंगल दाई॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् ॥६॥

गीतिका छन्द

मन बचन काय त्रिशुद्ध करके, पार्श्वनाथ सु पूजिये।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन, भक्तिवंत सु हूजिये॥
पूज्य पारसनाथ जिनवर, सकल सुखदातार जी।
जे करत हैं नर नारि पूजा, लहत सौख्य अपार जी॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

यह जग में विख्यात हैं, पारसनाथ महान।
तिन गुण की जयमालिका, भाषा करूं बखान॥

जय जय प्रणमों श्री पार्श्व देव,
इन्द्रादिक तिनकी करत सेव।
जय जय सु बनारस जन्म लीन,
तिहुँ लोक विषै उद्योत कीन॥
जय जिनके पितु श्री विश्वसेन,
तिनके घर भये सुख-चैन देन।
जय वामा देवी मात जान,
तिनके उपजे पारस महान॥
जय तीन लोक आनन्द देन,
भविजन के दाता भये ऐन।

जय जिनने प्रभु का शरण लीन,
तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ॥
जय नाग नागिनी भये अधीन,
प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन ।
तज देह देवगति गये जाय,
धरणेन्द्र पद्मावति पद लहाय ॥
जय अञ्जन चोर अधम अजान,
चोरी तज प्रभु को धरो ध्यान ।
जय मृत्यु भये वह स्वर्ग जाय,
ऋद्धी अनेक उनने सो पाय ॥
जय मतिसागर इक सेठ जान,
तिन अशुभकर्म आयो महान ।
तिनके सुत थे परदेश मांहि,
उनसे मिलने की आश नांहि ॥
जय रविव्रत पूजन करी सेठ,
ता फल कर सबसे भई भेंट ।
जिन जिन ने प्रभु का शरण लीन,
तिन ऋद्धि सिद्धि पाई नवीन ॥
जय रविव्रत पूजा करहिं जेय,
ते सौख्य अनन्तानन्त लेय ।
धरणेन्द्र पद्मावति हुये सहाय,
प्रभुभक्त जान तत्काल आय ॥
पूजा विधान इहिविधि रचाय,
मन वचन काय तीनों लगाय ।

जो भक्तिभाव जयमाल गाय,
सोही सुखसम्पति अतुल पाय ।।
बाजत मृदंग बीनादि सार,
गावत नाचत नाना प्रकार ।
तन नन नन नन नन ताल वेत,
सन नन नन नन सुर भर सो लेत ।।
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय,
छम छम छम छम घुंघरू बजाय ।
जे करहिं निरत इहि भांत भांत,
ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात ।।
रविव्रत पूजा पार्श्व की, करें भविक जन जोय ।
सुख सम्पति इह भव लहै, आगे सुर पद होय ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र, पूज भवि मन धरें ।
भव भव के आताप, सकल छिन में टरें ।।
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र, आदि पदवी लहे ।
सुख सम्पति सन्तान, अटल लक्ष्मी रहे ।।
फेर सर्व विधि पाय, भक्ति प्रभु अनुसरें ।
नानाविध सुख भोग, बहुरि शिवतिय वरें ।।

इत्याशीर्वादः ।

रविव्रत जाप्य मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो भगवते चिंतामणि—पार्श्वनाथाय सप्तफणमण्डिताय श्री-धरणेन्द्र पद्मावती—सहिताय मम ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

卐—卐

आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री—बाल ब्र० कु० माधुरी शास्त्री

तुम ज्ञानगुण से पूज्य माता, ज्ञानमति शुभ नाम है।
करतीं सदा कल्याण भविजन, किया त्याग महान है॥
वर भक्ति श्रद्धा भाव से, मैं आप आह्वानन करूँ।
पूजा रचाकर आपकी, मैं ज्ञान आराधन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी ! अत्र अवतरअवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी ! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरण।

अथ अष्टक—(चाल—नंदीश्वर पूजा)

क्षीरोदधि सम जल स्वच्छ, सुवरण कलश भरूँ।
तव चरणों धारा देत, सब संताप हरूँ॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥१॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति …

चंदन केशर कर्पूर, गंध सुगंध करूँ।
संसार ताप हो दूर, आतम शुद्ध करूँ॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥२॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी संसारतापविनाशनाय चंदन…

पयसागर फेन समान, अक्षत धोय लिया।
अक्षय गुण पावन काज, पुंज चढ़ाय दिया॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥३॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं……

अरविंद मालती कुंद, बहुविध पुष्प लिया।
मदनारिजयी पद अर्चं, सौख्य अनंत लिया॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥४॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी कामबाणविध्वंसनाय पुष्प·······

बहुविध नाना पकवान, थाल में भर लायो।
मम क्षुधा रोग कर हान, पद पूजन आयो॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥५॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं·······

मणिमय दीपक की ज्योति, कंचन थाल धरूँ।
जगे ज्ञान ज्योति चित माहिं, तुम पद पूज करूँ॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥६॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी मोहांधकारविनाशनाय दीप····· ···

कृष्णागरु धूप मंगाय, खेवत कर्म जरें।
सब अष्ट कर्म नश जांय, आत्मपियूष मिले॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥७॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी अष्टकर्मदहनाय धूपं········

अंगूर सेव बादाम, बहुफल थाल सजे।
तब मिले मोक्ष शिवधाम, हम तव चरण जजें॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूँ पद त्राता॥८॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी मोक्षफलप्राप्ताय फलं·······

जल चंदन अक्षत पुष्प, फल नैवेद्य मिला।
वर दीप धूप से पूज, पाऊँ अनर्घ्य पदा ॥
श्रीज्ञानमती गुणखान, ज्ञान की तुम दाता।
अज्ञान हरो मम मात, पूजूं पद त्राता ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं………

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती सानिध्य पा, जड़मति बनें सुजान।
बनती विदुषी नारियाँ, बनते नर विद्वान ॥

(चाल-हे दीनबंधु श्रीपती करुणानिधानजी)

जैवंत मात तुम हो ज्ञान गुण की पुजारन।
हम आये शरण तेरी आश लेके हजारन ॥
विघ्नों का नाश होता है तुम नाम जाप से।
सम्पूर्ण उपद्रव नशे हैं तव प्रताप से ॥१॥

माँ मोहिनी भी धन्य थी तुम रत्न को पाया।
थी धन्य तिथी शरद पूर्णिमा का जो आया ॥
तब नाम बड़े प्यार से रखा गया मैना।
रूचते थे बालपन से तुम्हें साधु के बैना ॥२॥

यूँ सोचती थीं तुम हमेशा बार-बार ही।
बंधन से युक्त जिन्दगी है किस प्रकार की ॥
तुम बालब्रह्मचारिणी के भेष को धारा।
करती हो ज्ञान दान से तुम जग में उजारा ॥३॥

आचार्य शिरोमणि हुए हैं शांति के सागर ।
था जब समाधि का समय कुंथलगिरी ऊपर ।।
तब क्षुल्लिका के वेष में जा दर्श किया है ।
आशीर्वाद ले गुरू का हर्ष हुआ है ।।४।।

गुरुदेव का आशीष ले तुम धन्य थीं हुईं ।
तब वीरसागर के समीप आर्यिका बनीं ।।
वैशाख वदी दूज भली पुण्य तिथी थी ।
नगरी भी माधोराजपुरा धन्य हुई थी ।।५।।

तब नाम रखा ज्ञानमती ज्ञान गुणों से ।
करती हैं पठन पाठनादि के प्रभाव से ।।
तुम त्याग मार्ग के लिए जन प्रेरणा करतीं ।
उस प्रेरणा से सैकड़ों की भावना बनीं ।।६।।

हो न्याय व्याकरण अनेकों शास्त्र की ज्ञाता ।
करती हो धर्म की प्रभावना विशद माता ।।
आचार्य विद्यानंदिकृत थी अष्टसहस्री ।
अनुवाद कर दिखाया वो है कष्टसहस्री ।।७।।

माँ ब्राह्मि सदृश तुमने मोक्षमार्ग बताया ।
बना संघ आर्यिका का आत्मज्ञान सिखाया ।।
सब दोष रहित गुण से सहित उपाध्याय हो ।
तुम मात्र पठन पाठनादि में ही निरत हो ।।८।।

हे मात ! इसी हेतु से तुम पास मैं आयी ।
सम्यक्त्व निधि पायके तुम कीर्ति को गायी ।।
इक 'माधुरी' की बीनती पे ध्यान दीजिए ।
अज्ञान हटा मुझको ज्ञानदान दीजिए ।।९।।

दोहा

जो तेरो शरणा गहे, होवे भव से पार ।
दूर होय अज्ञान सब पावे ज्ञान अपार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमती माताजी जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इत्याशीर्वाद:

卐—卐

श्री ऋषि-मण्डल पूजा भाषा

स्थापना

दोहा

चौबिस जिन पद प्रथम नमि, दुतिय सुगणधर पाय ।
त्रितिय पंच परमेष्ठि को, चौथे शारद माय ।।
मन वच तन ये चरन युग, करहुं सदा परनाम ।
ऋषि मण्डल पूजा रचों, बुधि बल द्यो अभिराम ।।

अडिल्ल छन्द

चौबिस जिन वसु वर्ग पंच गुरू जे कहे ।
रत्नत्रय चव देव चार अवधी लहे ।।
अष्ट ऋद्धि चव दोय सूर ह्रीं तीन जू ।
अरहंत दश दिग्पाल यन्त्र में लीन जू ।।

दोहा

यह सब ऋषिमण्डल विषै, देवी देव अपार ।
तिष्ठ तिष्ठ रक्षा करो, पूजूं वसु विधि सार ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचौबीसतीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अर्हतादि पंचपद, दर्शन-ज्ञानचारित्र रूपरत्नत्रय, चतुर्निकाय देव, चार प्रकार अवधि धारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि, चौबीस सूर, तीन ह्री अर्हंत बिम्ब, दश दिग्पाल, यन्त्रसम्बन्धी परमदेव समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

(इति स्थापना)

गीता छन्द

क्षीर उदधि समान निर्मल तथा मुनि चित सारसो ।
भर भृंग मणिमय नीर सुन्दर तृषा तुरित निवारसो ॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजै पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय जलं ॥१॥

नोट—प्रत्येक द्रव्य चढाते हुए स्थापना के मन्त्र को भी पूरा पढा जा सकता है । हमने यहाँ केवल संक्षिप्त मन्त्र देकर लिखा है ।

मलय चन्दन लाय सुन्दर गंध सों अलि झंकरै ।
सो लेहु भविजन कुंभ भरिके तप्त दाह सबै हरै ॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजै पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ॥

ॐ ह्री सर्वोपव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय चन्दन ॥२॥

इन्दु किरण समान सुन्दर जोति मुक्ता की हरैं ।
हाटक रकेबी धारि भविजन अखय पद प्राप्ती करैं ॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजै पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिंक दा ॥

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय अक्षतं ॥३॥

पाटल गुलाब जुही चमेली मालती बेला घने।
जिस सुरभितें कलहंस नाचत फूल गुंथि माला बने॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजें पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय पुष्पं ॥४॥

अर्द्ध चन्द्र समान फेनी मोदकादिक ले घने।
घृत पक्व मिश्रित रस सु पूरे लख क्षुधा डायनि हने॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजै पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यंत्र-सम्बन्धि-परमदेवाय नैवेद्य ॥५॥

मणि दीप ज्योति जगाय सुन्दर वा कपूर अनूपकं।
हाटक सुथाली मांहि धरिके वारि जिनपद भूपकं॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजै पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय दीप ॥६॥

चन्दन सु कृष्णागरू कपूर मंगाय अग्नि जराइये।
सो धूप-धूम्र अकाश लागी मनहुं कर्म उड़ाइये॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजें पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय धूपं ॥७॥

दाडिम सु श्रीफल आम्र कमरख और केला लाइये।
मोक्ष फल के पायवे की आश धरि करि आइये॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजें पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय फलं ॥८॥

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया।
संसार रोग निवार भगवन् वारि तुम पद में दिया॥
जहाँ सुभग ऋषिमण्डल विराजें पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि परमदेवाय अर्घं ॥६॥

अर्घावली

अडिल्ल छन्द

वृषभ जिनेश्वर आदि अंत महावीर जी।
ये चौबिस जिनराज हनों भवपीर जी॥
ऋषि-मंडल बिच ह्रीं विषें राजै सदा।
पूजूं अर्घ बनाय होय नहिं दुख कदा॥
ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय वृषभादि-चतुर्विंशति तीर्थंकर-परम-देवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि कवर्ग सु अन्तजानि शाषासहा।
ये वसुवर्ग महान यन्त्र में शुभ कहा॥
जल शुभ गंधादिक वर द्रव्य मँगाय के।
पूजहुँ दोऊ करजोर शीश निज नायके॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टवर्ग कवर्गादि देशाषासहा हल्व्यूं परमयंत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कामिनी मोहनी छन्द

परम उत्कृष्ट परमेष्ठी पद पांच को।
नमत शत इन्द्र खगवृन्द पद सांच को॥

तिमिर अघनाश करण को तुम अर्क हो ।
अर्घ लेय पूज्य पद देत बुद्धि तर्क हो ।।
ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय पंच-परमेष्ठि-परमदेवाय अर्घं ।।

सुन्दरी छन्द

सुभग सम्यग्दर्शन ज्ञान जू, कह चारित्र सुधारक मान जू ।
अर्घ सुन्दर द्रव्य सु आठ ले, चरण पूजहुं साज सु ठाठले ।।
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र-रूपरत्नत्रयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवनवासी देव व्यन्तर ज्योतिषी कल्पेन्द्र जू ।
जिनगृह जिनेश्वर देव राजै रत्नके प्रतिबिम्ब जू ।।
तोरण ध्वजा घंटा विराजै चंवर ढरत नवीन जू ।
वर अर्घ ले तिन चरण पूजों हर्ष हिय अति लीन जू ।।
ॐ ह्री सर्वोपद्रव विनाशन समर्थेभ्यो भवनेन्द्र व्यतरेन्द्र ज्योतिषीन्द्र कल्पेन्द्र चतु.प्रकार देवगृहेषु श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

अवधि चार प्रकार मुनि, धारत जे ऋषिराय ।
अर्घ लेय तिन चर्ण जजि, विघन सघन मिटजाय ।।
ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशन-समर्थेभ्य: चतु:प्रकारअवधिधारकमुनिभ्यो अर्घं ।

भुजंगप्रयात

कही आठ रिद्धि धरे जे मुनीशं ।
महा कार्यकारी बखानी गनीशं ।।
जल गंध आदि दे जजों चर्न नेरे ।
लहों सुख सबेरे हरो दुःख फेरे ।।
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो अष्टऋद्धिसहितायमुनिभ्यो अर्घं ।

श्री देवी प्रथम बखानी, इन आदिक चौबीसों मानी ।
तत्पर जिन भक्ति विषै हैं, पूजत सब रोग नशैं हैं ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्य: श्री आदि चतुर्विंशतिदेविभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

हंसा छन्द

यंत्र विषै वरन्यो तिरकौन, ह्रीं तहं तीन युक्त सुखभौन ।
जल फलादि वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ सहित पूजूं शिरनाय ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय त्रिकोणमध्ये तीन ह्री सयुक्ताय अर्घं ।

तोमर छन्द

दस आठ दोष निरवारि, छियालीस महागुण धारि ।
वसु द्रव्य अनूप मिलाय, तिन चर्न जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय अष्टादशदोष-रहिताय छियालीस-महा-गुणयुक्ताय अरहन्त-परमेष्ठिने अर्घ ।

सोरठा

दश दिश दस दिग्पाल, दिशा नाम सो नामवर ।
तिनगृह श्रीजित आल, पूजों मैं वन्दौं सदा ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो दशदिग्पालेभ्यो जिनभक्तियुक्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

ऋषि मंडल शुभयन्त्र के, देवी देव चितारि ।
अर्घ सहित पूजहुं चरन, दुख दारिद्र निवारि ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो ऋषिमंडल-सम्बन्धिदेवीदेवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

चौबीसों जिन चरन नमि, गणधर नाऊं भाल।
शारद पद पंकज नमूं, गाऊं शुभ जयमाल॥

जय आदीश्वर जिन आदिदेव, शत इन्द्र जजें मैं करहुं सेव।
जय अजित जिनेश्वर जे अजीत, जे जीत भये भव तें अतीत॥

जय सम्भव जिन भव कूप मांहि, डूबत राखहुं तुम शर्ण आंहि।
जय अभिनन्दन आनन्द देत, ज्यों कमलों पर रवि करत हेत॥

जय सुमति सुमति दाता जिनन्द, जै कुमति तिमिर नाशन दिनन्द।
जय पद्मालंकृत पद्मदेव, दिन रयन करहुं तव चरन सेव॥

जय श्री सुपार्श्व भवपाश नाश, भवि जीवन कूँ दियो मुक्तिवास।
जय चन्द जिनेश दया निधान, गुण सागर नागर सुख प्रमान॥

जय पुष्पदन्त जिनवर जगीश, शत इन्द्र नमत नित आत्मशीश।
जय शीतल वच शीतल जिनन्द, भवताप नशावन जगत चन्द॥

जय जय श्रेयांस जिन अति उदार, भवि कंठ मांहि मुक्ता सुहार।
जय वासुपूज्य वासव खगेश, तुव स्तुति करि नमि हैं हमेश॥

जय विमल जिनेश्वर विमलदेव, मल रहित विराजत करहुं सेव।
जय जिन अनन्त के गुण अनन्त, कथनी कथ गणधर लहे न अंत॥

जय धर्म धुरन्धर धर्मधीर, जय धर्म चक्र शुचि न्याय वीर।
जय शांति जिनेश्वर शांतभाव, भव वन भटकत शुभ मग लखाव॥

जय कुंथु कुंथुवा जीव पाल, सेवक पर रक्षा करि कृपाल।
जय अरहनाथ अरि कर्म शैल, तपवज्र खंड लहि मुक्ति गैल॥

जय मल्लि जिनेश्वर कर्म आठ, मल डारे पायो मुक्ति ठाठ।
जय मुनि सुव्रत सुव्रत धरन्त, तुम सुव्रत व्रत पालन महन्त ॥

जय नम्मि नमत सुर वृन्द पाय, पद पंकज निरखत शीश नाय।
जय नेमि जिनेन्द्र दयानिधान, फैलायो जग में तत्त्वज्ञान ॥

जय पारस जिन आलस निधारि, उपसर्ग रुद्र कृत जीत धारि।
जय महावीर महा धीरधार, भवकूप थकी जग तैं निकार ॥

जय वर्ग आठ सुन्दर अपार, तिन भेद लखत बुध करत सार।
जय परम पूज्य परमेष्ठि सार, सुमरत बरसे आनन्द धार ॥

जय दर्शन ज्ञान चरित्र तीन, ये रत्न महा उज्ज्वल प्रवीन।
जय चार प्रकार सुदेव सार, तिनके गृह जिन मन्दिर अपार ॥

वे पूजें वसुविधि द्रव्य ल्याय, मैं इत जजि तुम पद शीश नाय।
जो मुनिवर धारत अवधि चारि, तिन पूजें भवि भवसिन्धु पार ॥

जो आठ ऋद्धि मुनिवर धरन्त, ते मोपे करुणा करि महन्त।
चौबीस देवि जिन भक्ति लीन, वन्दन ताको सु परोक्ष कीन ॥

जे ह्रीं तीन त्रंकोण मांहि, तिन नमत सदा आनन्द पांहि।
जय जय जय श्रीअरहन्त बिम्ब, तिन पद पूजूँ मैं खोई डिंब ॥

जो दस दिग्पाल कहे महान, जे दिशा नाम सो नाम जान।
जे तिनके गृह जिनराज धाम, जे रत्नमई प्रतिमाभिराम ॥

ध्वज तोरण घंटा युक्तसार, मोतिन माला लटके अपार।
जे ता मधि वेदी हैं अनूप, तहां राजत हैं जिन राज भूप ॥

जय मुद्रा शान्ति विराजमान, जा लखि वैराग्य बढ़े महान।
जे देवी देव सु आय आय, पूजें तिन पद मन वचन काय ॥

जल मिष्ट सु उज्ज्वल पय समान, चंदन मलियागिरि को महान्।
जे अक्षत अनियारे सुलाय, जे पुष्पन की माला बनाय ॥

चरू मधुर विविध ताजी अपार, दीपक मणिमय उद्योतकार।
जे धूप सु कृष्णागरू सुखेय, फल विविध भांति के मिष्ट लेय ॥

बर अर्घ अनूपम करत देव, जिनराज चरण आगे चढ़ेव।
फिर मुखतें स्तुति करते उचार, हो करुणानिधि संसार तार ॥

मैं दुःख सहे संसार ईश, तुमतै छानी नांही जगीश।
जे इह विध मौखिक स्तुति उचार, तिन नशत शीघ्र संसार भार ॥

इह विधि जो जन पूजन कराय, ऋषि मंडल यन्त्र सु चित्त लाय।
जे ऋषि-मण्डल पूजन करन्त, ते रोग शोक संकट हरन्त।
जे राजा रण कुल वृद्धि जान, जल दुर्ग सुजग केहरि बखान ॥

जे विपत घोर अरू कहि मसान, भय दूर करै यह सकल जान।
जे राजभ्रष्ट ते राज पाय, पद भ्रष्ट थकी पद शुद्ध थाय ॥

धन अर्थी धन पावै महान्, या मैं संशय कछु नाहिं जान।
भार्या अर्थी भार्या लहन्त, सुत अर्थी सुत पावे तुरन्त ॥

जे रूपा सोना ताम्र पत्र, लिख तापर यन्त्र महा पवित्र।
ता पूजै भागे सकल रोग, जे वात पित्त ज्वर नाशि शोग ॥

तिन गृह तैं भूत पिशाच जान, ते भाग जांहि संशय न आन।
जे ऋषि मंडल पूजा करन्त, ते सुख पावत कहिं लहै न अन्त ॥

जब ऐसी मैं मन मांहि जान, तब भाव सहित पूजा सुठान।
वसुविधि के सुन्दर द्रव्य ल्याय, जिनराज चरण आगे चढ़ाय ॥

फिर करत आरती शुद्ध भाव, जिनराज सभी लख हर्ष आव।
तुम देवन के हो देव देव, इक अरज चित्त में धारि लेव ॥

हे दीन दयाल दया कराय, जो मैं दुखिया इह जग भ्रमाय ।
जे इस भववन में बास लीन, जे काल अनादि गमाय दीन ।।

मैं भ्रमत चतुर्गति विपिन मांहि, दुख सहे सुक्ख को लेश नांहि ।
ये कर्म महारिपु जोर कीन, जे मनमाने ते दुःख दीन ।।

ये काहू को नहिं डर धराय, इनतें भयभीत भयो अघाय ।
यह एक जन्म की बात जान, मैं कह न सकत हूं देवमान ।।

जब तुम अनन्त परजाय जान, दरशायो संसृति पथ विधान ।
उपकारी तुम बिन और नांहि, दीखत मोकों इस जगत मांहि ।।

तुम सब लायक ज्ञायक जिनन्द, रत्नत्रय सम्पति द्यो अमन्द ।
यह अरज करूं मैं श्री जिनेश, भव भव सेवातुम पद हमेश ।।

भव भव में श्रावक कुल महान्, भव भव में प्रकटित तत्वज्ञान ।
भव भव में व्रत हो अनागार, तिस पालन तें हों भवाब्धि पार ।।

ये योग सदा मुझको लहान, हे दीनबन्धु करुणा-निधान ।
"दौलत आसेरी" मित्र दोय, तुम शरण गही हरषित सुहोय ।।

घत्ता

जो पूजें ध्यावें, भक्ति बढ़ावें, ऋषि मंडल शुभ यंत्र तनी ।
या भव सुख पावें सुजस लहावें परभव स्वर्ग सुलक्ष धनी ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय रोग-शोक-सर्व-संकट हराय सर्व-शान्ति-पुष्टि-कराय, श्री वृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग अरहतादि पंच-पद, दर्शन ज्ञान चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधि-धारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि, बीस चार सूर, तीन ह्रीं, अर्हंतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला-पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आशीर्वाद

ऋषि मंडल शुभ यन्त्र को, जो पूजे मन लाय।
ऋद्धि सिद्धि ता घर बसैं, विघन सघन मिट जाय॥
विघन सघन मिट जाय, सदा सुख सो नर पावै।
ऋषि मंडल शुभ यंत्र तनी, जो पूज रचावै॥
भाव भक्ति युत होय, सदा जो प्राणी ध्यावै।
या भव में सुख भोग, स्वर्ग की सम्पत्ति पावै॥
या पूजा परभाव मिटे, भव भ्रमण निरन्तर।
यातैं निश्चय मानि करो, नित भाव भक्तिधर॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

卐—卐

श्री पद्मावती पूजा

जगजीवन को शरण, हरण भ्रम तिमिर दिवाकर।
गुण अनन्त भगवन्त कंथ, शिवरमणि सुखाकर॥
किशनबवन लजिमदन, कोटिशशिसदन विराजैं।
उरगलच्छन पगधरण, कमठ मद खण्डल साजैं॥
अनन्त चतुष्टय लक्षिकर, भूषित पारस देव।
त्रिविध नमौं शिरनायके, करूं पद्मावती सेव॥१॥

दोहा

आह्वानन बहुविधि करों, इस थल तिष्ठो आय।
सत्य मात पद्मावती, दर्शन दीजो धाय।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेव्यै अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

गंगा हृदनीरं सुरभिसमीरं आकृतक्षीरं ले आयो।
रतनन की झारी भरि कर धारी आनंदकारी चितचायो।।
पद्मावति माता जगविख्याता, दे मोहि साता मोदभरी।
मैं तुम गुणगाऊं हर्ष बढ़ाऊं, बलिबलि जाऊं धन्यघरी।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै जलं।

गोशीर घिसायो केशर लायो, गंध बनायो स्वच्छमई।
आतापविनाशे चितहुल्लासे, सुरभि प्रकाशे शीतमई।।
।।पद्मा० चन्दनं०।।

मुक्ता उनहारं अक्षतसारं, खण्ड निवारं गन्धभरे।
शशिज्योतिसमानं मिष्ट महानं, शक्तिप्रमानं पुंजधरे।।
।।पद्मा० अक्षतं०।।

चम्पारू चमेली केतकि सेली, गंध जु फैली चहुं ओरी।
चितभ्रमरलुभायो मन हरषायो, तुमढिंग आयो सुन मोरी।।
।।पद्मा० पुष्पं०।।

घेवर घृतसाजे खुरमाखाजे, लाडू ताजे थार भरे।
नैनन सुखदाई तुरत बनाई, कीरत गायी अग्रधरे।।
।।पद्मा० नैवेद्यं०।।

दीपकशशिजोतं तमक्षयहोतं, ज्ञान उद्योतं छाय रह्यो ।
ममकुमतविनाशीसुमतप्रकाशी, समताभाषी सरनलह्यो ।।
पद्मावति माता जगविख्याता, दे मोहि साता मोदभरी ।
मैं तुम गुणगाऊँ हर्ष बढ़ाऊ, बलिबलि जाऊं धन्यधरी ।।
।।दीपं०।।

कृष्णागरूधूपं सुरभिअनूपं, मन वच रूपं खेवत हो ।
दशदिश अलि छाये वाद्य बजाये, तुम चरणाग्रे सेवतुहो ।।
।।पद्मा० धूपं०।।

बादाम सुपारी श्रीफल भारी, आनन्दकारी भरिथारी ।
तुम चरनचढ़ाऊं चित उमगाऊं, वांछित पाऊं बलिहारी ।।
।।पद्मा० फलं०।।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू चित दीप धूप फल लाय धरे ।
शुभ अर्घ बनायो पूजन धायो तूर बजायो नृत्य करे ।।
।।पद्मा०।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै अर्घं नि० स्वाहा ।

अथ जयमाला

श्री पद्मावति माय, गुण अनेक तन शोभते ।
अब वर्णन जयमाल के, सुनौं सुजन मन लाय के ।।१।।

पद्धरी छन्द

जय तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ, प्रणमूं तिरकाल नवाय माथ ।
जिन मुख तें बानी खिरी सार, सब जीवन को आनन्दकार ।।
छद्मस्थ अवस्था को जु वर्ण, सुनियो भविचित्तलगाय कर्ण ।
इक दिन हय चढ़ि कर पार्श्वनाथ, अरू सखा अनेकों लिये साथ ।।

गंगा तट आये मोद ठान, तहां तापस कुतप करै अयान।
इक काष्ठथूल में नाग दोय, तपस को कुछ नहिं ज्ञान सोय ॥

वह काष्ठ अग्नि में दियो लगाय, उरगनिको संकट परो आय।
यह भेद जान श्री पार्श्वदेव, तापस के ढिग आये स्वमेव ॥

तासों बोले नहिं ज्ञान तोय, हिंसामय तप करि कुगति होय।
चीरो जु काष्ठ तत्काल सोय, काढ़े सु नागिनी नाग दोय ॥

तिनके जु कंठ गत रहे प्राण, पारस प्रभु करुणा धर महान।
तिनके वचनामृत हैं महान, निर्मल भावों से सुने कान ॥

तत्काल पुण्यसमुदाय होय उत्तम गति बन्ध कियो सु दोय।
सन्यास कियो मन को लगाय, धरणेन्द्र पद्मावती लहाय ॥

सो हि पद्मावती मात सार, नित प्रति पूजौं मैं बार बार।
बहुतें जीवन उपकार कीन, मेरी बारी मैं बहुत दीन ॥

जल आदिक वसुविधि द्रव्यलाय, गुणगान गाय बाजे बजाय।
घननन घननन घन्टा अरन्त, तननं तननं नूपुर तुरन्त ॥

ताथेई थेई थेई घुंघरू करन्त, झुकि-झुकि झुकि-झुकि फिर पग धरन्त।
बाजत सितार मिरदंग साज, बीणा मुरली मधुरी आवाज ॥

करि नृत्य गान बहु गुण बखान, कहंलौं महिमा वरने अगान।
"सेवक" पर सदा सहाय कीन, विनती मोरी सुनियो प्रवीन ॥

घत्ता

पद्मावति माता, तुम गुण गाता, आनन्द दाता, कष्ट हरो।
सुन माता मोरी, शरण जु तोरी, लखि मम ओरी, धीर धरो ॥

दोहा

हे माता मम उर विषें, पूरण तिष्ठो आय ।
रहै सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय ।।

इत्याशीर्वादः ।

जाप्य-मंत्र

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय फणामणि-मंडिताय कमठमानविध्वंसनाय सर्वग्रहोच्चाटनाय सर्वोपद्रवशांति कुरु कुरु स्वाहा ।

श्री ऋषि मंडल की आरती

ॐ जय ऋषि मंडल यन्त्रं, स्वामी जय ऋषि मंडल यन्त्रं ।
तुमको सुमरे निशिदिन २, नाशत भव तन्त्रम् ।।१।।

ह्रींकार शुभ मध्य विराजे गोलाकार मझार—
स्वामी गोलाकार मझार ।।
ध्यान करें हम निश दिन २, होवें भवदधि पार ।ॐ। ।।२।।

ध्यावे तुमको मन वच तन से, पूर्ण मनोरथ पाय—
स्वामी पूर्ण मनोरथ पाय ।।
रोग शोक सर्पादिक वृश्चिक दूर भगाय ।ॐ। ।।३।।

शाकिनि डाकिनी भूत पिशाचा, नाम से दूर भगाय ।
स्वामी नाम से दूर भगाय ।।
निर्धन धन को पावे २, कीरति जग में पाय ।ॐ। ।।४।।

हुई सम्पदा नष्ट जिन्हों की, फिर पाई सुखदाय—
स्वामी फिर पाई सुखदाय ॥
नाचे कूदे गाये २, मन में बहु हर्षाय ।ॐ। ॥५॥
ऋषि मण्डल की करे आरती, दीपक ले उमगाय ।
स्वामी दीपक ले उमगाय ॥
वीर सिन्धु गुरु नांवे २, सेवक शिवपुर पाय ।ॐ। ॥६॥

श्री जिनवाणी माता की आरती

ॐ जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, सुरनर मुनि ज्ञानी ॥टेक॥
श्री जिन गिरितें निकसी, गुरु गौतम वाणी ।माता
जीवन भ्रम तम नाशन, दीपक दरपाणी ॥ॐ जय०॥
कुमति कुलाचल चूरण, वज्र सु सरधानी माता ।
नय प्रमाण निक्षेपण, देखन दरपाणी ॥ॐ जय०॥
पातक पंक पखालन, पुण्य परम वाणी ।माता
मोह महार्णव डूबत, तारण नौकाणी ॥ॐ जय०॥
लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी ।माता
निज पर भेद दिखावन, सूरज किरणानी ॥ॐ जय०॥
श्रावक मुनिगण जननी, तुम ही गुणखानी ।माता
सेवक लख शुभदायक, पावन परमाणी ॥ॐ जय०॥
ॐ जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, सुरनर मुनि ज्ञानी ॥

श्री पद्मावती माता की आरती

पद्मावति माता, दर्शन की बलिहारियां ।।दो बार।।
पार्श्वनाथ महाराज विराजे मस्तक ऊपर थारे,
माता मस्तक ऊपर थारे ।
इन्द्र, फणेन्द्र, नरेन्द्र सभी मिल, खड़े रहें नित द्वारे ।
पद्मावति माता, दर्शन की बलिहारियां ।।दो बार।।
जो जीव थारो शरणो लीनों, सब संकट हर लीनों,
हे माता सब संकट हर लीनो ।
पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, सम्पदा, मंगलमय कर दीनो ।
हे पद्मावति माता, दर्शन की बलिहारियां ।।दो बार।।
डाकिनी, साकिनी, भूत, भवानी नाम लेत भग जाये,
माता नाम लेत भग जाये ।
वात, पित्त, कफ, कुष्ट मिटे अरु तन में शुध हो जावे ।
हे पद्मावति माता, दर्शन की बलिहारियां ।।दो बार।।
दीप, धूप अरु पुष्प आरती, ले दर्शन को आयो,
हे माता ले दर्शन को आयो ।
दर्शन करके माता तिहारो, मनवांछित फल पायो ।
हे पद्मावति माता, दर्शन की बलिहारियां ।।दो बार।।
चक्रेश्वरी माता दर्शन की बलिहारियां ।
जब भक्तों में भीड़ पड़ी है रक्षा तुमने कीनी,
हे माता रक्षा तुमने कीनी ।

बैरियों का अभिमान छोड़, महा मोक्ष फल पायो,
हे पद्मावति माता, दर्शन की बलिहारियां ॥दो बार॥
चक्रेश्वरी माता दर्शन की बलिहारियां।

क्षेत्रपाल बाबा जी की आरती

ॐ जय क्षेत्रपाल देवा, स्वामी जय रक्षपाल देवा।
विजयभद्र मणिभद्र कहे हैं २, वीरभद्र देवा ॥ॐ जय॥
भैरव देव जगत में माने, अपराजित देवा ।स्वा०
जिन भक्तन के संकट २, दूर करें देवा ॥ॐ जय॥
स्वर्ण रतनमय मुकुट शीश पे, कर में शस्त्र धरें ।स्वा०
सम्यग्दर्शन मंडित २, संकट शीघ्र हरें ॥ॐ जय॥
गुड़ सिंदूर तैल कंठ में, मोतिन की माला ।स्वा०
रतनत्रय परतीक जनेऊ २, कंठ में है आला ॥ॐ जय॥
देव शास्त्र गुरू धर्मालय के रक्षक हैं बाबा ।स्वा०
रोग शोक भय नाशक २, सुखप्रद हैं बाबा ॥ॐ जय॥
मुक्ति बल्लभापति जिनवर के चरण कमल सेवी ।स्वा०
धर्म प्रभावन तत्पर २, मंगल गुण ये भी ॥ॐ जय॥
भूत प्रेत दुख दारिद्र नाशो, सब वांछित पूरो ।स्वा०
धन सुत संपति देकर २, सकल सौख्य पूरो ॥ॐ जय॥
जे प्रवीन जन क्षेत्रपाल की, आरति नित गावें ।स्वा०
परम कृपाला दीनदयाला, विंछित फल पावे ॥ॐ जय॥

卐—卐

द्वितीय खण्ड

पूज्य, गणिनी

आर्यिकारत्न

श्री ज्ञानमती माताजी

द्वारा रचित पूजाएँ

मंगलाष्टकस्तोत्रम्

शार्दूलविक्रीडित छंदः

सिद्धेः कारणमुत्तमा जिनवरा आर्हन्त्यलक्ष्मीवराः ।
मुख्या ये रसविग्युता गुणभृतस्त्रैलोक्यपूजामिताः ॥
चित्ताब्जं प्रविकासयंतु मम भो ! ज्योतिःप्रभा भास्कराः ।
तीर्थेशा वृषभादिवीरचरमाः कुर्वंतु नो मंगलम् ॥१॥
या कैवल्यविभा निहंति भविनां ध्वांतं मनःस्थं महत् ।
सा ज्योतिः प्रकटीक्रियान्मम मनोमोहान्धकारं हरेत् ॥
या आश्रित्य वसंति द्वादशगणा वाणीसुधापायिनः ।
तास्तीर्थेशसभा अनंतसुखदाः कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥२॥
पृथ्व्यां गंधकुटीं दधाति कटनी रत्नाविभिर्निर्मिता ।
एतस्यां हरिविष्टरे मणिमये मुक्ताफलाद्यैर्युते ॥
आकाशे चतुरंगुले जिनवरास्तिष्ठंति धर्मेश्वराः ।
एते गंधकुटीश्वराः [1]वरजिनाः कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥३॥
ये त्रिंशत् चतुरुत्तरा अतिशया ये प्रातिहार्या वसुः ।
येऽप्यानन्त्यचतुष्टया गुणमया दोषाः किलाष्टादश ॥
ये दोषैः रहिता गुणैश्च सहिता देवाश्चतुर्विंशतिः ।
ते सर्वस्वगुणा अनंतगुणिताः कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥४॥

---

१. व शब्द से ४ तथा 'र' शब्द से २ लेने पर २४ तीर्थंकर अर्थ हो जाता है ।

भाषासर्वमयो ध्वनिर्जिनपतेर्दिव्यध्वनिर्गीयते ।
आनन्त्यार्थसुभृत् मनोगततमो हंति क्षणात्प्राणिनः ।।
[1]दिव्यास्थानगतामसंख्यजनतामाल्हादयन् निःसृतः ।
ते दिव्यध्वनयस्त्रिलोकसुखदाः कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।५।।

ये तीर्थंकरशिष्यतामुपगताः सर्वर्द्धिसिद्धीश्वराः ।
ये ग्रथ्नंति किलांगपूर्वमयसच्छास्त्रं ध्वनेराश्रयात् ।।
ये ते विघ्नविनाशका गणधरास्तेषां समस्तर्द्धयः ।
ते शांतिं परमां च सर्वसिद्धिं कुर्वंतु नो मंगलम् ।।६।।

अष्टाविंशतिमूलवृत्तसहिता[2] उत्तरगुणैर्मंडिताः ।
पंचाचारपरायणाः प्रतिक्षणं स्वाध्यायमातन्वते ।।
आचार्यादिमुनीश्वराः बहुविधा ध्यानैकलीना मुदा ।
ते सर्वेऽपि दिगंबरा मुनिगणाः कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।७।।

लेश्याशुक्लमिव प्रशस्तमनसः शुक्लैकवस्त्रावृताः ।
लज्जाशीलविशुद्धसर्वचरणाः स्वाध्यायशीलाः सदा ।।
याः साध्व्यश्च महाव्रतांगशुचयो वंद्याः सुरेंद्रैरपि ।
ताः सर्वाः अमलार्यिकाः प्रतिदिनं कुर्वंतु नो मंगलम् ।।८।।

यद्द्रव्यार्थिकतोऽप्यनादिनिधनं पर्यायतः सादपि ।
जैनेंद्रं वरशासनं शिवकरं तीर्थेश्वरैः वर्तितम् ।।
कुर्यात् ज्ञानमतिं श्रियं वितनु मे नंद्याच्च जीयाच्चिरम् ।
श्रीतीर्थंकरशासनानि सततं कुर्वंतु नो (वो) मंगलम् ।।९।।

卐—卐

---

१. समवसरण मे आये हुए ।
२. मूलचारित्र अर्थात् मूलगुण ।

पूजामुखविधि

निःसंग हो हे नाथ ! आप दर्श को आया।
स्नान त्रय से शुद्ध धौत वस्त्र धराया ॥
त्रैलोक्य तिलक जिनभवन की वंदना करूं।
जिनदेवदेव को नमूं सम्पूर्ण सुख भरूं ॥१॥

(जिनमंदिर के निकट पहुँचकर यह श्लोक पढ़कर मंदिर को नमस्कार कर चारों दिशा में तीन-तीन आवर्त एक-एक शिरोनति करते हुये मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देवें पुनः पैर धोकर अन्दर प्रवेश करे।)

ॐ ह्रीं ह्रुं ह्रूं णिसिहि स्वाहा।

यह मंत्र बोलकर मंदिर में प्रवेश कर नीचे लिखा मंत्र पढ़कर हाथ धोवें।

हाथ धोने का मंत्र—

ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा।

पुनः हाथ जोड़कर दर्शन स्तोत्र पढ़ें—

हे नाथ ! आप दर्श करके हर्ष हो रहा।
आनन्द अश्रु झड़ रहे सब पाप धो रहा ॥
जीवन सफल हुआ मैं आज धन्य हो गया।
प्रभु भक्ति से निज सौख्य में निमग्न हो गया ॥२॥

पुनः ईर्यापथ शुद्धि करें—

पडिक्कमामि भंते। इरियावहियाए विराहणाए अणागुत्ते, अइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चार-पस्सवण खेलसिंहाणवियडिपइट्ठावणियाए जे जीवा एइंदिया वा, वेइंदिया वा, तेइंदिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिंच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिदिदा वा, भिंदिदा वा,

ठाणदो वा, ठाणचंकमणदो वा, तस्स उत्तरगुणं, तस्स पायच्छित्तकरणं, तस्स विसोहिकरणं, जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(९ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें।)

इच्छामि भंते। आलोचेउं इरियावहियस्स पुव्वुत्तर-दक्खिणपच्छिम-चउदिसु विदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिट्ठिणा भव्वेण दट्ठव्वा पमाददोसेण डवडवचरियाए पाणभूदजीवसत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ॐ क्ष्वीं भूः शुद्ध्यतु स्वाहा।　　　　(बैठने की जगह पानी छिड़कें।)

ॐ ह्रीं क्ष्वी आसन निक्षिपामि स्वाहा।　　　　(आसन बिछावें।)

ॐ ह्रीं ह्यु ह्युं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा। (आसन पर बैठें।)

ॐ ह्रीं मौनस्थिताय स्वाहा (मौन ग्रहण करें अर्थात् पूजा-पाठ के सिवाय अन्य बातें न करें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा (पूजा के बर्तन धोवें या उन पर जल छिड़कें।)

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः असि आ उसा समस्ततीर्थं पवित्रजलेन शुद्धपात्रनिक्षिप्तपूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा सामग्री पर जल छिड़कें।)

अथकृत्यविज्ञापना—

भगवन्! नमोऽस्तु ते एषोऽहं जिनेंद्रपूजावंदनां कुर्याम्।

पुनः सामायिक स्वीकार करें—

वसंततिलका छन्द—

संसार के भ्रमण से अति दूर हैं जो।
ऐसे जिनेंद्र पद में नित ही नमूं मैं॥
सम्पूर्ण सिद्धगण को सब साधुओं को।
वंदूं सदा सकल कर्म विनाश हेतु॥१॥

✓ है साम्यभाव सब प्राणी में हमारा।
है ना कभी किसी से मुझे वैर किञ्चित् ।।
सम्पूर्ण आश तज के शुभभाव धारूं।
संसार दुःख हर सामायिक करूं मैं ।।२।।

पुनः कार्य का विज्ञापन करें—

भगवन् ! नमोस्तु प्रसीदन्तु प्रभुपादा वदिष्येऽहं । एषोऽहं तावच्च सर्वसावद्ययोगाद्विरतोस्मि ।

अथ जिनेंद्रपूजावंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भाव-पूजावंदनास्तवसमेतं श्रीमद्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।।

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगल, सिद्ध मंगलं साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि ।

जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि । ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

(९ बार णमोकार मंत्र का जाप्य)

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे ।
णरपवरलोयमहिये विहुयरयमले महप्पण्णे ।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे ।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ।।१।।

सिद्ध भक्ति—

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।
णाणम्हि दंसणम्हि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ।।२।।

इच्छामि भंत्ते। सिद्धभत्ति काओसग्गो कओ तस्स आलोचेउं। सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठ-गुणसंपण्णाणं। उड्ढलोयमत्थयम्हि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इतिपूजामुखविधिः।

(यह पूजा प्रारम्भ विधि हुई।)

卐—卐

पंचामृत अभिषेक पाठ

(श्री पूज्यपाद आचार्य विरचित)

(पद्य में भावानुवादकर्त्री—आर्यिका ज्ञानमती)

चाँनु छन्द

अर्हंत देव को प्रणमन कर, जल से स्नान कर शुद्ध हुआ।
सन्मंत्रस्नान व्रतस्नान कर, जिन गंधोदक से शुद्ध हुआ।।
आचमन अर्घ कर धुले धवल, धोती व दुपट्टे को पहने।
जिनमंदिर की त्रय प्रदक्षिणा कर, नमूं शीश नत विधिवत् मैं।।१।।
जिनगृह के द्वार खोल वेदी का वस्त्र हटा प्रभु दर्श करूं।
ईर्यापथ शुद्धि व सिद्ध भक्ति, विधि से कर सकलीकरण करूं।।
जिनयजन हेतु भूशुद्धि अर्चना द्रव्य पात्र अरु आत्म शुद्धि।
करके भक्ती से जिन अभिषव, प्रारंभूं मैं कर त्रिधा शुद्धि।।२।।

[सौगंध्य संगत मधुव्रत झंकृतेन।
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्य।
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानां[1]।।

(यह श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से भगवान के चरणों में चंदन लगाकर उसी चंदन से अपने माथे में तिलक करें।)

तिलक लगाने के मंत्र[2]—

१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (ललाटे)

२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (हृदये)

---

१. श्रीअभयनंदि आचार्य विरचित अभिषेक पाठ से।
२. श्रीनेमिचंद्रप्रतिष्ठातिलक से।

३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(दक्षिणे भुजे)

४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(वाम भुजे)

५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(कंठे)

(मात्र ललाट में ही तिलक लगाना हो तो प्रथम मंत्र ही बोलें।)

पूजन की थाली में स्वस्तिक बनाने की विधि—

५
२४ 卐 २
३

निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुये स्वस्तिक के चारों दिशाओं में अंक लिखें—

रयणत्तयं च वंदे चउवीसजिणं च सव्वदा वंदे।
पंचगुरुणां वंदे चारणचरणं सदा वंदे ॥]

ॐ श्री जिनेन्द्र मुझ चित्त पवित्र कीजे।
था स्नानपीठ तव मेरु गिरीन्द्र ऊँचा॥
जन्माभिषेक करके सुर इन्द्र हर्षे।
मैं भी करूं न्हवन आज प्रभो तुम्हारा ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भूः स्वाहा।

(प्रस्तावना हेतु पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

ॐ तीर्थंकृत न्हवन भूमि पवित्र हेतू।
शुद्धी करूं जल लिये बहु पुण्य संचूं॥
अग्नि प्रजाल पुनि नाग सुतर्पणं भी।
श्री क्षेत्रपाल अरचूं शुचि अर्घ देके ॥४॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्री शांतिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यो नमो भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

(जल छिड़क कर भूमि शोधन करना।)

ॐ ह्रीं क्ष्मीं अग्निं प्रज्वालयामि निर्मलाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं वन्हिकुमाराय स्वाहा।
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा। (कपूर जलाना।)
ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः नागेभ्यः स्वाहा। (नाग संतर्पण करना।)
ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा। (क्षेत्रपाल को अर्घ चढ़ाना।)

अर्हंतदेव अर्चा विधि विघ्नहारी।
इन्द्रादि दस दिशि सुदर्भ धरूं रुची से॥
यज्ञोपवीत बहु आभरणादि धारूं।
भू अर्चके जिन जजूं अब इंद्र होके॥५॥

ॐ ह्रीं क्रों दर्पमथनाय नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं नीरजसे नमः स्वाहा। (जलं)
ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः स्वाहा। (चंदनं)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः स्वाहा। (अक्षतं)
ॐ ह्रीं विमलाय नमः स्वाहा। (पुष्पं)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः स्वाहा। (नैवेद्यं)
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा। (दीपं)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः स्वाहा। (धूपं)
ॐ ह्रीं अभीष्ट फलदाय नमः स्वाहा। (फलं)
ॐ ह्रीं भूमि देवतायै नमः अर्घं....

(इस प्रकार दर्भ स्थापना, अष्टविध अर्चा—भूमिपूजा करें।)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा।

(इन मंत्रों को पढ़कर यज्ञोपवीत धारण करें। आभूषण-मुकुट, हार, मुद्रिका आदि पहनें।)

ॐ ह्रीं इन्द्रोऽहं स्वाहा।

(यह मंत्र बोलकर मैं इंद्र हूँ ऐसा समझें।)

ये चार स्वर्ण कलशे जल से भरे हैं।
ये भव्य क्षेमकर चारहिं कोण थापूं॥

श्री मेरु पे रुचिर पांडुक है शिला जो।
श्रीपीठ तद्वत सुथाप सुधोय पूजूं ॥६॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(चार कोनों में चार कलश स्थापित करना*।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रौ नेवाय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।

(कलशों को अर्घ चढ़ाना।)

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठ ठ श्रीपीठं स्थापयामि स्वाहा।

(अभिषेक के लिये जलोट[1] या थाली स्थापित करना।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रजलेन श्रीपीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(जल से श्रीपीठ का प्रक्षालन करना।)

ये नीर चंदन सुअक्षत पुष्प लेके।
नैवेद्य दीप वर धूप मधुर फलों से॥
श्री पीठ अर्चन करूं जिननाथ की ये।
इंद्रादिवंद्य मुनिवंदित सौख्यकारी॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा।

(श्रीपीठ के लिये अर्घ चढ़ाना।)

ॐ ह्री दर्पमथनाय स्वाहा।

(श्री पीठ में दर्भ स्थापित करना या पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

---

१. जिसमे भगवान् को विराजमान कर अभिषेक करते हैं उसे श्रीपीठ कहते है, उसे जलोट भी कहते है।

*जल शुद्धिकरण मंत्र—

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकगंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकातासीतासीतोदानारीनरकातासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघटप्रक्षालितनवरत्नगंधाक्षतपुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। इति जलेन प्रसिच्य पवित्रीकरण।

श्रीकारवर्ण लिखके वसु अर्घ अर्पूं।
जैनेंद्रबिंब इस पे वर भक्ति थापूं॥
श्रीपाद पद्मयुग को प्रक्षाल करके।
त्रैलोक्य ईश पद पंकज को नमूं मैं ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा।

(श्रीपीठ में श्रीकार लिखे।)

ॐ ह्रीं श्री श्रीयंत्रं पूजयामि स्वाहा।

(श्रीकार के लिये अर्घ चढ़ावे।)

ॐ ह्रीं ध्यातृभिः अभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं धात्रे वषट् नमः स्वाहा।

(जिन प्रतिमा के चरण का स्पर्श करे।)

ॐ ह्रीं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(श्रीवर्ण पर जिन प्रतिमा को विराजमान करें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पवित्रतरजलेन पात्रद्रव्यशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(जल छिड़ककर पात्र व द्रव्य की शुद्धि करें।)

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रजलेन श्रीपाद प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(जिन प्रतिमा के चरणों का प्रक्षालन करें।)

दूर्वादि धौत सित तंदुल स्वस्तिकादी।
सरसों समेत कर्पूर प्रजाल करके॥
रक्षामणी त्रिजग के जिनराज की मैं।
नीराजना विधि सुआरति मैं उतारूं ॥९॥

ॐ ह्रीं क्रों समस्तनीराजनद्रव्यैर्नीराजनं करोमि दुरितमस्माकमपहरतु भगवान् स्वाहा।

(थाली में दूब, अक्षत, सरसों, स्वस्तिक आदि रखकर कपूर जलाकर आरती उतारते हुये नीराजना करें।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पाद्यमर्घं करोमि नमोऽर्हद्भ्य: स्वाहा ।

(अर्घ चढ़ावें ।)

पानीय गंध सित तंदुल पुष्पमाला ।
मिष्ठान्न दीप वर धूप फलादि भरके ।।
अर्हंत देव चरणाब्जयुगं जजूं मैं ।
इंद्रादिवंद्य जिनवंद निजात्म पाऊं ।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा । (जलं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा । (चंदनं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनादिनिधनेभ्यः स्वाहा । (अक्षतं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा । (पुष्प)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतज्ञानेभ्यः स्वाहा । (नैवेद्यं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतदर्शनेभ्यः स्वाहा । (दीप)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतवीर्येभ्यः स्वाहा । (धूप)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतसौख्येभ्यः स्वाहा । (फलं)

(यह अष्टविध अर्चन हुआ ।)

उदकचदनतंदुल···अर्घं ।

पूर्वादि दशदिक् क्रमात् दश दिक्कपाला ।
ये इंद्र अग्नि यम नैऋत बरुण नामा ।।
वायू कुबेर ईशान फणीन्द्र चंद्रा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा लो यज्ञभागा ।।११।।

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षण संपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारा इन्द्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरेशानधरणेंद्रसोमनामदशलोकपाला आगच्छत आगच्छत संवौषट् स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः मम अत्र सन्निहिता भवत भवत वषट् इदं अर्घं पाद्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं ॐ भूर्भुः स्वः स्वाहा स्वधा ।

(इन्द्र आदि दस दिक्पाल देवों को अर्घ चढ़ावे ।)

ॐ धर्म चक्रपति के अभिषेक हेतू ।
संगीत गीत युत वाद्य सुघोष फैला ।।
मैं पूर्ण कुंभ विधि से कर में उठाऊँ ।
उद्धार हेतु यह कुंभ जगत्त्रयी का ।।१२।।

ॐ ह्री स्वस्तये पूर्णकलशोद्धरणं करोमि स्वाहा ।

(जल से भरा पूर्ण कलश हाथ में उठावे ।)

जल से अभिषेक—

जैनेन्द्र देव अभिषेक विधि करूं मैं ।
कल्याण नीरभृत निर्झरणी यही है ।।
त्रैलोक्य भव्यजन को सुख शांति देती ।
स्वामी करूं न्हवन मैं जल से तुम्हारा ।।१३।।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं स स तं तं पं पं झं झं झ्वी क्ष्वीं हं सं त्रैलोक्यस्वामिनो जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा । उदकचंदन····अर्घं

नारियल के जल से अभिषेक—

जो चन्द्रकांतमणि के जल सम धवल है ।
पीयूषवत् अतुल स्वाद लिये अमल है ।।
इस नालिकेर रस से अभिषेक करके ।
चाहूँ प्रभो ! मुझ वचन इसके सदृश हों ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं झ्वीं क्ष्वी हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो नालिकेररसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा । उदकचंदन····अर्घं

इक्षुरस का अभिषेक—

तत्काल पेलकर पात्र भरा लिया है।
माधुर्य पूर्णयुत ये रस इक्षु का है॥
हे नाथ ! आप अभिषेक करूं रुचि से।
मेरे वचन त्रिजग कर्ण रसायनं हों॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो इक्षुरसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचदन····अर्घं

घृत से अभिषेक—

अत्यंत पुष्टिकर ये घृत तृप्तिकारी।
संताप दूरकर अतिशय कांति देता॥
घी से जिनेन्द्र अभिषेक करूं अभी मैं।
दीर्घायु हो अतुल शक्ति बढ़े इसी से॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो घृताभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन····अर्घं

दूध से अभिषेक—

पूर्णा शशांक किरणों सम कांति धारे।
ये दूध उत्तम रसायन विश्व में है॥
हे नाथ ! क्षीरघट से अभिषेक करके।
मैं कामधेनु सम वांछित प्राप्त करलूं॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो दुग्धाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन····अर्घं

दधि से अभिषेक—

जैनेंद्र कीर्ति यह एकत्रित हुई क्या ?
क्षीरोदधी पय हुआ बस वर्फ सम ही ॥
अति मंगलीक दधि से अभिषेक करके ।
त्रैलोक्य मंगलमयी निज सौख्य पाऊं ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो दधिअभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा । उदकचंदन····अर्घं

सर्वौषधि से अभिषेक—

एलालवंग कर्पूर सुचंदनादी ।
नाना सुगंधवर वस्तु मिलाय करके ॥
सर्वौषधि मिलितसार कषाय जल से ।
संसाररोगहर हेतु करूं न्हवन मैं ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः सर्वौषधिअभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा । उदकचदन····अर्घं

चार कोण कलशो से अभिषेक—

तृष्णा निवारण करें बहु पुण्यकारी ।
मांगल्यद्रव्य वर मिश्रित कोण कलशे ॥
त्रैलोक्य नाथ जिन का अभिषेक करके ।
पा जाऊं शीघ्र निज के सुचतुष्टयों को ॥२०॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमोऽर्हते भगवते मंगलोत्तमकरणाय कोणकलशजलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा । उदकचंदन ····अर्घं

चंदन विलेपन—

त्रैलोक्य पुण्यप्रद चंदन को घिसा है।
सौभाग्यकारि जिनबिंब विलेप हेतु ।।
सौरभ्य प्राप्त कर लूं निज के गुणों को।
हे नाथ ! आप गुणसौरभ विश्वव्यापा ।।२१।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो कल्कचूर्णैः उद्वर्तनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचदन…अर्घं

[पुष्पवृष्टि—

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।]

(पुष्पवृष्टि करें।)

आरती—

ॐ ह्रीं क्रों समस्तनीराजनद्रव्यैः नीराजन करोमि दुरितं अस्माक अपहरतु भगवान् स्वाहा।

(आरती उतारें।)

सुगन्धित जल से अभिषेक—

कर्पूर चूर्ण मलयागिरि चंदनादी।
नाना सुगंधिकर द्रव्य मिलाय लीने ।।
गंधाम्बु से नित करूं अभिषेक प्रभु का।
कैवल्यज्ञानमय आत्म ज्योति पाऊं ।।२२।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हन् असि आ उ सा नमः मम सर्वशांतिं कुरु कुरु, मम सर्वतुष्टिं कुरु कुरु, मम सर्वपुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा स्वधा। उदकचंदन…अर्घं

[शांतिधारा

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजो-मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्न-विनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा मम [१..............] सर्वक्रोध छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्वमानं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्वमायां छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्वलोभ छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्वमोहं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्वरागं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्वद्वेषं छिन्दि छिन्दि भिन्दि२ सर्वज्ञाना-वरणकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वदर्शनावरणकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्ववेदनीयकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वमोहनीयकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वायु कर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वनामकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वगोत्रकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वान्तिरायकर्म छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वगजभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वसिंहभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वाग्निभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वसर्पभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वयुद्धभयं छिन्दि२ भिन्दि सर्वसागरनदी-जलभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वजलोदरभगधरकुष्ठकामलादिभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वनिगडादिबधनभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वचतुष्च-क्रिकादुर्घटनाभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्ववाष्पधानीविस्फोट-कभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वभूतपिशाचव्यतरडाकिनी-शाकिन्यादिभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वधनहानिभय छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वव्या-पारहानिभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वराजभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वचौरभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वदुष्टभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वशत्रुभयं छिन्दि२

रचयित्री—आर्यिका ज्ञानमती

१. जिसके लिये शांतिधारा करनी हो उसका नाम लेवें।

भिन्दि२ सर्वशोकभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्ववैरं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वदुर्भिक्षं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वमनोव्याधिं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वार्तरौद्रध्यानं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वदुर्भाग्यं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वायशः छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वपापं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वअविद्यां छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वप्रत्यवायं छिन्दि२ भिन्द२ सर्वकुमतिं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वक्रूरग्रहभयं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वदुःखं छिन्दि२ भिन्दि२ सर्वापमृत्युं छिन्दि२ भिन्दि२ ।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर–शिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनताअभयदानदायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहतिमहावीरसन्मतिवीरातिवीरवर्द्धमाननामालंकृतश्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वेजिनभक्ताः सुखिनो भवन्तु ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ...... देशे-वीरसंवत्..... ...तमे... ...मासे .. ... पक्षे....... तिथौ ...... वासरे.......अस्मिन् विधानावसरे[1] विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिकाश्रावकश्राविकाणां चतुर्विधिसंघस्य मम च [.......?] शान्ति करोतु मंगल तनोतु इति स्वाहा ।

हे षोडशतीर्थंकर ! पंचम चक्रवर्तिन् ! कामदेवरूप ! श्री शांतिजिनेश्वर ! सुभिक्ष कुरू कुरू मनः समाधि कुरू२ धर्मशुक्लध्यानं कुरू२ सुयशः कुरू कुरू सौभाग्य कुरू२ अभिमतं कुरू२ पुण्य कुरू२ विद्यां कुरू२ आरोग्य कुरू२ श्रेयः कुरू२ सौहार्दं कुरू२ सर्वारिष्टग्रहादीन् अनुकूलय अनुकूलय कदलीघातमरणं घातय घातय आयुर्द्राघय द्राघय सौख्यं साधय साधय ॐ ह्रीं श्रीं शान्तिनाथाय जगत् शान्तिकराय सर्वोपद्रव शान्तिं कुरू२ ह्रींनमः । परम पवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्यो परि शान्तिधारां करोमीति स्वाहा । चतुर्विधसंघस्य मम च [..........] सर्वशान्तिं कुरू२ तुष्टिं कुरू२ पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा ।]

---

१. नित्य मे हो तो 'नित्य पूजा वसरे' बोले । यदि किसी विधान के प्रसंग मे हैं तो उस विधान का यहाँ पर नाम लेवें । यजमान का नाम लेवें ।

गंधोदक लगाने का श्लोक व मंत्र—

मानो हिमाचल महागिरि से गिरी है।
आकाशगंग जलधार पवित्र गंगा ॥
अर्हंत का न्हवन नीर इसे नमूं मैं।
मैं उत्तमांग उर में दृग में लगाऊं ॥२३॥

ॐ नमोऽर्हत्परमेष्ठिभ्यः मम सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा।

(आत्मा को पवित्र करें—गंधोदक को सिर पर, ललाट में, गले में, वक्षस्थल में व नेत्रों में लगावें।)

ॐ ह्रीं ध्यातृभिरभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

卐—卐

अर्हंत पूजा

(ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंकपंक जग का सब दूर होवे ॥
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेंद्रप्रभु की त्रय ताप नाशे ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊं।
चर्चूं जिनेंद्र पदपंकज में रुची से ॥
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेंद्र प्रभु की सब सौख्य देती ॥२॥
ॐ ह्री अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा। (चंदनं)

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं ॥
अर्हंत सन्मुख रखूं बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हों ॥३॥
ॐ ह्री अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः स्वाहा। (अक्षत)

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊं ॥
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में ॥४॥
ॐ ह्री अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा। (पुष्प)

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरू लेकर थाल भरके ॥
अर्हन्त सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूं।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी ॥५॥
ॐ ह्री अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः स्वाहा। (नैवेद्यं)

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके ।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति ।।
ले दीप आरति करूं वरज्ञानज्योति ।
पाऊं अनंत निजज्ञान विकास करके ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः स्वाहा । (दीपं)

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है ।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है ।।
खेऊं दशांगवर धूप जिनेंद्र आगे ।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः स्वाहा । (धूप)

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे ।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें ।।
पूजा करूं फल चढ़ाकर आपकी मैं ।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूं इसी से ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः स्वाहा । (फलं)

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके ।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी ।।
मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही ।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊं ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः स्वाहा । (अर्घं)

श्री पूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते ।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे ॥
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते ।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी ॥१०॥

ॐ ह्रीं नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा । (शांतिधारा करें ।)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके ।
बाहूहजार कर तांडव नृत्य करता ॥
ऐसे जिनेंद्रपद पुष्प चढ़ाय करके ।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊं ॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा ।
(पुष्पांजलि चढ़ाये ।)

शंभु छन्द

चक्रेन्द्र और देवेन्द्र उभय भी अतिशय जिनपूजा करते ।
तब मुझ जैसे अतितुच्छ मनुष क्या अतिशय पूजा कर सकते ॥
फिर भी जिनवर की भक्ति सभी के लिये कामधेनू मानी ।
हे तीर्थनाथ ! तुममें ही मेरी भक्ति स्थिर हो सुखदानी ॥१॥

जो मन वच तन से प्रभू भक्त उन सब जन का मंगल होवे ।
जिन अभिषव महापुण्य कर्ता देवेन्द्रों का मंगल होवे ॥
जिन न्हवन स्तुति में रत राजा की कीर्ति बढ़े मंगल होवे ।
बहुपुण्य व लक्ष्मी सरस्वती सब जन के वृद्धिगत होवे ॥२॥

इस विधि जिनवर अभिषेक व पूजा विधि को निष्ठापित करके।
वर सिद्धचक्र यंत्रादिक को मंत्रों से आराधन करके ॥
चंदन से अठदल कमल बना कणिका मध्य "अर्हन्" लिखिये।
पूरब दिश सिद्ध इतर त्रयदिश में त्रयविध गुरुओं को लिखिये ॥३॥
विदिशा दल में जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा जिनगृह लिखिये।
इस बाहर चूर्णादिक से पाँच कोष्ठक का शुभ मंडल रचिये ॥
उसमें पंद्रह तिथिसुर नवग्रह बत्तीस सुरेंद्र यक्ष यक्षी।
द्वारेश लोकपालों की करता मंत्रों से आह्वान विधी ॥४॥
इस विध पंचोपचार पूजन कर मूलमंत्र से जाप करो।
पुष्पों से मणिमाला या अंगुली से जप इकसौ आठ करो ॥
फिर चैत्यपंचगुरूशांति भक्ति विधिवत् करके जिन आराधो।
वर शांति व गणधरवलय मंत्र को पाँच बार पढ़ आराधो ॥५॥
पुण्याहवाचना कर जिनपदकमलार्चित श्रीशेषा[1] शिर धर।
जिन मंदिर की त्रिकरणशुद्धी से त्रय प्रदक्षिणा भी देकर ॥
प्रभु को नम देवविसर्जन कर जो "पूज्यपाद"[2]-जिन को यजते।
वे "देवनन्दि" से पूजित श्री भू दिव के सौख्य प्राप्त करते ॥६॥

(इस प्रकार श्री पूज्यपाद स्वामि विरचित महाभिषेक पाठ समाप्त हुआ।)

卐—卐

१. आसिका। २. श्रीपूज्यपाद और देवनंदि। ये दोनों नाम श्री पूज्यपादाचार्य के हैं।

पूजा अन्त्य विधि

(अनंतर मणि, मूगा, चांदी आदि की माला से या अंगुली से अथवा १०८ पुष्पो से नीचे लिखे मंत्र का जाप्य करें। समयाभाव में ६ बार मंत्र पढ़कर पुष्प चढ़ावे।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उसा स्वाहा।

पुनः चैत्यभक्ति, पचगुरुभक्ति और शांतिभक्ति पढे—

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

चत्तारि मगल-अरिहत मंगल सिद्ध मंगलं साहुमंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंत लोगुत्तमा सिद्धलोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंत सरण पव्वज्जामि, सिद्ध सरण पव्वज्जामि साहु सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

जाव अरिहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि। ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(६ बार णमोकार मत्र का जाप)

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिये विहुयरयमले महप्पण्णे॥
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरिहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो॥

चैत्यभक्ति—

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांके॥

इष्वाकारेंऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके ।
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यानि तानि ।।१।।

यावंति जिनचैत्यानि विद्यंते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहं ।।२।।

अंचलिका—

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोयतिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासियवाणवितरजोयिसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहिं गंधेहि, दिव्वेहिं अक्खेहिं, दिव्वेहि, पुप्फेहिं, दिव्वेहिं दीवेहि, दिव्वेहि धूवेहि, दिव्वेहि चुण्णेहि, दिव्वेहि वासेहिं, दिव्वेहिं ण्हाणेहि णिच्चकाल अच्चंति, पुज्जति, वंदति णमसन्ति, चेदियमहाकल्लाणं करंति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अचेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेंद्रमहापूजास्तवसमेतं पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं ।

णमो अरिहताणं……आदि पढ़कर ९ बार महामंत्र जपकर थोस्सामि स्तव पढकर नीचे लिखी पंचगुरु भक्ति पढ़े—

पंचगुरु भक्ति—

सर्वान् जिनेंद्रचन्द्रान् सिद्धानाचार्यपाठकान् साधून् ।
रत्नत्रयं च वंदे रत्नत्रयसिद्धये भक्त्या ।।१।।

अंचलिका—

इच्छामि भंते ! पंचमहागुरुभत्ति काओसग्गो कओतस्सालोचेउं । अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं अरिहंताणं । अट्ठमहाकम्मविप्पमुक्काणं सिद्धाणं । अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आइरियाणं । आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं । तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं । भत्तीए णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि । दुक्खक्खओ कम्मखओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेंद्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीशांति भक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।
णमो अरिहंताण ······से पढ़कर ९ जाप्य करके थोस्सामि पढ़कर शांतिभक्ति पढ़ते हुये पुष्प क्षेपण करना चाहिये।

शांति भक्ति

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रं ॥१॥

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्रनरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुंदुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥३॥

तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रंशांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च ॥४॥

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः॥
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः।
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः*॥६॥

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशं।

* यह एक श्लोक पढने से भी शांति भक्ति हो जाती है।

दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके ।
जैनेंद्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥
प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वंतु जगतां शांति वृषभाद्याः जिनेश्वराः ॥८॥

अंचलिका

इच्छामि भंते ! संति भत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउ पचमहा-कल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाण चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीस-देवेंदमणिमयमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिअणगारोवगूढाण, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिम-मंगलमहापुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वदामि णमसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।

अथ जिनेंद्रमहापूजास्तवसमेतं सिद्धचैत्यपचगुरुशांतिभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकदोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(९ बार णमोकार मत्र जपना)

अभीष्ट प्रार्थना

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे ।
संपद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥१॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेंद्र ! तावत् यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥२॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेवय ! मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु ॥३॥

दुक्कक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

शांति मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उसा नमः सर्वशांतिं कुरु२ वषट् स्वाहा। (इस मंत्र का पाँच बार उच्चारण करें।)

गणधरवलय मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहिजिणाण, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणतोहि जिणाणं, णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणुसारीणं, णमो सभिण्ण सोदाराणं, णमो सयबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीण, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमोचउदसपुव्वीणं, णमो अट्ठग महाणिमित्त कुसलाणं, णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाण, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगासगामीण, णमो आसीविसाण, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दित्ततवाण, णमो तत्तवाण, णमो महातवाणं, णमो घोरतवाणं, णमो घोरगुणाणं, णमो घोरपरक्कमाणं, णमो घोरगुण-बंभयारीण, णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहिपत्ताण, णमो जल्लोसहिपत्ताणं, णमो विप्पोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो मणवलीणं, णमो वचिबलीणं, णमो कायबलीणं, णमो खीरसवीणं, णमो सप्पिसवीणं, णमो महुरसवीणं, णमो अमियसवीणं, णमो अक्खीण महाणसाणं, णमो वड्ढमाणाणं, णमो सिद्धायदणाणं, णमो भयवदो महदिमहावीर वड्ढमाण बुद्धरिसीणं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

विसर्जन पाठ

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि, शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ! ॥१॥
आह्वानं नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥

आहूता ये पुरा देवा, लब्धभागा यथाक्रमं।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या, सर्वे यांतु यथायथम् ।।३।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उसा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयाः सर्वयक्षयक्षीदिक्पालादिअष्टाशीतिदेवादयः स्वस्थानं गच्छत२ जः जः जः।

चौबोल छंद

मोह ध्वांत के नाशक विश्वप्रकाशी विशद दीप्तिधारी।
सन्मारग प्रतिभासक बुधजन को नित ही मंगलकारी।।
श्री जिनचंद्र शांतिप्रद भगवन्! तापहरन तव भक्ति करूं।
पुनः-पुनः तव दर्शन होवे, यही याचना नित्य करूं ।।१।।

इति नित्य पूजा विधिः।

卐-卐

नवदेवता पूजा

गीता छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं……अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं……अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूं मुदा॥
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्याल-
येभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल....।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता॥नव०॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्याल-
येभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके॥नव०॥३॥

ॐ ह्रीं ....अक्षत ...।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये॥नव०॥४॥

ॐ ह्रीं.........पुष्पं....।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूँ नत भाल मैं॥नव०॥५॥

ॐ ह्रीं.......... नैवेद्यं ...।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं॥नव०॥६॥

ॐ ह्रीं..........दीपं...।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा॥
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें॥७॥

ॐ ह्रीं..........धूपं...।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं॥नव०॥८॥

ॐ ह्रीं..........फल...।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ से पूजत मिले॥नव०॥९॥

ॐ ह्रीं..........अर्घ्यं...।

दोहा

जलधारा से नित्य मैं, जगकी शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय॥११॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य (९, २७ या १०८ बार)

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

चिंच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा॥१॥

(चाल—हे दीनबंधु श्रीपति....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे॥
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध को मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त को मैं अर्चना करूँ॥२॥

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं॥
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी॥३॥

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आतमा की साधना से च्युत न हों कदा॥
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें॥४॥

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा॥
जिन की ध्वनि पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे॥५॥

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं॥
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें॥६॥

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें॥

मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूं।
सम्पूर्ण "ज्ञानमती" सिद्धि हेतु ही भजूं ॥७॥

दोहा

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा....।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछन्द

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें ॥
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते ॥६॥

इत्याशीर्वादः

卐—卐

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजा

अथ स्थापना—शंभु छंद (चाल—श्रीपति जिनवर ...)

सिद्धि के स्वामी सिद्धचक्र, सब जन को सिद्धी देते हैं।
साधक आराधक भव्योंके, भव-भव के दुःख हर लेते हैं ॥
निज शुद्धात्मा के अनुरागी, साधूजन उनको ध्याते हैं।
स्वात्मैक सहज आनंद मगन, होकर वे शिव सुख पाते हैं ॥१॥

दोहा

सिद्धों का नित वास है, लोक शिखर शुचि धाम।
नमूँ नमूँ सब सिद्ध को, सिद्ध करो मम काम ।।२।।
मनुज लोक भव सिद्धगण, त्रैकालिक सुखदान।
आह्वानन कर मै जजूँ, यहाँ विराजो आन ।।३।।

ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धसमूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धसमूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरण।

अथाष्टकं—गीता छंद

क्षीरांबुधी का सलिल उज्ज्वल, स्वर्णझारी में भरूं।
निज कर्म मल प्रक्षालने को, जिन चरण धारा करूं ।।
कर सप्त प्रकृती घात क्षायिक, शुद्ध समकितवान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ।।१।।

ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल···।

कर्पूर चंदन गंध सुरभित स्वर्णद्रव सम लायके।
भव ताप शीतल हेतु जिनवर पाद चर्चूं आयके ।।
त्रिभुवन प्रकाशी ज्ञान केवल सूर्य रश्मीवान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ।।२।।

ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चदनं···।

शशि रश्मि सम उज्ज्वल अखंडित शुद्ध अक्षत लायके।
अक्षय सुपद के हेतु जिनवर, अग्र पुंज चढ़ायके ।।
जगदर्शि केवल दरश संयुत सिद्ध महिमावान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ।।३।।

ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्य. अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं····।

मल्ली चमेली बकुल आदिक, पुष्प सुन्दर लायके।
भव मल्ल विजयी जिन चरण में हर्ष युक्त चढ़ायके ॥
जिनराज वीर्य अनन्तसे युतकर्म अन्तिम हान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ॥४॥
ॐ ह्रीं मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ···।

मिष्टान्न पूरणपोलिका, लाडू इमरती लायके।
भव-भव क्षुधा से दूर जिनवर, पाव अग्र चढ़ायके ॥
सूक्ष्मत्व गुण संयुक्त फिर भी सब जगत का भान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ॥५॥
ॐ ह्रीं मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ···।

कर्पूर दीपक ज्योति जगमग, रत्नदीपक मैं दिपे।
जिन आरती से निज हृदय में ज्ञान की ज्योती दिपे ॥
अवगाहना गुण युत तथा दें सर्व को स्थान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ॥६॥
ॐ ह्रीं मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं ··।

दश गंध धूप सुगंध लेकर, अग्नि में खेऊँ अबे।
सब अष्ट कर्म प्रजाल हेतू, सिद्ध गुण सेवूं सबे ॥
गुण अगुरुलघु से युक्त भी, लोकाग्र पे नित थान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ॥७॥
ॐ ह्रीं मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं··· ।

अंगूर अमृत फल श्रीफल, सरस अमृत सम लिया।
प्रभु मोक्षफल के हेतु तुम पद, अग्र में अर्पण किया ॥
सुख पूर्ण अव्याबाध युत अतिशय अतीन्द्रियवान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो ॥८॥
ॐ ह्रीं मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ····।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
अनुपम अनंतानंत गुण युत, सिद्ध को अर्चूं भले॥
हैं सिद्ध चक्र अनादि अनिधन परम ब्रह्म प्रधान जो।
नर लोक भव सब सिद्ध त्रैकालिक जजूं गुणखान जो॥९॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

दोहा

अचिन्त्य महिमा के धनी, परमानंद स्वरूप।
शांतिधारा करत ही, मिले शांति सुखरूप॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा

कमल केतकी मल्लिका, पुष्प सुगंधित लाय।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, सुख संपति अधिकाय॥११॥

दिव्य पुष्पांजलि।

जाप्य (९ बार या १०८ बार)

ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

सकल सिद्ध परमात्मा, निकल अमल चिद्रूप।
गाऊं तुम जयमालिका, सिद्धचक्र शिव भूप॥१॥

(चाल—हे दीन बंधु श्रीपति....)

जं सिद्धचक्र मध्यलोक से भये सभी।
जं सिद्धचक्र तीनकाल के कहे सभी॥

जं जं त्रिलोक अग्रभाग पे विराजते।
जं जं अनादि औ अनंत सिद्ध सासते ॥
जो जंबूद्वीप से अनंत सिद्ध हुए हैं।
क्षारोदधी[1] से भी अनंत सिद्ध हुए हैं ॥
जो धातकी सुद्वीप से भी सिद्ध अनंता।
कालोदधि से पुष्करार्ध से भी अनंता ॥२॥

इन ढाई द्वीप से हुए जो भूतकाल में।
जो हो रहे हैं और होंगे भाविकाल में ॥
इस विध अनंतानंत जीव सिद्ध हुए हैं।
जो भव्य को समस्त सिद्धि अर्थ हुए हैं ॥३॥

जो घात मोहनीय को सम्यक्त्व लहे हैं।
ज्ञानावरणको घात पूर्ण ज्ञान लहे हैं ॥
कर दर्शनावरण विनाश सर्व दर्शिता।
त्रैलोक्य औ अलोक एक साथ झलकता ॥४॥

होते कभी न श्रांत चूंकि वीर्य अनंता।
ये सिद्ध सभी अंतराय कर्म के हंता ॥
आयू कर्म को नाश गुण अवगाहना धरें।
जो सर्व सिद्ध के लिए अवगाहना करें ॥५॥

अवकाश दान में समर्थ सिद्ध कहाये।
अतएव एक में अनंतानंत समाये ॥
फिर भी निजी अस्तित्व लिये सिद्ध सभी हैं।
पर के स्वरूप में विलीन हो न कभी हैं ॥६॥

---

१. लवणसमुद्र।

कर नाम कर्म नाश वे सूक्ष्मत्व गुण धरें।
अर गोत्र कर्म नाश अगुरूलघू गुण वरें ॥
वे वेदनी विनाश पूर्ण सौख्य भरे हैं।
निर्बाध अव्याबाध नित्यानंद धरे हैं ॥७॥
वे आठ कर्म नाश आठ गुण को धारते।
फिर भी अनंत गुण समुद्र नाम धारते ॥
चैतन्य चमत्कार चिदानन्द स्वरूपी।
चिंतामणी चिन्मात्र चैत्य रूप अरूपी ॥८॥
सौ इंद्र वंद्य हैं त्रिलोक शिखामणी हैं।
सम्पूर्ण विश्व के अपूर्व चिभामणी हैं ॥
वे जन्म मृत्यु शून्य शुद्ध बुद्ध कहाते।
निर्मुक्त निरंजन सु निराकार कहाते ॥९॥
जो सिद्धचक्र की सदा आराधना करें।
संसार चक्र नाश वे शिव साधना करें ॥
मैं भी अनंत चक्र भ्रमण से उदास हूँ।
हो 'ज्ञानमती' पूर्ण नाथ आप पास हूँ ॥१०॥

घत्ता

जय सिद्ध अनंता, शिव तिय कंता।
भव दुख हन्ता तुम ध्याऊं ॥
जय जय सुख कंदन, नित्य निरंजन।
पूजत ही निज सुख पाऊं ॥११॥

ॐ ह्री मध्यलोकोद्भवसकलसिद्धपरमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

श्री सिद्ध चक्र अनंत की, जो नित्य प्रति पूजा करें।
वे विघ्न संकट नाश के, नित सर्व मंगल विस्तरें ॥
इस लोक के सब सौख्य पा, सर्वार्थसिद्धि को वरें।
फिर 'ज्ञानमति' आर्हंत्यलक्ष्मी, पाय शिवकांता वरें ॥१॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

बीस तीर्थंकर पूजा

स्थापना

गीता छन्द

सीमंधरादिक बीस तीर्थंकर विदेहों में रहें।
जिनकी सभा में आज भी भविवृंद निजकल्मष दहें ॥
उन विद्यमान जिनेश की मैं नितकरूं आराधना।
पूजन करूं अतिभक्ति से निजतत्व की ही साधना ॥१॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं

स्रग्विणी छन्द

पद्मद्रह का सलिल गंधवासित लिया।
नाथ चरणाब्ज में तीन धारा किया॥
बीस तीर्थंकरों की करूं अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं०।

गंध कर्पूर चंदन घिसा के लिया।
आप पादाब्ज में चर्च के अर्चिया॥बीस०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो···चन्दनम्··।

कौमदी धौत तंदुल लिये थाल में।
आप पादाग्र में पुंज को धार मैं॥बीस०॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो···अक्षतं···।

मौलसिरि मालती पुष्प ताजे लिये।
कामशर के जयी आपको अर्पिये॥बीस०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो···पुष्प··।

पूड़िया लड्डुकादी भरे थाल में।
पूजते भूख व्याधी नशे हाल में॥बीस०॥५॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो···नैवेद्यं···।

ज्योति कर्पूर की ध्वांतहर जगमगे।
दीप से अर्चते ज्ञान ज्योती जगे॥बीस०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो···दीपं···।

धूप दशगंध खेऊं सदा अग्नि में।
कर्म संपूर्ण हों भस्म तुम भक्ति में॥बीस०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो···धूपं···।

आम अंगूर नींबू बिजौरा लिया।
मोक्षफल हेतु प्रभु आपको अर्पिया ॥
बीस तीर्थंकरों की करूं अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना ॥८॥

ॐ ह्री श्री सीमंधरादि विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो…फलं….।

अर्घ्य में रत्न सुंदर मिले हैं भले।
पूजते आपको स्वात्म निधियां मिले ॥बीस०॥९॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमानविंशतितीर्थंरेभ्यो…अर्घ्यं….।

शांतिधारा करूं नाथ पादाब्ज में।
शांति आत्यंतिकी शीघ्र हो नाथ में ॥बीस०॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

कुंद कल्हार जूही चमेली खिले।
पुष्प अंजलि करूं सौख्य संपत मिले ॥बीस०॥११॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य (९ या १०८ बार)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

पंचचामर छंद

जयो जयो जयो जिनेंद्र इंद्रवृंद बोलते।
त्रिलोक में महागुरू सु आप नाम तोलते ॥
सुधन्य धन्य धन्य आप साधुवृंद बोलते।
जिनेश आप भक्त ही तो निज किवाड खोलते ॥१॥

समोसरण में आपके महा विभूतियां भरी।
अनेक ऋद्धि सिद्धियां सुआप पास में खड़ी ॥
अनंत अंतरंग गुण समूह आप में भरे।
गणीन्द्र औ सुरेंद्र चक्रि आप संस्तुती करें ॥२॥

हरिन्मणी के पत्र पद्मराग के सुपुष्प हैं।
अशोक वृक्ष देखते समस्त शोक अस्त हैं ॥
अनेक देववृंद पुष्पवृष्टि आप पे करें।
सुगंध वर्ण वर्ण के सुमन खिले खिले गिरें ॥३॥

जिनेश आपकी ध्वनीअनक्षरी सुदिव्य है।
समस्त भव्य कर्ण में करें सुअर्थ व्यक्त हैं ॥
न देशना कि चाह है न तालु ओंठ पुट हिले।
असंख्य जीव के धुनी से चित्तपद्मिनी खिलें ॥४॥

सुचामरों कि पंक्तियां ढुरें सुसूचना करें।
नमें तुम्हें सुभक्त वे हि ऊर्ध्व में गमन करें ॥
सुसिंह पीठ आपका अनेक रत्नसे जड़ा।
विराजते सुआप है अतः महत्व है बड़ा ॥५॥

प्रभासुचक्र कोटि सूर्य से अधिक प्रभा धरे।
समस्त भव्य के उसी में सात भव दिखा करें ॥
सुदेव दुंदुभी सदा गंभीर नाद को करे।
असंख्य जीव का सुचित्त खींच के वहाँ करें ॥६॥

सफेद छत्र तीन जो जिनेश शीश पे फिरें।
प्रभो त्रिलोकनाथ आप सूचना यही करें ॥
सुप्रातिहार्य आठ ये हि बाह्य की विभूतियां।
सुरेश ने रचे तथापि आप पुण्य राशियां ॥७॥

प्रभो तुम्हीं महान मुक्ति बल्लभापती कहे।
प्रभो तुम्हीं प्रधान ईश सर्व विश्व के कहे॥
प्रभो तुम्हें सदा नमें सु भक्ति आप में धरें।
अनंतकाल तक वहीं अनंत सौख्य को भरें॥८॥

दोहा

तुम गुण सूत्र पिरोय स्रज, विविधवर्णमय फूल।
धरें कंठ उन "ज्ञानमति", लक्ष्मी हो अनुकूल॥

ॐ ह्रीं सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुस्वयंप्रभवृषभाननअनंतवीर्यसुरप्रभविशाल-कीर्तिवज्रधरचन्द्राननभद्रबाहुभुजगमईश्वरनेमप्रभवीरसेनमहाभद्रदेव-यशअजितवीर्यनामविदेहक्षेत्रस्थविंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं....।

शातये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें॥
इस लोक के सुख भोग कर फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल "ज्ञानमति" हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें॥१॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

चौबीस तीर्थंकर पूजा

स्थापना

गीता छन्द

वृषभादि चौबिस तीर्थकर इस भरत के विख्यात हैं ।
जो प्रथित जंबूद्वीप के संप्रति जिनेश्वर ख्यात हैं ।।
इन तीर्थंकर के तीर्थ में सम्यक्त्व निधि को पायके ।
थापूँ यहाँ पूजन निमित्त अति चित्त में हरषाय के ।।१।।

ॐ ह्रीं जबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं जबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टकं

स्रग्विणी छन्द

देवगंगा सलिल स्वर्ण झारी भरूँ ।
नाथ पादाब्ज में तीन धारा करूँ ।।
श्री वृषभ आदि चौबीस जिनराज को ।
पूजते ही लहूं स्वात्म साम्राज्य को ।।१।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं …।

गंध केशर घिसा के कटोरी भरूँ ।
आपके पाद पंकज समर्चन करूँ ।।श्री वृषभ०।।२।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं …।

चंद्र की चाँदनी सम धवल शलिल हैं।
जो जजें पुंज से वे सुकृत शालि है ॥
श्री वृषभ आदि चौबीस जिन राज को।
पूजते ही लहूं स्वात्म साम्राज्य को ॥३॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षत…।

कुंद मचकुंद बेला चमेली लिये।
कामहरनाथ पद में समर्पित किये ॥श्री वृषभ०॥४॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं…।

पूरिका लड्डुओं से भरूं थाल मैं।
पूजहूँ आपको क्षुध् व्यथा नाशने ॥श्री वृषभ०॥५॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य…।

दीप कर्पूर की ज्योति से पूजते।
ज्ञान उद्योत हो मोह अरि छूटते ॥श्री वृषभ०॥६॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप…।

धूप दशगंध ले अग्निमें खेवते।
आत्म सौरभ उठे नाथ पद सेवते ॥श्री वृषभ०॥७॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूप…।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद पूजते मुक्ति संपत्ति मिले ॥श्री वृषभ०॥८॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं…।

तोय गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूं नायके भाल मैं॥
श्री वृषभ आदि चौबीस जिन राज को।
पूजते ही लहूँ स्वात्म साम्राज्य को॥९॥

ॐ ह्री जबूद्वीपसबधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं....।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांतीकर सदा।
चउसंघ शांती हेतु शांतीधारा मैं करूं॥

शांतये शांतिधारा॥

हर सिगार प्रसून सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म पुष्पांजलि अर्पण करूं॥

पुष्पांजलिः।

जयमाला

शंभु छन्द

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ जिन सुपार्श्व।
चंद्रप्रभु पुष्पदंत शीतल श्रेयांस विमल जिन अनंताख्य॥
श्री धर्म शांति कुंथू अरजिन मल्ली मुनिसुव्रत नमि जिनवर।
नेमीश्वर पार्श्वनाथ सन्मति बंदूँ चौबीसों तीर्थंकर॥

पृथ्वी छन्द

जिनेंद्र ! तुम शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अविकार हो।
जिनेंद्र ! तुम वर्णहीन विनमूर्ति साकार हो॥
निराभरण हो तथापि जग के अलंकार हो।
अनंतगुण पुंजभूत फिर भी निराकार हो॥१॥
अनंतसुचिदर्श से सकल लोक अवलोकते।
अनंत वर ज्ञान से सकल भव्य संबोधते॥

अनंत निजशक्ति से श्रम न हो कदाचित् तुम्हें ।
अनंत वर सौख्य से अमित काल तृप्ती तुम्हें ॥२॥

न चक्षु नहि कर्ण घ्राण नहि स्पर्शनेंद्रिय तुम्हें ।
न जीभ अतएव जिन अतीन्द्रिय स्वसुख तुम्हें ॥
न शब्द रस गंधवर्ण विषयादि स्पर्श ना ।
न क्रोध मद छद्म लोभ रति द्वेष संघर्ष ना ॥३॥

न कर्म नोकर्म नाथ नहि भाव कर्मादि हैं ।
न बंध न हि आस्रवादि नहि शल्य बाधादि हैं ॥
न रोग शोकादि नाथ नहि जन्म मरणादि हैं ।
न क्लेश नहिं इष्ट निष्ट वीयोग योगादि हैं ॥४॥

स्वयं परम तृप्त नाथ परमैक परमातमा ।
स्वयं स्वयंभू स्वतः सुख स्वरूप सिद्धातमा ॥
अमूर्तिक विभो तथापि चिनमूर्ति चिंतामणी ।
अपूर्व तुम कल्पवृक्ष त्रैलोक्य चूड़ामणि ॥५॥

अनंत भव सिंधु से तुरत नाथ ! तारो मुझे ।
अनंत दुख अब्धि से जिनपते ! उबारो मुझे ॥
प्रभो मुझ समस्त दोष अब तो क्षमा कीजिये ।
स्वज्ञानमति नाथ शीघ्र करके कृपा दीजिये ॥६॥

घत्ता

वृषभादि जिनेश्वर, मुक्तिवधूवर सुखसंपतिकर तुमहिं नमूं ।
निज आतम शुचिकर, सम्यक् निधिधर फेर न भव वन बीच भ्रमूं ॥७॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रेस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला अर्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

गीता छन्द

जो नित्य ही चौबीस तीर्थंकर महापूजा करें।
वर पंचकल्याणक अधिप जिननाथ के गुण उच्चरें।।
वे पंच परिवर्तन मिटाकर, पंच कल्याणक भरें।
निर्वाण लक्ष्मी ज्ञानमतियुत पाय निज संपत्ति वरें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

श्री आदिनाथ भरतबाहुबलि पूजा

स्थापना—नरेन्द्र छन्द

हे इस युग के आदि विधाता वृषभ पुरुदेव प्रभो।
हे युग स्रष्टा तुम्हें बुलाऊँ आवो आवो यहाँ विभो।।
आदिनाथ सुत हे भरतेश्वर ! हे बाहुबलि ! आज यहाँ।
आवो तिष्ठो हृदय विराजो जग में मंगल करो यहाँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर वृषभदेव भरत बाहुबलि स्वामिनः! अत्र अवतरत, अवतरत।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर वृषभदेव भरत बाहुबलि स्वामिनः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर वृषभदेव भरत बाहुबलि स्वामिनः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—नरेन्द्र छन्द

कमलरेणु से सुरभित निर्मल, कनक पात्र जल पूर्ण भरें।
उभय लोक के ताप हरन को त्रिभुवन गुरु पद धार करें॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि, तीनों के पद कमल जजूं।
निज के तीन रत्न को पाकर भव भव दुःख से शीघ्र बचूँ॥१॥

ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो जलं···।

कंचन रस सम पीत सुगन्धित चंदन तन की ताप हरे।
यम संताप हरन हेतू प्रभु तुम पद चर्चूं भक्ति भरें॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि····॥२॥

ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो चन्दन···।

देवजीर शाली भर थाली, उदधि फेन सम पुंज करे।
कर्म पुंज के खंडखंड कर निज अखंड पद शीघ्र वरें॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि···॥३॥

ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो अक्षतं····।

मधुकर चुंबित कुंद कमल ले, काम जयी तुम चरण जजें।
तुम निष्काम कामना पूरक, जजत कामभट तुरज भजें॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि···॥४॥

ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो पुष्पं···।

घृतबाटी सोहाल समोसे कुंडलनी, ले थाल भरें।
क्षुधा नागिनी विष अपहरने, तुम सन्मुख चरु भेंट करें॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि····॥५॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो नैवेद्यं····।

कनक दीप कर्पूर जलाकर जिन मंदिर उद्योत करें।
मोह निशाचर दूर भगाकर निज आतम उद्योत करें ॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि, तीनों के पद कमल जजूं।
निज के तीन रत्न को पाकर भव भव दुःख से शीघ्र बचूं ॥६॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो दीपं…।

धूप सुगन्धित धूपायन में खेते दश दिश धूम उड़े।
तुम पद सन्मुख तुरत भस्म हो निज की सुख संपत्ति बढ़े ॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि…॥७॥
ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो धूप…।

श्री फल पूग अनार आमला सेव आम्र अंगूर भले।
सरस मधुर निज आतम रसमय सत्फल पूजन करत फले ॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि…॥८॥
ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो फल…।

वारि गंध अक्षत कुसुमादिक, उसमें बहुरत्नादि मिले।
अर्घ चढ़ाकर तुम गुण गाऊँ, सम्यक् ज्ञान प्रसून खिले ॥
श्रीवृषभेश भरत बाहुबलि…॥६॥
ॐ ह्री तीर्थंकर वृषभदेव तत्सुत भरत बाहुबलि चरणेभ्यो अर्घ…।

दोहा

त्रिभुवन पति त्रिभुवनधनी, त्रिभुवन के गुरु आप।
त्रयधारा चरणों करूं, मिटे जगत् त्रय ताप ॥१०॥
शांतये शांतिधारा

ज्ञानदरश सुख वीर्यमय गुण अनन्त विलसंत।
पुष्पांजलि से पूजहूं, हरूं सकल जग फंद ॥११॥
पुष्पांजलिः

जयमाला

दोहा

ज्ञान ज्योति में तव दिखे, लोक अलोक समस्त ।
मैं गाऊं गुण मालिका, मम पथ करो प्रशस्त ॥१॥

शम्भु छन्द

जय जय आदीश्वर तीर्थंकर, तुम ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हो ।
जय जय कर्मारिजयी जिनवर तुम परमपिता परमेश्वर हो ॥
जय युगस्रष्टा असि मषि आदिक किरिया उपदेशी जनता को ।
त्रय वर्ण व्यवस्था राजनीति गृहिधर्म बताया परजा को ॥२॥
निज पुत्र पुत्रियों को विद्या अध्ययन करा निष्पन्न किया ।
भरतेश्वर को साम्राज्य सौंप शिवपथ मुनिधर्म प्रशस्त किया ॥
इक सहस वर्ष तप करके प्रभु कैवल्यज्ञान को प्रकट किया ।
अठरह कोड़ाकोड़ी सागर के बाद मुक्ति पथ प्रकट किया ॥३॥
तुम प्रथम पुत्र भरतेश प्रथम चक्रेश्वर हो षट्खंडजयी ।
जिन भक्तों में थे प्रथम तथा अध्यात्म शिरोमणि गुणमणि ही ॥
सब जन मन प्रिय थे सार्वभौम यह भारतवर्ष सनाथ किया ।
दीक्षा लेते ही क्षण भर में निज केवलज्ञान प्रकाश किया ॥४॥
हे ऋषभदेव सुत बाहुबली तुम कामदेव होकर प्रगटे ।
सुत थे द्वितीय पर अद्वितीय चक्रेश्वर को भी जीत सके ॥
तुमने दीक्षा ले एक वर्ष का योग लिया ध्यानस्थ हुए ।
वन लता भुजाओं तक फैली सर्पों ने वामी बना लिये ॥५॥

इक वर्ष पूर्ण होते ही तो भरतेश्वर ने आ पूजा की।
उसही क्षण तुम हुए निर्विकल्प तब केवलज्ञान की प्राप्ति की ॥
कैलाशगिरी से मुक्ति वरी ऋषभेश भरत बाहुबलि ने।
उस मुक्तिथान को मैं प्रणमूं मेरे मनवांछित कार्य बने ॥६॥
जय जय हे आदिनाथ स्वामिन्! जय जय भरतेश्वर मुक्तिनाथ।
जय जय योगेश्वर बाहुबली! मुझ को भी निज सम करो नाथ ॥
तुम भक्ति भववारिधि नौका जो भव्य इसे पा लेते हैं।
वे ज्ञानमती के साथ साथ अर्हंत श्री वर लेते हैं ॥७॥

दोहा

परम चिदंबर चित्पुरुष चिच्चिंतामणि देव।
नमूं नमूं अंजलि किये, करूं सतत तुम सेव ॥॥८॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर वृषभदेव भरत बाहुबलि स्वामिभ्यो जयमाला अर्घं ···।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

सोरठा

नित्य निरंजनदेव, परमहंस परमातमा।
तुम पद युग की सेव, करते ही सुख संपदा ॥९॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

श्री आदिनाथ पूजा

स्थापना—गीता छंद

हे आदिब्रह्मा ! युगपुरुष ! पुरुदेव ! युगस्रष्टा तुम्हीं ।
युग आदि में इस कर्मभूमि के प्रभो ! कर्ता तुम्हीं ।।
तुम ही प्रजापतिनाथ ! मुक्ती के विधाता हो तुम्हीं ।
मैं आपका आह्वान करता नाथ ! अब तिष्ठो यहीं ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण ।

अष्टक—चाल-नंदीश्वर पूजा

जिनवच सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूं ।
जिन चरणांबुज में धार दे जगद्वंद हरूं ।।
श्री आदिनाथ जिनराज आदी तीर्थंकर ।
मैं पूजूँ भक्ति समेत तुमको क्षेमंकर ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं···।

जिनतनुसम सुरभित गंध सुवरण पात्र भरूं ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूं ।।श्री०।।२।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं···।

जिन गुणसम उज्जवल धौत, अक्षत थाल भरे ।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे ।।श्री०।।३।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षत···।

जिनयशसम सुरभित श्वेत कुंद गुलाब लिये ।
मदनारिजयी जिनपाद पूजूँ हर्ष हिये ॥४॥
श्री आदिनाथ जिनराज···· ।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं····।

जिनवचनामृत सम शुद्ध व्यंजन थाल भरे ।
परमामृत तृप्त जिनेंद्र पूजत भूख टरे ॥श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ···।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति जगमग दीप लिये ।
जिनपद पूजत ही होत ज्ञान उद्योत हिये ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं···।

दशगंध सुगंधित धूप खेवत कर्म जरे ।
निज आतम सौख्य सुनित्य दश दिश माँहि भरे ॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं···।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल आम अनार भले ।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले ॥श्री०॥८॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं····।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया ।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घं समर्प्य किया ॥श्री०॥९॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घं····।

सोरठा

सीतानदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे ।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतिधारा शांतिकर ॥१०॥
शांतये शांतिधारा ।

बेला कमल गुलाब चंप चमेली ले घने ।
आदीश्वर पादाब्ज पूजत ही सुख संपदा ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः ।

पंच कल्याणक अर्घ

शंभु छंद

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरूदेवी के आंगन, बहुरत्न वृष्टि की धनदराज॥
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ सिद्धि से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मातसेव॥

ॐ ह्रीं आषाढ कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके माता की अतिशय तृप्ती की॥
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर मेरू पर अतिशय न्हवन किया॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णानवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं।

छह मास योग के बाद प्रभु मुनिचर्या बतलाने निकले।
पुनरपि छहमास बाद प्रभु को आहार दिया श्रेयांस मिले॥
इक सहस वर्ष तप तपने से केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाएकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री आदि-नाथ जिनेंद्राय अर्घं।

बारह विध सभा बनी सुंदर मुनिआर्या सुरनर पशु गण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन आदिक चौरासी गणधर थे॥
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध अरु मास शेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं।

जयमाला

दोहा

तीर्थंकर गुण रत्न को गिनत न पावे पार ।
तीन रत्न के हेतु मैं नमूं अनंतों बार ॥१॥

अनंग शेखर छंद

जयो जिनेंद्र ! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे ।
जयो जिनेंद्र ! आपका अपूर्व तेज देख के,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे ॥

जयो जिनेंद्र ! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही ।
जयो जिनेंद्र ! आपका आचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही ॥१॥

जिनेश ! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती ।
जिनेश ! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकाये शोभतीं ॥

सुरेन्द्र देवियों कि टोलियां असंख्य आ रही,
खगेश्वरों की पंक्तियां अनेक गीत गा रहीं ।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियां तमाम हैं,
पशु तथैव पक्षियों कि टोलियां भी आ रहीं ॥२॥
सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें ।

सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पांच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार सेगुनें ॥
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते ॥३॥

स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें ॥
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,
अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते ॥४॥

दोहा

नाथ ! आप गुणसिंधु हैं को कहि पावे पार।
"ज्ञानमती" सुख शांति दे करो भवांबुधि पार ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलीः।

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

स्थापना बाहुबली पूजा

स्थापना—शम्भु छन्द

वृषभेश्वर के सुत बाहुबली, प्रभु कामदेव तनु सुन्दर हैं।
मुनिगण भी ध्यान करें रुचि से, नित जजते चरण पुरंदर हैं॥
निज आतमरस के आस्वादी, जिनका नित वंदन करते हैं।
उन प्रभु का हम आह्वानन कर, भक्ती से अर्चन करते हैं॥१॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली स्वामिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्री श्री बाहुबली स्वामिन् ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्री श्री बाहुबली स्वामिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव-भववषट् सन्निधीकरण।

अथ अष्टक—शम्भु छन्द

भव भव में जल पीते पीते, अब तक नहिं तृषा समाप्त हुई।
इस हेतु जिनपद पूजूं मैं, जल से यह इच्छा आज हुई॥
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं॥१॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली स्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल…।

तन धन कुटुम्ब की चाह दाह, नित प्रति मन को संतप्त करें।
चंदन से जिनपद चर्चत ही, मन को अतिशय संतृप्त करे॥
हे योग चक्रपति०॥२॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली स्वामिने संसारतापविनाशनाय चदनं…।

निज आतम सुख को कर्मों ने, बस खंड खंड कर दुःख दिया।
निज सुख अखंड मिल जावे बस, उज्जवल अक्षत से पुंज किया॥
हे योग चक्रपति०॥३॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षत …।

प्रभु कामदेव होकर के भी, अरि कामदेव को भस्म किया।
इसहेतु सुगंधित पुष्प बहुत, तुम चरणकमल में चढ़ा दिया ।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं ।।४।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

प्रभु एक वर्ष उपवास किया, हुई कायबली ऋद्धि जिससे।
मेरा क्षुध रोग विनाश करो, पक्वान्न चढ़ाऊं बहुविध के ।।
हे योग चक्रपति०।।५।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य ....।

कर्पूर शिखा जगमग करती, बाहर में ही उद्योत करे।
दीपक से तुम आरति करके, अंतर में ज्ञान उद्योत करे ।।
हे योग चक्रपति०।।६।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने मोहांधकारविनाशनाय दीप....।

वर धूप सुगंधित लेकरके, संपूर्ण पाप को भस्म करें।
निज गुण समूह की प्राप्ति हेतु, जिन पद पंकज की भक्ति करें ।।
हे योग चक्रपति०।।७।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

मनवांछित फल पाने हेतु, बहुतेक देव का शरण लिया।
नहिं मिला श्रेष्ठ फल अब तक भी, इस हेतु सरस फल अर्घ दिया ।।
हे योग चक्रपति०।।८।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जल चंदन तंदुल पुष्प चरु, दीपक वर धूप फलों से युत।
क्षायिक सम्यक्त्वलब्धि हेतु, यह अर्घ समर्पण करूं सतत ।।
हे योग चक्रपति०।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

दोहा

शांतिधारा मैं करूं बाहुबली पदपद्म ।
आत्यंतिक सुख शांतिमय मिले निजातम पद्म ।।१०।।
शांतये शांतिधारा ।

जुही चमेली केतकी, चंपक हरसिंगार ।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, मिले सौख्य भंडार ।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः ।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय श्रीबाहुबली भगवन्, जय जय त्रिभुवन के शिखामणी ।
जय जय महिमाशाली अनुपम, जय जय त्रिभुवन के चिंतामणी ।।
जय जय अनंत गुणमणिभूषण, जय भव्य कमल बोधरा भास्कर ।
जय जय अनंत दृग ज्ञानरूप, जय जय अनंत सुख रत्नाकर ।।१।।
तुम नेत्र युद्ध जल मल्ल युद्ध, में चक्रवर्ति को जीत लिया ।
चक्रीने छोड़ा चक्ररत्न, उसने भी तुम पद शरण लिया ।।
फिर हो विरक्त भरताधिप की, अनुमति ले जिनदीक्षा लेकर ।
प्रभु एक वर्ष का योग लिया, ध्यानस्थ खड़े निश्चल होकर ।।२।।
निःशल्य ध्यान का ही प्रभाव, सर्वावधिज्ञान प्रकाश मिला ।
मनपर्यय विपुलमती ऋद्धी से, अतिशय ज्ञान प्रभात खिला ।।
तप बल से अणिमा महिमादिक विक्रिया ऋद्धियां प्रकट हुई ।
आमौषधि सर्वौषधि आदिक, औषधि ऋद्धी भी प्रकट हुई ।।३।।
क्षीरस्रावी घृत मधुरमृत, स्रावी रस ऋद्धी प्रकटी थीं ।
अक्षीण महानस आलय क्या, संपूर्ण ऋद्धियां प्रकटी थीं ।।
वे उग्र उग्र तप करते थे, फिर भी दीप्ती से दीप्यमान् ।
वे तप्त घोर औ महाघोरतप तपते फिरभी शक्तिमान ।।४।।

इन ऋद्धी से न हि लाभ उन्हें, फिर भी इंद्रादिक नमते थे ।
खग आकर प्रभु की ऋद्धी से, निज रोग निवारण करते थे ॥
सर्पों ने वामी बना लिया, प्रभु के तन पर चढ़ते रहते ।
बिच्छू आदिक बहु जंतु वहाँ, प्रभु के तन पर क्रीड़ा करते ॥५॥

बासंती बेल चढ़ी तन पर, पुष्पों की वर्षा करती थीं ।
मरकत मणिसम सुन्दर तन पर, बेलें अति मनहर दिखती थीं ॥
सब जात विरोधी जीव वहाँ, आपस में प्रेम किया करते ।
हाथी नलिनीदल में जल ला, प्रभु पदमें चढ़ा दिया करते ॥६॥

प्रभु एक वर्ष उपवास पूर्ण कर, शुक्लध्यान के सम्मुख थे ।
उसही क्षण भरताधिप ने आ, पूजा की अतिशय भक्ति से ॥
होता विकल्प यह कभी, मुझसे चक्री को क्लेश हुआ ।
इस हेतु अपेक्षा उनकी थी, आते ही केवलज्ञान हुआ ॥७॥

तत्क्षण सुरगण ने गंधकुटी, रच करके अतिशय पूजा की ।
भरतेश्वर भक्ती से विभोर, बहुविध रत्नों से पूजा की ॥
प्रभु ने दिव्यध्वनि से जग को, उपदेश पुण्य विहार किया ।
फिर शेष कर्मका नाश किया, औ मुक्तीका साम्राज्य लिया ॥८॥

दोहा

धन्य धन्य बाहुबली, गोम्मटेश्वर मान्य ।
पूर्ण ज्ञानमति हेतु मैं, नमूं नमूं जग मान्य ॥९॥
श्रवणबेलगुल तीर्थ पर, सत्तावन फुट तुंग ।
श्री बाहूबलि मूर्ति को, नमत लहें नित पुण्य ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने जयमाला पूर्णार्घ्यं…।
शांतये शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

卐—卐

भरतेश पूजा

स्थापना—दोहा

नाभिराज के पौत्र तुम भरत क्षेत्र के ईश।
अष्टकर्म को नष्ट कर गये लोक के शीश ॥१॥
अष्ट द्रव्य से मैं यहाँ, पूजूं भक्ति समेत।
आह्वानन विधि मैं करूं, परम सौख्य के हेतु ॥२॥

ॐ ह्री श्री भरत स्वामिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री भरत स्वामिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री भरत स्वामिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी-करणं।

अष्टक—स्रग्विणी छन्द

कर्म मल धोय के आप निर्मल भये।
नीर लें आप पदकंज पूजत भये ॥
आदि तीर्थेश सुत आदि चक्रेश को।
मैं जजूं भक्ति से आप भरतेश को ॥१॥

ॐ ह्री श्री भरतस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

मोह संताप हर आप शीतल भये।
गंध से पूजते सर्व संकट गये ॥आदि०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं।

नाथ अक्षय सुखों की निधी आप हो।
शांति के पुंज धर पूर्णसुख प्राप्त हो ॥आदि०॥३॥

ॐ ह्री श्री भरतस्वामिने अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं।

काम को जीतकर आप विष्णु बने।
पुष्प से पूजकर हम सहिष्णु बने ॥
आदितीर्थेश सुत···· ॥४॥
ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने कामबाणविनाशनाय पुष्पं।

भूख तृष्णादि बाधा विजेता तुम्हीं।
सर्व पकवान से पूज व्याधी हनी ॥आदि०॥५॥
ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य।

दोष अज्ञान हर पूर्ण ज्योती धरें।
दीप से पूजते ज्ञान ज्योती भरें ॥आदि०॥६॥
ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं।

शुक्लध्यानाग्नि से कर्म भस्मी किये।
धूप से पूजते स्वात्म शुद्धी किये ॥आदि०॥७॥
ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं।

पूर्ण कृतकृत्य हो आप इस लोक में।
मैं सदा पूजहूं श्रेष्ठ फल से तुम्हें ॥आदि०॥८॥
ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने मोक्षफलप्राप्ताय फलं।

सर्व संपत्ति धर आप अनमोल हो।
अर्घ से पूजते स्वात्म कल्लोल हो ॥आदि०॥९॥
ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं।

शीतल मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि समश्वेत।
तुम पद धारा मैं करूं तिहुंजग शांतीहेतु ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

कोटि सूर्यप्रभ से अधिक अनुपम आतम तेज।
पुष्पांजलि से पूजहूं कर्मांज्जन हर हेतु ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

दोहा

निजानंद पीयूषरस, निर्झरणी निर्मग्न।
गाऊं तुम गुणमालिका, होऊँ गुण सम्पन्न ॥१॥

नरेन्द्र छन्द

चिन्मय ज्योति चिदंबर चेतन चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरत चिंतामणि चिंतितप्रद रत्नाकर॥
मरुदेवी के पौत्र आप हे यशस्वती के नंदन।
हे स्वामिन ! स्वीकार करो अब मेरा शत-शत वंदन ॥२॥

आदिब्रह्मा ऋषभदेव से विद्या शिक्षा पाई।
संस्कारों से संस्कारित हो आतम ज्योति जगाई॥
भक्तिमार्ग के आदि विधाता सोलहवें मनु विश्रुत।
चौथा वर्ण किया संस्थापित पूजा दान धर्म हित ॥३॥

गृह में रहते भी वैरागी जल से भिन्न कमलवत्।
छहों खंड पृथ्वी को जीता फिर भी निज आतम रत॥
वृषभदेव के समवसरण में श्रोता मुख्य तुम्हीं थे।
दिव्य ध्वनी से दिव्यज्ञान पर श्रद्धामूर्ति तुम्हीं थे ॥४॥

कल्पद्रुम पूजा के कर्ता दान चतुर्विध दाता।
व्रत उपवास शील के धनी देशव्रती विख्याता॥
श्रावक होकर अवधिज्ञानी राजनीति के नेता।
चातुर्वर्णिक सर्व प्रजाहित गृही धर्म उपदेष्टा ॥५॥

दीक्षा ले अंतर्मुहूर्त में केवल ज्ञान प्रकाशा ।
उत्तम ज्ञान ज्योति में तब ही त्रिभुवन अनुभव भाषा ॥
श्री विहार से भव्य जनों को उपदेशा शिवमारग ।
फिर कैलाशगिरी पर जाकर हुए पूर्ण शिव साधक ॥६॥
सर्व कर्म निर्मूल आप त्रिभुवन साम्राज्य लिया है ।
मृत्यु मल्ल को जीत लोक मस्तक पर वास किया है ॥
मन से भक्ति करें जो भविजन वे मन निर्मल करते ।
वचनों से स्तुति को पढ़ के वचन सिद्धि को वरते ॥७॥
काया से अंजलि प्रणमन कर तन का रोग नशाते ।
त्रिकरण शुचि से वंदन करके कर्म कलंक नशाते ॥
इस विधि तुम यश आगमवर्णे श्रवण किया है जबसे ।
तुम चरणों में प्रीति जगी है शरण लिया मैं तब से ॥८॥
हे भरतेश कृपा अब ऐसी मुझ पर तुरतहि कीजे ।
सम्यग्ज्ञानमती लक्ष्मी को देकर निजपद दीजे ॥
आप भरत के पुण्य नाम से "भारतदेश" प्रसिद्धी ।
नमूं नमूं मैं तुमको नितप्रति, प्राप्त करूं सब सिद्धी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री भरतस्वामिने जयमाला अर्घ्यं.......

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः ।

दोहा

भरतेश्वर की भक्ति से भक्त बने भगवान ।
आध्यात्मिक सुख शांति दे करें आत्म धनवान् ॥

इत्याशीर्वादः

卐—卐

श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर पूजा

स्थापना—नरेन्द्रछंद

श्रीमन् शांति कुंथु अर जिनवर, तीर्थंकर पदधारी।
चक्रवर्ति सम्राट् हुये थे, कामदेव पदधारी॥
तिहुंजग भ्रमण विनाशन हेतु, इनका यजन करूं मैं।
आह्वानन स्थापन करके, सन्निधिकरण करूं मैं॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरजिनेश्वरा: ! अत्र अवतरत २ आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरजिनेश्वरा: ! अत्र तिष्ठत २, ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरजिनेश्वरा: ! अत्र मम सन्निहिता भवत २, सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक—नरेन्द्र छन्द

तीनलोक भर भ्रमण नाथ मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी तृप्ति न हुई अतः अब, जल से धार दिया है॥
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूं मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब छूटूं भवभवदुख से॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं…।

त्रिभुवन में बहु देह धरे मैं, उनसे शांति न पाई।
इसी हेतु चंदन से पूजूं मिले शांति सुखदाई॥
शांति कुंथु अर…॥२॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्य: संसारताप विनाशनाय चंदनं…।

मोह शत्रु ने आत्मसौख्य मुझ, खंड खंड कर रक्खा।
शालि पुंज से जजूं अखंडित सौख्य मिले यह इच्छा॥
शांति कुंथु अर…॥३॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं…।

कामदेव ने तीनजगत को, निज के वश्य किया है।
उसके जेता आप अतः मैं अर्पण पुष्प किया है॥
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब छूटूं भवभवदुख से॥४॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं····।

काल अनादी से क्षुध् व्याधी भोजन से नहीं मिटती।
व्यंजन सरस बनाकर जिनपद अर्पण से वह नशती।
शांति कुंथु अर···॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं····।

मोहतिमिर ने तीन जगत् को अंध समान किये हैं।
दीपक से तुम आरति करके, ज्ञान उद्योत हिये[1] है॥
शांति कुंथु अर···॥६॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं····।

अष्ट कर्म ये संग लगे हैं, इनका नाश करूँ मैं।
तुम सन्निधि में धूप जलाकर, सुरभित धूम्र करूँ मैं॥
शांति कुंथु अर ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं···।

बहुत कुदेव नमन कर मैंने, अविनश्वर फल चाहा।
फिर भी आश हुई नहिं पूरी, अतः आप ढिग आया॥
शांति कुंथु अर···॥८॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं···।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर स्वर्णथाल भर लाया।
सर्वोत्तम फल पाने हेतु, अर्घ्य चढ़ाने आया॥
शांति कुंथु अर····॥९॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं···।

---

१. हृदय में।

दोहा

शांति कुंथु अर नाथ के, चरणों में त्रय बार।
शांतिधारा मैं करूँ, मिले शांति भंडार ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल चंपा जुही, सुरभित हरसिंगार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, होवे सौख्य अपार ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

तीर्थक्षेत्र को अर्घ

दोहा

शांति कुंथु अरनाथ के गर्भ जन्म तप ज्ञान।
हस्तिनागपुर में हुये चार कल्याण महान् ॥१॥

ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरे गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणक प्राप्तेभ्यः श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं……।

शांति कुंथु अरनाथ ने, पाया पद निर्वाण।
श्री सम्मेदाचल जजूं, सिद्धक्षेत्र सुखदान ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरात् निर्वाणपदप्राप्तेभ्यः श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं……।

जयमाला

दोहा

हस्तिनागपुर में हुये काश्यप गोत्र ललाम।
नमूं नमूं नत शीश मैं, शांति कुंथु अर नाम ॥१॥

शंभु छन्द

जय शांतिनाथ तुम तीर्थंकर, चक्री औ कामदेव जगमें।
माता ऐरावती धन्य हुई, पितु विश्वसेन भी धन्य बनें ॥
भादों वदि सप्तमि गर्भ बसे, जन्में वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि में।
इसही तिथि में दीक्षा लेकर, सित पौष दशमि केवली बनें ॥२॥

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि में, शिवपद साम्राज्य लिया उत्तम।
इक लाख वर्ष आयू चालिस धनु[1] तुंग चिन्हमृग तनु स्वर्णिम ॥
हे शांतिनाथ ! तीनों जग में, इक शांति के दाता तुमही।
इसलिये भव्यजन तुम पद का आश्रय लेते रहते नितही ॥३॥

श्री कुंथुनाथ पितु सूरसेन, माँ श्रीकांता के पुत्र हुये।
श्रावणवदि दशमी गर्भ बसे, बैशाख सितेकम[2] जन्म लिये ॥
इसही तिथि में दीक्षा लेकर, सित चैत्र तीज केवलज्ञानी।
बैशाख सितेकम मुक्ति बसे, पैंतिस धनु तुंग देह नामी ॥४॥

पंचानवे सहसवर्ष आयू, स्वर्णिम तनु छाग[3] चिन्ह प्रभु को।
सत्रहवें तीर्थंकर छट्ठे, चक्रेश्वर कामदेव तनु हो ॥
तुम पदपंकज का आश्रय ले, भविजन भववारिधि तरते हैं।
निजआत्मसौख्य अमृत पीकर, अविनश्वर तृप्ती लभते हैं ॥५॥

अरनाथ ! सुदर्शन पिता आप माँ ख्यात मित्रसेना जगमें।
फागुन सित तीज गर्भ आये, मगसिर सित चौदश को जन्में ॥
मगसिर सित दशमी दीक्षा ले, कार्तिक सित बारस ज्ञान उदय।
प्रभु चैत्र अमावस्या शिवपद, धनु तीस तुंग तनु सुवरणमय ॥६॥

चौरासी सहसवर्ष आयू, प्रभु चिह्न मीन[4] से जग जानें।
हम भी तुम पद पंकज में नत, सब रोग शोक संकट हानें ॥

---

१. धनुष २. सुदी एकम ३. बकरा ४. मछली।

जय जय रत्नत्रय तीर्थंकर, जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर ।
जय जय मंगलकर लोकोत्तम, जय शरणभूत है परमेश्वर ॥७॥

मैं शुद्ध बुद्ध हूँ सिद्ध सदृश, मैं गुण अनंत के पुञ्जरूप ।
मैं नित्य निरंजन अविकारी, चिच्चिंतामणि चैतन्यरूप ॥

निश्चयनय से प्रभु आप सदृश, व्यवहार नयाश्रित संसारी ।
तुम भक्ती से यह शक्ति मिले, निज संपति प्राप्त करूँ सारी ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकरेभ्यः जयमाला अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

दोहा

तुम पद भक्ति प्रसाद से, मिले यही वरदान ।
ज्ञानमती निधि पूर्ण हो, मिले अंत निर्वाण ॥९॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री शांतिनाथ पूजा

स्थापना-गीता छन्द

हे शांतिजिन ! तुम शांति के दाता जगत् विख्यात हो ।
इस हेतु मुनिगण आपके पद में नमाते माथ को ॥
निज आत्मसुखपीयूष को आस्वादते वे आप में ।
इस हेतु प्रभु आह्वान विधि से पूजहूँ नत माथ मैं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र ! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अष्टक—गीता छन्द

चिर काल से बहुप्यास लागे, नाथ ! अब तक ना बुझी ।
इस हेतु जल से तुम चरण युग, यजन की मनसा जगी ॥
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं ।
प्रभु शांति ऐसी दीजिये, हो फिर कभी वाञ्छा नहीं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं····।

भवताप शीतल हेतु भगवन् ! बहुत का शरणा लिया ।
फिर भी न शीतलता मिली, अब गंध से पद पूजिया ॥
श्री शांतिनाथ जिनेश·· ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं····।

बहुबार मैं जन्मा मरा अब तक न पाया पार है ।
अक्षय सुपद के हेतु अक्षत, से जजूं तुम सार है ॥
श्री शांतिनाथ जिनेश··· ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षत····।

चंपा चमेली बकुल आदिक, पुष्प ले पूजा करूं ।
मनसिजविजेता तुम अजत, निजआत्मगुणपरिचय करूं ॥
श्री शांतिनाथ जिनेश··· ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं···।

यह भूख व्याधी पिंड लागी, किस विधी में छूटहूं ।
पकवान नानाविध लिये, इस हेतु ही तुम पूजहूं ॥
श्री शांतिनाथ जिनेश··· ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं···।

---

१. कामदेव ।

अज्ञानतम दृष्टी हरे, निज ज्ञान होने दे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूं मन में उजेला हो सही॥
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिये, हो फिर कभी याचना नहीं॥६॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं····।

ये कर्मबैरी संग लागे, एक क्षण ना छोड़ते।
वर धूप अग्नी संग खेते, दूर से मुख मोड़ते॥
श्री शांतिनाथ जिनेश····॥७॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं····।

फल मोक्ष की अभिलाष लागी, किस तरह अब पूर्ण हो।
इस हेतु फल से तुम जजूं, सब विघ्न बैरी चूर्ण हों॥
श्री शांतिनाथ जिनेश····॥८॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं····।

अनमोल रत्नत्रय निधीकी मैं करूं अब याचना।
तुम अर्घ्य लेकर पूजते ही, पूर्ण होगी कामना॥
श्री शांतिनाथ जिनेश····॥९॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं····।

दोहा

शांतिनाथ पदकंज में, चउसंघ शांती हेत।
शांतिधारा मैं करूं, मिटे सकल भव खेद॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, पुष्प सुगंधित सार।
जिनपद पुष्पांजलि करूं, मिले सौख्य भंडार॥११॥
पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ

रोला छंद

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई॥
इंद्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति जिनवर पद सुखकारी॥१॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तमीगर्भमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने॥
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जगमें।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दशी जन्माभिषेकप्राप्ताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते॥
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दशी तपःकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

केवल ज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे॥
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशमी केवलज्ञानप्राप्ताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में॥
महा महोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छूटें सभी भवदुख से॥५॥

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दशी मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ।

दोहा

हस्तिनापुर में हुए, गर्भजन्मतपज्ञान।
मैं पूजूं इस क्षेत्र को, मिले भेद विज्ञान॥६॥

ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणकपवित्राय हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घं ...।

सम्मेदाचल से लिया, निज स्वतंत्र निर्वाण।
मैं पूजूं इस क्षेत्र को, मिले स्वात्म विश्राम॥७॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकपवित्राय श्रीसम्मेदाचलसिद्धक्षेत्राय अर्घं ...।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जयमाला

सोरठा

चिच्चैतन्य स्वरूप, चिन्मय चिंतामणि प्रभो।
करो स्वात्मसुखरूप, गाऊँ तुम गुणमणि अबे॥१॥

स्रग्विणी छंद

मैं नमूं मैं नमूं शांति तीर्थेश को।
नाथ मेरे हरो सर्व भवक्लेश को॥
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना॥१॥
सौख्यहेतु भटकता फिरा विश्व में।
किंतु पाई न साता कहीं रंच मैं॥पूरिये...॥२॥

नाथ ऐसी कृपा कीजिये भक्त पे ।
शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवे अबे ।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना ।
फेर होवे न संसार में आवना ।।३।।
स्वात्म पर का मुझे भेद विज्ञान हो ।
पूर्ण चारित्र धारू' जो निष्काम हो ।। पूरिये...।।४।।
पूर्ण शांति जहाँ पे वहीं वास हो ।
भक्त ये आप का आपके पास हो ।। पूरिये...।।५।।

दोहा

तीर्थंकर चक्री मदन, तीनों पद के ईश ।
पूर्ण ज्ञानमति हेतु मैं, नमूं नमूं नतशीश ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्य....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

दोहा

शांतिनाथ की अर्चना, हरे सकल दुख दोष ।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे स्वात्मसुखतोष ।।७।।

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

श्री कुंथुनाथ पूजा

दोहा

परमपुरुष परमातमा, परमानन्द स्वरूप ।
आह्वानन कर मैं जजूं, कुंथुनाथ शिवभूप ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर २ संवौषट्, आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं ।

अथ अष्टक—वसंततिलका

गंगानदी जल लिये त्रय धार देऊं ।
स्वात्मैक शुद्ध करना बस एक हेतू ॥
श्री कुंथुनाथ पद पंकज को जजूं मैं ।
छूटूं अनंत भव संकट से सदा जी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ⋯।

कर्पूर केशर घिसा कर शुद्ध लाया ।
संसार ताप शमहेतु तुम्हें चढ़ाऊं ॥श्री कुंथु⋯॥२॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ⋯।

शाली अखंड सित धौत सुथाल भरके ।
अक्षै अखंड पद हेतु तुम्हें चढ़ाऊं ॥ श्री कुंथु⋯॥३॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं⋯।

बेला गुलाब अरविंद सुचंपकादी ।
कामारिजित पद सरोरुह में चढ़ाऊं ॥ श्री कुंथु⋯॥४॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ⋯।

लड्डू पुआ अंदरसे [illegible] ।

क्षुध रोग नाश हित नेवज को चढ़ाऊं ॥ श्री कुंथु…॥५॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं…।

कर्पूर दीप लव ज्योति करें दशोंदिक् ।

मैं आरती कर प्रभो निज मोह नाशूं ॥ श्री कुंथु…॥६॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं…।

कृष्णागरु सुरभि धूप जले अगनि में ।

संपूर्ण पाप कर भस्म उड़े गगन में ॥ श्री कुंथु…॥७॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं…।

अंगूर आम फल अमृतसम मंगाके ।

अर्पूं तुम्हें सुफल हेतु अभीष्ट पूरे ॥ श्री कुंथु…॥८॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं…।

नीरादि अष्ट शुभद्रव्य सुथाल भरके ।

पूजूं तुम्हें निजसुखास्पद पाने हेतु ॥ श्री कुंथु…॥९॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं…।

सोरठा

कनकभृंग में नीर, सुरभित कमलपराग से ।

मिले भवोदधितीर, शांतिधारा मैं करूं ॥१०॥

शांतये शांतिधारा ।

बकुल गुलाब कुसुम्भ, सुरभित करते दश दिशा ।

पुष्पांजलि से पूज, वरूं आतम निधि अमल ॥११॥

पुष्पांजलिः ।

पंचकल्याणक अर्घ

—दोहा—

श्रावणवदि दशमी तिथि, गर्भ बसे भगवान्।
इंद्र गर्भ मंगल किया, मैं पूजूं इत आन ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशमीगर्भमंगलमण्डिताय श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

एकमसित वैसाख की, जन्में कुंथुजिनेश।
किया इंद्र वैभव सहित, सुरगिरि पर अभिषेक ।।२।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ जन्ममहोत्सवप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं···।

सित एकम वैशाख की, दीक्षा ली जिनदेव।
इन्द्र सभी मिल आयके, किया कुंथु पद सेव ।।३।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ दीक्षाकल्याणप्राप्ताय श्री कुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं ···।

चैत्रशुक्ल तिथि तीज में, प्रगटा केवलज्ञान।
समवसरण में कुंथुजिन, करें भव्य कल्याण ।।४।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयाकेवलज्ञानप्राप्ताय श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

सित एकम वैशाख की, तिथि निर्वाण पवित्र।
कुंथुनाथ के पदकमल, जजतें बनूं पवित्र ।।५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ मोक्षकल्याणप्राप्ताय श्री कुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं···।

तीर्थक्षेत्र अर्घ

गर्भ जन्म तप ज्ञान ये, चार कल्याण महान्।
कुंथुनाथ जिनके हुए, हस्तिनापुर मान्य ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनगर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणपवित्राय श्रीहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घं ···।

सम्मेदाचल से हुए, मुक्तिरमा के कंत।
सिद्धभूमि पूजूं सदा, होवे जग का अंत ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनमोक्षकल्याणकपवित्राय श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय अर्घं ...।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जयमाला

शिखरिणी छंद

जयो कुंथुदेवा नमन करता हूँ चरण में।
करें भक्तीसेवा सुरपति सभी भक्तिवश ते॥
तुम्हीं हो हे स्वामिन्! सकल जग के त्राणकर्ता।
तुम्हीं हो हे स्वामिन्! सकल जग के एक भर्ता॥१॥

घुमाता मोहारी चतुर्गति में सर्व जन को।
रुलाता ये वैरी भुवनत्रय में एक सबको॥
तुम्हारे बिन स्वामिन्! शरण नहिं कोई जगत में।
अतः कीजे रक्षा सकल दुख से नाथ! क्षण में॥२॥

प्रभो! मैं एकाकी स्वजन नहिं कोई भुवन में।
स्वयं हूँ शुद्धात्मा अमल अविकारी अकल मैं॥
सदा निश्चयनय से करमरज से शून्य रहता।
नहीं पाके निज को स्वयं भव के दुःख सहता॥३॥

प्रभो! ऐसी शक्ती मिले मुझ को भक्ति वश से।
निजात्मा को कर लूं प्रगट निज की युक्तिवश से॥
मिले निजकी संपत रतनत्रयमय नाथ मुझको।
यही है अभिलाषा कृपा करके पूर्ण कर दो॥४॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेंद्राय जयमाला अर्घं ...।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

दोहा

चक्रवर्ति सम्राट् प्रभु, कुंथुनाथ तीर्थेश।
केवलज्ञानमती मुझे, दो त्रिभुवनपरमेश ॥१॥

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

श्री अरनाथ तीर्थंकर पूजा

स्थापना

दोहा

तीर्थंकर अरनाथ ! तुम, चक्ररत्न के ईश ।
ध्यान चक्र से मृत्युको, मारा त्रिभुवन ईश ॥१॥
आह्वानन विधि से यहां, मैं पूजूं धर प्रीत ।
रोग शोक दुख नाशकर, लहूँ स्वात्म नवनीत ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर २ संवौषट्, आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं ।

अष्टक—अडिल्ल छंद

सिंधुनदी को नीर स्वर्णझारी भरूँ ।
मिलि पयोदधितीर, तीन धारा करूँ ॥
श्री अरनाथ जिनेंद्र, जजूँ मन लाय के ।
समतारस पीयूष, चखूँ तुम पाय के ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं···।

केशर कंचन घिसा, कटोरी में भरा ।
भवदाह बुझाने को चर्चूं सुखकरा ।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र····।।२।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं···।

चंद्रकिरण सम उज्ज्वल, अक्षत ले लिये ।
तुम आगे मैं पुंज करूँ सुख के लिये ।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र····।।३।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत···।

चंपा जुही गुलाब, पुष्प सुरभित लिये ।
भव विजयी के चरणों में अर्पण किये ।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र···।।४।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं····।

मालपुआ रसगुल्ला, बहु मिष्टान्न ले ।
क्षुधारोग हर हेतु, चढ़ाऊँ नित भले ।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र··· ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ···।

घृत दीपक ले करूँ आरती नाथ की ।
मोहध्वांत हर लहूँ, भारती ज्ञान की ।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र, जजूँ मन लाय के ।
समतारस पीयूष, चखूँ तुम पाय के ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं···।

अगुरु तगर वर धूप, अग्नि में खेवते ।
कर्म दूर हो नाथ ! चरण युग सेवते ।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र····।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं····।

श्रीफल पूग बदाम, आम केला लिये।
शिवफलहेतू तुम पद में अर्पण किये।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र, जजूं मन लाय के।
समतारस पीयूष, चखूं तुम पाय के।।८।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय मोक्षपदप्राप्तये फलं....।

जल चंदन अक्षत आदिक वसु द्रव्य ले।
अर्घ चढ़ाऊं आप निकट निज सुख मिले।।
श्री अरनाथ जिनेंद्र ....।।९।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं....।

सोरठा

अरजिन चरण सरोज, शांतीधारा मैं करूँ।
चउसंघ शांती हेत, शांतीधारा जगत में।।१०।।
शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प, सुरभित निजकर से चुने।
श्री जिनवर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।११।।
पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ

सखी छन्द

फाल्गुन शुक्ला तृतिया में, प्रभु गर्भ निवास किया तें।
सुरपति ने उत्सव कीना, हम पूजें भवदुखहीना।।१।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लातृतीयागर्भमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेंद्राय अर्घं।

मगसिर शुक्ला चौदस के, प्रभुजन्म लिया सुर हर्षे।
मेरू पर न्हवन हुआ है, इंद्रों ने नृत्य किया है।।२।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दशीजन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथजिनेंद्राय अर्घं...।

मगसिर सुदि दशमी तिथि में, दीक्षा धारी प्रभु वन में ।
इंद्रों से पूजा पाई, हम पूजें मन हरषाई ।।३।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशमीतपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

कार्तिक सुदि बारस तिथि में, केवलरवि प्रगटा निज में ।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता ।।४।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादशीकेवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

शुभ चैत्र अमावस्या में, मुक्तिश्री परणी प्रभु ने ।
इन्द्रों ने की प्रभु अर्चा, पूजन से निजसुख मिलता ।।५।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यामोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेंद्राय अर्घं...।

तीर्थक्षेत्र अर्घ

दोहा

हस्तिनागपुर में हुआ, गर्भ जन्म तप ज्ञान ।
पुण्यमयी इस भूमिको, नित प्रति करूँ प्रणाम ।।६।।
ॐ ह्रीं अरनाथजिनगर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणपवित्राय हस्तिनागपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घं...।

सम्मेदाचल से हुए, मुक्तिरमा के ईश ।
नमूं नमूं अरनाथ को, नित्य नमा कर शीश ।।७।।
ॐ ह्रीं अरनाथजिनमोक्षकल्याणपवित्राय श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय अर्घं ।
शांतये शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

जयमाला

पंचचामर छंद

जयो जिनेश ! आप तीर्थनाथ तीर्थरूप हो ।
जयो जिनेश ! आप मुक्तिनाथ मुक्तिरूप हो ।।

जयो जिनेश ! आप तीन लोक के अधीश हो ।
जयो जिनेश ! आप सर्व आश्रितों के मीत हो ॥१॥

सभी सुरेन्द्र भक्ति से सदैव वंदना करें ।
सभी नरेन्द्र आपकी सदैव अर्चना करें ॥
सभी खगेंद्र हर्ष से जिनेन्द्र कीर्ति गावते ।
सभी मुनीन्द्र, चित्त में तुम्हीं को एक ध्यावते ॥२॥

अपूर्व तेज आप देख कोटि सूर्य लज्जते ।
अपूर्व सौम्य मूर्ति देख कोटि चन्द्र लज्जते ॥
अपूर्व शांति देख क्रूर जीव वैर छोड़ते ।
सुमंद मंद हास्य देख शुद्ध चित्त होवते ॥३॥

अनेक भव्य आपके पदाब्ज पूजते सदा ।
अनेक जन्म पाप भी क्षणेक में नशें तदा ॥
अनेक जीव भक्ति बिन अनंत जन्म धारते ।
अनेक जीव भक्ति से अनंत सौख्य पावते ॥४॥

अनंत ज्ञानरूप हो अनंत ज्ञानकार हो ।
अनंत दर्शरूप हो अनंत दर्शकार हो ॥
अनंत सौख्यरूप हो अनंत सौख्यकार हो ।
अनंत वीर्यरूप हो अनंत शक्तिकार हो ॥५॥

दोहा

जो अरनाथ जिनेन्द्र को, पूजें त्रिकरण शुद्ध ।
केवलज्ञानमती सहित मिले, रतनत्रय शुद्ध ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जयमाला अर्घं···।

शांतये शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

सोरठा

अरजिनवर पादाब्ज, जो भवि पूजें भक्ति से ।
मिले मुक्ति साम्राज्य, नरसुर के सुख भोग के साथ।।

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

भगवान् महावीर पूजा

दोहा

स्वयंसिद्धलक्ष्मीपति, महावीर भगवान् ।
सर्व कर्म रिपु जीतकर, पाया पद निर्वाण ।।१।।
वर्धमान, अतिवीर प्रभु, सन्मति, वीर जिनेश ।
आवो आवो अब यहाँ, पूरो आश महेश ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टक—उपेन्द्रवज्रा

गंगानदी नीर पवित्र लाया,
पादाम्बुजों में प्रभु के चढ़ाया ।
निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूर चंदन घिस के सुगंधी,
श्री सन्मतिपाद जजूं अनंदी।
निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको जजूं मैं ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ताफलोंसमसित धौतअक्षत,
प्रभु को चढ़ाते पद होत शाश्वत ।
निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत निर्वपामीति स्वाहा ।

चंपा चमेली अरविन्द लाके,
कामारिजेता प्रभु को चढ़ाके ।
निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेनी पुआ घेवर मोदकादी,
क्षुधरोग नाशार्थ तुम्हें चढ़ा दी ।
निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूर ज्योति तम को हरे है,
तुम आरती ज्ञान उदै करे है ।

निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्णागरू धूप सुगंध खेऊं,
कर्मारि कर भस्म निजात्म सेवूं ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।७।।

ॐ ह्री श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर केला फल आम्र लाऊं,
शिव सौख्य हेतू प्रभुको चढ़ाऊं ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीरादि संयुक्त सुअर्घ्य लाऊं,
मोक्षैकहेतू तुमको चढ़ाऊं ।
निर्वाण लक्ष्मीपतिको जजूं मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूं मैं ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा,
श्री सन्मती के पदकंज धारा ।
निज स्वांत शांतीहित शांतिधारा,
करते मिले हैं भवदधि किनारा ।।१०।।

शांतये शांतिधारा ।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ,
पुष्पांजली कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भयको भगाऊँ,
शोकादि हरके सब सिद्धि पाऊँ ।।१४।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्यं

[illegible]

सिद्धार्थ राजा कुंडपुर में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़शुक्ला छठ तिथि प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें ।।१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरआसनों कंपित हुए।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े ।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

मगसिरवदी दशमीतिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें ।।३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।

कैवल्य सूर्य उदित हुआ, प्रभु के अघ तम नाशते।
वैशाख सित दशमी तिथी, प्रभु समवसृति में राजते॥
इन्द्रादिगण कैवल्य की, पूजा महोत्सव विधि करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निज ज्ञान ज्योति विकसित करें॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं…।

निर्वाण कल्याणक अर्घ्य

गीता छन्द

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि प्रत्यूष वेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर बीच में तिष्ठे विभो॥
निर्वाण लक्ष्मी वरण कर लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें॥५॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं….।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणी, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूं, सुखसंपतिसाकार॥१॥

(चाल—श्रीपति जिनवर करुणा…)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर,
महावीर वीर अतिवीर प्रभो।
जय जय गुणसागर वर्धमान,
जय त्रिशलानंदन वीर प्रभो॥

जय नाथवंश अवतंस नाथ !
जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थ तनुज फिर भी,
तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो ।।२।।

जिस वनमें ध्यान धरा तुमने,
उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर,
सब फूल रहीं क्यारी क्यारी ।।
जहं शीतल मंद पवन चलती,
जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तु गण,
आपस में मिलकर हरषायें ।।३।।

चहुं ओर सुभिक्ष सुखद शांती,
दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर,
सब जन मन हर्ष अपार सही ।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर,
दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे,
निरखे पर तृप्ति नहीं होती ।।४।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप,
मृगपति लांछन से जग जाने।
आयु बहत्तर वर्ष कही,
तुम लोकालोक सकल जाने ।।

भविजन खेती को धर्मामृत,
वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्ष मार्ग अक्षुण्ण किया,
यति श्रावक धर्म बता करके ॥५॥
मैं भी अब आप शरण आया,
करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा,
सम्यक्त्व निधि पूर्ण कीजे ॥
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर,
अपने ही पास बुला लीजे।
"सज्ज्ञानवती" निर्वाण श्री साम्राज्य,
मुझे दिलवा दीजे ॥६॥

घत्ता

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति,
जय जिन गुण संपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ,
पाऊँ निजगुण विख्याता ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

महावीर की निर्वाण बेला में, भविक शुचि भाव से।
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर पूजते अति चाव से ॥
वे भव्य नर सुर के अतुल संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि ज्ञानमति, निर्वाण लक्ष्मीपति बने ॥
इत्याशीर्वादः।

卐—卐

हस्तिनापुर पूजा

स्थापना—गीता छंद

श्री शांति कुंथु अर जिनेश्वर जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह मुनिवृन्द मन भावन किया॥
निज ज्ञान ज्योति प्रकट कर शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को मैं पूजहूँ हर्षित हिया॥

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्री शांति कुंथु अरतीर्थंकराः अत्र अवतरत अवतरत।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकराः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकराः अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

चामर छंद

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये॥
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ॥१॥

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय जल....।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये!
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये॥
हस्तिनागपुर....॥२॥

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय चंदनं....।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये ।।
हस्तिनागपुर····।।३।।

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अरतीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय अक्षत···।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण वर्ण के लिये।
मार मल्ल हारि तीर्थ क्षेत्र को चढ़ा दिए ।।
हस्तिनागपुर····।।४।।

ॐ ह्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय पुष्पं···।

खीर पूरिका इमर्तियां भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महा व्यथा हने ।।
हस्तिनागपुर····।।५।।

ॐ ह्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय नैवेद्यं····।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने ।।
हस्तिनागपुर····।।६।।

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय दीप····।

धूप गंध लेय अग्नि पात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये ।।
हस्तिनागपुर····।।७।।

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय धूपं···।

मातुलिंग आम्र सेव संतरा मंगाइये ।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये ।।
हस्तिनागपुर...।।८।।

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय जलं...।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को बनाइये ।
मुक्ति अंगना निमित्त तीर्थ को चढ़ाइये ।।
हस्तिनागपुर...।।९।।

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय अर्घं...।

दोहा

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल क्षीरोदधि सम श्वेत ।
तीरथ पर धारा करूं तिहुं जग शांति हेतु ।।
शांतये शांतिधारा ।
पारिजात के पुष्प से पुष्पांजली करंत ।
पावन तीर्थ महान यह करे भवोदधि अंत ।।
पुष्पांजलि : ।

जयमाला

दोहा

समवसरण में राजते ज्ञान ज्योति से पूर्ण ।
शांति कुंथु अर नाथ को पूजत ही दुख चूर्ण ।।१।।

शंभु छंद

श्री आदिनाथ को सर्व प्रथम इक्षुरस का आहार दिया ।
श्रेयांस नृपति ने, यहां तभी से दान तीर्थ यह मान्य हुआ ।।

देवों ने पंचाश्चर्य किया रत्नों की वर्षा खूब हुई।
बैशाखसुदी अक्षय तृतिया यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई ॥२॥
श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ जन्म तप ज्ञान चार कल्याणक इसही भूतल पर॥
अगणित देवी देवों के संघ सौधर्म इंद्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर भव भव के पाप नशाये थे ॥३॥
आचार्य अकंपन के संघ में मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया तब जन जन मन अकुलाये थे॥
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी ॥४॥
गंगा में गज को ग्राह ग्रसा तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रोपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा॥
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी पांडव भी हुये इसी भूपर ॥५॥
राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहां चौरासी फुट उत्तुंग सुमेरू बना अहो॥
यह जंबूद्वीप बना सुन्दर इसमें अठत्तर जिन मंदिर।
इक सौ तेईस हैं देवभवन उसमें भी जिन प्रतिमा मनहर ॥६॥
जो भक्त भक्ति में हो विभोर इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुङ्ग सुमेरू पर चढ़कर जिन वंदन कर हर्षाते हैं॥
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा गुण गाते गदगद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा अतिशायी पुण्य कमा जाते ॥७॥
श्री आदिनाथ, भरतेश और बाहुबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर तीर्थंकर की मूर्ति निरुपम॥
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर इसमें जिन प्रितिमा राजित है ॥८॥

जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर जय इनके पंचकल्याणक की ।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की ॥
जय जंबुद्वीप तेरहों द्वीप नंदीश्वर के जिन भवनों की ।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और सहदेव नकुल पांडव मुनि की ॥९॥

ॐ ह्रीं शांति कुंथु अर तीर्थंकर गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र हस्तिनापुर क्षेत्राय जयमाला अर्घं…।

शांतये, शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

दोहा

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष ।
ज्ञानमती संपत्ति दें, भरे आत्मसुख कोष ॥

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

सुदर्शन मेरु पूजा

त्रिभुवन के बीचों बीच कहा सबसे ऊँचा मंदर पर्वत ।
सोलह चैत्यालय है इस पर अकृत्रिम अनुपम अतिशययुत ॥
निज समता रस के आस्वादी ऋषिगण जहाँ विचरण करते वे ।
तीर्थंकर के अभिषव होते, उस गिरि की पूजा करते हैं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्ब समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्ब समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

समरस सम निर्मल जल लेकर मन से मेरु पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में भक्ति से जलधारा करके।।
निज साम्य सुधारस पीकर के भव तृष्णा दाह बुझा पाऊँ।
जिन प्रतिमा सम निज में निज को निश्चल कर
निज सुख पा जाऊँ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वच सम शीतल चंदन ले मन से मेरु पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में भक्ति से गंधार्चन करके।।
निज में सहजिक शीतलतामय, आनंद सुधारस को पाऊं।
जिन प्रतिमासम निज को निज में, निश्चल कर निज सुख···

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण सम उज्ज्वल अक्षत ले मन से मेरु पर जा कर के।
जिनवर प्रतिमा के चरण निकट भक्ति से जपुं चढ़ा करके।।
निज शुद्ध अखंडित आत्मा के अगणित गुण मणि को पा जाऊं।
जिन मूर्ति सम निज में निज को निश्चल कर निज सुख····

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

जिन यश सम सुरभित पुष्प लिये मन से मेरु पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में भक्ति से पुष्प चढ़ा करके।।
सौगंध्य सहित निज समयसारमय स्वात्म स्वभाव सहज पाऊँ।
जिन प्रतिमासम निज में निज को निश्चल कर निज सुख····

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावामृत के पिंड सदृश नैवेद्य सरस घृतमय लाके।
मन से मेरु पर जाकर के भक्ति से चरु चढ़ा करके॥
चित पिंड अखंड सुगुण मंडित पीयूष पिंड निज को पाऊँ।
जिन प्रतिमासम निज को निजमें निश्चल कर
निज सुख पा जाऊँ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन केवल सूर्य किरण सदृश जगमगता दीप जला करके।
मन से मेरु पर जाकर के भक्ति से युग आरति करके॥
अविभागी अनवधि ज्योतिर्मय निज परम बोध रवि प्रगटाऊँ।
जिन प्रतिमासम निज में निज को निश्चल कर शिव सुख···

ॐ ह्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन संमिश्रित धूप लिये मन से मेरु पर जा करके।
कर्मों को दहन करुँ संप्रति अग्नि में धूप जला करके॥
सब कर्म मलों से रहित शुद्ध निर्मल निज अक्षय गुण पाऊँ।
जिन प्रतिमा सम निज में निज को, निश्चल कर शिव सुख···

ॐ ह्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमभाव सम सुखदायी उत्तम रस युत फल ले करके।
मन से मेरु पर जा करके जिन प्रतिमा ढिग अर्पण करके॥
निज परमामृत आल्हादमयी सुख मयशिवफल को पा जाऊँ।
जिन प्रतिमा सम निज में निज को, निश्चल कर शिव सुख····

ॐ ह्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदिक अर्घ्य लिये मन से मेरु पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरण निकट भक्ति से अर्घ्य चढ़ा करके॥
सुख सत्ता दर्शन ज्ञानमयी शुद्धात्म स्वरूप स्वयं पाऊँ।
जिन प्रतिमा सम निज को निज में, निश्चल कर शिव सुख···

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनचैत्यालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन छवि सम कंचन झारी में शीतल सरिता जल भर करके।
मन से मेरु पर जा करके जिन सन्निध जल धारा करके॥
इंद्रिय विषयों से विगत सहज स्वाभाविक निज शांती पाऊँ।
जिन मूर्ति सम निज को निज में निश्चल कर निज सुख···

शांतये शांतिधारा।

कुवलय चंपक बेला आदि सुरभित कुसुमों को ले करके।
मन से मेरु पर जाकर के पुष्पांजलि शुभ अर्पण करके॥
सहजात्म समुद भव गुण सौरभ से निज को सुरभित कर पाऊँ।
जिन प्रतिमा सम निज को निज में निश्चल कर निज पद····

पुष्पांजलिः।

जाप्य

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धीषोडशजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

[जाप्य—१०८ बार सुगंधित पुष्पों या पीले तंदुलों से करना चाहिए]

जयमाला

श्रीमेरु सुदर्शन के ऊपर सोलह चैत्यालय भास रहे।
उसमें क्रमशः वन भद्रसाल नंदन सौमनसरु पांडुक हैं॥
चारों वन के चारों दिश में शुभ चार-चार जिनमंदिर हैं।
प्रति जिनमंदिर में जिनप्रतिमाएँ इकसौ आठ प्रमाण कहें॥

ये इंद्रिय सुखसे रहित अतीन्द्रिय ज्ञान सौख्य संपतिशाली।
सब रागद्वेष विकाररहित जिनवर प्रतिमा महिमाशाली ।।
तनु बीस हजार हाथ ऊँची पद्मासन मूर्ति सुखद सुन्दर।
प्रभु नासा दृष्टि सौम्य मुद्रा संस्मित मुखकमल अतुलमनहर ।।

यह एक लाख चालिस योजन ऊँचा शैलेन्द्र सुदर्शन है।
पृथ्वी पर चौड़ा दश हजार ऊपर में चार हि योजन है ।।
भूपर है भद्रसाल कानन चंपक अशोक तरु आदि सहित।
चारों दिश में जिनभवन चार उनमें जिनमूर्ति अकृत्रिम नित ।।

पृथ्वी से पांचशतक योजन ऊपर नंदनवन राजे हैं।
स्वात्मक निरत ऋषिगण गगनेगामी वहाँ निज को ध्याते है ।।
उससे साढ़े बासठ हजार योजन ऊपर सौमनस वनो।
सुरगण विद्याधर से पूजित जिनवर मंदिर हैं अतुल धनी ।।

उससे छत्तीस सहस्र योजन ऊपर पांडुकवन शोभ रहा।
चारों दिश चार जिनालय से ध्यानी मुनिगण से राज रहा ।।
चारों विदिशाओं में सुन्दर हैं पांडुक आदि चार शिला।
तीर्थंकर शिशुओं के अभिषव महिमोत्सव से है वे अमला ।।

भू से मेरु इकसठ हजार योजन तक चित्रित रत्नमयी।
उससे ऊपर कांचन छविमय चूलिका कही वैडूर्यमयी ।।
जिनमंदिर में ध्वजमंगल घट है रत्न कनकमणिमालाएँ।
हैं रत्नजटित सिंहासनादि अनुपम वैभवयुत मन भाएं ।।

पूजन वंदन दर्शनकर्ता भविजन का पुण्य प्रदान करें।
ज्ञानी ध्यानी मुनिगण को भी परमानंदामृत दान करें ।।
उनकी मुद्रा को निरख निरख पापों का पुंज विनाश करें।
उनकी मुद्रा को ध्या ध्या कर परमाल्हादक निज में विचरें ।।

जय जय षोडश जिनवर मंदिर जय जय अकृत्रिम सुखदाता।
जय जय मृत्युञ्जयि जिनवर की प्रतिमाकल्पद्रुमसमदाता ॥
जय जय जय सकल विमल केवल चैतन्यमयी आल्हाद भरें।
वे स्वयं अचेतन होकर भी चेतन को सिद्धि प्रदान करें ॥

मैं भी उनको पूजूं ध्याऊँ वंदूं प्रणमूं गुणगान करूं।
जिनसदन अकृत्रिम वंदन कर निजका भव भ्रमण समाप्त करूं ॥
निज आत्मा में निज आत्मा को पाकर निज में विश्राम करूं।
दो केवल ज्ञानमती मुझको जिससे याचना समाप्त करूं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी षोडश जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

दोहा

जो श्रद्धा भक्ति सहित, पूजें जिनवर धाम।
क्रम से ईप्सित सौख्ययुत, वे पावें निजधाम ॥

इत्याशीर्वादः।

卐——卐

जम्बूद्वीप पूजा

दोहा

स्वयंसिद्ध यह द्वीप है, जंबूद्वीप महान।
सब द्वीपों में है प्रथम, अनुपम रत्न निधान ॥१॥
इसमें शाश्वत जिन भवन, अट्ठत्तर अभिराम।
तीर्थंकर जिन केवली, साधु शील गुण खान ॥२॥
इन सब की पूजा करूँ, आत्मशुद्धि के हेतु।
जिन पूजा चिंतामणी, मन चिंतित फल देत ॥३॥

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब तीर्थंकर-केवलि-सर्व साधु समूह! अत्र अवतर-अवतर सवौषट्।

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब तीर्थंकर-केवलि-सर्व साधु समूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब तीर्थंकर-केवलि-सर्व साधु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-शम्भु छन्द

सुर सरिता का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
भव-भव की तृषा बुझाने को, त्रय धारा देने आया हूँ॥
इस जंबूद्वीपमें जिन मन्दिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है ॥१॥

ॐ ह्रीं जबूद्वीप सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि-सर्व साधुभ्यो जलं…।

वर अष्ट गंध सुरभित लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव-भव संताप मिटाने औ, समता रस पीने आया हूँ॥
इस जम्बूद्वीप… ॥२॥

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि-सर्व साधुभ्यो चन्दनं…।

शशि किरणों सम उज्ज्वल तंदुल, धोकर थाली भर लाया हूँ।
निज आतम गुण के पुंज हेतु, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ॥
इस जंबूद्वीपमें जिन मन्दिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है॥३॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि सर्व साधुभ्यो अक्षतं····।

कुवलय बेला वर मौलसिरी, मचकुन्द कमल ले आया हूँ।
शृंगार हार कामारिजयी, जिनवर पद भजने आया हूँ॥
इस जम्बूद्वीप···॥४॥

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि सर्व साधुभ्यो पुष्पं····।

मोदक फेनी घेवर ताजे, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आतम अनुभव चखने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ॥
इस जम्बूद्वीप···॥५॥

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि-सर्व साधुभ्यो नैवेद्यं···।

दीपक ज्योति के जलते ही, अज्ञान अंधेरा भगता है।
इस हेतू से दीपक पूजा, करते ही ज्ञान चमकता है॥
इस जम्बूद्वीप···॥६॥

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि सर्व साधुभ्यो दीपं····।

धूपायन में वर धूप खेय, दशदिश में धूम उठे भारी।
बहु जनम जनम के संचित भी, दुःखकर सब कर्म जलें भारी॥
इस जम्बूद्वीप···॥७॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि सर्व साधुभ्यो धूपं····।

वर आम्र बिजौरा नींबू औ, गन्ना मीठा ले आया हूँ ।
शिव कांता सत्वर वरने को, बस आशा लेकर आया हूँ ।।
इस जम्बूद्वीप····।।८।।

ॐ ह्री जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि सर्व साधुभ्यो फलं····।

जल चंदन अक्षत फूल चरु, वर दीप धूप फल लाया हूँ ।
तुम चरणों अर्घ चढ़ा करके, भव संकट हरने आया हूँ ।।
इस जम्बूद्वीप····।।९।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप सम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि-सर्व साधुभ्यो अर्घं ···।

सोरठा

क्षीरोदधि समश्वेत, उज्ज्वल जल ले भृंग में ।
श्री जिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे ।।१०।।
शांतये शांतिधारा ।
सुरतरु के सुम लाय, प्रभु पद में अर्पण करूं ।
काम देव मद नाश, पाऊं आनन्द धाम मैं ।।११।।
पुष्पांजलिः ।

जयमाला

परम ज्योति परमात्मा, सकल विमल चिद्रूप ।
जिनवर गणधर साधुगण नमूँ नमूँ निजरूप ।।१।।

शम्भु छन्द

जय जय सुमेरुगिरि के जिनगृह सोलह शाश्वत हैं रत्नमयी ।
जय जय जिनमन्दिर चारों ही गजदंतगिरी के स्वर्णमयी ।।
जय जय जंबूतरु शाल्मलि के, दो जिनमन्दिर महिमाशाली ।
जय जय वक्षारगिरि के भी सोलह जिनगृह गरिमाशाली ।।२।।

जय जय चौंतीस विजयार्ध के चौंतीस जिनमंदिर सुखकारी।
जय जय छह कुल पर्वत के भी छह जिनगृह भवभय दुःखहारी ।।
ये जम्बूद्वीप के अठत्तर, जिनमंदिर अकृत्रिम सुन्दर।
प्रतिजिन गृह में जिन प्रतिमायें हैं, इक सौ आठ कही मनहर ।।३।।

मेरु के पांडुक वन में चउ, विदिशा में चार शिलायें हैं।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक से पावन पूज्य शिलायें हैं ।।
इस भरत और ऐरावत में, होते हैं चौबीस तीर्थंकर।
केवलि श्रुतकेवली गणधर मुनि, साधुगण होते क्षेमंकर ।।४।।

उनके कल्याक से पवित्र पृथिवी पर्वत भी तीर्थ बने।
जो उनकी पूजा करते हैं उनके मन वांछित कार्य बनें ।।
बत्तीस विदेह के तीर्थंकर सीमंधर युगमंधर स्वामी।
बाहु सुबाहु जिन विहरमाण केवलज्ञानी अन्तर्यामी ।।५।।

उन सर्व विदेहों में संतत तीर्थंकर होते रहते हैं।
केवलज्ञानी चारणऋद्धि मुनिगण वहां विचरण करते हैं ।।
आकाशगमन करने वाले ऋषिगण मेरु पर जाते हैं।
निज आत्म सुधारस स्वादी भी जिनवंदन कर हर्षाते हैं ।।६।।

इस जंबूद्वीप के अठत्तर शाश्वत जिन मंदिर को वंदन।
जितने भी कृत्रिम जिनगृह हों उन सबको भी शत शत वंदन ।।
जितने तीर्थंकर हुए यहां हो रहे और भी होवेंगे।
उन सबको मेरा वंदन है वे मेरा कलिमल धोवेंगे ।।७।।

आचार्य उपाध्याय साधुगण जो भी हैं इन कर्मभूमियों में।
चिन्मय आत्मा को ध्याते हैं सुस्थिर होकर निज आत्मा में ।।
वे घाति चतुष्टय घात पुनः अर्हंत अवस्था पाते हैं।
इस कर्म भूमि से ही फिर वे भगवान सिद्ध बन जाते हैं ।।८।।

दोहा

पंच परम गुरु जिनधरम, जिनवाणी जिन गेह।
जिन प्रतिमा को नित नमूं ज्ञानमति धर नेह ॥९॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब तीर्थंकर केवलि साधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घं…।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

दोहा

जम्बूद्वीप की अर्चना करे, विघ्न घन चूर।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे सौख्य भरपूर ॥१०॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

त्रैलोक्य जिनालय पूजा

शम्भु छन्द

त्रिभुवन के जिनमंदिर शाश्वत, आठकोटि सुखराशी।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे चार शतक इक्यासी ॥
प्रतिजिनगृह में मणिमय प्रतिमा इकसौ आठ विराजें।
आह्वानन कर जजूं यहां मैं जन्ममरण दुख भाजें ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं…।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिअष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण ।

अथ अष्टक

स्रग्विणी छन्द

स्वर्ग गंगानदी नीर झारी भरूं ।
नाथ के पाद में तीन धारा करूं ।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूं भाव से ।
स्वात्म पीयूष पीऊं बड़े चाव से ।।१।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं....।

गंध चंदन घिसा के कटोरी भरूं ।
नाथ पादाब्ज अर्चूं सभी दुख हरूं ।।सर्व०।।२।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं....।

धौत तंदुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं ।
नाथ के अग्र में पुंज सुख हेतु हैं ।।सर्व०।।३।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसवम्न्धि अष्टकोटिषट्पचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतु.शत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्य. अक्षतं ...।

कुंद बेला सुगंधित कुसुम ले लिये ।
नाथ पादाब्ज में आज अर्पण किये ।।सर्व०।।४।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं....।

खीर बरफी अंदरसा पुआ लायके ।
नाथ के सामने चरु चढ़ाऊं अबे ।।सर्व०।।५।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं....।

दीप ज्योती लिये आरती मैं करूं।
मोह हर ज्ञान की भारती मैं भरूं ।।सर्व०।।६।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिअष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं…।

धूप खेऊं अबे धूपघट में जले।
कर्म निर्मूल हो देहकांती मिले ।।सर्व०।।७।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिअष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूप …।

आम्र अंगूर केला चढ़ाऊं भले।
मोक्ष की आश सह सर्व वांछित फलें ।।सर्व०।।८।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिअष्टकोटिषट्पचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतु.शत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फल…।

अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम ले लिये।
नाथ को अर्पहूँ रत्नत्रय के लिये ।।सर्व०।।९।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिअष्टकोटिषट्पचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्य …।

सोरठा

श्रीजिनवरपादाब्ज, शांतीधारा मैं करूं।
मिले स्वात्मसाम्राज, त्रिभुवन में सुख शांति हो ।।१०।।
शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूं।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुखसंपदा ।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

दोहा

जय त्रिभुवन के जिन भवन, जिनप्रतिमा जिनसूर्य ।
नमूं अनंतों बार मैं, भव्यकमलिनी सूर्य ॥१॥

शम्भु छन्द

जय अधोलोक के जिनगृह सात करोड़ बहत्तर लाख नमूं ।
जय मध्यलोक के चार शतक अट्ठावन जिनगृह नित्य नमूं ॥
जय व्यंतरसुर ज्योतिष सुर के जिनगेह असंख्याते प्रणमूं ।
जय अरध के चौरासि लाख सत्यानवे सहस तेईस नमूं ॥१॥

कोटयष्ट सुछप्पन लाख सत्यानवे सहस चारसौ इक्यासी ।
जिनधाम अकृत्रिम नमूं नमूं ये कल्पवृक्षसम सुखराशी ॥
नवसौपचीसकोटी त्रेपन्न लाख सत्ताइस सहस तथा ।
नवसौ अड़तालिस जिनप्रतिमा मैं नमूं हरो भव व्याधिव्यथा ॥२॥

जिनमंदिर लंबे सौ योजन पचहत्तर तुंग विस्तृत पचास ।
उत्कृष्ट प्रमाण कहा श्रुत में मध्यम लंबे योजन पचास ॥
चौड़े पचीस ऊंचे साढेसैंतिस जघन्य लंबे पचीस ।
चौड़े साढे बारह योजन ऊंचे योजन पौने उनीस ॥३॥

मेरु में भद्रसाल नंदन बन के वरद्वीप नंदीश्वर के ।
उत्कृष्ट जिनालय मुनि कहते मैं नमूं नमूं अंजलिकरके ॥
सौमनस रुचकगिरि कुंडलगिरि वक्षार कुलाचल के मंदिर ।
मनुजोत्तर इष्वाकार अचल मध्यम प्रमाण के जिनमंदिर ॥४॥

पांडुकवन के जिनगृह जघन्य मैं नमूं नमूं शिर नत करके ।
रजताचाल जंबू शाल्मलि तरु इनके मंदिर सबसे छोटे ॥

ये एक कोस लंबे आधे, चौड़े पोने कोस ऊँचे हैं।
सर्वत्र लघू जिनमंदिर का परिमाण यही मुनि गाते हैं ॥५॥

जिनगृह को बेढ़े तीन कोट चहुंदिश में गोपुर द्वार कहें।
प्रतिवीथी मानस्तंभ बने प्रतिवीथी नव नव स्तूप कहें ॥
मणिकोट प्रथम के अंतराल वनभूमि लतायें मनहरतीं।
परकोट द्वितिय के अंतराल दशविधी ध्वजायें फरहरती ॥६॥

परकोट तृतिय के बीच चैत्यभूमी अतिशायि शोभती है।
सिद्धार्थवृक्ष अरु चैत्यवृक्ष बिंबों से चित्त मोहती है ॥
प्रतिमंदिर मध्य गर्भगृह इकसौ आठ आठ अतिसुंदर हैं।
इन गर्भगेह में सिंहासन पर जिनवरबिंब मनोहर हैं ॥७॥

ये बिंब पांचसौ धनुष तुंग पद्मासन राजें मणिमय हैं।
बत्तीस युगल यक्ष दोनों बाजू में चंवर ढुराते हैं ॥
जिनप्रतिमा निकट श्रीदेवी श्रुतदेवी की मूर्ती शोभें।
सानत्कुमार सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति भव्य जन मन लोभें ॥८॥

प्रत्येक बिंब के पास सुमंगल द्रव्य एक सौ आठ-आठ।
श्रृंगार कलश दर्पण चामर ध्वज छत्र व्यजन अरु सुप्रतिष्ठ ॥
श्रीमंडप आगे स्वर्ण कलश शोभें बहु धूपघड़े सोहें।
मणिमय सुवर्णमय मालायें चारण ऋषि का भी मन मोहें ॥९॥

मुखमंडल प्रेक्षामंडप अरु वंदन अभिषेक मंडपादी।
क्रीड़ा नर्तन संगीत गुणनगृह चित्र भवन विस्तृतअनादि ॥
बहुविध रचना इन मंदिर में गणधर भी नहिं कह सकते हैं।
मां सरस्वती नित गुण गाये मुनिगण अतृप्त ही रहते हैं ॥१०॥

मैं नित्य जिनालय को वंदूं नित शीश झुकाऊं गुण गाऊं।
जिनप्रतिमा के पद कमलों में बहुबार नमूं नित शिर नाऊं ॥

प्रत्यक्ष दर्श मिल जाय प्रभो ! इसलिये परोक्ष करूं वंदन ।
निज ज्ञानमती ज्योती प्रगटे इस हेतु करूं शत शत वंदन ॥११॥

दोहा

चिंता मणि जिनमूर्तियाँ, चिंतित फल दातार ।
चिच्चैतन्य जिनेंद्र को, नमूं नमूं शत बार ॥१२॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशत्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतु:शतैकाशिजिनालयजिनबिम्बेभ्य: जयमाला पूर्णार्घं ...।

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलि: ।

卐—卐

मध्यलोक जिनालय पूजा

अथ स्थापना

शंभु छन्द

श्री स्वयंसिद्ध जिनमंदिर यहाँ पर चार शतक अट्ठावन हैं ।
मणिमय अकृत्रिम जिनप्रतिमा मुनिगण के मनभावन हैं ॥
सौ इंद्रों से वंदित जिनगृह इनकी पूजा नित्य करूं ।
आह्वानन स्थापन करके निजके सन्निध नित्य करूं ॥१॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिपंचमेर्वादि चतु:शतअष्टपंचाशत् जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिपंचमेर्वादि चतु:शतअष्टपंचाशत् जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं ।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिपंचमेर्वादि चतु:शतअष्टपंचाशत् जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथ अष्टक

चांम्नु छन्द

ये जन्मजरामृति तीनरोग, भव भव से दुःख देते आवें।
त्रय धारा जल की देकर के मैं पूजूँ ये त्रय नश जायें ॥
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिनमंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निजआतम ज्योती सौख्यमयी ॥१॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धि चतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं…।

नानाविध व्याधी रोग शोक, तनमें मन में संताप करें।
चंदन से तुम पद चर्चूं मैं, यह पूजा भव-भव ताप हरे ॥
ये० ॥२॥

ॐ ह्री मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चदनं…।

जग में इंद्रिय सुख खंड-खंड नहिं इनसे तृप्ती हो सकती।
अक्षत के पुँज चढ़ाऊँ मैं, अक्षय सुख देगी तुम भक्ती ॥
ये० ॥३॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षत…।

इस कामदेव ने भ्रांत किया निज आत्मिक सुख से भुला दिया।
ये सुरभित सुमन चढ़ाऊँ मैं, निज मन कलिका को खिला लिया ॥
ये० ॥४॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशतअष्टपचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं…।

उदराग्नी प्रशमनहेतु नाथ ! त्रिभुवन के भक्ष्य सभी खाये।
नहिं मिली तृप्ति इसलिये प्रभो ! चरु से पूजत हम हर्षाये ॥
ये० ॥५॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्य…।

अज्ञान अंधेरा निज घट मे नहिं ज्ञान ज्योति खिलपाती है।
दीपक से आरति करते ही अघरात्रि शीघ्र भग जाती है।।
ये० ।।६।।

ॐ ह्री मध्यलोकसम्बन्धिचतु शतअष्टपचाशत् जिनालयजिनबिम्बेभ्य दीप ।

वरधूप घटो मे धूप खेय, चहुंदिश में सुरभि महकती है।
सब पाप कर्म जल जाते हैं, गुणरत्नन राशि चमकती है।।
ये० ।।७।।

ॐ ह्री मध्यलोकसम्बन्धिचतुशतअष्टपचाशत् जिनालयजिनबिम्बेभ्य धूप---।

नानाविध फल की आश लिये, बहुते कुदेव के चरण नमें।
अब सरस मधुर फल से पूजे बस एक मोक्षफल आश हमें।।
ये० ।।८।।

ॐ ह्री मध्यलोकसम्बन्धिचतुशतअष्टपचाशत् जिनालयजिनबिम्बेभ्य फल···।

जल गंध आदि मे चाँदी के सोने के पुष्प मिला करके।
मै अर्घ चढ़ाऊं हे जिनवर! रत्नत्रयनिधि दीजे तुरते।।
ये० ।।९।।

ॐ ह्री मध्यलोकसम्बन्धिचतु शतअष्टपचाशत् जिनालयजिनबिम्बेभ्य अर्घ्यं···।

दोहा

शीत सुगंधित नीर से, प्रभु पद धार करंत।
त्रिभुवन मे भी शांति हो, आतम सुख विलसंत ।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले सर्व सुख संपदा, परमानंद तुरंत ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

शंभुछन्द

जय जय जय मध्यलोक के सब, शाश्वत जिनमंदिर मुनि वंदें।
जय जय जिनप्रतिमा रत्नमयी, भविजन वंदत ही अघ खंडें॥
जय जय जिनमूर्ति अचेतन भी चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें उनकी आतम निधि भर देतीं॥१॥
जय पांच मेरु के अस्सी हैं, जंबू आदिक तरु के दश हैं।
कुल पर्वत के तीसों जिनगृह, गजदंत गिरी के बीसहिं हैं॥
वक्षार गिरी के अस्सी हैं, इकसौ सत्तर रजताचल के।
दो इष्वाकार जिनालय हैं, चारहिं मंदिर मनुजोत्तर के॥२॥

नंदीश्वर के बावन, कुंडलगिरि रुचकगिरी के चउ चउ हैं।
ये चार शतक अट्ठावन इन जिनगृह को मेरा वंदन है॥
प्रतिजिनगृह में जिनप्रतिमायें सब इकसौ आठ-आठ राजें।
उनचास हजार चारसौ चौंसठ प्रतिमा वंदन अघ भाजें॥३॥

स्वात्मानदैक परम अमृत, झरने से झरते समरस को।
जो पीते रहते ध्यानी मुनि' वे भी उत्कंठित दर्शन को॥
ये ध्यान धुरंधर ध्यानमूर्ति, यतियों को ध्यान सिखाती हैं।
भव्यों को अतिशय पुण्यमयी, ऊनवधि पीयूष पिलाती हैं॥४॥

ढाई द्वीपों के मंदिर तक मानव विद्याधर जाते हैं।
आकाशगमन ऋद्धीधारी, ऋषिगण भी दर्शन पाते हैं॥
आवो आवो हम भी पूजें ध्यावें वंदें गुणगान करें।
भव भव के संचित कर्मनाश, पूर्णैक ज्ञानमति उदित करें॥५॥

घत्ता

जय जय श्री जिनवर, धर्म कल्पतरू, जय जिनमंदिर सिद्धमही।
जय जय जिनप्रतिमा, सिद्धन उपमा, अनुपममहिमा सौख्यमही ॥६॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घं ···।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

卐—卐

समवसरण पूजा

अथ स्थापना

गीता छन्द

तीर्थंकरों की सभाभूमी, धनपती रचना करें।
है समवसरण सुनाम उसका, वह अतुलवैभव धरे॥
जो घातिया को घातते, कैवल्यज्ञान विकासते।
वे इस सभा के मध्य अधर सुगंधकुटि पर राजते॥१॥

दोहा

अनंत चतुष्टय के धनी, तीर्थंकर चौबीस।
आह्वानन कर मैं जजूं, नमूं नमूं नत शीश॥२॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्द्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्द्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्द्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक—चाल—नन्दीश्वर पूजा

जिनवचसम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, जिन पद धार करूँ॥
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरे॥१॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनायजलं....।

जिन तनु सम सुरभित गंध, कंचन पात्र भरूँ।
मैं चर्चूं जिनपद पद्म, भव संताप हरूँ॥जिन०॥२॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

जिन ध्वनि सम अमल अखंड, तंदुल थाल भरूँ।
मैं पुंज धरूँ जिन अग्र, सौख्य अखंड भरूँ॥जिन०॥३॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तायविनाशनाय अक्षतं....।

जिन यश सम सुरभित पुष्प, चुन चुन कर लाऊँ।
जिन आगे पुष्प समर्प्य, निजके गुण पाऊँ॥जिन०॥४॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामवाणविनाशनाय पुष्प....।

जिन वच अमृत के पिंड, सदृश चरू लाऊँ।
जिनवर के निकट चढ़ाय, समरस सुख पाऊँ॥जिन०॥५॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य ....।

जिन तनु की कांति समान, दीपक ज्योति धरे।
मैं करूं आरती नाथ, मम सब आर्त हरे॥जिन०॥६॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

जिन यश सम सुरभित धूप, खेऊं अग्नी में।
हो अशुभ कर्म सब भस्म, पाऊँ निज सुख मैं॥जिन०॥७॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

जिनवच सम मधुर रसाल, श्रीफल फल बहुते।
जिन निकट चढ़ाऊं आज, अतिशय भक्तियुते॥जिन०॥८॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्ताय फलं....।

जल चंदन आदि मिलाय, अर्घ बनाय लिया।
निज पद अनर्घ के हेतु, आप चढ़ाय दिया ॥जिन०॥९॥
ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घं···।

दोहा

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
आत्यंतिक शांति मिले, प्रगटे सौख्य अनिंद ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।
लाल श्वेत पीतादि बहु, सुरभित पुष्प गुलाब।
पुष्पांजलि से पूजते, हो निजात्म सुख लाभ ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

दोहा

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, गुण अनंत की खान।
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान ॥१॥

शंभु छंद

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, तुम धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुखवीर्य चतुष्टय भर्ता हो ॥
जय जय अनंत गुण के धारी, प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचता है त्रिभुवन मनहारी ॥२॥

प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इन्द्र नीलमणि रचित गोल, आकार बना गुणमणिमाली ॥
सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े, चढ़ जाते सब अतिशायि घनी ॥३॥

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
काँहि पद्मराग काँहि मरकतमणि, काँहि इन्द्र नीलमणि से मनहर ॥
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊंचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊंचे ॥४॥

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा,।उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से, मानी मान गलित करते ॥
इस समवसरण में चार कोट, अरू पांच वेदिकायें ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि, फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची ॥५॥

इस धूलिसाल अभ्यंतर में, है भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मन्दिर अंतर से, पांच पांच प्रासाद सुगम ॥
चारों गलियों में उभय तरफ, दो दोय नाट्यशालायें हैं।
अभिनय करती जिनगुण गातीं, सुर भवनवासि कन्यायें हैं ॥६॥

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची, गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी, ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा ॥
फिर आगे खाई स्वच्छनीर, से भरी दूसरी भूमि है।
फूले कुवलय कमलों से युत, हंसों के कलरव की ध्वनि है ॥७॥

फिर दूजी वेदी के आगे, तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले, जो पुष्पवृष्टि करते मनहर ॥
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत, में प्रवेश करती जनता ॥८॥

आगे उद्यान भूमि चौथी, चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तपर्ण, चंपक अरू आम्र तरू के हैं ॥
प्रत्येक दिशा में एक एक, तरू चैत्य वृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिन प्रतिमा प्रातिहार्य युत चार चार मणिमय दीखें ॥९॥

इसके आगे वेदी सुन्दर, फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा, गोपुर द्वारों से युत शोभे॥
फिर कल्पवृक्ष भूमी छठी, दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों, हैं सिद्धों की प्रतिमा उनमें॥१०॥

चौथी वेदी के बाद भवन, भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नवस्तूप रत्नों निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद॥
परकोटा स्फटिकमयी चौथा, मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्री मंडप भूमी, बारह कोठों से जनमनहर॥११॥

फिर पंचम वेदी के आगे, त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश, पर धर्मचक्र चारों दिश हैं॥
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज, नवनिधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी, पर जिनवर दर्शन पाप हरें॥१२॥

जय जय जिनवर सिंहासन पर, चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, सुनकर सब भविजन तृप्त भये॥
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजे ध्यावें गुण गावें वे जिन गुण संपति प्राप्त करें॥१३॥

दोहा

चतुर्मुखी ब्रह्मा तुम्हीं, ज्ञान व्याप्त जगविष्णु।
देवों के भी देव हो, महादेव अरि जिष्णु॥१४॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यो जयमाला अर्घं....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

卐—卐

मानस्तंभ पूजा

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

धूलिसाल के अभ्यंतर में चारों दिश वीथी में।
मानस्तंभ रत्नमणि निर्मित शोभें चारों दिश में॥
उनमें चारों दिश जिन प्रतिमा भक्ति भाव से वंदूं।
आह्वानन कर पूजन करके कर्म शत्रु को खंडू॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छन्द

नंदा वापी का निर्मल जल, कंचन भृंग भराऊं।
श्री जिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊं॥
मानस्तंभ चार दिश में भी, जिन प्रतिमा को पूजूं।
निज समरस सुख सुधा पान कर आठों मद से छूटूं॥१॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो जलं…।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊं।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं निजानंद सुख पाऊं॥
मानस्तंभ० ॥२॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो चंदनं…।

मोतीसम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊं।
अमल अखंडित सुख से मंडित निज आतमपद पाऊं॥
मानस्तंभ चार दिश में भी, जिन प्रतिमा को पूजूं।
निज समरस सुख सुधा पान कर मद से छूटूं॥३॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं···।

समवसरण की लता भूमि से सुरभित पुष्प चुनाऊं।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं निजगुण यश विकसाऊं॥
मानस्तंभ० ॥४॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं···।

अमृतपिंड सदृश चरू ताजे घेवर मोदक लाऊं।
जिनवर आगे अर्पण करते सब दुःख व्याधि नशाऊं॥
मानस्तंभ० ॥५॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं···।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर करूं आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञान ज्योति उद्योतन॥
मानस्तंभ० ॥६॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो दीपं···।

अगुरू तगर चन्दन से मिश्रित धूप सुगंधित लाऊं।
अशुभ कर्म को दग्ध करूं मैं अग्नी संग जलाऊं॥
मानस्तंभ॥ ॥७॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो धूपं···।

सेव आम अंगूर सरस फल लाके थाल भराऊं।
जिनवर सन्निध अर्पण करते परमानंद सुख पाऊं॥
मानस्तंभ० ॥८॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो फलं···।

जल चन्दन अक्षत कुसुमावलि आदिम अर्घ बनाऊं ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं तीन रत्न निज पाऊं ।।६।।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिम्बेभ्यो अर्घं....।

दोहा

पद्म सरोवर नीर से, जिनवर पद अरविंद ।
त्रयधारा विधि से करूं हों सुख शांति अनिंद ।।१०।।
शांतये शांतिधारा ।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण के फूल ।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल ।।११।।
पुष्पांजलिः ।

जयमाला

शम्भु छन्द

जय जय मानस्तंभ चउदिश के, जय जय उन सबकी जिनप्रतिमा ।
जय जय मानी का मान हरें, जय सार्थक नाम धरी महिमा ।।१।।
प्रत्येक जिनेश्वर ऊँचाई, से बारह गुणे कहे ऊँचे ।
ये योजन बीस करें प्रकाश, बारह योजन से ही दीखें ।।२।।
इनको घेरे हैं तीन कोट, जो चउ गोपुर द्वारों से युत ।
इन कोट अभ्यंतर बावड़िया उद्यान देवगुण से संयुत ।।
इनमध्य चतुर्दिक् सोम व यम, अरू वरूण कुबेर जु लोकपाल ।
इनके आवास बने सुन्दर, उनमें रमते ये पुण्यशील ।।३।।
बीचों बीच कटनी तीन कही, वैडूर्य सुवर्ण रत्नमयी ।
द्वय कटनी पर पूजन सुद्रव्य, अठ मंगल द्रव्य ध्वजादि सही ।।
तीजी पर मानस्तंभ खड़े, ये मूल भाग में वज्रमयी ।
सर्वत्र फटिक मणि के सुन्दर, ऊपर में हैं वैडूर्यमयी ।।४।।

ये मूलभाग में चतुष्कोण, ऊपर तक गोल बने सुंदर।
इनमें पहलू हैं दो हजार, जिनकी है चमक बहुत मनहर ॥
ऊपर में छत्र चंवर घंटा, किंकिणियां रत्नहार शोभें।
चारों दिश आठ सुप्रातिहार्य, अद्भुत शिखरों से अति शोभें ॥५॥

चारों दिश जिन प्रतिमायें हैं, जिनके वंदन से पाप टरें।
क्षीरोदधि से जल ला करके, सब सुरगण मिल अभिषेक करें ॥
चंदन अक्षत पुष्पादि लिये, सुर नरगण पूजा करते हैं।
सम्यग्दृष्टी बहुभक्ति लिये, जिनगुण स्तवन उच्चरते हैं ॥६॥

पूरब मानस्तंभ के चउदिश, नंदोत्तर नंदा नंदिमती।
नंदीघोषा बावड़ियां, कमलों कुमुदों से गंधवती ॥
दक्षिण मानस्तंभ चउदिश में, बावड़ियां नीर पवित्र भरी।
विजया व वैजयंता रू जयंता, अपराजिता सुनाम धरी ॥७॥

पश्चिम मानस्तंभ चारों दिश, बावड़ी अशोका सुप्रबुद्धा।
कुमुदा व पुंडरीका फूले, कुमुदों युत नीर भरी शुद्धा ॥
उत्तर मानस्तंभ के चउदिश, हृदयानन्दा सु महानन्दा।
सुप्रतिबुद्धा अरु प्रभंकरा, वापी जलभरीं जनानंदा ॥८॥

इन सबमें मणिमय सीढ़ी है, द्वय बाजू दो-दो कुंड बने।
इन कुंडों में सुरनर पशुगण, पगधूली धोकर शुद्ध बने ॥
इन सोलह वापी का वर्णन, सुरपति भी नहीं कर सकते हैं।
बहु हंस बत्तख सारस पक्षी, उनमें कलरव ध्वनि करते हैं ॥९॥

जिनवर सन्निध का ही प्रभाव, जो मानस्तम्भ मान हरते।
यदि सुरपति भी अन्यत्र रचे, नहिं यह प्रभाव वे पा सकते ॥
है धन्य घड़ी यह धन्य दिवस, जो पूजन का सौभाग्य मिला।
वह धन्य घड़ी भी मिले शीघ्र, साक्षात दर्श हो जाय भला ॥१०॥

दोहा

जय-जय जिनवर बिंब सब, जय-जय मानस्तम्भ ।
"ज्ञानमती" सुख संपदा, भरो हरो जगफंद ॥११॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिम्बेभ्यो जयमाला अर्घं....।

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः ।

卐——卐

गणधर पूजा

गीता छन्द

गणधर बिना तीर्थेश की वाणी न खिर सकती कभी ।
निज पास में दीक्षा ग्रहें गणधर भि बन सकते नहीं ॥
तीर्थेश की ध्वनि श्रवणकर उन बीज पद के अर्थ को ।
जो ग्रथें द्वादश अंगमय मैं जजूं उन गुणनाथ को ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथ अष्टक

भुजंग प्रयात

पयोराशि का नीर निर्मल भराऊं ।
गुरु के चरण तीन धारा कराऊं ॥
जजूं गणधरों के पदाम्भोज को मैं ।
तरूं शीघ्र संसार वाराशि को मैं ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः जलं....।

सुगंधीत चंदन लिये भर कटोरी।
जगत्तापहर चर्च हूं हाथ जोरी ॥जजूं०॥२॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः चंदनं…।

धुले श्वेत अक्षत लिये थाल भरके।
धरूं पुंज तुम पास बहु आशधर के ॥जजूं०॥३॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः अक्षतं…।

जुही केतकी पुष्प की माल लाऊं।
सभी व्याधिहर आप चरणों चढ़ाऊं ॥जजूं०॥४॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः पुष्पं…।

सरसमिष्ट पक्वान्न अमृत सदृश ले।
परमतृप्ति हेतू चढ़ाऊं तुम्हें मैं ॥जजूं०॥५॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः नैवेद्यं…।

शिखा दीप की जगमगाती भली है।
जजत ही तुम्हें ज्ञानज्योती जली है ॥जजूं०॥६॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः दीपं…।

अगुरू धूप खेते उड़े धूम्र नभ में।
दुरित कर्म जलते गुरू भक्ति वशतें ॥जजूं०॥७॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः धूपं…।

अनन्नास नींबू बिजौरा लिये हैं।
तुम्हें अर्पते सर्व वांछित लिये हैं ॥जजूं०॥८॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः फलं…।

लिये थाल में अर्घ है भक्ति भारी।
गुरू अर्चना है सदा सौख्यकारी ॥जजूं०॥९॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः अर्घं…।

दोहा

गणधर पदधारा करूं, चउसंघ शांतीहेत ।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख देत ॥१०॥
शांतये शांतिधारा ।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार ।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः ।

जयमाला

त्रिभंगी छन्द

जय जय श्री गणधर, धर्म धुरंधर जिनवर दिव्यध्वनी धारें ।
द्वादश अंगों में, अंग बाह्य में, गूंथे ग्रन्थ रचें सारे ॥
गुरू नग्न दिगंबर, सर्व हितंकर, तीर्थंकर के शिष्य खरे ।
मैं नमूं भक्ति धर, ऋद्धि निधीश्वर, मुझ शिवपथ निर्विघ्न करे ॥१॥

स्त्रग्विणी छन्द

मैं नमूं मैं नमूं नाथ गणधार को ।
शील संयम गुणों के सुभंडार को ॥
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना ।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना ॥नाथ०॥२॥
ऋद्धियां सर्व तेरे पगों के तले ।
सर्व ही सिद्धियां आप चरणों भले ॥नाथ०॥३॥
हलाहल विष कभी पाणि में आवता ।
शीघ्र अमृत बने ऋद्धि गुण गावता ॥नाथ०॥४॥
दीप्ततप ऋद्धि से नित्य उपवास है ।
देह की कांति फिर भी खुली कान्त है ॥नाथ०॥५॥

सर्व चौंसठ ऋद्धी धरें गुण भरें।
भक्तगण की सभी आश पूरी करें ॥नाथ०॥६॥

विघ्न बाधा हरो सर्व सम्पत भरो।
स्वात्मपीयूष दे नाथ तृप्ती करो ॥नाथ०॥७॥

मोह का नाशकर क्रोध शत्रू हरो।
मृत्यु को मार दूं ऐसी शक्ती भरो ॥नाथ०॥८॥

चार ज्ञानी प्रभो! चारगति भय हरो।
दे चतुष्टय अनंती सदा सुख करो ॥नाथ०॥९॥

इन्द्रभूती महामान मद से भरे।
पास आते हि सम्यक्त्व निधि को धरें॥नाथ०॥१०॥

शिष्य होके दिगम्बर मुनी बन गये।
चार ज्ञानी हुये गणपती बन गये ॥नाथ०॥११॥

वीर की ध्वनि छियासठ दिनों में खिरी।
इन्द्र का हर्ष ना मावता उस घरी ॥नाथ०॥१२॥

श्रावणी प्रतिपदा्वन प्रथम वर्ष का।
वीर शासन दिवस आज भी शर्मदा ॥नाथ०॥१३॥

बारहों अंग पूर्वों कि रचना करी।
आज तक भी वही सार में है भरी ॥नाथ०॥१४॥

गणधरों के बिना दिव्यध्वनि ना खिरे।
पद उन्हें जो प्रभू पास दीक्षा धरें ॥नाथ०॥१५॥

गणधरों का सुमाहात्म्य मुनि गावते।
कीर्ति गाके कोई पार ना पावते ॥नाथ०॥१६॥

धन्य मैं धन्य मैं धन्य मैं हो गया।
धन्य जीवन सफल आज मुझ हो गया ॥नाथ०॥१७॥

आप गणइन्द्र की भक्ति शोकापहा।
आपकी भक्ति ही सर्व सौख्यावहा॥
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना॥१८॥
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
ज्ञानमति पूर्ण हो सुख असाधारणा॥नाथ०॥१६॥

दोहा

चौबीसों तीर्थेशके, गणधर गुण आधार।
नमूं नमूं उनके चरण, मिले स्वात्मनिधिसार॥२०॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवानां वृषभसेनादिएकोनषष्ठिअधिकचतुर्दशशतगणधरचरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घं…।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

चौंसठ ऋद्धि पूजा

अथ स्थापना

गीता—छन्द

चौबीस तीर्थंकर जगत में सर्व का मंगल करें।
गणधर गुरु गुण ऋद्धिधर नित सर्व मंगल विस्तरें॥
गुणरत्न चौंसठ ऋद्धियां मंगल करें निज सुख भरें।
मैं पूजहूं आह्वान कर मेरे अमंगल दुख हरें॥१॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

वसंततिलका छन्द

रेवा नदी जल भराकर शुद्ध लाऊँ ।
संपूर्ण कर्ममल दूर करो चढ़ाऊँ ॥
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी ।
पूजूं मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

काश्मीरि केशर घिसूं भरके कटोरी ।
चर्चूं मिटे हृदय ताप सु आश पूरी ॥बुद्ध्यादि०॥२॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः भवातापविनाशनाय चंदनं....।

मोती समान धवलाक्षत थाल में हैं ।
धारूं सुपुंज निज सौख्य अखंड हो है ॥बुद्ध्यादि०॥३॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं....।

बेला जुही कमल फूल खिले खिले हैं ।
पूजूं सदा सुयश सौख्य मिले भले हैं ॥बुद्ध्यादि०॥४॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

लड्डू पुआ घृत भरे पक्वान्न लाऊं ।
क्षुद्व्याधि नष्ट करने हित में चढ़ाऊं ॥बुद्ध्यादि०॥५॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

कर्पूर ज्योति जलती करती उजाला ।
ज्ञानैक ज्योति भरती भ्रमतम निकाला ॥बुद्ध्यादि०॥६॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं....।

खेऊं सुगंध वर धूप सुअग्नि संगी ।
दुष्टाष्ट कर्म जलते करते सुगंधी ॥बुद्ध्यादि०॥७॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं....:

केला अनार फल आम्र भराय थाली।
अर्पूं तुम्हें नहिं मनोरथ जांय खाली।।
बुद्धयादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूं मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।८।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्य मोक्षफलप्राप्तये फलं…।

नीरादि अर्घ कर स्वर्णिम पुष्प लेऊं।
अर्घावतार करके निज रत्न लेउं।।बुद्धयादि०।।९।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं…।

दोहा

चौंसठ ऋद्धि समूह को, जलधारा से नित्य।
पूजत ही शांती मिले, चहुंसंघ में भी इत्य[1]।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल बेला कुसुम सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते मिले सौख्य भंडार।।११।।

दिव्य पुष्पांजलि।

जयमाला

सोरठा

ऋद्धि उन्हीं के होय, यथाजात मुद्रा धरें।
नमूं नमूं नत होय, जिनमुद्रा की शक्ति हो।।१।।

स्रग्विणी छन्द

धन्य हैं धन्य हैं धन्य हैं ऋद्धियां।
वंदते ही फलें ये सभी सिद्धियां।।
मैं नमूं मैं नमूं सर्व ऋद्धी धरा।
ऋद्धियों को नमूं मैं नमूं गणधरा।।२।।

१. यहाँ

बुद्धि ऋद्धि कही हैं अठारा विधा।
विक्रिया ऋद्धियाँ हैं सुग्यारा विधा ।।
है क्रियाचारणा ऋद्धि नौ भेद में।
ऋद्धि तप सात विध दीप्त तप आदि में ।।३।।

ऋद्धि बल तीन विध शक्ति वर्धन करे।
औषधी आठ विध स्वास्थ्य वर्धन करे ।।
ऋद्धि रस षट्‌विधा क्षीर अमृतप्रदे।
ऋद्धि अक्षीण दो भेद अक्षय धरें ।।४।।

आठ विध ये महा ऋद्धि चौंसठ विधा।
भेद संख्यात होते सु अंतर्गता ।।
बुद्धि ऋद्धी जजें बुद्धि अतिशय धरें।
विक्रिया पूजते विक्रिया बहु करें ।।५।।

चारणी ऋद्धि आकाशगामी करे।
पुष्प जल पर चलें जीव भी ना मरें ।।
दीप्ततप आदि ऋद्धी धरें जो मुनी।
कांति आहार बिन भी रहे उस धनी ।।६।।

तप्ततप से कभी भी न नीहार हो।
शक्ति ऐसी जगत् सौख्य करतार जो ।।
क्षीरस्रावी मधुस्रावी अमृतस्रवी।
इन वचो भी बने क्षीर अमृतस्रवी ।।७।।

औषधी ऋद्धि से रुग्ण नीरोग हों।
साधु तनवायु से विष रहित स्वस्थ हों ।।
ऋद्धि अक्षीण से अन्न अक्षय करें।
पूजते साधु को पुण्य अक्षय भरें ।।८।।

घत्ता

जय जय सब ऋद्धी, गुणमणिनिद्धी, पूजत ही सुखसिद्धि करें।
जय ज्ञानमती धर, नमें मुनीश्वर, निज शिवपद सुख शीघ्र भरें ।।६।।
ॐ ह्रीं चतु:षष्टिऋद्धिभ्य: जयमाला पूर्णार्घं....।
शांतये शांतिधारा । पुष्पांजलि: ।

卐—卐

गौतम गणधर पूजा

गीता छन्द

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप आदि नाम प्रधान हैं ।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ ।
स्थापना करके यहां सब कार्य में मंगल भजूँ ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टकं—नन्दीश्वर पूजन चाल

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे ।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके ।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे ।
तुम पद पूजा तत्काल अंतर्ताप हरे ॥
श्री गौतम गणधर देव, पूजूं मन लाके ।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं ।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने ।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे ॥श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं····।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया ।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया ॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं···।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे ।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें ॥श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं····।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले ।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं···।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े ।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े ॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं····।

बादाम सुपारी सेब, उत्तम फल लाऊं ।
गणनाथ चरण युगपूज, वांछित फल पाऊं ॥श्री०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं····।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूं ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूं ॥श्री०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं···।

गुरु चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार मैं करूँ ॥श्री०॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

बकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर मैं।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूं इक पल में ॥श्री०॥११॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने नमः (१०८ या ९ बार)

जयमाला

दोहा

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊं तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण ॥१॥

रोला छन्द

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवरण में नामी ॥
जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा ॥२॥

इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता ॥
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा ॥३॥
छयासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय कीनो अति सुखठानी ॥
गौतमशाला माँहि, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया ॥४॥

मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये ।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये ।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूं मैं ।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चाहूं मैं ।।५।।

त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है ।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है ।।
चलो गुरु के पास, मैं शास्त्रार्थ करूंगा ।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूंगा ।।६।।

उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके ।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके ।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा ।
वचन "जयतु भगवान्" स्तुति रूप उचारा ।।७।।

निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना ।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना ।।
द्वादशांग मय ग्रन्थ, गौतम गुरु ने कीने ।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने ।।८।।

वीर प्रभु निर्वाण, के दिन केवल पायो ।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो ।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इंद्र रचे हैं ।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजें हैं ।।९।।

इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में ।
गणपति, लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में ।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है ।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है ।।१०।।

गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवें।
धन धान्यादि पूर, मोक्ष संपदा देवें॥
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजें हैं।
"केवलज्ञान" प्रकाश हेतू आप भजें हैं॥११॥

दोहा

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूं महान॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला अर्घ्यं…।

दोहा

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजा

स्थापना

गीता छन्द

कैवल्यज्ञान महान लक्ष्मी त्रय जगत में मान्य है।
सब लोक और अलोक जिसमें एक अणु समान है॥
जिस चाह से सब साधुगण भी सेवते परमात्म को।
उस महालक्ष्मी को जजूं करके मुदा आह्वान को॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मीः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मीः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मीः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं—नरेन्द्र छन्द

गंगानदि का पावन जल ले, कंचनभृंग भरूं मैं।
ज्ञानभानु गुण पूजन करके, भव भव प्यास हरूं मैं॥
केवलज्ञान महालक्ष्मी को नित पूजूं हरषाऊं।
सुख संपति सौभाग्य प्राप्तकर, शिवलक्ष्मी को पाऊं॥१॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

अष्टगंध कंचन के द्रवसम कनक कटोरी भरिये।
ज्ञानसूर्य का अर्चन करके, पूर्ण शांति को वरिये॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै संसारतापविनाशनाय चन्दनं....।

सिंधुफेन सम उज्जवल अक्षत, धौत अखंडित लाऊं।
पूरण गुणमणि अर्चन हेतू, रुचि से पुंज चढ़ाऊं॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....।

बकुल मालती पारिजात के पुष्प सुगंधित लाऊं।
मदन विनाशक ज्ञानभानु को, पूजा नित्य रचाऊं॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै कामबाणविनाशनाय पुष्पं....।

मोतीचूर सु लाडु घेवर, फेनी आदि बनाके।
क्षुधा वेदनी दूर करन को जजूं ज्ञान गुण आके॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

घृत दीपक कर्पूर ज्योति से, करूं आरती रुचि से।
अंतर में श्रुतज्ञान पूर्ण कर जजूं भारती मुद से॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं....।

धूप सुगंधित अग्नि पात्र में, खेऊं कर्म जलाऊं।
परमज्योति की पूजा करके, सौख्य अपूरब पाऊं॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

सेव आम्र अंगूर फलों से, पूजूं हरष बढ़ाऊं।
ज्ञानज्योति का अर्चन करते मोक्ष महाफल पाऊं ॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं···।

जल चंदन अक्षत माला चरू, दीपधूप फल लाऊं।
जिनगुण लक्ष्मी की पूजाकर, रत्नत्रयनिधि पाऊं ॥केवल०॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं···।

सोरठा

ज्ञान महानिधि हेतु ज्ञान महालक्ष्मी भजूं।
शांतिधारा देत, आत्यंतिक शांती वरूं ॥
शांतये शांतिधारा।

सुरतरू के वर पुष्प लेय, महालक्ष्मी जजूं।
पुष्पांजलि से शीघ्र, प्राप्त करूं सुख संपदा ॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै नमः।

जयमाला

दोहा

पूर्णज्ञान लक्ष्मी महा, मुक्ति सहेली सिद्ध।
गाऊं जयमाला अबे, पाऊं सौख्य समृद्ध ॥१॥

चाल—हे दीनबंधु

जय जय अनंत गुण समूह सौख्य करंता।
जय जय श्री अरिहंत घातिकर्म के हंता ॥
जय जय अनंतदर्श ज्ञानवीर्य सुख भरें।
जयजय समवसरण विभूति सर्व निधि धरें ॥२॥

केवलरमा को सेवतीं संपूर्ण ऋद्धियां।
उस आगे आगे दौड़ती हैं सर्व सिद्धियां॥
सब भूत भविष्यत् व वर्तमान को लखे॥
पर्याय सभी गुण सभी तत्काल युग विखें॥३॥

दर्पण समान स्वच्छज्ञान में जगत् दिखे।
त्रैलोक्य अर अलोक प्रतिबिंब सम दिपे॥
संपूर्ण प्रदेशों से दर्शज्ञान प्रगटता।
व्यवधान रहित ज्ञान अतीन्द्रिय विलसता॥४॥

पचेन्द्रियां औ मन भी सहायक नहीं वहां।
केवल्यज्ञान इसी से असहाय है यहां॥
प्रतिपक्ष रहित एक अकेला स्वतंत्र है।
इससेहि आतमा का राज्य एकतंत्र है॥५॥

इसके अनंत चमत्कार आर्ष में कहे।
शाश्वत अनंत सौख्य का भंडार यह रहे॥
कैवल्य के गुणों को कोई गा नहीं सके।
मां शारदा गणधर गुरु भी हारकर थके॥६॥

फिर भी हुआ वाचाल मैं गुणगान कर रहा।
पीयूष एक कण भी मिले सौख्य कर अहा॥
हे नाथ! बात एक मेरी राख लीजिये।
कैवल्यज्ञानमती रवि प्रभात कीजिये॥७॥

दोहा

केवल ज्ञान महान में, लोकालोक समस्त।
इक नक्षत्र समान है, नमूं नमूं सुखमस्तु॥८॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

[illegible] [illegible]लक्ष्मी की, पूजा नित्य करें जो।
[illegible] [illegible]ग्राम्य रिद्धि निधि, लक्ष्मी वश्य करें सो ।।
[illegible] विन लक्ष्मी हेतू, इस लक्ष्मी को ध्याके।
केवल ज्ञानमती लक्ष्मी को वरें सर्वसुख पाके ।।१।।

इत्याशीर्वादः ।

卐——卐

जिनवाणी पूजा

शंभु छंद

तीर्थंकर के मुख से खिरती, अनअक्षर दिव्यध्वनी भाषा।
बारह कोठों में सबके हित, परिणमती सर्वजगत् भाषा ।।
[illegible] गुरु जिन ध्वनि को सुनकर, बारह अंगों में रचते हैं।
हम दिव्यध्वनि का आह्वानन, करके भक्ती से यजते हैं ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिवाणीसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिवाणीसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिवाणीसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथ अष्टक

भुजंग प्रयात छंद

मुनीचित्त समनीर पावन लिया है ।
सरस्वति चरण तीन धारा दिया है ॥
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं ।
करूं चित्त पावन महा ध्वनि नदी में ॥१॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः जलं...।

तपे स्वर्णरस सम घिसा गंध लाया ।
सरस्वति चरण चर्च कर सौख्य पाया ॥जजूं०॥२॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः चंदनं...।

धुले श्वेत अक्षत अखंडित लिये हैं ।
प्रभो कीर्ति के पुंज अर्पण किये हैं ॥जजूं०॥३॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः अक्षतं...।

जुही मोगरा केतकी पुष्प लेके ।
चढ़ाऊँ प्रभू की ध्वनी को रुची से ॥जजूं०॥४॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः पुष्पं...।

मलाई पुआ खीर पूरी बनाके ।
चढ़ाऊँ प्रभू कीर्ति को क्षुध विनाशे ॥जजूं०॥५॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः नैवेद्यं...।

जले दीप ज्योती दशों दिक् प्रकाशे ।
जजों नाथ ध्वनि को स्वपर ज्ञान भासे ॥जजूं०॥६॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः दीपं...।

अग्निपात्र में धूप खेवें सुगंधी ।
सरस्वति पूजा है करूं मोह बंधी ॥जजूं०॥७॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः धूपं...।

अननास अंगूर केला फलों को।
चढ़ाऊँ महामोक्ष फल हेतु ध्वनि को ॥
अजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूं चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में ॥८॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः फलं....।

जलादी लिये स्वर्ण पुष्पों सहित मैं।
करूं अर्घ अर्पण सरस्वति चरण मैं ॥अजूं०॥६॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः अर्घं....।

दोहा

गंगा नदि को नीर ले, शारद मां पद कंज।
त्रय धारा देते मिले, मुझे शांति सुखकंद ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगन्ध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

शम्भु छन्द

जय जय तीर्थंकर धर्म चक्रधर, जय प्रभु समवसरण स्वामी।
जय जय त्रिभुवन त्रयकाल एक, क्षण में जानो अंतर्यामी ॥
जय सब विद्या के ईश, आप की दिव्यध्वनी जो खिरती है।
वह तालु ओष्ठ कंठादिक के, व्यापार रहित ही दिखती है ॥१॥

अठरह महाभाषा सातशतक, क्षुद्रक भाषामय दिव्य धुनी।
उस अक्षर अनक्षरात्मक को, संज्ञी जीवों ने आन सुनी॥
तीनों संध्या कालों में यह, त्रय त्रय मुहूर्त स्वयमेव खिरे।
गणधर चक्री अरु इंद्रों के, प्रश्नों वश अन्य समय भि खिरे॥२॥

भव्यों के कर्णों में अमृत बरसाती शिव सुखदानी है।
चैतन्य सुधारस की झरणी, दुखहरणी यह जिनवाणी है॥
जन चार कोश तक इसे सुने निजनिज के सब कर्तव्य गुने।
नित ही अनंत गुण श्रेणि रूप परिणाम शुद्ध कर कर्म हने॥३॥

छह द्रव्य पांच हैं अस्तिकाय, अरु तत्व सात नवपदार्थ भी।
इनको कहती ये दिव्य ध्वनि, सबजन हितकर शिवमार्ग सभी॥
आनन्त्य अर्थ के ज्ञान हेतु जो बीज पदों का कथन करे।
अतएव अर्थकर्ता जिनवर उनकी ध्वनि मेघ समान खिरे॥४॥

उन बीजपदों में लीन अर्थ प्रतिपादक बारह अंगों को।
गणधर गुरु गूंथें अतएव ग्रन्थकर्ता माने वंदूं उनको॥
जिन श्रुत ही महातीर्थ उत्तम, उसके कर्ता तीर्थंकर हैं।
ये सार्थक नाम धरें जग में, इससे तिरते भवसागर हैं॥५॥

जय जय प्रभुवाणी कल्याणी, गंगाजल से भी शीतल है।
जय जय शमगर्भित अमृतमय, हिमकण से भी अति शीतल है॥
चंदन अरु मोतीहार चंद्रकिरणों से भी शीतलदायी।
स्याद्वादमयी प्रभु दिव्यध्वनी, मुनिगण को अतिशय सुखदायी॥६॥

वस्तु में धर्म अनंत कहे, उन एक एक धर्मों को जो।
यह सप्तभंगि अद्भुत कथनी, कहती है सात तरह से जो॥
प्रत्येक वस्तु में विधि निषेध, दो धर्म प्रधान गौण मुख से।
वे सात तरह से हों वर्णित, नहिं भेद अधिक अब हो सकते॥७॥

प्रत्येक वस्तु है अस्तिरूप, अरु नास्तिरूप भी है वो ही।
वो ही है उभयरूप समझो, फिर अवक्तव्य भी है वो ही॥
वो अस्तिरूप अरु अवक्तव्य, फिर नास्ति अवक्तव भंग धरे।
फिर अस्तिनास्ति अरु अवक्तव्य, ये सात भंग हैं खरे खरे॥८॥

इस सप्तभंगमय सिंधू में जो नित अवगाहन करते हैं।
वे मोह राग द्वेषादि रूप सब कर्म कालिमा हरते हैं॥
वे अनेकांतमय वाक्य सुधा पीकर आतमरस चखते हैं।
फिर परमानंद परमज्ञानी होकर शाश्वत सुख भजते हैं॥९॥

मैं निज अस्तित्व लिये हूँ नित, मेरा पर में अस्तित्व नहीं।
मैं चिच्चैतन्य स्वरूपी हूँ, पुद्गल से मुझ नास्तित्व सही॥
इस विध निज को निज के द्वारा, निजमें ही पाकर रम जाऊँ।
निश्चयनय से सब भेद मिटा, सब कुछ व्यवहार हटा पाऊँ॥१०॥

भगवन् ! कब ऐसी शक्ति मिले, श्रुत दृग् से निजको अवलोकूं।
फिर स्वसंवेद्य निज आतम को, निज अनुभव द्वारा मैं खोजूं॥
संकल्प विकल्प सभी तज के, बस निर्विकल्प मैं बन जाऊँ।
फिर केवल ज्ञानमती से ही, निजको अवलोकूं सुख पाऊँ॥११॥

दोहा

सब भाषामय दिव्य ध्वनि, वाङ्-मय गंगातीर्थ।
इसमें अवगाहन करूं, बन जाऊं जग तीर्थ॥१२॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः जयमाला पूर्णार्घं....।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

卐—卐

जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना

नरेंद्र छन्द

ढाई द्वीप में पांच भरत हैं पांच कहे ऐरावत।
पांच महाविदेह क्षेत्रों में कर्मभूमि है शाश्वत॥
सुर नर निर्मापित बहु पूजित मुनि गण से नित वंदित।
जिनप्रतिमा जिनमंदिर अगणित थापूं यहां जजूं नित॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंब-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंब-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

भुजंगप्रयात छन्द

मुनीचित्त सम नीर उज्ज्वल लिया है।
प्रभू पाद में तीन धारा किया है॥
जजूं जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूं जैन प्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं॥१॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंबे-भ्यः जलं....।

कपूरादि से मिश्र चंदन घिसाया।
प्रभूपाद अरविंद में मैं चढ़ाया॥जजूं०॥२॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंबे-भ्यः चंदनं....।

धुले श्वेत तंदुल धरूं पुंज आगे।
मिले सौख्य अक्षय सभी दुःख भागे॥
जजूं जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूं जैन प्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं॥३॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंबेभ्यः अक्षतं····।

जुही मोंगरा केवड़ा पुष्प लाऊं।
प्रभू को चढ़ाते निजी सौख्य पाऊं॥जजूं०॥४॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंबेभ्यः पुष्पं····।

पुआ खीर मोदक इमरती चढ़ाऊं।
क्षुधा व्याधि हरके अतुल तृप्ति पाऊं॥जजूं०॥५॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं····।

मणीदीप की ज्योति तम को हरे है।
करूं आरती ज्ञानज्योती भरे है॥जजूं०॥६॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं···।

दशांगी सुरभि धूप खेऊं अगनि में।
जले कर्म बैरी मिले शांति चित में॥जजूं०॥७॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिम्बेभ्य धूप····।

अनंनास नींबू बिजौरा चढ़ाऊं।
महामोक्ष की आश से शीश नाऊं॥जजूं०॥८॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिम्बेभ्य: फलं····

रजत पुष्प ले अर्घ अर्पण करूं मैं।
प्रभो! रत्नत्रय हेतु अर्चन करूं मैं॥जजूं०॥९॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं···।

सोरठा

जिनप्रतिमा जिनरूप, चरणों में धारा करूं।
मिले स्वात्म चिद्रूप, शांतीधारा शिव करे ॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूं।
मिले स्वात्मसुख लाभ, चहुँगति भ्रमण विनाश हो ॥११॥

दिव्य पुष्पांजलि।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय अर्हंतों की प्रतिमा, जय जय सिद्धों की प्रतिमायें।
जय जय आचार्यों की प्रतिमा, जय उपाध्याय की प्रतिमायें ॥
जय जय साधुगण की प्रतिमा, जय जय जय जिनवर प्रतिमायें।
जय जय तीर्थंकर की प्रतिमा, इन वंदत आत्म निधी पायें ॥१॥

इस युग में सुरपति ने आकर सब प्रथम अयोध्या पुरी रची।
इस मध्य जैन मंदिर रचके चहुँदिश में जिनगृह रचना की ॥
भरतेश्वर ने भि अयोध्या में बहुते जिनमंदिर बनवाये।
कैलाश गिरी पर त्रय चौबीसी बहत्तर मंदिर बनवाये ॥२॥

हरिषेण चक्रपति ने रत्नों के अगणित मंदिर बनवाये।
श्रीरामचंद्र ने कुंथलगिरि पर बहुते मंदिर चिनवाये ॥
युग आदी से अब तक लेकर जिनगृह असंख्य ही माने हैं।
उन सबकी जिनप्रतिमा पूजूं ये भव भव के दुख हाने हैं ॥३॥

जय पांच भरत के जिनमंदिर जय पांच ऐरावत के मंदिर।
जय पांच विदेहों के मंदिर जय मुनिगण वंदित जिनमंदिर ॥

इन पांच विदेहों के सब इक सौ साठ देश कहलाते हैं।
पण भरत पांच ऐरावत मिल इक सौ सत्तर बन जाते हैं ॥४॥

इनमें भरतैरावत क्षत्र में षट् काल परावर्तन होते।
चौथे व पांचवें कालों में जिनमंदिर भविजन मल धोते ॥
सब इकसौ साठ विदेहों में शाश्वत ही कर्मभूमि रहती।
जिनमंदिर वहां निरंतर हैं जिनधर्म ध्वजा वहां फरहरती ॥५॥

सुरगण भी कभी कभी जिनगृह जिनप्रतिमा की रचना करते।
नरपति खगपति साधारण नर जिनगृह को निर्मापित करते ॥
माणिक्य नीलमणि गरुत्मणी रत्नों की प्रतिमा बनवाते।
सोना चांदी पीतल तांबा पाषाण आदि की बनवाते ॥६॥

फिर पंच कल्याण प्रतिष्ठा कर मूर्ती को पूज्य बनाते हैं।
जिनवर के गुण आरोपण कर वर प्राण प्रतिष्ठा कराते हैं ॥
ये मूर्ति अचेतन होकर भी चेतन भगवान बनें तबही।
निज भक्तों को वांछित देकर चेतन भगवान बनें तब ही ॥७॥

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंच परमेष्ठी हैं।
जिनधर्म जिनागम जिन प्रतिमा जिनगृह मिल नवों देवता हैं ॥
पांचों परमेष्ठी नवदेवों की मूर्ति मंदिरों में सोहें।
मां सरस्वती की मूर्ति मुनी गणधर की प्रतिमा मन मोहें ॥८॥

जिनमूर्ति सहस्रकूट मंदिर अरु तीस चौबीसी प्रतिमायें।
महाव्रत से पवित्र आर्यिकाओं की मूर्ति नमत ही सुख पायें ॥
जिनशासन यक्ष यक्षिणी की मूर्ती जिनगृह में रहती हैं।
दिक्पालों क्षेत्रपालों की भी मूर्ती विघ्नों को हरती हैं ॥९॥

इन पंद्रह कर्मभूमियों के सब जिनमंदिर मैं नमूं नमूं।
सब जिनवर की प्रतिमाओं को, मैं नित्य नमूं मैं नित्य नमूं ॥

सब पंच परमगुरु आदिबिंब जितने भी कृत्रिम इस जग में।
मैं नमूं नमूं नित भक्ती से मुझ मनरथ पूरें हों क्षण में ॥१०॥

दोहा

जितने जिनमंदिर यहां, जिनप्रतिमा सुरवंद्य।
अक्षत स्वात्मसुख प्राप्त हो, ज्ञानमती आनंद ॥११॥

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसम्बन्धिपंचदशकर्मभूमिस्थितसर्वकृत्रिमजिनालय जिन-बिम्बेभ्य: जयमाला पूर्णार्घं…।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

卐 — 卐

तीस चौबीसी पूजा

गीता छंद

मंगलमयी सब लोक में उत्तम शरण दाता तुम्हीं।
वर तीस चौबीसी जिनेश्वर सात शत औ बीस ही ॥
नर लोक में ये भूत संप्रति भावि तीर्थंकर कहे।
पण भरत पण ऐरावतों में पंच कल्याणक लहें ॥१॥

दोहा

आवो आवो नाथ ! अब यहां विराजो आन।
आह्वानन विधि से सदा मैं पूजूं अघ हान ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—स्रग्विणी छंद

सिंधु को नीर भृंगार में लायके।
धार देऊँ प्रभो पाद में आयके॥
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूं।
जन्म व्याधि हरूं सर्व दुख से बचूं॥१॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं····।

गंध सौगंध्य कर्पूर केशर मिली।
पाद चर्चंत सम्यक्त्व कलिका खिली॥तीस०॥२॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं····।

दुग्ध के फेन सम स्वच्छ अक्षत लिये।
पुंज को धारते स्वात्म संपत लिये॥तीस०॥३॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ··।

केवड़ा मोगरा पुष्प अरविंद हैं।
नाथ पद पूजते काम शर भंग हैं॥तीस०॥४॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं···।

मुग्दलाडू इमरती कनक थाल में।
पूजते भूखव्याधी हरूं हाल में॥तीस०॥५॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं···।

स्वर्ण के पात्र में ज्योति कर्पूर की।
नाथ की आरती मोह को चूरती॥तीस०॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं····।

धूप दशगंध ले अगिन में खेवते।
कर्म की भस्म हो नाथ पद सेवते॥तीस०॥७॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं—।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद अर्चते मुक्तिकांता मिले॥तीस०॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं—।

नीर गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूं नाथ के भाल में ॥तीस०॥९॥

ॐ ह्रीं त्रिशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं…।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांतीकर सदा।
चउसंघ शांतीहेत, शांतीधारा मैं करूं ॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूं ॥११॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

दोहा

अनंत दर्शन ज्ञान औ सुख औ वीर्य अनंत।
अनंत गुण के तुम धनी, नमूं नमूं भगवंत॥

(चाल—हे दीनबंधु…)

जैवंत तीर्थंकर अनंत सर्वकाल के।
जैवंत धर्मतंत्र हो त्रय काल के॥
जो पांच भरत पांच ऐरावत में हो रहे।
वे भूत वर्तमान औ भविष्य के कहे ॥१॥

इस जंबूद्वीप में हैं भरत और ऐरावत।
इन दो ही क्षेत्र में सदा हो काल परावृत॥

जो पूर्वधातकी औ अपर धातकी कहे।
इन दोनों में भी भरत ऐरावत सदा कहे ॥२॥
वर पुष्करार्ध पूर्व अपर में भी दोय दो।
हैं क्षेत्र भरत और ऐरावत प्रसिद्ध जो ॥
इस ढाई द्वीप में प्रधान क्षेत्र दश कहे।
षट्काल परावर्तनों से चक्रवत् रहें ॥३॥
इनके चतुर्थ काल में तीर्थेश जन्मते।
जो भूत वर्तमान भाविकाल धरंते ॥
इस विधि से तीस बार हों चौबीस जिनेश्वर।
ये सात सौ हैं बीस कहे धर्म के ईश्वर ॥४॥
इनको त्रिकाल बार बार वंदना करूं।
मैं भक्तिभाव से सदैव अर्चना करूं ॥
सम्पूर्ण कर्मपर्वतों को खंडना करूं।
निज ज्ञानमती पायफेर जन्म ना धरूं ॥५॥

घत्ता

जय जय तीर्थंकर, धर्मचक्रधर भवसंकटहर तुमहिं भजूं।
जय तीन रतनधर निजसंपति वर अनुपम सुख को नित्य चखूं ॥६॥
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति ....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो तीस चौबीसी जिनेश्वर की सदा पूजा करें।
वर पंचकल्याणक अधिप जिननाम के गुण उच्चरें ॥
वे पंच परिवर्तन मिटाकर पंचकल्याणक भरें।
निर्वाणलक्ष्मी ज्ञानमति युत पाय निजसंपत्ति वरें ॥७॥
इत्याशीर्वादः।

सप्तपरमस्थान पूजा

गीता छंद

श्री वीतराग जिनेन्द्र को प्रणमूं सदा वर भाव से।
श्री सप्तपरमस्थान पूजूं प्राप्ति हेतु चाव से॥
आह्वान थापन सन्निधापन, भक्ति श्रद्धा से करूं।
सज्जाति से निर्वाण तक, पद सप्त की अर्चा करूं॥१॥

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानानि! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानानि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानानि! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक—चाल—(नंदीश्वर श्रीजिनधाम)

जलशीतल निर्मल शुद्ध, केशर मिश्र करूं।
अंतर्मल क्षालन हेतु, शुभ त्रय धार करूं॥
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूं।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अलिचुंबित गंध, कुंकुम संग मिला।
भव दाह निकंदन हेतु, चर्चत सौख्य मिला॥मैं सप्त…॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय चंदनं…।

मुक्ताफलसम वर शुभ्र, तंदुल धोय धरूं।
वर पुंज चढ़ाऊं आन, उत्तम सौख्य वरूं॥मैं सप्त…॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय अक्षतं…।

मंदार बकुल [illegible], सुरभित पुष्प लिया।
मदनारि विनाशन हेतु, अर्पूं खोल हिया॥मैं सप्त…॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय पुष्पं…।

बहुविध उत्तम पकवान, घृत से पूर्ण भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, अर्चूं भक्ति भरे ॥
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूं।
सब कर्मकलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूं ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नैवेद्यं....।

घृत दीपक ज्योति प्रकाश, अगमग ज्योति करे।
दीपक से पूजा सत्य, ज्ञान उद्योत करे ॥मैं सप्त....॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय दीपं....।

दशगंध सुगंधित धूप खेवत पाप जरें।
वर सप्त पदों को पूज, उत्तम सौख्य वरें ॥मैं सप्त....॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय धूपं....।

बादाम सुपारी दाख, एला थाल भरे।
फल से पूजत शिव सौख्य अनुपम प्राप्त करें ॥मैं सप्त....॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय फलं....।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, उत्तम अर्घ किया ॥मैं सप्त....॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

शांतीधारा देय, सप्तपरमपद को जजूं।
परम शांति सुख हेतु, सब जग शांती हेतु मैं ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित लायके।
सप्तपरमपद हेतु, पुष्पांजलि अर्पण करूं ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

मात पिता के कुल उभय पक्ष की, शुद्धि सज्जाती है।
सम्यग्दर्शन सहित भव्य को, निश्चित मिल जाती है॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
सज्जाति स्थान परम को, पूजत सौख्य भजूँ मैं॥१॥

ॐ ह्रीं सज्जातिपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजनों से मान्य जगत में, सद्गृहस्थ पद माना।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष का, आकर[1] श्रेष्ठ बखाना॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
सद् गार्हस्थ्य परम पद पूजत, उत्तम सौख्य भजूँ मैं॥२॥

ॐ ह्रीं सद्गृहस्थत्वपरमस्थानाय अर्घ्यं....।

पंचमहाव्रत पंचसमिति त्रय गुप्ति सहित जो माना।
वरचारित्रमय परीव्राज्य पद, जग में सर्व प्रधाना॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
परिव्राज्य पद परम पूज कर, उत्तम सौख्य भजूँ मैं॥३॥

ॐ ह्रीं प्राव्राज्यपरमस्थानाय अर्घ्यं....।

कोटि कोटि सुर सहित महर्द्धी, गुण संपन्न कहाता।
सुरपति पद सब देवगणों में, आज्ञा नित्य चलाता॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
वर सुरेन्द्र पद पूजन करके, उत्तम सौख्य भजूँ मैं॥४॥

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानाय अर्घ्यं....।

---

१. खान।

षट्खंडाधिप चक्रवर्ति पद, वैभव पूर्ण जगत में।
सम्यग्दर्शन शून्यजनों को, मिलना दुष्कर सच में ॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूं मैं।
शुभ साम्राज्य परम पद पूजत, उत्तम सौख्य भजूं मैं ॥५॥
ॐ ह्रीं साम्राज्यपरमस्थानाय अर्घ्यं....।

चतुर्निकाय देव गण पूजित, महामहोत्सवकारी।
तीर्थंकर पद सर्वोत्तम पद, त्रिभुवन जन सुखकारी ॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूं मैं।
तीर्थंकर स्थान परम पद, पूजत सौख्य भजूं मैं ॥६॥
ॐ ह्रीं आर्हंत्यपरमस्थानाय अर्घ्यं....।

घाति अघाति कर्म घातकर, हुए निकल परमात्मा।
शुद्ध सिद्ध कृतकृत्य निरंजन, लोक शिखर गत आत्मा ॥
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूं मैं।
परिनिर्वाण परमपद पूजत, निरुपम सौख्य भजूं मैं ॥७॥
ॐ ह्रीं निर्वाणपरमस्थानाय अर्घ्यं....।

पूर्णार्घ्यं

सज्जाति सद्गृहस्थ पद अर, पारिव्राज्य सुरनाथा।
वर साम्राज्य परम आर्हंत्य, परिनिर्वाण विधाता ॥
सप्त परम स्थान भुवन में, सर्वोत्तम कहलाते।
पूर्ण अर्घ्य ले इन्हें जजूं मैं, निज पद पूरण वास्ते ॥८॥
ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य—ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नमः।

जयमाला

दोहा

गुणरत्नाकर वृषभजिन, भव्यकुमुद भास्वान ।
सप्तपरमपद पाय के, भोगें सुख निर्वाण ॥१॥

चाल—श्रीपति जिनवर……

शुभजाति गोत्र परवंश तिलक, जो सज्जाति के जन्मे हैं ।
जो उभय पक्ष की शुद्धि सहित, औ उच्चगोत्र में जन्मे हैं ॥
वे प्रथम परम पद सज्जाती, पाकर छहपद के अधिकारी ।
वह सज्जाती स्थान सदा, भव भव में होवें गुणकारी ॥२॥

धर्मार्थ काम त्रय वर्गों को, जो बाधा रहित सदा लेते ।
पंचाणुव्रत औ सप्तशील, धारण कर सद्गृहस्थ होते ॥
वे ही भव भोगों से विरक्त, जिन दीक्षा धर मुनि बनते हैं ।
प्राव्राज्य तृतीय परम पद पा, निज आतम अनुभव करते हैं ॥३॥

विधिवत् संन्यास मरण करके, देवेन्द्र परम पद पाते हैं ।
स्वर्गों के अनुपम भोग भोग, फिर चक्रीश्वर बन जाते हैं ॥
सोलह कारण भावन भाकर, तीर्थंकर पद को पाते हैं ।
छठवें आर्हन्त्य परम पद को, पाकर शिवमार्ग चलाते हैं ॥४॥

सब कर्म अघाती भी विनाश, निर्वाण रमापति हो जाते ।
जो काल अनन्तानन्तों तक, सुखसागर में गोते खाते ॥
इस सप्त परम स्थानों को, क्रम से भविजन पा लेते हैं ।
जो सप्तपरमपद ब्रत करते, अन्तिमपद को वर लेते हैं ॥५॥

घत्ता

जय सप्तपरमपद, त्रिभुवन सुख प्रद, जय जिनवर पद नित्य नमूं।
सज्ज्ञानमतीवर, शिव लक्ष्मीकर, जिनगुण सम्पत्ती परणूं ॥६॥
ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानाय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। परिपुष्पांजलिः।

जो सम्यक्विधि सप्तपरम-स्थान सुव्रत करते हैं।
भक्ति से जिनराज चरण का नित अर्चन करते हैं॥
वे क्रम से इन परम पदों को, पाकर सुख भजते हैं।
स्वर्ग सौख्य भज कर्म विलय कर, परम सिद्ध बनते हैं॥१॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

卐——卐

णमोकार महामन्त्रपूजा

स्थापना—गीता छन्द

अनुपम अनादि अनन्त है, यह मन्त्रराज महान है।
सब मंगलों में प्रथम मंगल, करत अघ की हान है॥
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुओं की वन्दना।
इस शब्दमय परब्रह्म को थापूं करूं नित अर्चना॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार मंत्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार मंत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार मंत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं—भुजंगप्रयात छंद

महातीर्थ गंगानदी नीर लाऊँ।
महामंत्र की नित्य पूजा रचाऊँ॥
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं....।

कपूरादिचंदन महागंध लाके।
परं शब्द ब्रह्मा की पूजा रचाके॥ णमोकार....॥२॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

पयः सिंधु के फेन सम अक्षतों को।
लिया थाल में पुंज से पूजने को॥ णमोकार....॥३॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं....।

जुही कुंद अरविंद मंदार माला।
चढ़ाऊँ तुम्हें काम को मार डाला॥ णमोकार....॥४॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

कलाकंद लड्डू इमर्ती बनाऊँ।
तुम्हें पूजते भूख व्याधी नशाऊँ॥ णमोकार....॥५॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

शिखा दीप की ज्योति विस्तारती है।
महामोह अन्धेर संहारती है॥ णमोकार....॥६॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं....।

सुगंधी बड़े धूप खेते अगनि में।
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।। णमोकार...।।७।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अनंनास अंगूर अमरूद लाया।
महामोक्षसंपत्ति हेतू चढ़ाया।। णमोकार...।।८।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं...।

उदक गंध आदी मिला अर्घ्य लाया।
महामंत्र नवकार को मैं चढ़ाया।। णमोकार...।।९।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं...।

दोहा

शांती धारा मैं करूँ, तिहुँजग शांतीहेत।
भव-भव आतप शांत हो, पूजूँ भक्तिसमेत।।१०।।
शांतये शांतिधारा।

दोहा

बकुल मल्लिका पुष्प ले, पूजूं मंत्र महान्।
पुष्पाञ्जलि से पूजते, सकल सौख्य वरदान।।११।।पुष्पांजलिः

जाप्य—ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं। ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं।

(१०८ सुगन्धित श्वेत पुष्पों से या लवंग अथवा पीले तंदुलों से जाप्य करना।)

जयमाला

सोरठा

पंचपरमगुरुदेव, नमूं नमूं नत शीश मैं।
करो अमंगलछेव, गाऊं तुम गुणमालिका।।१।।

चाल—हे दीनबन्धु......।

जयवंत महामंत्र मूर्तिमंत धरा में।
जयवंत परमब्रह्म शब्दब्रह्म धरा में ॥
जयवंत सर्वमंगलों में मंगलीक हो।
जयवंत सर्वलोक में तुम सर्व श्रेष्ठ हो ॥१॥

त्रैलोक्य में हो एक तुम्हीं शरण हमारे।
माँ शारदा भी नित्य ही तुम कीर्ति उचारे ॥
विघ्नों का नाश होता है तुम नाम जाप से।
सम्पूर्ण उपद्रव नशें हैं तुम प्रताप से ॥२॥

छ्यालीस सुगुण को धरें अरिहंत जिनेशा।
सब दोष अठारह से रहित त्रिजग महेशा ॥
ये घातिया को घात के परमात्मा हुए।
सर्वज्ञ वीतराग औ निर्दोष गुरु हुए ॥३॥

जो अष्ट कर्म नाश के ही सिद्ध हुए हैं।
वे अष्ट गुणों से सदा विशिष्ट हुए हैं ॥
लोकाग्र में हैं राजते वे सिद्ध अनन्ता।
सर्वार्थसिद्धि देते हैं वे सिद्ध महन्ता ॥४॥

छत्तीस गुण को धारते आचार्य हमारे।
चउसंघ के नायक हमें भवसिन्धु से तारें ॥
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय कहाते।
भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश पढ़ाते ॥५॥

जो साधु अट्ठाईस मूलगुण को धारते।
वे आत्म साधना से साधु नाम धारते ॥

ये पंचपरम देव भूत काल में हुए ।
होते हैं वर्तमान में भी पंचगुरु ये ।।६।।

होंगे भविष्य काल में भी सुगुरु अनन्ते ।
ये तीन लोक तीन काल के हैं अनन्ते ।।

इन सब अनन्तानन्त को मैं वंदना करूं ।
शिवपथ के विघ्न पर्वतों को खण्डना करूं ।।७।।

इक ओर तराजू पे अखिल गुण को चढ़ाऊँ ।
इक ओर महामंत्र अक्षरों को धराऊँ ।।

इस मन्त्र के पलड़े को उठा ना सके कोई ।
महिमा अनन्त यह धरे ना इस सदृश कोई ।।८।।

इस मन्त्र के प्रभाव श्वान देव हो गया ।
इस मन्त्र से अनन्त का उद्धार हो गया ।।

इस मन्त्र की महिमा को कोई पा नहीं सके ।
इसमें अनन्त शक्ति, पार पा नहीं सके ।।९।।

पाँचों पदों से युक्त मन्त्र सार भूत है ।
पेंतीस अक्षरों से मन्त्र परमपूत है ।।

पेंतीस अक्षरों के जो पेंतीस व्रत करें ।
उपवास या एकाशना से सौख्य को भरें ।।१०।।

तिथि सप्तमी के सात पंचमी के पांच हैं ।
चौदश के चौदह नवमी के भी नव विख्यात हैं ।।

इस विध से महामंत्र की आराधना करें ।
वे मुक्ति वल्लभा पति निज कामना वरें ।।११।।

दोहा

यह विष को अमृत करे, भव-भव पाप विदूर।

पूर्ण "ज्ञानमति" हेतु मैं, जजूं भरो सुख पूर ॥१२॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्राय जयमाला अर्घ्यं नि०—।

सोरठा

मंत्रराज सुखकार, आतम अनुभव देत है।

जो पूजें रुचिधार, स्वर्ग मोक्ष के सुख लहें ॥१३॥

इत्याशीर्वादः।

शांतिधारा, परिपुष्पांजलिः।

卐—卐

जिनगुण सम्पत्ति व्रत पूजा

अथ स्थापना

गीता छंद

जैनेन्द्र गुण की सम्पदा के नाम त्रेसठ मुख्य हैं।

सोलह सुकारण भावना वर प्रातिहार्य जु अष्ट हैं॥

चौंतीस अतिशय पंच कल्याणक सुत्रेसठ जानिए।

श्री जिनगुणों की स्थापना कर पूजते सुख मानिए॥१॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसंपत्ति समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीं जिनगुणसंपत्ति समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसंपत्ति समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चाल—पूजों पूजों श्री अरिहन्त देवा)

नीर गगानदी का लाऊँ, हेम झारी से धारा कराऊँ।
मैल आतम का शीघ्र हटाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूं मन लाके ॥
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम सपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूं मन लाके ॥१॥
ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसपद्भ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

श्वेत चन्दन सुकेशर लाऊँ, नाथ के गुण की पूजा रचाऊँ।
ताप ससार का सब मिटाऊँ, जिनेन्द्र गुण सपद जजूं मन लाके ॥
तीर्थंकर ॥२॥
ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसपद्भ्यो ससारतापविनाशनाय चदन ।

चन्द रश्मि सदृश अक्षत हैं, पुञ्ज धरते नशत सब अघ हैं।
मिले आतम की सब सपद है, जिनेन्द्र गुण सपद जजूं मन लाके ॥
तीर्थंकर ॥३॥
ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसपद्भ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं—।

कुद मदार चपक मल्ली, पूजते ही कटे भव वल्ली।
फैले जग मे भविक यश वल्ली, जिनेन्द्र गुण सपद जजूं मन लाके ॥
तीर्थंकर ॥४॥
ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसपद्भ्य कामबाणविध्वसनाय पुष्प ।

फेनी घेवर कलाकद लाके, व्याधि विरहित प्रभू गुण गाके।
भूख बाधा को पूर्ण मिटाके, जिनेन्द्र गुण संपद जजूं मन लाके ॥
तीर्थंकर ॥५॥
ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसपद्भ्य क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य ।

दीप में शुद्ध गोघृत जलाऊँ, ज्योति से पूजते भ्रम भगाऊँ।
चित्त में ज्ञान ज्योति जगाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके ॥
तीर्थंकर॰॰॰॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीप॰॰॰।

धूप कृष्णागरु चंदन है, खेवते पापराशि दहन है।
आत्म पीयूष वर्षा सघन है, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके ॥
तीर्थंकर॰॰॰॥७॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं॰॰॰।

आम अंगूर अमरूद फल हैं, पूजते विघ्नराशि विफल है।
शीघ्र मिलता निजातम फल है, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके ॥
तीर्थंकर॰॰॰॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं॰॰॰।

नीर गंधादि अर्घ्य बनाऊँ, आपकी नित्य पूजा रचाऊँ।
अनमोल रत्न तीन पाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके ॥
तीर्थंकर॰॰॰॥९॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं॰॰॰।

दोहा

शांतिधारा करत ही, त्रिभुवन में हो शांति।
जिनगुण संपद् अर्चना, करे निजातम शांति ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

दोहा

कमल केतकी मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुख संपत्ति अधिकाय ॥
पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यो नमः।
(१०८ सुगन्धित पुष्प अथवा लवंग से जाप्य करें)

जयमाला

सोरठा

मिले मुक्ति साम्राज्य, जिनगुण संपति पूजते।
तुम गुण मणि की माल, धारूँ कंठ जिन्हे सदा ॥१॥

(चाल—श्रीपति जिनवर करुणायतनं)

जय जय जिनगुण संपत जग में, मुक्ती पद कारण मानी है।
जयजयतीर्थंकर प्रकृतिबंध, की सोलह भावन भानी है॥
जय जय दर्शन सुविशुद्धि आदि, गुण निधि को जो जन पाते हैं।
सोलह कारण भावन भाके, तीर्थंकर पद पा जाते हैं॥१॥

गर्भावतार जिनगुण संपत, जन्माभिषेक कल्याण महा।
दीक्षा केवल निर्वाण रूप, कल्याणक होते पाँच अहा॥
जो भविजन इनको पा लेते, वे धर्मचक्र नेता होते।
भवपंच परावर्तन तजकर, तीर्थंकर जगवेत्ता होते॥२॥

वे आठ प्रातिहार्यों से नित, भूषित अगणित महिमा धारी।
तरुवर अशोक सुर पुष्पवृष्टि, दिव्या ध्वनि चामर सुखकारी॥
सिंहासन भामंडल शोभे, त्रय छत्र त्रिजग वैभव गाते।
प्रभु समवशरण लक्ष्मी भर्ता, त्रिभुवन के गुरु माने जाते॥३॥

वे जन्म समय की दश अतिशय, पाकर के अतिशय शाली हैं।
कैवल्यरमापति होते ही, दश अतिशय गुण मणिमाली हैं॥
देवो द्वारा किये गये, चौदह अतिशय भी गाये हैं।
चौंतीसों अतिशय सहित हुए, अर्हंत प्रभू कहलाये हैं॥४॥

इस विध त्रेसठ जिनगुणसंपत, व्रत का भवि पालन करते हैं।
सोलह प्रतिपद के सोलह अर, पञ्चमी के पाँच उचरते हैं॥

अष्टमी तिथि के व्रत आठ गिने, दशमी के बीस कहाये हैं ।
चौदश के चौदह व्रत करके, त्रेसठ जिनगुण व्रत पाये हैं ॥५॥

इस विधि से जो नरनारीगण, उपवास सहित व्रत करते हैं ।
अथवा एकाशन से करके, जिनगुण संपत भी वरते हैं ॥
धनधान्य समृद्धि सुख पाते, चक्री की पदवी पाते हैं ।
देवेन्द्र सुखों के भोग भोग, तीर्थंकर भी हो जाते हैं ॥६॥

मैं भी श्रद्धा से जिनगुण में, नितप्रति ही भाव लगाता हूँ ।
प्रत्येक भावना पुनः-पुनः, अनुरागी होके भाता हूँ ॥
निज आत्म गुणों की संपत्ति, पाने हेतू ही आया हूँ ।
रागादिक दोष मिटा दीजे, यह आश हृदय में लाया हूँ ॥७॥

हे देव ! कृपा ऐसी करिये, मेरे दुःखों का क्षय होवे ।
कर्मों का क्षय हो बोधि लाभ, होवे अर सुगति गमन होवे ॥
होवे समाधि से मरण नाथ ! मुझ को जिनगुण संपति होवे ।
"कैवल्य ज्ञानमति" हो करके, नित मुक्ति रमा में रति होवे ॥८॥

दोहा

गुण अनन्त सागर प्रभो ! कोई न पावें पार ।
किंचित गुणमणि गूंथ के, धरूँ कंठ में हार ॥९॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
शांतये शांतिधारा । परिपुष्पांजलिः ।

दोहा

गणपति गुण वर्णन करें, निज आतम गुण हेतु ।
जो नरनारी भी लिखें, शीघ्र लहें भव सेतु ॥१०॥

इत्याशीर्वादः

卐—卐

वासुपूज्य जिनपूजा

गीता छन्द

वासवगणों से पूज्य भगवन् ! वासुपूज्य महान हो।
तीर्थंकरों में बारहवें, वर तीर्थकर्ता मान्य हो॥
वर भक्ति श्रद्धाभाव से, प्रभु आप आह्वानन करें।
पूजा रचाके आपकी, निज आत्म आराधन करें॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक—[नाराच छंद]

सिंधु नीर स्वच्छ शुद्ध स्वर्ण कुंभ में भरूं।
आप पाद पूजते हि कर्मकालिमा हरूं॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि[1] कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध गंधपूर्ण नाथपाद पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए॥वासुपूज्य०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनम्....।

---

१. उपवास आदि।

चन्द्र चन्द्रिका समान श्वेत शालि लाइये।
नाथ पाद पूजते अखंड सौख्य पाइये॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए॥३॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं····।

पारिजात मालती गुलाब पुष्प लाइये।
काम मल्ल जीतने जिनेश को चढ़ाइये॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिये॥वासुपूज्य०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं····।

मुद्‌ग लड्डुकादि पायसादि थाल में भरें।
भूख व्याधि नाशने जिनेन्द्र अर्चना करें॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिये॥वासुपूज्य०॥५॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं····।

रत्नदीप में कपूर ज्वालते शिखा बढ़े।
आप पूजते सुज्ञान ज्योति चित्त में बढ़े॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए॥वासुपूज्य०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं····।

रक्त चंदनादि मिश्र धूप अग्नि में जलें।
आप पास में समस्त कर्म भस्म हो चलें॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिये॥वासुपूज्य०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं····।

आम दाडिमादि खारिकादि थाल में भरे।
आप चर्ण पूजते अनन्त सिद्धि को वरें॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिये॥वासुपूज्य०॥८॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं····।

तोय गंध शालि पुष्प अन्न दीप धूप हैं।
सत्फलों से युक्त अर्घ्य से जजूं अनूप हैं॥
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिये।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए॥९॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं....।

दोहा

शांतिधारा मैं करूं, जिनपदपंकज मांहि।
शांति करो सब लोक में, कर्मकीच धुल जांहि॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

दोहा

कमल वकुल मल्ली कुसुम, सुरतरु के उनहार।
पुष्पांजलि करते प्रभू, मिले सकल सुखसार॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

रुक्मिणी छन्द

मात विजयावती गर्भ में आवते,
मास आषाढ़ षष्ठी वदी थी जबे।
इन्द्र आ गर्भ कल्याण पूजा करें,
अर्चते पाप सब एक क्षण में हरें॥१॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

फाल्गुनी कृष्ण चौदश जनम आपका,
इन्द्र कीना न्हवन मेरु पे आपका।
जन्म कल्याण उत्सव शचीपति करे,
नित्य पूजें तुम्हें विघ्न बाधा टरें ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं····।

कृष्ण फाल्गुन सुचौदस दिगंबर हुए,
बाह्य अंतर परिग्रह सभी तज दिये।
देव दीक्षा सुकल्याण पूजा करे,
आज हम पूजते सर्व पीड़ा हरें ॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं····।

माघ शुक्ला द्वितीया तिथी जो भली,
घात के घातिया तुम हुए केवली।
इन्द्र ने ज्ञान कल्याण पूजा करी,
पूजते ज्ञान ज्योति मेरे अंतरी ॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं···।

भाद्रपद शुक्ल चौदस प्रभू शिव गये,
देव निर्वाण कल्याण पूजत भये।
भक्ति से मोक्ष कल्याण पूजा करें,
पंच कल्याण लक्ष्मी तुरन्ते वरें ॥५॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं····।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः

(१०८ लवंग या पुष्पों से)

जयमाला

दोहा

वासुपूज्य वसुपूज्यसुत, वासवगण से वंद्य ।
तुम गुणमणिमाला धरूँ, कंठ मांहि सुखकंद ॥१॥

चाल—हे दीनबन्धु.........।

जय वासूपूज्य देव तीन लोक वंद्य हो ।
जय जय अनंत सुगुण रत्न के करंड हो ॥
हे नाथ ! भक्ति भाव से मैं वंदना करूँ ।
अनंत सौख्य सिंधु नाथ अर्चना करूँ ॥१॥
चंपापुरी को धन्य आप जन्म से किया ।
माता जयावती की कुक्षि से जनम लिया ॥
आयू है बाहत्तर सुलक्ष वर्ष की कही ।
तनु की ऊँचाई दो सौ असी हाथ प्रभ कही ॥२॥
तनुकांति पद्मरागमणी के समान है ।
है चिन्ह महिष कहा जाने जहान है ॥
कल्याणकों पाँचों की भू पवित्र कही है ।
चंपापुरी निर्वाणभूमि सौख्य मही है ॥३॥
जो वासुपूज्य देव की आराधना करें ।
सम्यक्त्वशुद्ध तीन रत्न साधना करें ॥
जो रोहिणी नक्षत्र दिवस व्रत विधी करें ।
तुम नाम मंत्र जाप से भव जल निधी तरें ॥४॥
वर हस्तिनापुरी नरेश जो अशोक था ।
उसकी प्रिया थी रोहिणी जिसको न शोक था ॥
इक बार वक्ष कूटती रोती थी भामिनी ।
तब रोहिणी ने प्रश्न किया आय सामनी ॥५॥

हे मात ! कहो कौन सी ये नृत्य कला है ।
सब धाय कहे तू हुई उन्मत्त मला है ॥
यह देख के आश्चर्य नृपति पुत्र उठाया ।
ऊँचे महल की छत से उसे भू पे गिराया ॥६॥

तत्क्षण सुरों ने पुत्र को आसन पे बिठाया ।
ढोरे चंवर यह आश्चर्य सबको दिखाया ॥
राजा मुनी से एक बात पूछता सही ।
क्यों नाथ ! रोहिणी को रुदन ज्ञान भी नहीं ॥७॥

मुनि ने कहा यह रोहिणी व्रत का माहात्म्य है।
रोना किसे कहते हैं जो इसको न ज्ञान है ॥
यह फल तो मनाक्[1] क्रम से मोक्ष मिले है ।
संसार के सुख भोग बोध कमल खिले हैं ॥८॥

घत्ता

जय जय तीर्थंकर, भव संकट हर, विघ्नभद्रि[2] को चूर्ण करें ।
जो तुम पद ध्यावें, शिवसुख पावें, "ज्ञानमती" को पूर्णकरें ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं…।

शांतये शांतिधारा । परिपुष्पांजलिः ।

दोहा

धर्मचक्र को धारते, तीर्थंकर जिनदेव ।
"ज्ञानमती" लक्ष्मी सहित, तुरत सिद्ध पद देव ॥१०॥

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

१. किंचित् । २. पर्वत ।

श्री पंचपरमेष्ठी पूजा

स्थापना—अडिल्ल छंद

अर्हत्सिसद्धाचार्य उपाध्याय साधु हैं।
कहे पंचपरमेष्ठी, गुणमणि साधु हैं॥
भक्ति भाव से करूँ, यहाँ पर थापना।
पूजूँ श्रद्धा धार, करूँ हित आपना॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं। चाल—नंदीश्वर श्रीजिनधाम...।

सुर सरिता का जल स्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
भव तृषा बुझावन हेतु, तुम पद धार करूँ॥
श्री पंच परम गुरु देव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

मलयज चंदन कर्पूर, गंध सुगंध भरूँ।
भव दाह करो सब दूर, चरणन चर्च करूँ॥श्रीपंच....॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

पयसागर फेन समान, अक्षत धोय लिया।
अक्षय गुण पावन काज, पुंज चढ़ाय दिया॥श्रीपंच....॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....।

मचकुंद कमल बकुलादि, सुरभित पुष्प लिया।
मदनारिजयी पदकंज, पूजत सौख्य लिया॥
श्रीपंचपरम गुरुदेव, पंचमगति दाता।
भवभ्रमण पंच हर लेव, पूजूं पद त्राता॥४॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

घेवर फेनी रस पूर्ण, मोदक शुद्ध लिया।
मम क्षुधा रोग कर चूर्ण, तुम पद पूज किया॥श्रीपंच०॥५॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

दीपक की ज्योति प्रकाश, दशदिश ध्वांत हरे।
तुम पूजत मन का मोह, हर विज्ञान भरे॥श्रीपंच०॥६॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

दशगंध सुगन्धित धूप, खेवत कर्म जरे।
सब कर्म कलंक विदूर, आतम शुद्ध करें॥श्रीपंच०॥७॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं....।

अंगूर, अनार, खजूर, फल ले थाल भरे।
तुम पद अर्चत भव दूर, शिवफल प्राप्त करे॥श्रीपंच०॥८॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं....।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से पूर्ण, तुम पद अर्घ्य किया॥श्रीपंच०॥९॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं....।

दोहा

पंचपरमगुरु के चरण, जल की धारा देत।
निज मन शीतल हेतु अर, तिहु जग शांती हेत॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

बकुल मल्लिका सित कमल, पुष्प सुगंधित लाय ।
पुष्पांजलि कर जिन चरण, पूजूं मन हरषाय ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः ।

जाप्य—ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः ।
(१०८ सुगन्धित पुष्प या लवंग से जाप्य करना।)

जयमाला

सोरठा

भवजलनिधी जिहाज, पंचपरम गुरु जगत में ।
तिनकी गुणमणिमाल, गाऊँ भक्ती वश सही ॥१॥

चाल—हे दीनबन्धु

जैवंत अरीहंत देव, सिद्ध अनंता ।
जैवंत सूरि उपाध्याय साधु महंता ॥
जैवंत तीन काल में ये पंचगुरु हैं ।
जैवंत तीन काल के भी पंचगुरु हैं ॥१॥

अर्हंत देव के हैं छियालीस गुण कहे ।
जिन नाम मात्र से ही पाप शेष ना रहे ॥
दशजन्म के अतिशय हैं चमत्कार से भरे ।
कैवल्यज्ञान होत ही अतिशय जु दश धरें ॥२॥

चोदह कहे अतिशय हैं देव रचित बताये ।
तीर्थंकरों के ये सभी चौंतीस हैं गाये ॥
है आठ प्रातिहार्य जो वैभव विशेष हैं ।
आनन्त चतुष्टय सुचार सर्व श्रेष्ठ हैं ॥३॥

जो जन्म मरण आदि दोष अठदश कहे।
अर्हंत में न हों अतः निर्दोष वे रहें॥
सर्वज्ञ वीतराग हित के शास्ता हैं जो।
है बार बार वंदना अरिहंत देव को॥४॥

सिद्धों के आठ गुण प्रधान रूप से गाये।
जो आठ कर्म के विनाश से हैं बताये॥
यों तो अनंत गुण समुद्र सर्व सिद्ध हैं।
उनको है वंदना जो सिद्धि में निमित्त हैं॥५॥

आचार्य देव के प्रमुख छत्तीस गुण कहे।
दीक्षादि दे चउसंघ के नायक गुरू रहें॥
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय गुरू हैं।
जो मात्र पठन पाठनादि में ही निरत हैं॥६॥

जो आतमा की साधना में लीन रहे हैं।
वे मूलगुण अट्ठाइसों से साधु कहे हैं॥
आराधना सुचार की आराधना करें।
हम इन त्रिभेद साधु की उपासना करें॥७॥

अरिहंत सिद्ध दो सदा आराध्य गुरु कहें।
त्रयविधि मुनी आराधकों की कोटि में रहें॥
अर्हंत सिद्ध देव हैं शुद्धतमा कहे।
शुद्धात्म आराधक हैं सूरि स्वातमा लहे॥८॥

गुरुदेव उपाध्याय प्रतिपादकों में हैं।
शुद्धातमा के साधकों को साधु कहे हैं॥
पांचों ये परम पद में सदा तिष्ठ रहे हैं।
इस हेतु से परमेष्ठी ये नाम लहे हैं॥९॥

इन पांच के हैं इक सौ तियालीस गुण कहे।
इन मूलगुणों से भी संख्यातीत गुण रहें॥
उत्तर गुणों से युक्त पांच सुगुरु हमारे।
जिनका सुनाम मंत्र भवोदधि से उबारे॥१०॥

हे नाथ ! इसी हेतु से तुम पास में आया।
सम्यक्त्व निधी पायके तुम कीर्ति को गाया॥
बस एक वीनती पे मेरी ध्यान दीजिये।
केवल्य "ज्ञानमती" का ही दान दीजिये॥११॥

दोहा

त्रिभुवन के चूड़ामणी, अर्हंत सिद्ध महान।
सूरी पाठक साधु को, नमूं नमूं गुणखान॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, परिपुष्पांजलिः।

दोहा

पंचपरमगुरु की शरण जो लेते भविजीव।
रत्नत्रय निधि पाय के भोगें सौख्य सदीव॥१३॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

सोलहकारण पूजा

अथ स्थापना—गीता छंद

दर्शनविशुद्धी आदि सोलह, भावना भवनाशिनी।
जो भावते वे पावते, अति शीघ्र ही शिवकामिनी ।।
हम नित्य श्रद्धा भाव से, इनकी करें आराधना।
पूजा करें वसुद्रव्य ले, करके विधीवत थापना ।।१।।

ॐ ह्लीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्लीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्लीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक—चाल—चौबीसों श्रीजिनचंद

पयसागर को जल स्वच्छ, हाटक भृंग भरूं।
जिनपद में धारा देत, कलिमल दोष हरूं ।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने ।।१।।

ॐ ह्लीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो जलं····।

मलयज चंदन कर्पूर, केशर संग घिसा।
जिनगुण पूजा कर शीघ्र, भव भव दुःख खिसा ।।वर।।२।।

ॐ ह्लीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं····।

उज्ज्वल शशि रश्मि समान, अक्षत धोय लिये।
अक्षय पद पावन हेतु, सन्मुख पुंज दिये ।।वर।।३।।

ॐ ह्लीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं····।

चंपक सुम हरसिंगार, सुरभित भर लीने।
भवविजयी जिनपद अग्र, अर्पण कर दीने॥
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बने।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने॥४॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं····।

नानाविध घृत पकवान, अमृत सम लाऊं।
निज क्षुधा निवारण हेतु पूजत सुख पाऊं॥वर॥५॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं····।

कंचनदीपक की ज्योति, दशदिश ध्वांत हरे।
जिन पूजा भ्रमतम टार, भेद विज्ञान करे॥वर॥६॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं····।

कृष्णागरु धूप सुगंध, खेवत धूम्र उड़े।
निज अनुभव सुख से, पुष्ट कर्मन भस्म उड़े॥वर॥७॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं····।

पिस्ता अखरोट बदाम, एला थाल भरे।
जिनपद पूजत तत्काल, सब सुख आन वरें॥वर॥८॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो मोक्षफल-प्राप्ताय फलं····।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से पूर्ण, तुम पद अर्घ्य दिया॥वर॥९॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं····।

दोहा

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
झारी से धारा करूं, सकल संघ हितकार ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

कुंद कमल बेला बकुल, पुष्प सुगंधित लाय।
जिनगुण हेतू मैं करूं, पुष्पांजलि सुखदाय ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

दोहा

स्वातमरस पीयूष से, तृप्त हुये जिनराज।
सोलह कारण भावना, भाय हुये सिरताज ॥१॥

सोमवल्लरी छन्द (चामर)

दर्श की विशुद्धी जो पचीस दोष शून्य है।
आठ अंग से प्रपूर्ण सप्त भीति शून्य है॥
सत्य ज्ञान आदि तीन रत्न में विनीत जो।
साधुओं में नम्रवृत्ति धारता प्रवीण वो ॥१॥

शील में व्रतादि में सदोषवृत्ति ना धरें।
दूर अतीचार से तृतीय भावना धरें॥
ज्ञान के अभ्यास में सदैव लीनता धरें।
भावना अभीक्ष्ण ज्ञान मोहध्वांत को हरें ॥२॥

देह मानसादि दुःख से सदैव भीरुता।
भावना संवेग से समस्त मोह जीतता॥
चार संघ को चतुः प्रकार दान जो करें।
सर्व दुःख से छुटें सुज्ञान संपदा भरें ॥३॥

शुद्ध तप करें समस्त कर्म को सुखावते ।
साधु की समाधि में समस्त विघ्न टारते ॥
रोग कष्ट आदि में गुरुजनों कि सेव जो ।
प्रासुकादि औषधी सुदेत पुण्यहेतु जो ॥४॥

भक्ति अरीहंत, सूरि, बहुश्रुतों की भी करें ।
प्रवचनों की भक्ति भावना से भवदधी तरें ॥
छै क्रिया अवश्य करण योग्य काल में करें ।
मार्ग की प्रभावना सुधर्म द्योत को करें ॥५॥

वत्सलत्व प्रवचनों में धर्म वात्सल्य है ।
रत्नत्रयधरों में सहज प्रीति धर्म सार है ॥
सोलहों सुभावना पुनीत भव्य को करें ।
तीर्थनाथ संपदा सुदेय मुक्ति भी करें ॥६॥

वंदना करूं पुनः पुनः करूं उपासना ।
अर्चना करूं पुनः पुनः करूं सुसाधना ॥
मैं अनंत दुःख से बचा चहूं प्रभो सदा ।
ज्ञानमती संपदा मिले अनंत सौख्यदा ॥७॥

दोहा

तीर्थंकर पद हेतु ये सोलह भावन सिद्ध ।
जो जन पूजें भाव से, लहे अनूपम सिद्धि ॥८॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्व०⋯।
शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः ।

卐—卐

पंचकल्याणक पूजा

अथ स्थापना—गीता छंद

वरपंच कल्याणक जगत् में सर्वजन से वंद्य हैं।
त्रैलोक्य में अति क्षोभ कर, सुर इन्द्रगण अभिनंद्य हैं॥

मैं पंचमी गति प्राप्त हेतू पंच कल्याणक जजूं।
आह्वाननादी विधि करूं, संपूर्ण कल्याणक भजूं॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक—भुजंग प्रयात छंद

पयोसिंधु को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो आपके पाद धारा कराऊँ॥

महापंचकल्याणकों को जजूं मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूं मैं॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो जलं....।

सुगंधीत चंदन कपूरादि वासा।
चढ़ाते तुम्हें सर्व संताप नाशा॥महा॥२॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः चंदनं....।

पयोराशि के फेन सम तंदुलों को।
चढ़ाऊँ तुम्हें सौख्य अक्षय मिले जो॥महा॥३॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः अक्षतं....।

जुही केवड़ा चंपकादी सुमन हैं।
तुम्हें पूजते काम व्याधी शमन है ॥
महापंचकल्याणकों को जजूं मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूं मैं ॥४॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः पुष्पं....।

कलाकंद लाडू भरा थाल लाऊँ।
क्षुधा डाकिनी नाश हेतू चढ़ाऊँ ॥महा॥५॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं...।

मणीदीप ज्योती भुवन को प्रकाशे।
करूं आरती मोह अंधेर नाशे ॥महा॥६॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः दीपं....।

अगनि पात्र में धूप खेऊँ दशांगी।
करम धूम्र फैले चहूँदिक सुगंधी ॥महा॥७॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो धूपं...।

नरंगी मुसम्बी अनंनास लाऊँ।
महामोक्षफल हेतु आगे चढ़ाऊं ॥महा॥८॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्यायकेभ्यः फलं....।

जलादी वसूद्रव्य से थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ्य संसार डर के ॥महा॥९॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं....।

दोहा

सकल जगत में शांतिकर शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूं सकल संघ हितकार ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

दोहा

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत ।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत ॥११॥

दिव्य पुष्पांजलिः ।

जयमाला

सोरठा

परम पुण्यमय तीर्थ, तीर्थंकर तिहुँलोक में ।
शरण गही धर प्रीति, कर्म पंक प्रक्षालने ॥१॥

रोला छंद

छह महिने ही पूर्व, पृथ्वी पर आने से ।
अतिशय पुण्य प्रभाव, दिव से च्युति पाने से ॥
रत्न बरसते नित्य, नभ से पंद्रह मासा ।
श्री ह्री देवी आदि, सेव करें जिनमाता ॥१॥

सोलह स्वप्न प्रदर्श, मात गरभ जब बसते ।
इन्द्रादिक सुर आय, गर्भ महोत्सव करते ॥
मति श्रुत अवधि सुज्ञान, तुमको नित्य रहे हैं ।
गर्भ विषे भी आप, सुख से तिष्ठ रहे हैं ॥२॥

जन्म समय तत्काल, इन्द्रन आसन कंपे ।
नमन करें तत्काल, सुरगण तुम गुण जंपे ॥
जिनशिशु सद्योजात मेरु शिखर ले जाके ।
इन्द्र करें अभिषेक, उत्सव अधिक रचाके ॥३॥

स्वर्गों के ही वस्त्र, भोजन आदि सुखन में ।
बाल्य समय सुरसंग, खेलें मात अंगन में ॥

जब होवे वैराग्य, लौकांतिक सुर आते।
जिनगुणमंगलकीर्ति, गाकर पुण्य कमाते ॥४॥

पुनः इन्द्रगण आय, परिनिष्क्रमण मनावें।
महामहोत्सव साज, करके पुण्य बढ़ावें॥
प्रभु महाव्रतधार, आतम ध्यान धरे हैं।
कर्म घातिया चूर, केवलज्ञान वरे हैं ॥५॥

समवसरण रचदेव, ज्ञान कल्याणक पूजें।
जब जिन करत विहार, जनमन पावन हूजें॥
भव्य अनंतानंत, धर्मामृत को पीते।
जन्म मरण की व्याधि, नाश करमरिपु जीतें ॥६॥

जिनवर योग निरोध, करके कर्म जलावें।
तत्क्षण शिवतिय संग लोक शिखर पर जावें॥
सकलसुरासुर आय, मोक्षकल्याणक पूजें।
जिनपद पंकज पूज, भविजनभवरिपु धूजें ॥७॥

इसविध पंचकल्याण, जिनगुण नित्य जजूं मैं।
पंचभ्रमण चकचूर सर्वकल्याण भजूं मैं॥
परमसुखास्पद धाम परमानंदस्वरूपी।
ज्ञानमती से पूर्ण पाऊं मैं चिद्रूपी ॥८॥

दोहा

पंच महाकल्याणमय, जिनगुणसंपद जान।
जो जन पूजें भाव से, लहें सौख्य निर्वाण ॥९॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकजिनगुणसंपद्भ्यो जयमालार्घ्यं निर्वपामिति।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

卐—卐

पंचमेरु पूजा

अडिल्ल छंद

सुरनर वंदित पंचमेरु नरलोक में।
ऋषिगण जहँ विचरण करते निज शोध में॥
दुषमकाल में वहां गमन की शक्ति ना।
पूजूं भक्ति समेत यहीं कर भावना॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीति[1]जिनालयस्थसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—(चाल—नंदीश्वर श्रीजिनधाम)

सुरसरिता का जल स्वच्छ, बाहर मल धोवे।
जल से ही जिनपद पूज, अन्तर्मल खोवे॥
पांचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूं भाव समेत, पाऊं निज महिमा॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन द्रव सम वर गंध, चंदन दाह हरे।
चंदन से जजत जिनेश, भव भव दाह हरे॥पांचों॥२॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. अस्सी।

शशि द्युति सम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरें ।
अक्षय अखंड सुख हेतु, जिन ढिग पुंज धरें ।।
पांचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा ।
मैं पूजूं भाव समेत, पाऊं निज महिमा ।।३।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं बकुल कमल कुसुमादि, सुरभित मनहारी ।
भवविजयी जिनवर पाद, पूजत दु:खहारी ।।पांचों।।४।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत शर्कर युत पकवान, लेकर थाल भरें ।
निज क्षुधा रोग की हान, हेतू यजन करें ।।पांचों।।५।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिमय दीपक कर्पूर, ज्योति तिमिर हरे ।
प्रभु पद पूजत ही शीघ्र, ज्ञान उद्योत करे ।।पांचों।।६।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दश गंध सुगंधित धूप, खेवत अग्नी में ।
कर अष्टकर्मचकचूर, पाऊं निजसुख में ।।पांचों।।७।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाडिम केला अंगूर, उत्तम फल लाऊं ।
शिव फलहित फल से पूज, स्वातम निधि पाऊं ।।पांचों।।८।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया ।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घ समर्प किया ।।पांचों।।९।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूं ।
सकल जगत में शांति, सकलसंघ में हो सदा ।।१०।।
शांतये शांतिधारा ।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते ।
होवे सुख अमलान, दुःख दरिद्र पलायते ।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः ।

(जाप्य—लवंग या पुष्पों से) ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयेभ्यो नमः ।

जयमाला

दोहा

परमानंद जिनेन्द्र की, शाश्वत मूर्ति अनूप ।
परम सुखालय जिनभवन, नमूं नमूं चिद्रूप ।।१।।

चौबोल छंद—(मेरी भावना की चाल)

मेरु सुदर्शन विजय अचल, मंदर विद्युन्माली जग में ।
पूज्य पवित्र परमसुखदाता, अनुपम सुरपर्वत सच में ।।
अहो अचेतन होकर भी ये, चेतन को सुख देते हैं ।
दर्शन पूजन वंदन करते, भव भव दुख हर लेते हैं ।।२।।

अनादि अनिधन पृथ्वीमय ये, सर्वरत्न से स्वयं बने ।
भद्रसाल नंदन सुमनस वन, पांडुकवन से युक्त घने ।।
सुरपति सुरगण सुरवनितायें, सुरपुर में आते रहते ।
पंचम स्वर से जिनगुण गाते, भक्ति सहित नर्तन करते ।।३।।

विद्याधरियां विद्याधर गण सब जिनवंदन को आते हैं।
कर्मभूमि के नरनारी भी, विद्या बल से जाते हैं॥
चारण ऋषिगण नित्य विचरते, स्वात्म सुधारस पीते हैं।
निज शुद्धातम को ध्याध्याकर, कर्म अरी को जीते हैं॥४॥

मैं भी वंदन पूजन अर्चन करके भव का नाश करूं।
मेरे शिवपथ के विघ्नों को हरो नाथ! यम त्रास हरूं॥
बस प्रभु केवल "ज्ञानमती" हो, वेदो इक ही आश धरूं।
तुम पद भक्ति मिले भव भव में, जिससे स्वात्म विकास करूं॥५॥

दोहा

श्री जिनवर जिनभवन अरु, जिनवर बिंब महान्।
जो जन अर्चें भाव से, पावें निजसुख थान॥६॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पंचमेरु की अर्चना, हरे सकल जग त्रास।
मेरु सदृश उत्तुंग फल, फले सकल गुणराशि॥१॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

नंदीश्वर पूजा

स्थापना—गीता छंद

बर द्वीप नंदीश्वर सुअष्टम, तीन जग में मान्य हैं।
बावन जिनालय देवगण से, वंद्य अतिशयवान हैं॥
प्रत्येक दिश तैरह सुतैरह जिनगृहों की वंदना।
थापूं यहाँ जिनबिंबको, नितप्रति करूं जिनअर्चना॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक—चामर छंद

स्वर्णभृंग में सुशीत गंगनीर लाइये।
शाश्वते जिनेन्द्र बिंब पाद में चढ़ाइये॥
आठवें सुद्वीप में जिनेंद्रदेव आलया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं....।

अंतरंग ताप ज्वर विनाश हेतु गंध है।
नाथ पाद पूजते मिले निजात्म गंध है॥आठवें॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदन....।

मोतियों के हारवत् सफेद धौत शालि हैं।
आपको चढ़ावते निजात्म सौख्यमालि हैं॥आठवें॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं....।

मालती गुलाब कुंद मोगरा चुनाइये ।
आप पाद पूजते सुकीर्ति को बढ़ाइये ।।
आठवें सुद्वीप में जिनेंद्रदेव आलया ।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध लिया ।।४।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं....।

मालपूप खज्जकादि पूरियां चढ़ाइये ।
भूख व्याधि जिष्णु की अनंतशक्ति पाइये ।।आठवें।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं....।

नादि काल से लगे अनंत मोहध्वांत को ।
दीप से जिनेश पूज नाशिये कुध्वांत को ।।आठवें।।६।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं....।

धूप लाल चंदनारिमिश्र अग्नि में जले ।
आतमा विशुद्ध होत कर्म भस्म हो चलें ।।आठवें।।७।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं....।

इक्षुखंड सेव दाडिमादि थाल में भरें ।
मोक्ष संपदा मिले जिनेश अर्चना करें ।।आठवें।।८।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं....।

अष्ट द्रव्य ले अनर्घ्य मूर्तियों को पूजिये ।
अष्ट कर्म नाश के त्रिलोकनाथ हूजिये ।।आठवें।।९।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं....।

सोरठा

अमल बावड़ी नीर जिनपद में धारा करूं ।
मिले भवोदधितीर, शांतीधारा शं करे ।।१०।।

शांतये शांतिधारा ।

कमल केतकी पुष्प हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण समर्प्य, सर्व सौख्य संपति बढ़े ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

दोहा

चिम्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊं गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनरूप ॥१॥

चाल—शेर

जय आठवां जो द्वीप नाम नंदिश्वरा है।
जय बावनो जिनालयों से पुण्यधरा है॥
जय एक सो त्रेसठ करोड़ लाख चुरासी।
विस्तार इतने योजनों से द्वीप विभासी ॥२॥

चारों दिशा के बीच में अंजन गिरी कहे।
जो इन्द्रनील मणिमयी रत्नों से बन रहे॥
चौरासी सहस योजनों विस्तृत व तुंग हैं।
जो सब जगह समान गोल अधिक रम्य हैं ॥३॥

इन गिरि के चार दिश में चार-चार बापियां।
जो एक लाख योजन जलपूर्ण बापियां॥
पूर्वादिक्रम दिशा से नंदा नंदवती है।
नंदोतरा व नंदिघोषा नामप्रभृति हैं ॥४॥

प्रत्येक बापियों में कमलफूल रहे हैं।
प्रत्येक के चउदिश में भी उद्यान घने हैं॥

अशोक सप्तपत्र चंप आम्र वन कहे।
पूर्वादि दिशा क्रम से अधिक रम्य दिख रहे ।।।।५।।

दधिमुख अचल इन वापियों के बीच में बने।
योजन हजार दश उतुंग, विस्तृते इतने ।।

प्रत्येक वापियों के दोनों बाह्य कोण में।
रतिकरगिरी है शोभते जो आठ-आठ हैं ।।६।।

योजन हजार एक चौड़े तुंग भी इतने।
सब स्वर्ण वर्ण के कहे रतिकरगिरी जितने ।।

दधिमुख दधी समान श्वेत वर्ण धरे हैं।
ये बावनों ही अद्रि सिद्धकूट धरे हैं ।।७।।

इनमें जिनेन्द्र भवन आदि अंत शून्य हैं।
जो सर्व रत्न से बने जिनबिंब पूर्ण हैं ।।

उन मंदिरों में देव इंद्रवृन्द जा सकें।
वे नित्य ही जिनेन्द्र की पूजादि कर सकें ।।८।।

आकाशगामी साधु मनुज खग न जा सकें।
वे सर्वदा परोक्ष में ही भक्ति कर सकें ।।

मैं भी यहां परोक्ष में ही अर्चना करूं।
जिनमूर्तियों की बारबार वंदना करूं ।।६।।

प्रभु आपके प्रसाद से भवसिंधु को तरूं।
मोहारिजीत शीघ्र ही जिनसंपदा वरूं ।।

हे नाथ ! बार मेरी अब न देर कीजिये।
अज्ञानमती चित्त में अब फेर दीजिये ।।१०।।

दोहा

नंदीश्वर के चार दिश, जिनमंदिर जिनदेव।

उनको पूजूं भाव से, "ज्ञानमती" हित एव ॥११॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेचतुर्दिग्द्वापंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति—।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

सोरठा

नंदीश्वर जिनधाम, पूजा करते भाव से।

मिले सर्वसुखधाम, अनुक्रम से निर्वाण पद ॥

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

सम्मेदशिखर पूजन विधान

अथस्थापना—शंभु छन्द

गिरिवर सम्मेदशिखर पावन, श्रीसिद्ध क्षेत्र मुनिगण वंदित।

सब तीर्थंकर इस ही गिरि से, होते हैं मुक्तिवधु अधिपति ॥

मुनिगण असंख्य इस पर्वत से निर्वाण धाम को प्राप्त हुये।

आगे भी तीर्थंकर मुनिगण का शिवथल यह मुनिनाथ कहें ॥१॥

दोहा

सिद्धिवधू प्रिय तीर्थंकर मुनिगण तीरथराज।

आह्वानन कर मैं जजूं मिले सिद्धिसाम्राज ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं—।

चाल—नन्दीश्वर पूजा

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
नहिं मिटी तृषा की पीर, आखिर ऊब गया॥

सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूं मन लाके।
पा जाऊं निज साम्राज्य तीरथ गुण गाके॥१॥

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय जलं···।

भव भव में त्रयविध ताप, अतिशय दाह करे।
चंदन से पूजत आप, अतिशय शांति भरे॥सम्मेद॥२॥

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय चंदनं···।

हे नाथ! सर्वसुखहेतु, सबकी शरण लिया।
अब अक्षय सुख के हेतु, तुम पद पुंज किया॥सम्मेद॥३॥

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय अक्षतं···।

बहु वर्ण वर्ण के फूल, चरण चढ़ाऊँ मैं।
मिल जाये भवदधिकूल, समसुख पाऊँ मैं॥सम्मेद॥४॥

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय पुष्पं···।

बरफी पेड़ा पकवान, नित्य चढ़ाऊँ मैं।
हो क्षुधा व्याधि की हान, निजसुख पाऊँ मैं॥सम्मेद॥५॥

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय नैवेद्यं···।

कर्पूरज्योति उद्योत आरति करते ही।
हो ज्ञानज्योति उद्योत, भ्रम तम विनशे ही॥सम्मेद॥६॥

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय दीपं···।

वर धूप अनिल में खेय, कर्म जलाऊं मैं।
जिनपद पंकज को सेय, सौख्य बढ़ाऊं मैं ॥सम्मेद॥७॥
ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय धूपं···।

लेकर बहुफल की आश, बहुत कुदेव जजे।
अब एक मोक्षफल आश, फल से तीर्थ जजें ॥सम्मेद॥८॥
ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय फलं···।

वरअर्घं रजत के फूल, लेकर नित्य जजूं।
होवे त्रिभुवन अनुकूल, तीरथराज जजूं ॥सम्मेद॥९॥
ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय अर्घं···।

दोहा

झरने का अतिशीत जल, शांतीधार करंत।
त्रिभुवन में हो सुख अमल, सर्वशांति विलसंत ॥१०॥
शांतये शांतिधारा।

हर सिंगार गुलाब ले, तीर्थराज को नित्य।
पुष्पांजलि बढ़ावते, मिले सर्वसुख इत्य ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक टोंक अर्घ

सोरठा

तीर्थराज सुर वंद्य, पूजत निज सुख संपदा।
मिले ज्ञान आनंद, पुष्पांजलि कर में जजूं ॥१॥
इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन

सिद्धवर कूट नं० १

श्री अजितनाथ जिन कूट सिद्धवर से निर्वाण पधारे हैं।
उन संग हजार महामुनिगण हन मृत्यू मोक्ष सिधारे हैं॥
इससे ही एक अरब अस्सी कोटि अरु चौवन लाख मुनी।
निर्वाण गये सबको पूजूं मैं पाऊं निज चैतन्य मणी॥१॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, करूं वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, अनुक्रम से निज राज्य॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअजितजिनेन्द्राय अर्घं···।

धवल कूट नं० २

श्री संभव जिनवर धवलकूट से हजार मुनिसह मोक्ष गये।
इससे नो कोड़िकोड़ि बाहत्तर लाख बियालिस हजार ये॥
मुनि पांच शतक मुनिराज सर्व निर्वाण धाम को प्राप्त किये।
इन सबके चरण कमल पूजूं, निजज्ञान ज्योति हो प्रगट हिये॥२॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, करूं वंदना आज।
ब्यालिस लाख उपवास फल, अनुक्रम से शिवराज्य॥२॥

ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

आनन्द कूट नं० ३

अभिनंदन जिन आनंद कूट से हजार मुनिसह सिद्ध बने।
बाहत्तर कोड़ि कोड़ि सत्तर कोटि मुनि सत्तर लाख भने॥
ब्यालीस सहस्र अरु सातशतक मुनि यहां से मोक्ष पधारे हैं।
इन सबके चरण कमल वंदूं ये सबको भवदधि तारे हैं॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की करूं वंदना नित्य ।
एक लाख उपवास फल, मिले स्वात्म सुखनित्य ॥३॥

ॐ ह्रीं आनन्दकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं....।

अविचल कूट नं० ४

श्री सुमतिनाथ अविचल सुकूट से सहस साधु सह मोक्ष गये ।
इक कोड़ि कोड़ि चौरासि कोटि बाहत्तर लाख महामुनि ये ॥
इक्यासी सहस सातसौ इक्यासी मुनि इससे मोक्ष गये ।
इन सबके चरण कमल पूजूं, हो शांति अलौकिक प्रभो ! हिये ॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
एक कोटि बत्तीस लख, मिले सुफल उपवास ॥४॥

ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं....।

मोहन कूट नं० ५

श्री पद्म प्रभू मोहन सुकुट से तीन शतक चौबीस मुनिसह ।
निर्वाण पधारे आत्मसुधारस पीते मुक्ति बल्लभा सह ॥
इससे निन्यानवे कोटि सत्यासी लाख तेतालिस सहस तथा ।
मुनि सातशतक सत्ताइस सब शिव पहुँच पूजत हरूं व्यथा ॥

दोहा

जो वंदे इस टोंक को, स्वर्ग मोक्ष फल लेय ।
एक कोटि उपवास फल, तत्क्षण उन्हें मिलेय ॥५॥
पुष्पांजलिः ।

ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं....

प्रभास कूट नं० ६

जिनवर सुपार्श्व सुप्रभासकूट से पांचशतक मुनि साथ लिये ।
उनचास कोटिकोटि चौरासी कोटि सुबत्तिस लाखसु ये ।।
मुनि सात सहस सात सौ ब्यालिस कर्मनाश शिवनारि वरी ।
मैं सबके चरण कमल पूजूं मेरी होवे शुभ पुण्य घड़ी ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
बत्तिस कोटि उपवास फल, मिले मोक्ष सुख राज्य ।।६।।

ॐ ह्रीं प्रभातकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं....।

ललित कूट नं० ७

श्री चंद्र नाथ जिन ललितकूट से सहस मुनि सह मोक्ष गये ।
इससे नव सौ चौरासि अरब बाहत्तर कोटि अस्सि लख ये ।।
चौरासि हजार पांच सौ पंचानवे साधुगण सिद्ध हुये ।
इनके चरणों में बार बार प्रणमूं शिव सुख की आश लिये ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
छ्यानवे लाख उपवास फल, मिले सरें सब काज ।।७।।

ॐ ह्रीं ललितकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं....।

सुप्रभ कूट नं० ८

श्री पुष्पवंत सुप्रभ सु कूट से सहस साधु सह सिद्ध हुये ।
इससे ही इक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख महामुनि ये ।।
मुनि सात सहस चार सौ अस्सी मुनी मोक्ष को पाये हैं ।
मैं पूजूं अर्घ चढ़ाकर के, ये गुण अनंत निज पाये हैं ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, जो बंदे कर जोड़ ।
एक कोटि उपवास फल, लहें विघ्न घनतोड़ ॥८॥

पुष्पांजलिः ।

ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं ...।

विद्युत्वर कूट नं० ९

श्री शीतल जिनविद्युत सुकूट, से सहस साधुसह मोक्ष गये ।
इससे अठरा कोड़ा कोड़ी ब्यालीस कोटि साधु गये ॥
बत्तीस लाख ब्यालिस हजार नव शतक पांच मुनि मोक्ष गये ।
इनके चरणारविंद पूजूं परमानंद सुख की आश लिये ॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से निज साम्राज ॥९॥

ॐ ह्रीं विधुत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं...।

संकुल कूट नं० १०

श्रेयांस प्रभू संकुल सुकूट से एक सहस मुनि के साथे ।
निर्वाण पधारे परम सौख्य को प्राप्त किया भवरिपु घाते ॥
इससे छयानवे कोटिकोटि छयानवे कोटि छयानवे लक्ष ।
नव सहस पांच सौ ब्यालिस मुनि शिव पये जजूं करचित्त स्वच्छ ॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
एक कोटि उपवास फल, मिले पुनः शिवराज ॥१०॥

पुष्पांजलिः ।

ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं....।

सुवीर कूट नं० ११

श्री विमल जिनेंद्र सुवीर कूट से छय सौ मुनि सह सिद्ध हुये ।
इससे सत्तर कोड़ा कोड़ी अरु साठ लाख छह सहस हुये ॥
मुनि सात शतक ब्यालिस मुनी सब कर्मनाश शिवधाम गये ।
उन सबके चरण कमल पूजूं मेरे सब कारज सिद्ध भये ॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य ॥११॥

ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितविमलजिनेन्द्राय अर्घं···।

स्वयंभू कूट नं० १२

वर कूट स्वयंभू से अनंत जिन निज अनंत पद प्राप्त किया ।
उन साथ सात हज्जार साधु ने कर्मनाश निज राज्य लिया ॥
इससे छयानवे कोटिकोटि सत्तर करोड़ मुनि मोक्ष गये ।
मुनि सत्तर लख सत्तर हजार अरू सात शतक मुनि मुक्त भये ॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना आज ।
नव करोड़ उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य ॥

ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

सुदत्त कूट नं० १३

श्री धर्मनाथ जिन सुदत्त कूट से, कर्मनाश कर मोक्ष गये हैं ।
उनके साथ आठ सौ इक मुनि, पूर्ण सौख्य पा मुक्त भये हैं ॥
इससे उनतिस कोड़ा कोड़ी उन्निस कोटी साधू पूजूं ।
नो लाख नो सहस्र सात शतक पंचानवे मुक्त गये पूजूं ॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना नित्य ।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से अनुपम रिद्धि ।।१३।।

ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

कुंद प्रभ कूट नं० १४

श्री शांतिनाथ जिन कुंद कूट से नव सौ मुनि सह मुक्ति गये ।
नव कोटि कोटि नव लाख तथा नव सहस व नौ सौ निन्यानवे ।।
इसही सुकूट से मोक्ष गये इन सबके चरण कमल वंदूं ।
प्रभु दीजे परम शांति मुझको, मैं शीघ्र कर्म अरि को खंडूं ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूं वंदना नित्य ।
एक कोटि उपवास फल, मिले ज्ञान सुखनित्य ।।१४।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ···।

ज्ञानधर कूट नं० १५

शंभु छन्द

श्री कुंथुनाथ जिन कूट ज्ञानधर से निर्वाण पधारे हैं ।
उन साथ में इक हजार साधू सब कर्मनाश गुणधारे हैं ।।
इससे छयानवे कोड़ा कोड़ी, छ्यानवे कोटि बत्तीस लाख ।
छ्यानवे सहस सात सौ ब्यालिस शिव पहुँचे मुनि पूजूं आज ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे सिर नाय ।
एक कोटि उपवास फल, लहे स्वात्मनिधि पाय ।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

नाटक कूट नं० १६

श्री अरहनाथ नाटक सुकुट से सहस साधु सह मुक्त गये।
इस ही से निम्यानवे कोटि निम्यानवे लाख महामुनि ये॥
नव सौ निन्यानवे सर्व साधु निर्वाण पधारे पूजूं मैं।
सम्यक्त्व कली को विकसित कर संपूर्ण दुःखों से छूटूं मैं॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, करूं वंदना आज।
छ्यानवे कोटि उपवास फल, पाय लहूँ निजराज॥१६॥

ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं…।

संबल कूट नं० १७

श्री मल्लिनाथ संबल सुकूट से मोक्ष गये सब कर्म हने।
मुनि पांच शतक प्रभु साथ मुक्ति को प्राप्त किया गुण पाय घने॥
इसही से छ्यान्नवे कोटि महामुनि, सर्व अघाती घाता था।
मैं परमानंदामृत हेतु इन पूजूं गाऊं गुण गाथा॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, वंदूं बारंबार।
एक कोटि प्रोषधमयी फल उपवास जु सार॥१७॥

ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमल्लिजिनेन्द्राय अर्घं…।

निरजर कूट नं० १८

श्री मुनिसुव्रत निर्जरसुकूट से सहस साधु सह मुक्ति गये।
इससे निन्याण्वे कोटिकोटि सत्यानवे कोटि महामुनि ये॥
नौ लख नौ सौ निन्याण्वे सब मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुये।
हम इनके चरणों को पूजें, निज समतारस पीयूष पीवें॥

दोहा

कोटि प्रोषध उपवास फल, टोंक वंदते जान।
क्रम से सब सुख पायके, अंत लहें निर्वाण ॥१८॥

ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं···।

मित्रधर कूट नं० १९

शंभु छंद

नमिजिनवर कूट मित्रधर से इक सहस साधु सहमुक्त गये।
इससे नव सौ कोड़ाकोड़ी इक अरब लाख पैंतालिस ये॥
मुनि सात सहस नौ सौ ब्यालिस सब सिद्ध हुये उनको पूजूं।
निज आत्म सुधारस पान करूं दुःख दारिद संकट से छूटूं॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करें वंदना भव्य।
एक कोटि उपवास फल, लहें नित्य सुख नव्य॥१९॥

ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनमिजिनेन्द्राय अर्घं ।

सुवर्णभद्र कूट नं० २०

श्री पार्श्व सुवर्ण भद्र कूट से छत्तिस मुनि सह मुक्ति गये।
इससे ही ब्यासी कोटि चुरासी लाख सहस पैंतालिस ये॥
मुनि सात शतक ब्यालीस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबको पूजूं भक्ती से, इससे मनवांछित पूर्ण भये॥

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, वंदूं बारंबार।
सोलह कोटि उपवास फल, मिले भवोदधि पार॥२०॥

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं···।

आदिनाथ भगवान की टोंक नं० २१

चाल—हे दीनबन्धु

कैलाशगिरि से आदिनाथ मुक्ति पधारे।
उन साथ मुनि दस हजार मोक्ष सिधारे॥
मैं बार बार प्रभुपाद वंदना करूं।
निजात्म तत्व ज्ञानज्योति से हृदय भरूं ॥२१॥

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं…।

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं० २२

चाल—हे दीनबन्धु

चंपापुरी से वासुपूज्य मोक्ष गये हैं।
उन साथ छह सौ एक साधु मुक्त भये हैं॥
इनके पदारविंद को मैं भक्ति से नमूं।
निज सौख्य अतीन्द्रिया लहूँ संसार सुख वमूं ॥२२॥

ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं…।

नेमिनाथ भगवान की टोंक नं० २३

चाल—हे दीनबन्धु

गिरनार से नेमी प्रभू निर्वाण गये हैं।
शंबू प्रद्युम्न आदि मुनी मुक्त भये हैं॥
ये कोटि बाहत्तर व सात सौ मुनि कहे।
इन सबकी वंदना करूं ये सौख्यप्रद कहे ॥२३॥

ॐ ह्रीं ऊर्जयंतागिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं…।

भगवान महावीर टोंक नं० २४

चाल—हे दीनबन्धु

पावापुरी सरोवर से वीरप्रभू जी।
निज आत्म सौख्य पाया निर्वाण गये जी॥
इनके चरण कमल की मैं वंदना करूं।
संपूर्ण रोग दुःख की मैं खंडना करूं॥२४॥

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं....।

गणधर कूट नं० २५

चाल—हे दीनबन्धु

चौबीस जिनेश्वर के गणीश्वर उन्हें जजूं।
चौदह शतक उनसठ कहे उन सबको मैं भजूं॥
ये सर्व ऋद्धिनाथ रिद्धि सिद्धि प्रदाता।
मैं अर्घ चढ़ाके जजूं ये मुक्ति प्रदाता॥२५॥

ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य सर्वगणधरचरणेभ्यो अर्घं....।

शंभु छंद

नंदीश्वर द्वीप बना कृत्रिम, उसमें बावन जिनमंदिर हैं।
इनमें जिन प्रतिमायें मनहर, उनको पूजा सबसुखकर हैं॥
मैं पूजूं अर्घ चढ़ाकर के संसार भ्रमण का नाश करूं।
निज आत्म सुधारस पीकरके, निज में ही स्वस्थ निवास करूं॥२६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घं....।

तीर्थंकर का शुभ समवसरण अतिशायी सुंदर शोभ रहा।
श्री गंध कुटी में तीर्थंकर प्रभु राज रहें मन मोह रहा॥
मैं पूजूं अर्घ चढ़ाकरके, तीर्थंकर को जिनबिंबों को।
सब रोग शोक दारिद्र हरूं, पा जाऊं निज गुणरत्नों को॥२७॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितसर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घं....।

पूर्णार्घ्य—शंभु छन्द

गिरिवर सम्मेद शिखर से ही अजितादि बीस तीर्थंकर जिन।
निज के अनन्त गुण प्राप्त किये मैं उन्हें नमूं पूजूं निशदिन।।
यह ही अनादि अनिधन चौबीसों जिनवर की निर्वाण भूमि।
मुनि संख्यातीत मुक्तिथल हैं पूजत मिलती निर्वाण भूमि।।१।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिक सर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घं....।

जाप्य—ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनन्तानन्तपरमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणी, चिन्मय ज्योति पुंज।
गाऊं गुणमणिमालिका, चिन्मय आतमकुंज।।१।।

शंभु छन्द

जय जय सम्मेदशिखर पर्वत, जय जय अतिशय महिमाशाली।
जय अनुपम तीर्थराज पर्वत, जय भव्य कमल दीधितमाली।।
जय कूट सिद्धवर धवलकूट, आनंदकूट अविचलसुकूट।
जय मोहनकूट प्रभासकूट, जय ललितकूट जय सुप्रभकूट।।२।।

जय विद्युत संकुलकूट सुवीरकूट स्वयंभूकूट वंद्य।
जय जय सुदत्तकूट शांतिप्रभकूट ज्ञानधरकूट वंद्य।।
जय नाटक संबलकूट व निर्जर कूट मित्रधरकूट वंद्य।
जय पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि जयसुवरणभद्रसुकूट वंद्य।।३।।

जय अजितनाथ संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ जिन सुपार्श्व।
चंद्राप्रभु पुष्पदंत शीतल श्रेयांस विमल व अनंतनाथ।।

जय धर्म शांति कुंथु अरजिन जय मल्लिनाथ मुनिसुव्रत जी ।
जय नमि जिन पार्श्वनाथ स्वामी इस गिरि से पाई शिवपदवी ॥४॥

कैलाशगिरी से ऋषभदेव श्री वासुपूज्य चंपापुरि से ।
गिरिनारगिरी से नेमिनाथ महावीर प्रभू पावापुरि से ॥
निर्वाण पधारे चउ जिनवर ये तीर्थ सुरासुर वंद्य हुए ।
हुँडावसर्पिणी के निमित्त ये अन्यस्थल से मुक्त हुए ॥५॥

जय जय कैलाशगिरि चंपा पावापुरि ऊर्जयंत पर्वत ।
जय जय तीर्थंकर के निर्वाणों से पवित्र यतिनुत पर्वत ॥
जय जय चौबीस जिनेश्वर के चौदह सौ बावन गुरु गणधर ।
जय जय जय वृषभसेन आदी जय जय गौतम स्वामी गुरुवर ॥६॥

सम्मेद शिखर पर्वत उत्तम मुनिवृंद वंदना करते हैं ।
सुरपति नरपति खगपति पूजें भविवृंद अर्चना करते हैं ॥
पर्वत पर चढ़कर टोंक टोंक पर शीश झुकाकर नमते हैं ।
मिथ्यात्व अचल शतखंड करें सम्यक्त्वरत्न को लभते हैं ॥७॥

इस पर्वत की महिमा अचिन्त्य भव्यों को ही दर्शन मिलते ।
जो वंदन करते भक्ती से कुछ भव में ही शिवसुख लभते ॥
बस अधिक उनंचास भव धर निश्चित हो मुक्ती पाते हैं ।
वंदन से नरक पशू गति से बचते निगोद नहिं जाते हैं ॥८॥

दस लाख व्यंतरों का अधिपति भूतकसुर इस गिरि का रक्षक ।
यह यक्षदेव जिनभाक्तिक जन वत्सल हैं जिनवृष का रक्षक ॥
जो जन अभव्य हैं इस पर्वत का वंदन नहिं कर सकते हैं ।
मुक्तिगामी निजसुख इच्छुक जन ही दर्शन कर सकते हैं ॥९॥

यह कल्पवृक्ष सम वांछितप्रद चिंतामणि चिंतित फल देता ।
पारसमणि भविजन लोहे को कंचन क्या पारस कर देता ।।
यह आत्म सुधारस गंगा है समरससुखमय शीतल जल युत ।
यह परमानंद सौख्य सागर यह गुण अनंतप्रद त्रिभुवन नुत ।।१०।।

मैं नमूं नमूं इस पर्वत को यह तीर्थराज है त्रिभुवन में ।
इसकी भक्ती निर्झरणी में स्नान करूं अघ धोलूं मैं ।।
अद्भुत अनंत निज शांती को पाकर निज में विश्राम करूं ।
निज ज्ञानमती ज्योती पाकर अज्ञान तिमिर अवसान करूं ।।११।।

दोहा

नमूं नमूं सम्मेद गिरि, करूं मोह अरि बिद्ध ।
मृत्युंजय पद प्राप्त कर वरूं सर्वसुख सिद्धि ।।१२।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय जयमाला अर्घं....।

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः ।

गीता छन्द

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से सम्मेदगिरि को वंदते ।
वे नरक पशु गति से छूटें सुरपद धरें आनंदते ।।
चक्रीश पद तीर्थेश पद पाकर अतुल वैभव धरें ।
फिर 'ज्ञानमति'' रवि किरण से त्रिभुवन कमल विकसित करें ।।१।।

इत्याशीर्वादः ।

卐—卐

जिन सहस्रनाम पूजा

अथ स्थापना—शंभु छंद

जिनवर की प्रथम दिव्य देशना, नंतर सुरपति अति भक्ती से।
निज विकसित नेत्र हजार बना, प्रभु को अवलोके विक्रिय से॥
प्रभु एक हजार आठ लक्षणधारी सब भाषा के स्वामी।
शुभ एक हजार आठ नामों, से स्तुति करता वह शिवगामी॥

दोहा

एक हजार सु आठ ये, श्रीजिननाम महान्।
उनकी मैं पूजा करूं, करके इत आह्वान॥१॥

ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं···।

ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

चाल—नंदीश्वर पूजा

सरयू नदि का शुचिनीर, सुवरण भृंग भरूं।
मिल जावे भवदधि तीर, जिनपद धार करूं॥
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूं।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूं॥१॥

ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय जलं···।

काश्मीरी केशर शुद्ध, चंदन संग घिसूं।
जिनपद चर्चंत अविरुद्ध, भव संताप नशूं॥
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूं।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूं॥२॥
ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय चंदनं···।

मोतीसम उज्ज्वल धौत, तंदुल पुंज धरूं।
मिल जावे, अक्षय सौख्य, प्रभु पद पूज करूं॥शुभ०॥३॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकरजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय अक्षतं···।

जूही केवड़ा गुलाब, सुरभित सुमनों से।
पूजत छुट जाऊं नाथ, भव भव भ्रमणों से॥शुभ०॥४॥
ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय पुष्पं···।

पूरण पोली घृतपूर, हलुआ भर थाली।
पूजत हो अमृतपूर, मनरथ नहिं खाली॥शुभ०॥५॥
ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय नैवेद्य··।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
भगता मन का तम जाल, ज्योति प्रगटे ही॥शुभ०॥६॥
ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय दीपं··।

दस गंधी धूप सुगंध, खेवूं अगनी में।
सब जलते कर्म प्रबन्ध, पाऊं निजसुख मैं॥शुभ०॥७॥
ॐ ह्री तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय धूपं···।

अंगूर आम फल सेब, अर्पण करते ही।
निज आतम सम्पति लेब, फल से जजते ही॥शुभ०॥८॥
ॐ ह्री तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय फलं···।

जल चंदन अक्षत आदि, अर्घ बनाऊं मैं।
अर्पण करते भव व्याधि, सर्व नशाऊं मैं॥शुभ०॥९॥
ॐ ह्री तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय अर्घं···।

दोहा

सहसनाम को पूजहूं, शांतीधारा देय ।
सर्वसौख्य सम्पति मिले, आत्मसुधा बरसेय ॥१०॥
शांतये शांतिधारा ।

पारिजात के पुष्प बहु सुरभित दिक् महकंत ।
पुष्पांजलि अर्पण किये, आतम सुख विलसंत ॥११॥
दिव्य पुष्पांजलिः ।

जयमाला

दोहा

महातेज के धाम प्रभु, नमूं नमूं त्रयकाल ।
एक हजार सुआठ तुम, नाममंत्र जयमाल ॥१॥

चाल—शेर, हे दीनबन्धु

जय जय जिनेंद्र ! तुम असंख्य नाम गुण भरें ।
जय जय जिनेंद्र ! तुम अनंत सौख्य गुण भरें ॥
हे नाथ ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें ।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्ष महल में चढ़ें ॥२॥

हे नाथ ! यदपि आप नाम वचन से कहें ।
फिर भी वचन अगोचर मुनिगण तुम्हें कहें ॥हे नाथ०॥३॥
तुम नाम संस्तवन सदा अभीष्ट को फले ।
भगवन् ! तुम्हीं तो भक्तों के बंधु हो भले ॥हे नाथ०॥४॥
स्वामिन् ! जगत्प्रकाशी हो "एक" ही तुम्हीं ।
हो ज्ञानदर्श गुण से "दोरूप" भी तुम्हीं ॥हे नाथ०॥५॥
रत्नत्रयी शिवमार्ग से प्रभु "तीनरूप" हो ।
आनन्त्य चतुष्टय से प्रभु "चाररूप" हो ॥हे नाथ०॥६॥

हो पंच परमेष्ठी स्वरूप "पाँचरूप" भी ।
प्रभु पंच कल्याणक से भी "पाँचरूप" ही ॥
हे नाथ ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें ।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्ष महल में चढ़ें ॥७॥
जीवादि छहों द्रव्य जानते "छहरूप" हो ।
प्रभु सात नयों को निरूप "सातरूप" हो ॥हे नाथ०॥८॥
सम्यक्त्व आदि आठ गुण से 'आठरूप' हो ।
नव केवली लब्धी से आप "नवस्वरूप" हो ॥हे नाथ०॥९॥
अवतार दश महाबलादि 'दशस्वरूप' हो ।
हे ईश ! दया कीजिये त्रैलोक्य भूप हो ॥हे नाथ०॥१०॥
मैं आप विविध नाम पुष्प गूँथ गूँथ के ।
स्तोत्र की माला बनाई पूजहूँ उससे ॥हे नाथ०॥११॥
भगवन् ! प्रसन्न होय अनुग्रह करो मुझपे ।
स्तोत्र से वच हों पवित्र शीश नमें से ॥हे नाथ०॥१२॥
प्रभु नाम स्मृतिमात्र से भाक्तिक पवित्र हों ।
जो भक्ति से पूजा करें कल्याण पात्र हों ॥हे नाथ०॥१३॥
इस विध समवसरण में इंद्र ने स्तुति किया ।
फिर श्री विहार हेतु प्रभु से प्रार्थना किया ॥हे नाथ०॥१४॥
हे नाथ ! भव्य धान्य पाप अनावृष्टि से ।
सूखें उन्हें सींचो सुधर्म सुधावृष्टि से ॥हे नाथ०॥१५॥
भगवंत ! आप विजय की उद्योग सूचना ।
ये धर्मचक्र है तैयार शोभता घना ॥हे नाथ०॥१६॥
हे देव ! आप मोह शत्रु पे विजय किया ।
शिवमार्ग के उपदेश का अवसर ये आ गया ॥हे नाथ०॥१७॥

जिनवर स्वयं तैयार श्री विहार के लिये।
बस इंद्र की ये प्रार्थना नियोग के लिये ।।हे नाथ०।।१८।।
तत्क्षण समवसरण सभी विलीन हो गया।
इंद्रो ने प्रभु विहार का उत्सव महा किया ।।हे नाथ०।।१९।।
जय जय ध्वनी ऊंची उठी बाजे बजें घने।
संगीत गीत नृत्य करें देवगण घने ।।हे नाथ०।।२०।।
आकाश में अधर सुवर्ण कमल रच दिये।
सुरभित कमल पे नाथ चरण धरत चल दिये ।।हे नाथ०।।२१।।
गंधोद वृष्टि, पुष्पवृष्टि मंद पवन है।
अतिशय विभूति आप के विहार समय है ।।हे नाथ०।।२२।।
आरे हजार धर्म चक्र चमचमा रहा।
जिनराज आगे-आगे चले शोभता महा ।।हे नाथ०।।२३।।
हे देव ! मेरी प्रार्थना को पूर्ण कीजिये।
कैवल्यज्ञानमती नाथ ! तूर्ण[1] दीजिये ।।हे नाथ०।।२४।।

घत्ता

जय जिन नामावलि, स्तुति हारावलि, जो भविजन कंठे धरहीं।
उन स्मृति शक्ती, क्षण क्षण बढ़ती, अतिशय ज्ञान करें सबहीं ।।२५।।

ॐ ह्रीं तीर्थङ्करजिनअष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

इत्याशीर्वादः।

卐——卐

१. जल्दी।

आर्यिका पूजा

अथ स्थापना—गीता छंद

तीर्थंकरों के समवसृति में आर्यिकायें मान्य हैं।
ब्राह्मी प्रभृति से चंदना तक सर्व में हि प्रधान हैं॥
व्रतशील गुण से मंडिता इंद्रादि से पूज्या इन्हें।
आह्वान करके पूजहूं त्रयरत्न से युक्ता तुम्हें॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक—गीता छंद

गंगा नदी का नीर शीतल स्वर्ण झारी में भरूं।
निज कर्ममल को धोवने हित मात पद धारा करूं॥
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूं।
माता चरण वंदन करूं निज आत्म की रक्षा करूं॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः जलं ···।

मलयागिरी चंदन सुगंधित घिस कटोरी में भरूं।
तुम पाद पंकज चर्चते भवताप की बाधा हरूं॥सद्धर्म०॥२॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः चंदनं ·।

उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल धोय थाली में भरूं ।
तुम पाद सन्निध पुंज धरते सर्व दुख का क्षय करूं ।।सद्धर्म०।।३।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः अक्षतं....।

चंपा चमेली केवड़ा अरविंद सुरभित पुष्प से ।
तुम पाद कुसुमावलि किये यश सुरभि फैले चहुँदिसे ।।सद्धर्म०।।४।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पुष्पं....।

मोदक इमारती सेमई पायस पुआ पकवान से ।
तुम पाद पंकज पूजते क्षुध रोग मुझ तुरतहिं नशे ।।सद्धर्म०।।५।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः नैवेद्यं ...।

कर्पूर ज्योति रजत दीपक में जला आरति करूं ।
अज्ञानतम को दूर कर निज ज्ञान की ज्योती भरूं ।।सद्धर्म०।।६।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः दीपं ..।

दशगंध धूप सुगंध खेकर कर्म अरि भस्मी करूं ।
तुम पाद पंकज पूजते निज आत्म की शुद्धी करूं ।।सद्धर्म०।।७।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः धूपं....।

अंगूर सेव अनार केला आम फल को अर्पते ।
निज आत्म अनुभव सुख सरस फल प्राप्त हो तुम पूजते ।।सद्धर्म०।।८।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः फलं ...।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज दीप धूप फलादि से ।
मैं अर्घ अर्पण करूं माता ! आपको अति भक्ति से ।।सद्धर्म०।।९।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः अर्घं....।

दोहा

दस गुण मंडित मात के चरणों में त्रयबार।
शांतीधारा मैं करूं, होवे शांति अपार ॥१०॥

शांतये शांतिधारा।

बकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि चरणों करूं, करूं स्वात्म शृंगार ॥११॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

जय जय जिन श्रमणी, गुणमणि धरणी, नारि शिरोमणि सुरवंद्या।
जय रत्नत्रय धनि, परमतपस्विनि, स्वात्मचिंतवनि त्रय संध्या॥
मुनि सामाचारी सर्व प्रकारी पालनहारी अहर्निशी।
मैं पूजूँ ध्याऊं तुम गुण गाऊं, निजपद पाऊं ऊर्ध्वदिशी ॥१॥

स्रग्विणी छन्द

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहां।
मैं नमूं मैं नमूं मात तुमको यहां॥
आप सम्यक्त्व से शुद्ध निर्दोष हो।
शास्त्र के ज्ञान से पूर्ण उद्योत हो ॥२॥

शुद्ध चारित्र संयम धरा आपने।
श्रेष्ठ बारह विधा तप धरा आपने॥
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहां।
मैं नमूं मैं नमूं मात ! तुमको यहां ॥३॥

एक साड़ी परिग्रह रहा शेष है।
केश लुंचन करो आर्यिका वेष है ॥धन्य॥४॥
आतपन आदि बहु योग को धारतीं।
क्रोध कामारि शत्रु सदा मारतीं ॥धन्य॥५॥
अंग ग्यारह सभी ज्ञान को धारतीं।
मात ! हो आप ही ज्ञान की भारती ॥धन्य॥६॥
भक्तजन वत्सला धर्म की मूर्ति हो।
जो जजें आपको आश की पूर्ति हो ॥धन्य॥७॥
मात ब्राह्मी प्रभृति चंदना साध्वियां।
अन्य भी जो हुई हैं महासाध्वियां ॥धन्य॥८॥
मात सीतासती सुलोचना द्रौपदी।
राम चंद्रादि इंद्रादि से वंद्य भी ॥धन्य॥९॥
चंद्र समकीर्ति उज्जवल दिशा व्यापती।
सूर्य सम तेज से पाप तम नाशतीं ॥धन्य॥१०॥
सिंधुसम आप गांभीर्य गुण से भरीं।
मेरु सम धैर्य भू-सम क्षमा गुण भरीं ॥धन्य॥११॥
बर्फ सम स्वच्छ शीतल वचन आपके।
श्रेष्ठ लज्जादि गुण यश कहे आपके ॥धन्य॥१२॥
आर्यिका वेष से मुक्ति होवे नहीं।
संहनन श्रेष्ठ बिन कर्म नशते नहीं ॥धन्य॥१३॥
सोलवें स्वर्ग तक इंद्र पद को लहें।
फेर नर तन धरें साधु हों शिव लहें ॥धन्य॥१४॥
जैन सिद्धांत की मान्यता है यही।
संहनन श्रेष्ठ बिन शुक्ल ध्यानी नहीं ॥धन्य॥१५॥

अंबिके ! आपके नाम की भक्ति से ।
शील सम्यक्त्व संयम पलें शक्ति से ।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ ।
मैं नमूं मैं नमूं मात ! तुमको यहाँ ।।१६।।
आत्मगुण पूर्ति हेतू जजूं मैं सदा ।
नित्य वंदामि करके नमूं मैं मुदा ।।धन्य।।१७।।
ज्ञानमति पूर्ण हो याचना एक ही ।
अंब ! पूरो अबे देर कीजे नहीं ।।धन्य।।१८।।

घत्ता

जय जय जिन साध्वी, समरस माध्वी, तुममें गुणमणि रत्न भरें ।
तुम अतुलित महिमा, पुण्य सुगरिमा हम पूजें निज सौख्य भरें ।।१९।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वार्यिकाचरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घं....।

शांतये शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

इत्याशीर्वादः ।

卐——卐

पूजा नं० १

दीपावली—पूजा विधि

भगवान महावीर सब ओर से भव्यों को सम्बोध कर पावा नगरी पहुँचे और वहाँ "मनोहर उद्यान" नाम के वन में विराजमान हो गये। जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढे आठ माह बाकी थे तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातः काल (उषाकाल) के समय अघातिया कर्मों का नाश कर भगवान कर्म बन्धन से मुक्त होकर मोक्षधाम को प्राप्त हो गये। इन्द्रादि देवों ने आकर उनके शरीर की पूजा की। उस समय देवों ने बहुत भारी देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावा नगरी को सब तरफ से प्रकाश युक्त कर दिया। उस समय से लेकर आज तक प्रतिवर्ष दीपमालिका द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने लगे।[1] उसी दिन सायंकाल में श्री गौतमस्वामी को केवलज्ञान प्रगट हो गया। तब देवों ने आकर गंधकुटी की रचना करके गौतमस्वामी की एवं केवलज्ञान की पूजा की। इसी उपलक्ष में लोग सायंकाल में दीपको को जलाकर पुनः नयी बही आदि का मुहूर्त करते हुए गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने लगे हैं। वास्तव में "गणानां ईशः गणेशः=गणधरः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार बारह गणों के अधिपति गौतम गणधर ही गणेश हैं ये विघ्नों के नाशक हैं और उनके केवलज्ञान विभूति की पूजा ही महालक्ष्मी की पूजा है।

कार्तिक वदी चौदश की पिछली रात्रि में अर्थात् अमावस्या के पभात में पौ फटने के पहले ही आज भी पावापुरी में निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है। अतः अमावस्या के दिन प्रातः चार बजे से जिनमन्दिर में पहुँचकर भगवान् महावीर का अभिषेक करके नित्य पूजा में नवदेवता या देवशास्त्र गुरू की पूजा करके भगवान् महावीर की पूजा करनी चाहिये। उस पूजा में गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान इन चार कल्याणकों के अर्घ चढ़ाकर इसी पुस्तक में आगे मुद्रित दो निर्वाण कांड भाषा में से कोई एक निर्वाणकांड पढ़कर पुनः निर्वाण कल्याणक का अर्घ पढ़कर निर्वाणलाडू चढ़ाकर जयमाला पढ़नी चाहिये। अवकाश हो तो निर्वाण क्षेत्र पूजा करें अनन्तर शांति पाठ विसर्जन करके पूजा पूर्ण करनी चाहिये। इस उषा

१. हरिवंश पुराण, सर्ग ६६, पृष्ठ ८०५।

वेला में निर्वाणलाडू चढ़ाते समय घी के चौबीस दीपक जलाने की भी परम्परा है।

सायंकाल में दीपकों को प्रज्वलित करते समय निम्नलिखित मंत्र बोलना चाहिये—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोहान्धकारविनाशनायज्ञानज्योतिः प्रद्योतनाय दीपपंक्ति प्रज्वालयामीति स्वाहा।

पुनः प्रज्वलित दीपकों को लेकर सबसे पहले मन्दिर जी में रखना चाहिये। अनन्तर घर में दूकान आदि सर्वत्र दीपकों को सजाकर दीपमालिका उत्सव मनाना चाहिये।

बही पूजन :—

पुनः स्थिर लग्न में, शुभमूहूर्त में दूकान पर नूतन बही पूजन करनी चाहिये दूकान पर पवित्र स्थान पर मेज सिंहासन में विनायक यन्त्र रखकर जिनवाणी विराजमान करनी चाहिये। पुनः सामने एक चौकी पूजन सामग्री हल्दी, सुपाडी, सरसों, दूर्वा, शुद्ध केशर घिसा चदन आदि रखकर पूजा शुरू करनी चाहिये। इस समय नूतन रजिस्टर आदि रख लेने चाहिये। उनमें स्वस्तिक आदि बना लेना चाहिये। जैसे—

५
२४ 卐 २
३

"श्री" का पर्वताकार[1] लेखन, श्रीऋषभाय नमः श्रीवर्धमानाय नमः, श्रीगौतमगणधराय नमः, श्रीकेवलज्ञान महालक्ष्म्यै नमः मंत्र लिखना चाहिये।

पुनः मगलाष्टक पढ़कर नवदेवता की पूजा करके पृष्ठ २६८ की छपी हुई गौतम गणधर की पूजा करके पृष्ठ ३०२ पर छपी हुई "केवलज्ञानलक्ष्मी" की पूजा करनी चाहिये। बाद में शांति पाठ और विसर्जन करके परिवार के सभी लोगों को तिलक लगाना चाहिये। यह संक्षिप्त विधि है।

इसमें शांति पाठ के पहले नूतन बही, रुपयों की थैली आदि पर पुष्पांजलि क्षेपण करते समय अग्रलिखित संकल्प विधि पढ़नी चाहिये।

---

१. यह अगली विधि मे दिया गया है।

ॐ आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे……प्रदेशे……ग्रामे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे अमावस्यायां तिथौ वीरनिर्वाणसंवत्…… तमे, विक्रमसंवत्……तमे, ईस्वी सन्……तमे, वर्षे वासरे……नामधेयस्य (मम) आपणिकायां नूतन बहीशुभमुहूर्तं करिष्ये[1] (कारयिष्ये) । सर्वमंगलं भवतु, शांतिः पुष्टिस्तुष्टिर्भवतु सर्वऋद्धिसिद्धिर्भवतु स्वाहा ।

नोट :—यदि विस्तार से विधि करनी है तो 'श्री नेमिचन्द्र' ज्योतिषाचार्य के लिखे अनुसार करना चाहिये यह अगले पेज में छपी है ।

व्रततिथि निर्णंय से उद्धृत

पूजा नं० २

दीपावली पूजा की विधि

दूकान या बड़े फर्म के वसना मुहूर्त—लक्ष्मी पूजन करने के पूर्व अष्टद्रव्य तैयार कर चौकियो पर रख ले । एक चौकी पर मगल कलश की स्थापना करे । गद्दी पर बहीखाता, दवात-कलम, नवीन वस्त्र, रुपयों की थैली आदि रखें । प्रथम मंगलाष्टक पढ़कर रखी हुई सभी वस्तुओं पर पुष्प अर्पण करे । अनन्तर स्वस्ति विधान, देवशास्त्र—गुरु का अर्घ, पंचपरमेष्ठी पूजन, नवदेव पूजन, महावीर स्वामी पूजन, गणधर पूजन करें । अनन्तर बहियो पर साथिया बनाने के उपरान्त "श्री ऋषभाय नमः", "श्री महावीराय नमः", "श्री गौतम गणधराय नमः" "श्री केवलज्ञानसरस्वत्यै नमः" और "श्री लक्ष्म्यै नमः" लिखकर "श्रीवर्द्धताम्" लिखें । अनन्तर निम्नाकार में श्री का पर्वत बनावे ।

O श्री O
O श्री श्री O
O श्री श्री श्री O
O श्री श्री श्री श्री O
O श्री श्री श्री श्री श्री O

थैली में स्वस्तिक बनाने का नियम

O O O O O O O O O
श्री
O O
O O
O O
O O
O श्री वर्द्धमानाय नमः O
O O O O O O O O O

---

१. यदि पण्डित विधान कर रहे हों तो "कारयिष्ये" बोलना चाहिये ।

इसके पश्चात् "श्री देवाधिदेव श्री महावीरनिर्वाणात् २४८२ तमे वीराब्दे श्री २०१३ तमे विक्रमाब्दे १६५६ ईस्यवीयसंवत्सरे शुभलग्ने स्थिरमुहूर्ते श्री जिनार्चनं विधाय अद्य कार्तिक—कृष्णामावास्यायां शुभवासरे लाभ-वेलायां नूतनवसनामुहूर्त करिष्ये"।

सब बहियों पर यह लिखकर पान, लड्डू, सुपाड़ी, पीली सरसों, दूर्वा और हल्दी रखें। पश्चात् "श्री वर्द्धमानाय नमः, श्री महालक्ष्म्यै नमः, ऋद्धिः सिद्धिर्भवतुतराम्" केवलज्ञानलक्ष्मीदेव्यै नमः, मम सर्वसिद्धिर्भवतु, काममांगल्योत्सवाः संन्तु, पुण्यं बर्द्धताम, धनं वर्द्धताम्" पढ़कर बहीखातों पर अर्घ चढ़ावें। अनन्तर मंगल कलश वाली चौकी पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें "श्री लीलायतनं महीकुलग्रहं कीर्तिप्रमोदास्पदं वाग्देवीरति-केतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत्। सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्राथितार्थप्रदं प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनाङ्घ्रिद्वयम्"।। श्लोक पढ़कर साथिया बनावें। पश्चात् लक्ष्मीपूजन[1] करें और लक्ष्मीस्तोत्र, पुण्याह्वाचन, शान्ति, विसर्जन करें।

---

१. यह पूजन उन विद्वान् के पास थी।

अथ ज्येष्ठ जिनवर पूजा

नाभिराय कुल मण्डन मरुदेवी उर रमनं।
प्रथम तीर्थंकर गाये सु स्वामी आदि जिनं॥
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊं सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊं क्षीरसमुद्र भरणी॥१॥

जुगला धर्म निवारण स्वामी ऋषभ जिनम्।
संसार सागर तारण सेविय सुर गहनं॥ज्येष्ठ०॥२॥

इन्द्र इन्द्रानी देवा देवी बहु मिलनी।
मेरू जिनेन्द्र न्हवायो महोत्सव जै करनी॥ज्येष्ठ०॥३॥

गणधर, ऋषिवर, यतिवर, मुनिवर ध्यान धरं।
आर्यिका, श्रावक श्राविका, पूजत चरण बरं॥ज्येष्ठ०॥४॥

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

निर्मल शीतल नीर उदक यह पूजरयं।
कर्म मलय सब टारी आतम निर्मलयं॥ज्येष्ठ०॥५॥

ॐ ह्री आदिनाथजिनेन्द्राय जलम्····।

केशरि चंदन कर्पूर विलेपन पूजरयं।
सुगंध शरीर लहे करि आतम निर्मलयं॥ज्येष्ठ०॥६॥

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय चंदनं····।

मुक्ताफल सम उज्जवल अक्षत पूजरयं।
अक्षय पद सु लहै करि आतम निर्मलयम्॥ज्येष्ठ०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षतं····।

जाही जुही मच कुन्द सेवती पूजरयं।
पूजा पद सु लहे करि आतम निर्मलयम् ॥ज्येष्ठ०॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय पुष्पं····।

उत्तम अन्न बहु आनि सु पक्वान्न पूजरयं।
वेदनीय कर्म विनाशी आतम निर्मलयं ॥ज्येष्ठ०॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नैवेद्यं····।

कर्पूर तनी बहु ज्योति सु आरति पूजरयं।
केवलज्ञान लहे करि आतम निर्मलयम् ॥ज्येष्ठ०॥१०॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय दीपं····।

अगर लोबान कृष्णागर धूप सो पूजरयं।
घाती कर्म प्रजाली आतम निर्मलयम् ॥ज्येष्ठ०॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय धूपं····।

आम्र नीबू जंमीर नारियल पूजरयम्।
मन वांछित फल पायमि आतम निर्मलयम् ॥ज्येष्ठ०॥१२॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय फलं····

धवल मंगल गीत महोत्सव पूजरयम्।
मोक्ष सौख्य पद पायमि आतम निर्मलयम् ॥ज्येष्ठ०॥१३॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं····।

सकलकीर्ति गुरु प्रणमों जिनवर पूजरयम्।
ब्रह्म मनै जिनदास सु आतम निर्मलयम् ॥ज्येष्ठ०॥१४॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं····।

जयमाला

दोहा

आदि प्रभो जिन आदि गुरु, आदि नमो अर्हंत।
आदि समय सुमिरण करौं, भय भंजन भगवंत ॥१॥

छंद

अमर नयर सम नयर अयोध्या।
नाभि नरेन्द्र बसै जु सु बुध्या॥
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरो-दधि भरिया॥१॥

तसु पटरानी मरुदेवी माया।
युगपति आदि जिनेश्वर जाया॥सुरपति०॥२॥

ज्येष्ठ मास अभिषेक सु करिया।
अष्ठोत्तर शत कुम्भ सु भरिया॥सुरपति०॥३॥

भभकत जल धारा संचरिया।
ललित कल्लोल धरनि उत्तरिया॥सुरपति०॥४॥

जै जै कार असुर उच्चरिया।
इन्द्र इन्द्राणी सिंहासन धरिया॥सुरपति०॥५॥

अंग अंग नव भूषण हरिया।
कुण्डल हार हरित मणि जरिया॥सुरपति०॥६॥

वृषभ नाथ सत नाथ सु सहिया।
कमल नयन कमलापति कहिया॥सुरपति०॥७॥

जुगला धर्म निवारण वरिया।
सुर नर किंनर गंधोदक सरिया॥सुरपति०॥८॥

हिम हिमांसु चन्दन घन सरिया।
भूरि सुगन्ध गंध परि सरिया॥सुरपति०॥९॥

रतन कचोल कुमारनि भरिया।
जिन चरणांबुज पूजत हरिया॥सुरपति०॥१०॥

अक्षत अक्षत वास लहरिया।
रोहिनी कंत किरिन सम सरिया ।।सुरपति०।।११।।

देखत रुचिकर अमर निकरिया।
पंच मुष्ठि आगे जिन धरिया ।।सुरपति०।।१२।।

सुन्दर पारिजात मोगरिया।
कमल बकुल पाटल कुमुदरिया ।।सुरपति०।।१३।।

चरू वर दीप धूप फल फलिया।
फन सु रसाल मधुर रस भरिया ।।सुरपति०।।१४।।

कुसुमांजलि सांजलि समु जलिया।
पंडित राज आम्र बच कलिया ।।सुरपति०।।२५।।

त्रिभुवन कीर्ति पद पंकज वरिया।
रत्नभूषण सूरि महापद करिया ।।सुरपति०।।१६।।

जै जै कार असुर उच्चरिया।
ब्रह्म कृष्ण जिनराजस्तविया ।।सुरपति०।।१७।।

कुम्भकलश भर जो जन ढरिया।
शाश्वत धर्म सदा अनुसरिया ।।सुरपति०।।१८।।

अनुष्टप्

यावंति जिनचैत्यानि, विद्यंते भुवनत्रये।
तावंति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहं ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं ···।

इत्याशीर्वादः।

卐—卐

व्रतों के जाप्यमंत्र

नंदीश्वर व्रत (आष्टान्हिक व्रत) जाप्य मंत्र—

(१) ॐ ह्रीं नंदीश्वरसंज्ञाय नमः (२) ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः (३) ॐ ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः (३) ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः (५) ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः (६) ॐ ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः (७) ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राय नमः (८) ॐ ह्री इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः।

रविव्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथाय नमः।

सोलहकारण व्रत जाप्य मंत्र—

(१) ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः (२) ॐ ह्रीं अर्हं विनयसंपन्नताभावनायै नमः (३) ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै नमः (४) ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः (५) ॐ ह्री अर्हं संवेगभावनायै नमः (६) ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः (७) ॐ ह्री अर्हं शक्तितस्तपोभावनायै नमः (८) ॐ ह्री अर्हं साधुसमाधिभावनायै नमः (९) ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः (१) ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः (११) ॐ ह्री अर्हं आचार्यभक्तिभावनायै नमः (१२) ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः (१३) ॐ ह्री अर्हं प्रवचनभक्तिभावनायै नमः (१४) ॐ ह्री अर्हं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः (१५) ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनाभावनायै नमः (१६) ॐ ह्री अर्हं प्रवचनवत्सलत्वभावनायै नमः।

दशलक्षणव्रत जाप्य मंत्र—

(१) ॐ ह्री अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय नमः (२) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तममार्दवधर्माङ्गाय नमः (३) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमार्जवधर्माङ्गाय नमः (४) ॐ ह्रीं

अर्हन्मुखकमलसमुद्‌गताय उत्तमशौचधर्माङ्गाय नमः (५) ॐ ह्रीं अर्हन्मुख-कमलसमुद्‌गताय उत्तमसत्यधर्माङ्गाय नमः (६) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल-समुद्‌गताय उत्तमसंयमधर्माङ्गाय नमः (७) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्‌ग-ताय उत्तमतपोधर्माङ्गाय नमः (८) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्‌गताय उत्तमत्यागधर्माङ्गाय नमः (९) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्‌गताय उत्तमा-किंचनधर्माङ्गाय नमः (१०) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्‌गताय उत्तमब्रह्म-चर्यधर्माङ्गाय नमः ।

पंचमेरु व्रत जाप्य मंत्र—

(१) ॐ ह्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः (२) ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः (३) ॐ ह्री अचलमेरु-सम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः (४) ॐ ह्री मन्दरमेरुसम्बन्धिषोडश-जिनालयेभ्यो नमः (५) ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः ।

आकाश पंचमी व्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ऐं अर्हं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योयक्षयक्षी-सहितेभ्यो नमः ।

निर्दोष सप्तमी व्रत की जाप्य —

ॐ ह्रां ह्रीं सर्वविघ्ननिवारकाय श्रीशांतिनाथस्वामिने नमः स्वाहा ।

सुगन्धदशमीव्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीशीतलनाथाय ईश्वरयक्षमानवीययक्षी सहिताय नमः स्वाहा ।

रत्नत्रय जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः

अनन्तचतुर्दशी व्रत जाप्य मंत्र—

(१) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः ।

(२) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवतो महाविज्जा-महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे-अणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

रोहिणीव्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

मुक्तावली व्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः।

णमोकार व्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं।

जिनगुणसंपत्ति व्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यो नमः।

सप्तपरमस्थान व्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नमः।

ऋषिमण्डल जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

सिद्धचक्र जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः।

शांति मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

आरोग्य प्राप्ति मंत्र—

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं

卐---卐

तृतीय खण्ड

स्तोत्र पाठ आरती

भजन आदि ।

उषा-वंदना

—आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी

उठो भव्य ! खिल रही है उषा, तीर्थ वंदना स्तवन करो ।
आर्त रौद्र दुर्ध्यान छोड़कर, श्री जिनवर का ध्यान करो ॥
उठो भव्य०॥

अष्टापद से वृषभदेव जिन, वासुपूज्य चंपापुरी से ।
ऊर्जयन्त से श्री नेमीश्वर, मुक्ति गये वंदो रुचि से ॥
उठो भव्य०॥१॥

पावापुरी सरोवर से इस, उषाकाल में श्री महावीर ।
विधुतक्लेश निर्वाण गये हैं, नमो उन्हें झट हो भवतीर ॥
उठो भव्य०॥२॥

बीस जिनेश्वर मोक्ष गये हैं, श्री सम्मेद शिखर गिरिपर ।
और असंख्य साधुगण भी, शिवपायी वहीं नमों सुखकर ॥
उठो भव्य०॥३॥

ऊर्जयंत से नामप्रभु प्रद्युम्न, शंभु अनिरुद्धादिक ।
कोटि-बहत्तर सातशतक मुनि, सिद्ध हुए हैं वंदों नित ॥
उठो भव्य०॥४॥

साढ़े तीन कोटि वरदत्तवरांग सागरदत्तादिक ।
मुनि तारवर नगर से गये, मोक्ष उन्हें वंदों नितप्रति ॥
उठो भव्य०॥५॥

रामचंद्र के दो सुत लाड, नृपादिक पंच करोड़ गिनो ।
पावागिरी सिखर से शिवपुर, गये भक्ति से उन्हें नमो ॥
उठो भव्य०॥६॥

पांडव तीन द्रविड राजादिक, आठ कोटि मुनि सुरपूजित ।
शत्रुंजय गिरि से शिव पायें, नमो सभी को भाव सहित ॥
उठो भव्य०॥७॥

बलभद्र सप्त यादव नरेन्द्र, इत्यादिक आठ कोटि परिमित ।
गजपंथा गिरि से शिव पहुँचे, भाव भक्ति से वंदो नित ॥
उठो भव्य०॥८॥

राम हनूमन सुग्रीव गवगवाख्य, नील महानील यति ।
निन्यानवे कोटि मुनि तुंगी-गिरि से शिव गये करों नति ॥
उठो भव्य०॥९॥

नंग अनंग कुमर अरु साढ़े-पांच कोटि परिमित मुनिगण ।
सोनागिरिवर से निर्वाण गये उन सबको करो नमन ॥
उठो भव्य०॥१०॥

साढ़े पंच कोटि मुनि दशमुख, सुत आदिक रेवातट से ।
मृत्युजीत शिवकांता पाई, नमो सभी को प्रीति से ॥
उठो भव्य०॥११॥

रेवा नदितट पश्चिम दिशा में, कूट सिद्धवर से निर्वाण ।
दो चक्री दश मदन सार्धत्रय, कोटि साधु को करो प्रणाम ॥
उठो भव्य०॥१२॥

बड़वानी पत्तन से दक्षिण-दिशि में चूलगिरी ऊपर ।
इंद्रजीत अरु कुंभकर्ण, शिवपाई उन्हें नमो भवहर ॥
उठो भव्य०॥१३॥

पावागिरी शिखर के ऊपर, सुवर्णभद्रादि मुनि चार।
नदी चेलना तट सन्निध, निर्वाण गये वंदौं सुखकार॥
उठो भव्य०॥१४॥

फलहोड़ीवर ग्राम के पश्चिम दिश में द्रोणगिरि परसे।
गुरुदत्तादि मुनींद्र परम निर्वाण गये वंदौं रुचि से॥
उठो भव्य०॥१५॥

नागकुमार बालि महाबालि-आदिक मुनि अष्टापद से।
कर्मनाश शिवनारि वरी, उनको वंदौं नित भक्ति से॥
उठो भव्य०॥१६॥

अचलापुर ईसान दिशा में, मेढ़ागिरी शिखर ऊपर।
साढ़े तीनकोटि मुनि शिवपुर, पहुँचे वंदौं भवभयहर॥
उठो भव्य०॥१७॥

वंशस्थल वन के पश्चिम दिश कुंथलगिरि में श्री मुनीराज।
कुलभूषण अरु देशभूषण, शिव गये नमो उनके पादाब्ज॥
उठो भव्य०॥१८॥

जसरथ नृपसुत अरु कलिंग देश में यतिवर पंचशतक।
कोटि शिला पर कोटि मुनीश्वर, मुक्ति गये हैं नमो सतत॥
उठो भव्य०॥१९॥

पार्श्व जिनेश्वर समवसरण में, वरदत्तादि पंच ऋषिराज।
मुक्ति हुए रेसिंदी गिरि से, उन्हें नमो भव जलधि जहाज॥
उठो भव्य॥२०॥

जंबू वन से मुक्त हुए, अंतिम जंबूस्वामी उनको।
और अन्य मुनि जहाँ-जहाँ से, मुक्त हुए वंदौं सबको॥
उठो भव्य०॥२१॥

जिनवर गणधर मुनिगण की, निर्वाण भूमियां सदा नमो ।
पंचकल्याणक भूमि तथा, अतिशययुत क्षेत्र सभी प्रणमों ॥
उठो भव्य०॥२२॥

शालिपिष्ट भी शर्करयुत, माधुर्य-स्वादकारी जैसे ।
पुण्यपुरुष के पदरज से ही, धरा पवित्र हुई वैसे ॥
उठो भव्य०॥२३॥

त्रिभुवन के मस्तकपर सिद्ध शिलापर सिद्ध अनंतानंत ।
नमो नमो त्रिभुवन के सभी तीर्थ को जिससे हो भवअंत ॥
उठो भव्य०॥२४॥

सिद्धक्षेत्र वंदन से नंतानंत, जन्म कृत पाप हरो ।
"सम्यग्ज्ञानमती" श्रद्धा से, शीघ्र सिद्ध सुख प्राप्त करो ॥
उठो भव्य०॥२५॥

卐——卐

सुप्रभाताष्टकं-स्तोत्रं

रचयित्री—आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी

देवेन्द्रवंद्यचरणांबुरुहं जिनेन्द्रं ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भज तं सहसा प्रभाते ॥
भंक्त्वा प्रमादमचिरं त्यज मोहनिद्रां ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातम् ॥१॥

सुरपति वंदित चरणसरोरुह कर्म प्रभुजित् जिनवर को ।
उठो भव्य ! प्रातः मंगलमय बेला में तुम उन्हें भजो ॥
मोहनींद को दूर भगावो उठो ! उठो ! झट तजो प्रमाद ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ॥

आगत्य चैत्यसदने जिनवक्त्रपद्मं ।
संवीक्ष्य भक्तिभरतः गतरागरोगं ।।
प्रेम्णा नतिं कुरु जिनेश्वरपादपद्मे ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातम् ।।२।।

श्री जिनचैत्यालय में आकर भक्तिभाव से जिनवर की ।
वीतराग के आस्य कमल का दर्शन करो स्थिर चित ही ।।
मुद से प्रभु के चरण कमल में नमस्कार तुम करो सतत ।
उठो भव्य अब चर्तुदिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

अर्हत्सुसिद्धगुरुसूरिसुपाठकांश्च ।
साधून् मुदा प्रणम सर्व मुमुक्षुवर्गान् ।।
जैनेन्द्रबिम्बमवलोक्य विमुञ्च रागं ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ।।३।।

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय-साधु पंचपरमेष्ठी को ।
मुक्ति वधू प्रिय, मुमुक्षु मुनिगण रुचि से वंदो इन सबको ।।
श्री जिन वीतराग प्रतिमा का दर्शन कर झट तजो कुराग ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

घात्यंतकांतशुचिकेवलबोधभास्वान् ।
सज्ज्ञानदीधितिविनष्टतमःसमूहः ।।
तं श्री जिनं किल भज त्यज मोहनिद्रां ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ।।४।।

घातिकर्म संहारक निर्मल केवलज्ञान विभाकर हैं।
ज्ञानज्योति मय खर किरणों से तमसमूह के ध्वसंक हैं ।।
उन जिनवर का आश्रय लेवो करो मोह निद्रा का त्याग ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

तारागणा अपि विलोक्य विधोः सपक्षं ।
खे निष्प्रभं विमतयोऽपि च यांति नाशं ।।
स्याद्वादभास्वदुदये त्यज मोहनिद्रां ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ।।५।।

तारागण भी निजस्वामी शशि के विद्रोही रवि को लख ।
निष्प्रभ हुए गगन मे तद्वत् कुवादि गण भी हुए प्रहत ।।
ममतामय निद्रा को छोड़ो स्याद्वाद रवि हुआ उदित ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

त्रैलोक्यभास्कर ! महाकुमतांधकारं ।
निर्दोषवाङ्मयकरैश्च निहन्सि वेगात् ।।
एकांतवादिमनुजाः झटिति प्रणष्टाः ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ।।६।।

त्रिभुवन भास्कर ! महा कुमतमय अंधकार छाया जग में ।
दिव्यध्वनि मय खर किरणों से उसे भगाया प्रभु तुमने ।।
मिथ्यैकांत वादि गण झटिति तुमको लख हो गये विनाश ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

अस्मिन्ननादिभवसंकटजन्मसिन्धौ ।
मज्जंत्यनंतभविनः किल दृष्टिमोहात् ।।
पश्यंति मार्गमचिरात् त्वदपूर्वसूर्यात् ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ।।७।।

इस अनादि भव संकटमय संसार जलधि में हे स्वामिन् ।
डूब रहे हैं अनंत प्राणी दर्शन मोह उदय से नित ।।
प्रभु तुम अद्वितीय भास्कर हो तुमसे झट देखें मारग ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

श्रीमज्जिनेन्द्र ! हर मे त्वरमार्तरौद्रं ।
'ज्ञाने मतिं' वितनु शांतिमपास्तदुःखां ।।
संघाय, मे च जगते, कुरु मंगलं च ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ।।८।।

श्रीमन् ! भगवन् शीघ्र हमारे आर्तरौद्र दुर्ध्यान हरो ।
तत्त्व 'ज्ञानमती' करो सदा दुःख रहित शांति को पूर्ण करो ।।
संघ के, जग के लिये, हमारे लिये, करो मंगल सतत ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ।।

जिनस्य भवने घंटा—नादेन प्रतिवादिनः ।
तमोनिभाः प्रणष्टा हि ते जिनाः संतु नः श्रियै ।।९।।

अर्हत्प्रभु के चैत्यसदन में घंटाध्वनि हो रही महान् ।
मिथ्यादृष्टिजन उसको सुन नष्ट हो रहे तिमिर समान ।।
देवदेव का सुखद सुमंगल प्रभात शुभ मंगलमय हो ।
वे जिनदेव अमंगलहारी हमें मुक्ति लक्ष्मी प्रद हो ।।

卐—卐

देवदर्शन स्तोत्र

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ।।१।।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ।।२।।

वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मराग-सम-प्रभं ।
जन्म-जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ।।३।।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं ।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम् ॥४॥

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम् ।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः ॥५॥

जीवादि तत्त्वं प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय ।
प्रशांत-रूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥६॥

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥८॥

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥९॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥

जिनधर्म-विनिर्मुक्तो, मा भवंचक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥११॥

जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्म-कोटिमुपार्जितम् ।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात् ॥१२॥

अद्याभवत्सफलता नयन-द्वयस्य,
देव त्वदीय-चरणां-बुज-वीक्षणेन ।
अद्य त्रिलोक-तिलकप्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम् ॥१३॥

इति ।

卐——卐

दर्शन पाठ

(पं० दौलतरामजी कृत)

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रस लीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन ॥१॥

जय वीतराग विज्ञान पूर,
जय मोह तिमिर को हरन सूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार,
दृग सुख वीरज मण्डित अपार ॥२॥

जय परम शान्ति मुद्रा समेत,
भवि जनको निज अनुभूति हेत।
भवि भागन वश जोगे वशाय,
तुम ध्वनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय ॥३॥

तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक,
प्रगटै विघटै आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त,
सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥४॥

अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप,
परमात्म परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन,
स्वाभाविक परणतिमय अक्षीण ॥५॥

अष्टादश दोष विमुक्त धीर,
स्व चतुष्टय मय राजत गम्भीर।
मुनि गणधरादि सेवत महंत,
नव केवल लब्धि रमा धरन्त ॥६॥

तुम शासन सेय अमेय जीव,
शिव गये जाहिं जैहैं सदीव।
भवसागर में दुख क्षार वारि,
तारण को और न आप टारि ॥७॥

यह लख निज दुख गद हरण काज,
तुम ही निमित्त कारण इलाज।
जाने ताते मैं शरण आय,
उचरो निज दुख जो चिर लहाय ॥८॥

मैं भ्रम्यो अपनपो बिसरि आप,
अपनाये विधि फल पुण्य पाप।
निज को पर का कर्ता पिछान,
पर में अनिष्टता इष्ट ठान ॥९॥

आकुलित भयो अज्ञान धारि,
ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि।
तन परणति में आपो चितार,
कबहूँ न अनुभवो स्वपद सार ॥१०॥

तुमको जाने बिन जो कलेश,
पायो सो तुम जानत जिनेश।

पशुनारक गति सुर नर मझार,
भव धर धर मरो अनंत बार ॥११॥
अब काल लब्धि बल ते दयाल,
तुम दर्शन पाय भयो खुशाल।
मन शांति भयो मिट सकलद्वंद,
चाखो स्वात्म रस दुख-निकंद ॥१२॥
तातें ऐसी अब करो नाथ,
बिछुड़े न कभी तुम चरण साथ।
तुम गुणगण को नहिं छेव देव,
जगतारण को तुम विरद एव ॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय,
इनमें मेरी परणति न जाय।
मै रहूँ आप में आप लीन,
सो करो होउँ जो निजाधीन ॥१४॥
मेरे न चाह कुछ और ईश,
रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश।
मुझ कारज के कारण सु आप,
शिव करो हरो मम मोह ताप ॥१५॥
शशि शांति करण तप हरण हेत !
स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय,
त्यों तुम अनुभव ते भव नसाय ॥१६॥

त्रिभुवन तिहुँ काल मझार कोय,
नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज,
दुख जलधि उतारन तुम जहाज ॥१७॥

दोहा

तुम गुणगण मणि गणपति, गणत न पावहिं पार।
"दौल" स्वल्पमति किम कहें, नमो त्रियोग सम्हार ॥

卐——卐

स्तुति

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो सरन जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी ॥१॥

तुम ना पिछान्या आन मान्या, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जाण्यो, भ्रम गिण्यो हितकार जी ॥२॥

भव विकट बन में करम बैरी, ज्ञानधन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो ॥३॥

धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो ॥४॥

छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छबि को हरैं ॥५॥

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो ।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो ॥६॥

मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुव चरण जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरण जी ॥७॥

जाचूं नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी ।
'बुध' जाचहूँ तुव भक्ति भव भव, दीजिये शिवनाथ जी ॥८॥

卐——卐

पं० भूधरदासकृत स्तुति

अहो ! जगतगुरु देव, सुनियो अरज हमारी ।
तुम हो दीनदयालु, मैं दुखिया संसारी ॥१॥

इस भव बनके माँहि, काल अनादि गमायो ।
भ्रमत चहूँगति माँहि, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥२॥

कर्म महारिपु जोर, एक न काम करें जी ।
मन मान्या दुख देहिं काहूसों नाहिं डरें जी ॥३॥

कबहूं इतर निगोद, कबहूं नर्क दिखावें ।
सुर-नर-पशुगति माँहि, बहुविधि नाच नचावें ॥४॥

प्रभु ! इनके परसंग, भव भव माँहि बुरे जी ।
जे दुख देखे देव ! तुमसों नाहिं दुरे जी ॥५॥

एक जनम की बात, कहि न सकों सुनि स्वामी ।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरयामी ॥६॥

मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ॥७॥

ज्ञान महानिधि लूटि रंक निबल करि डारयो।
इन ही तुम मुझ माँहि, हे जिन ! अन्तर पारयो ॥८॥

पाप पुण्य मिल दोइ, पायनि बेड़ी डारी।
तन कारागृह माँहि मोहि दिये दुख भारी ॥९॥

इनको नेक विगार, मैं कुछ नाहिं कियो जी।
बिन कारन जगवंद्य ! बहुविधि बैर लियो जी ॥१०॥

अब आयो तुम पास सुनि कर सुजस तिहारो।
नीति निपुन महाराज, कीजे न्याय हमारो ॥११॥

दुष्टन देहु निकार, साधुनको रख लीजे।
बिनवै भूधरदास हे प्रभु ! ढील न कीजे ॥१२॥

卐——卐

मंगलस्तुति

रचयित्री—पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी

जिनने तीन लोक त्रैकालिक सकल वस्तु को देख लिया।
लोकालोक प्रकाशी ज्ञानी युगपत् सबको जान लिया ॥
रागद्वेष जर मरण भयावह नहिं जिनका संस्पर्श करें।
अक्षय सुख पथ के वे नेता जग में मंगल सदा करें ॥१॥

चन्द्र किरण चन्दन गंगाजल से भी शीतल जो वाणी।
जन्म मरण भय रोग निवारण करने में है कुशलानी ॥

सप्तभंगयुत स्याद्वादमय गंगा जगत् पवित्र करे।
सबकी पाप धूलि को धोकर जग में मंगल नित्य करे ॥२॥

विषय वासना रहित निरम्बर सकल परिग्रह त्याग दिया।
सब जीवों को अभयदान दे निर्भय पद को प्राप्त किया॥
भव समुद्र में पतितजनो को सच्चे अवलम्बन दाता।
वे गुरुवर मम हृदय विराजो सब जग को मंगल दाता ॥३॥

अनन्त भव के अगणित दुःख से जो जन का उद्धार करे।
इन्द्रिय सुख देकर शिव सुख में ले जाकर जो शीघ्र धरे॥
धर्म वही है तीन रत्नमय त्रिभुवन की सम्पति देवे।
उसके आश्रय से सब जनको भव-भव में मंगल होवे ॥४॥

श्री गुरु का उपदेश ग्रहण कर नित्य हृदय में धारें हम।
क्रोध मान मायादिक तजकर विद्या का फल पावें हम॥
सबसे मैत्री दया क्षमा हो सबसे वत्सल भाव रहे।
"सम्यग्ज्ञानमती" प्रगटित हो सकल अमङ्गल दूर रहे ॥६॥

卐——卐

संकट मोचन विनती

हे दीनबन्धु श्रीपति करुणानिधानजी।
यह मेरी विथा क्यों न हरो बार क्या लगी ॥टेक॥

मालिक हो दो जहानके जिनराज आपही।
एबो हुनर हमारा कुछ तुमसे छिपा नहीं॥
बेजान में गुनाह मुझसे बन गया सही।
कंकरीके चोर को कटार मारिये नहीं ॥हे०॥१॥

दुखदर्द दिलका आपसे जिसने कहा सही ।
मुश्किल कहर बहरसे लिया है भुजा गही ॥
जस वेद औ पुरानमें प्रमान है यही ।
आनंदकन्द श्रीजिनन्द देव है तुही ॥हो०॥२॥

हाथीपे चढी जाती थी सुलोचना सती ।
गंगामें ग्राहने गही गजराजकी गती ॥
उस वक्तमें पुकार किया था तुम्हें सती ।
भय टारके उबार लिया हे कृपापती ॥हो०॥३॥

पावक प्रचंड कुंडमें उमंड जब रहा ।
सीतासे शपथ लेनेको तब रामने कहा ॥
तुम ध्यानधार जानकी पग धारती तहां ।
तत्काल ही सर स्वच्छ हुआ कमल लहलहा ॥हो०॥४॥

जब चीर द्रोपदीका दुःशासन ने था गहा ।
सबही सभाके लोग थे कहते हहा हहा ॥
उस वक्त भीर पीरमें तुमने करी सहा ।
परदा ढका सतीका सुजस जगतमें रहा ॥हो०॥५॥

श्रीपालको सागर विषैं जब सेठ गिराया ।
उनकी रमासे रमनेको आया वो बेहया ॥
उस वक्तके संकटमें सती तुमको जो ध्याया ।
दुख-दंद-फंद मेटके आनंद बढ़ाया ॥हो०॥६॥

हरिषेणकी माताको जहां सौत सताया ।
रथ जैनका तेरा चले पीछे यों बताया ॥
उस वक्तके अनशनमें सती तुमको जो ध्याया ।
चक्रेश हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया ॥हो०॥७॥

सम्यक्त्व-शुद्ध शीलवती चंदना सती।
जिसके नगीच लगती थी जाहिर रती रती॥
बेड़ी में पड़ी थी तुम्हें जब ध्यावती हती।
तब वीर धीरने हरी दुखदंदकी गती॥हो०॥८॥

जब अंजना सतीको हुआ गर्भ उजारा।
तब सासने कलंक लगा घरसे निकारा॥
बनवर्ग के उपसर्गमें तब तुमको चितारा।
प्रभुभक्त व्यक्त जानिके भय देव निवारा॥हो०॥६॥

सोमासे कहा जो तु सती शील विशाला।
तो कुंभतें निकाल भला नाग जु काला॥
उस वक्त तुम्हें ध्यायके सती हाथ जब डाला।
तत्काल ही वह नाग हुआ फूलकी माला॥हो०॥१०॥

जब कुष्ट रोग था हुआ श्रीपालराजको।
मैंना सती की, आपकी पूजा, इलाजको॥
तत्काल ही सुंदर किया श्रीपाल राजको।
वह राजरोग भाग गया मुक्तराजको॥हो०॥११॥

जब सेठ सुदर्शनको मृषा दोष लगाया।
रानीके कहे भूपने सूली पै चढ़ाया॥
उस वक्त तुम्हें सेठने निज ध्यानमें ध्याया।
सूलीसे उतारस्को सिंहासनपै बिठाया॥हो०॥१२॥

जब सेठ सुधन्नाजी को वापीमें गिराया।
ऊपरसे दुष्ट फिर उसे वह मारने आया॥
उस वक्त तुम्हें सेठने दिल अपनेमें ध्याया।
तत्कालही जंजालसे तब उसको बचाया॥हो०॥१३॥

इक सेठके घरमें किया दारिद्र ने डेरा।
भोजनका ठिकाना भि न था सांझ सवेरा॥
उस वक्त तुम्हें सेठने जब ध्यान में घेरा।
घर उसकेमें तब कर दिया लक्ष्मीका बसेरा॥हो०॥१४॥

बलि वादमें मुनिराज सों जब पार न पाया।
तब रातको तलवार ले शठ मारने आया॥
मुनिराजने निजध्यानमें मन लीन लगाया।
उस वक्त हो प्रत्यक्ष तहाँ देव बचाया॥हो०॥१५॥

जब रामने हनुमंत को गढ़लंक पठाया।
सीताकी खबर लेनेको सह सैन्य सिधाया॥
मग बीच दो मुनिराजकी लख आगमें काया।
झट वारि मूसलधारसे उपसर्ग मिटाया॥हो०॥१६॥

जिननाथही को माथ नवाता था उदारा।
घेरेमें पड़ा था वह वज्र-कर्ण विचारा॥
उसवक्त तुम्हें प्रेमसे संकटमें चितारा।
रघुवीरने सब दुःख तहाँ तुरत निवारा॥हो०॥१७॥

रणपाल कुंवरके पड़ीथी पांवमें बेरी।
उस वक्त तुम्हें ध्यानमें ध्याया था सबेरी॥
तत्काल ही सुकुमालकी सब झड़ पड़ी बेरी।
तुम राजकुंवरकी सभी दुखदंद निबेरी॥हो०॥१८॥

जब सेठके नंदनको डसा नाग जु कारा।
उस वक्त तुम्हें पीरमें घर धीर पुकारा॥
तत्काल ही उस बाल का विष भूरि उतारा।
वह जाग उठा सोके मानो सेज सकारा॥हो०॥१९॥

मुनि मानतुंगको दई जब भूपने पीरा ।
तालेमें किया बंद भरी लोहजंजीरा ॥
मुनिईश ने आदीशकी थुति की है गंभीरा ।
चक्रेश्वरी तब आनके झट दूर की पीरा ॥हो०॥२०॥

शिवकोटिने हट था किया सामंतभद्रसों ।
शिव पिंडको वंदन करो शंको अभद्रसों ॥
उस वक्त स्वयंभू रचा गुरु भावभद्रसों ।
जिनचंद्रकी प्रतिमा तहाँ प्रगटी सुभद्रसों ॥हो०॥२१॥

तोते ने तुम्हें आनके फल आम चढ़ाया ।
मेंढक ले चला फूल भरा भक्तिका भाया ॥
तुम दोनों को अभिराम स्वर्गधाम बसाया ।
हम आपसे दातारको लख आज ही पाया ॥हो०॥२२॥

कपि श्वान सिंह नेवला अज बैल बिचारे ।
तिर्यंच जिन्हें रंच न था बोध चितारे ॥
इत्यादिको सुर धाम दे शिवधाममें धारे ।
हम आपसे दातारको प्रभु आज निहारे ॥हो०॥२३॥

तुम ही अनंत जंतुका भय भीर निवारा ।
वेदोपुराण में गुरू गणधरने उचारा ॥
हम आपकी सरनागतीमें आके पुकारा ।
तुम हो प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष इच्छिताकारा ॥हो०॥२४॥

प्रभु भक्त व्यक्त भक्त जक्त मुक्तके दानी ।
आनंद कंद वृंदको हो मुक्त के दानी ॥
मोहि दीन जान दीनबंधु पातक भानी ।
संसार विषम खार तार अंतर जामी ॥हो०॥२५॥

करुणानिधान बालको अब क्यों न निहारो।
दानी अनंतदानके दाता हो सँभारो ॥
वृषचंदनंद 'वृंद' का उपसर्ग निवारो।
संसार विषम क्षारसे प्रभु पार उतारो ॥
हो दीन-बंधु श्रीपति करुणानिधानजी।
अब मेरी व्यथा क्यों न हरो बार क्या लगी ॥२६॥

卐— —卐

दुःखहरण विनती

(और की लय में तथा और और रागनियों में भी बनती है।)

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुखहरन तुमारा बाना है।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ॥टेक॥

त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुम सों कछु बात न छाना है।
मेरे उर आरत जो वरतं, निहचं सब सो तुम जाना है ॥
अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है।
हो राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुमसों हित ठाना है ॥१॥

सब ग्रंथनि में निरग्रंथनिने, निरधार यही गणधार कही।
जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक ज्ञानमही ॥
यह बात हमारे कान परी, तब आन तुमारी सरन गही।
क्यों मेरी बार बिलंब करो, जिन नाथ कहो वह बात सही ॥२॥

काहूको भोग मनोग करो, काहूको स्वर्ग-विमाना है।
काहूको नाग नरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है॥
अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है।
इन्साफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भरो भगवाना है॥३॥

खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है।
तुम ही समरत्थ न न्याय करो, तब बंदेका क्या चारा है॥
खल घालक पालक बालकका नृपनीति यही जगसारा है।
तुम नीतिनिपुण त्रैलोकपती, तुमही लगि दौर हमारा है॥४॥

जबसे तुमसे पहिचान भई, तबसे तुमहीको माना है।
तुमरे ही शासनका स्वामी, हमको शरना सरधाना है॥
जिनको तुमरी शरनागत है, तिनसों जमराज डराना है।
यह सुजस तुम्हारे साचेका, सब गावत वेद पुराना है॥५॥
जिसने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है।
अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हे मनमाना है॥
पावकसों शीतल नीर किया, औ चीर बढ़ा असमाना है।
भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुबेर समाना है॥६॥

चिंतामणि पारस कल्पतरू, सुखदायक ये सरधाना है।
तव दासनके सब दास यही, हमरे मनमे ठहराना है॥
तुम भक्तनको सुरइंदपदी, फिर चक्रपतीपद पाना है।
क्या बात कहों विस्तार बड़ी, वे पावें मुक्ति ठिकाना है॥७॥
गति चार चुरासी लाखविषें, चिन्मूरत मेरा भटका है।
हो दीनबंधु करुणानिधान, अबलों न मिटा वह खटका है॥
जब जोग मिला शिवसाधनका, तब विघन कर्मने हटका है।
तुम विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका है॥८॥

गज-ग्राह-ग्रसित उद्धार किया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है।
ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैनाका संकट टारा है ॥
ज्यों सूलीतें सिंहासन औ, बेड़ीको काट बिडारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो, प्रभु मोकूं आस तुम्हारा है ॥६॥

ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, औ सांप सुमन कर डारा है।
ज्यों खड्ग कुसुमका माल किया, बालक का जहर उतारा है ॥
ज्यों सेठ विपत चकचूरि पूर, घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु, मोकूं आस तुम्हारा है ॥१०॥

यद्यपि तुमको रागादि नहीं, यह सत्य सर्वथा जाना है।
चिनमूरति आप अनंतगुनी, नित शुद्धदशा शिवथाना है ॥
तद्यपि भक्तनकी भीर हरो, सुख देत तिन्हें जु सुहाना है।
यह शक्ति अचित तुम्हारी का, क्या पावै पार सयाना है ॥११॥

दुखखंडन श्रीसुखमंडनका, तुमरा प्रन परम प्रमाना है।
वरदान दया जस कीरतका, तिहुंलोकधुजा फहराना है ॥
कमलाधरजी! कमलाकरजी! करिये कमला अमलाना है।
अब मेरि विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना है ॥१२॥

हो दीनानाथ अनाथहितू, जन दीन अनाथ पुकारी है।
उदयागत कर्मविपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है ॥
ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है।
त्यों 'वृंदावन' यह अर्ज करै, प्रभु आज हमारी बारी है ॥१३॥

卐——卐

त्रैलोक्य वंदना

आर्यिका ज्ञानमती—

नरेंद्र छन्द (परमपरंज्योति)

जय जय तीर्थंकर त्रिभुवन के चूड़ामणि जिनस्वामी ।
जय जय जिनवर केवलज्ञानी त्रिभुवन अंतर्यामी ।।
जय जय चिंतामणि जिनप्रतिमा मनचिंतित फल देतीं ।
जय जय जिनमंदिर शाश्वत उन भक्ती शिव फल देती ।।१।।

जय जय भवनवासि के जिनगृह अधोलोक में शोभें ।
जय जय सात करोड़ बहत्तर लाख भविक मन लोभें ।।
जय जय असुर कुमार देव के चौंसठ लाख जिनालय ।
जय जय नागकुमारों के चौरासी लाख जिनालय ।।२।।

जय जय जय सुपर्णदेव के जिनगृह लाख बहत्तर ।
जय जय द्वीप कुमार सुरों के जिनगृह लाख छियत्तर ।।
जय जय उदधिकुमार इंद्र के लाख छियत्तर जिनगृह ।
जय जय जय स्तनित देव के लाख छियत्तर जिनगृह ।।३।।

जय जय विद्युत्कुमारेंद्र के जिनगृह लाख छियत्तर ।
जय जय दिक्कुमार इंद्रों के जिनगृह लाख छियत्तर ।।
जय जय अग्निकुमार देव के छयत्तर लाख जिनालय ।
जय जय वायु कुमार इंद्र के छयानवे लाख जिनालय ।।४।।

जय जय मध्यलोक के जिनगृह चार शतक अट्ठावन ।
जय जय अकृत्रिम मणिमय जिनमंदिर जनमन भावन ।।
जय जय पांचमेरु के अस्सी जिनमंदिर सुखकारी ।
जय जंबूशाल्मलि तरु आदिक दश जिनगृह दुख हारी ।।५।।

जय जय कुलपर्वत के जिनगृह तीस अकृत्रिम शोभें ।
जय जय गजदंतों के जिनगृह बीस भव्य मन लोभें ।।
जय जय जय वक्षार गिरी के अस्सी जिनगृह सुन्दर ।
जय जय जय विजयार्धं अचल के जिनगृह इक सौ सत्तर ।।६।।

जय जय इष्वाकार अचल के चार जिनालय शाश्वत ।
जय जय मनुजोत्तर पर्वत के चार जिनालय भास्वत ।।
जय जय नंदीश्वर के बावन जिनमंदिर अभिरामा ।
जय जय कुंडलगिरि रूचक गिरी के चार-चार जिनधामा ।।७।।

जय जय व्यंतर के जिनमंदिर संख्यातीत महाना ।
भवन भवनपुर आवासों में जिनगृह सौख्य निधाना ।।
भूतजाति व्यंतर के नीचे चौदह सहस्र जिनालय ।
राक्षस व्यंतर के तल में हैं सोलह सहस्र जिनालय ।।८।।

शेष व्यंतरों के न भवन हैं, भवनपुरावासा[1] है ।
सब व्यंतर के मध्यलोक में त्रयविध आवासा है ।।
अथवा किन्नर आदि सात विध व्यंतर अधोलोक में ।
असंख्यात जिनभवन इन्होंके रत्नप्रभा खरभू में ।।९।।

पंकभाग में राक्षसेंद्र के लाख असंख्य नगर हैं[2] ।
सबमें जिनमंदिर अकृत्रिम वंदे नित सुरगण हैं ।।
इन व्यंतर के मध्यलोक मे द्वीप अचलसागर में ।
देश नगर घर गली जलाशय वन उपवन मंदिर में ।।१०।।

जल थल नभ मे ये सब व्यंतर करें निवास निरंतर ।
जय जय जय व्यंतर के जिनगृह असंख्यात अतिसुंदर ।।

---

१ तिलोयपण्णत्ति, पृ० ६४४ । २ तत्वार्थराजवार्तिक, अ० ४ सूत्र ११ ।

जय जय सूरज चंद्र नखत ग्रह तारा के जिनमंदिर ।
जय जय नभ मे विमान चमक उनके मध्य सुमंदिर ।।११।।

मध्यलोक के अंतिम तक ये ज्योतिर्वासि विमाना ।
जय जय इनके असंख्यात जिनधाम सर्वसुख दाना ।।
जय जय ऊर्ध्व लोक के जिनगृह अकृत्रिम अभिरामा ।
जय चौरासी लाख सत्यानवे हजार .तेइस धामा ।।१२।।

जय सौधर्म स्वर्ग के बत्तीस लाख जिनालय सुदर ।
जय ईशान स्वर्ग के लाख अठाइस जिनगृह मनहर ।।
जय जय सानत्कुमार दिव मे बारह लक्ष जिनालय ।
जय जय जय माहेद्र स्वर्ग के आठ लक्ष जिनआलय ।।१३।।

जय जय ब्रह्म कल्प मे चार लाख मणिमय जिनआलय ।
जय जय लातव युगल स्वर्ग मे लाख पचास जिनालय ।।
जय जय महाशुक्रयुग दिव मे चालिस सहस जिनालय ।
जय जय सहस्रार युग दिव मे छह हजार जिन आलय ।।१४।।

जय जय आनत प्राणत आरण अच्युत दिव के जिनगृह ।
जय जय जय ये सात शतक हैं मणिमय शाश्वत जिनगृह ।।
जय जय तीन अधोग्रैवेयक इक सौ ग्यारह जिनगृह ।
जय मध्यम त्रय ग्रैवेयक मे इकसौ सात सुजिनगृह ।।१५।।

जय उपरिम त्रय ग्रैवेयक मे इक्यानवे जिनालय ।
जय जय जय जय नव अनुदिश के जिनमदिर सुख आलय ।।
जय जय विजय आदि सर्वारथ सिद्धी के जिनआलय ।
जय जय ये सर्वार्थसिद्धिकर पच अनुत्तर आलय ।।१६।।

जय जय त्रिभुवन के जिनमदिर आठ कोटि गुणराशी ।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे चार शतक इक्यासी ।।

जय जय जय जिनगृह में प्रतिमा नव सौ पच्चिस कोटी ।
त्रेपन लाख, हजार सताइस नवसौ अड़तालिस ही ॥१७॥

जय जय अकृत्रिम जिनमंदिर अकृत्रिम जिन प्रतिमा ।
मणिमय रत्नमयी पद्मासन नमूं नमूं जिनमहिमा ॥
जय जय जय कृत्रिम जिनमंदिर जय कृत्रिम जिनप्रतिमा ।
इक सौ सत्तर कर्मभूमि में त्रयकालिक जिन महिमा ॥१८॥

जय पैंतालिस लाख सुयोजन सिद्धशिला सुखकारी ।
सिद्ध अनंतानंत विराजें, नमूं नमूं भवहारी ॥
नमूं नमूं मैं नित्य नमूं मैं, हाथ जोड़ शिर नाऊं ।
नमूं अनंतों बार नमूं मै, बार बार शिर नाऊं ॥१९॥

हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो अब भवसमुद्र से तारो ।
हे प्रभु ! स्वात्मसंपदा देकर, स्वात्मसौख्य विस्तारो ॥
हे प्रभु ! परमानंद सुखामृत देकर तृप्ती कीजे ।
"ज्ञानमती" ज्योति प्रगटित हो, सब अज्ञान हरीजे ॥२०॥

दोहा

णमोकार का ध्यान कर, आदिनाथ को वंद ।
जिनगृह जिन प्रतिमा नमूं, नमूँ सिद्ध सुखकंद ॥२१॥

卐——卐

आलोचना पाठ

दोहा

वंदों पाँचो परम-गुरु, चौबीसों जिनराज।
करूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि-करन के काज ॥१॥

सखी छन्द

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृति काजा, तुम सरन लही जिनराजा ॥२॥

इक बे ते चउ इंद्री वा, मनरहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी ॥३॥

समरंभ समारंभ आरंभ, मन वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकैं, क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं ॥४॥

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परिछेदन तैं।
तिनकी कहुँ कोलौं कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी ॥५॥

विपरीत एकांत विनयके, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहीने ॥६॥

कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदया करि भीनी।
या विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो ॥७॥

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीनो, पन पाप जु या विधि कीनो ॥८॥

सपरस रसना घ्रानन को, दृग कान विषय सेवनको।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय अन्याय न जाने ॥९॥

फल पंच उदंबर खाये, मधु मांस मद्य चित चाये।
नहिं अष्ट मूलगुण धारे, सेये कुविसन दुखकारे ॥१०॥

दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निश-दिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो ॥११॥

अनंतानु बंधी सो जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडष मुनिये ॥१२॥

परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संयोग।
पनबीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम ॥१३॥

निद्रावश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विध विष-फल खायो ॥१४॥

आहार विहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाई ॥१५॥

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है ॥१६॥

मरजादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन भिन अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान विषें सब पइये ॥१७॥

हा हा ! मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन-राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी ॥१८॥

पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागां चिनाई।
पुनि बिन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखातैं पवन बिलोल्यो ॥१९॥

हा हा ! मैं अदयाचारी, बहु हरितकाय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनंदा ॥२०॥

हा हा ! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
तामध्य जीव जे आये, ते हू परलोक सिधाये ॥२१॥

बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जागाँ बुहारी, चींटी आदिक जीव बिदारी ॥२२॥

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई ॥२३॥

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये ॥२४॥

अन्नादिक शोध कराई, तातें जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारे धूप डराया ॥२५॥

पुनि द्रव्य कमावन काजे, बहु आरम्भ हिंसा साजे।
किये तिसनावश अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी ॥२६॥

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी तैं कहिय न जाई ॥२७॥

ताको जु उदय अब आयो, नाना विध मोहि सतायो।
फल भुजंत जिय दुख पावै, वचतैं कैसे करि गावै ॥२८॥

तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है ॥२९॥

इक गाँवपती जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी ॥३०॥

द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीता-प्रति कमल रचायो।
अंजनसे किये अकामी, दुख मेटो अंतरजामी ॥३१॥

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद सम्हारो।
सब दोष-रहित करि स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी ॥३२॥

इंद्रादिक पद नहिं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे ॥३३॥

दोहा

दोष-रहित जिनदेवजी, निज-पद दीज्यो मोय ।
सब जीवन के सुख बढ़ें, आनंद मंगल होय ॥
अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनन्द ।
येही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द ॥

卐——卐

भक्तामरस्तोत्रम्

(श्री मानतुंगाचार्य)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक्-प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्धया विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान्गुण-समुद्र शशाङ्क-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोःपरिपालनार्थम् ॥५॥

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चारु-चाम्र-कलिका-निकरैक-हेतु ॥६॥

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु
सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥८॥

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं
त्वत्सङ्कथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥९॥

नात्यद्‌भुतं भुवन-भूषण भूत-नाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्‌वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न ही रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश कल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् ।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूम-वर्तिरपवर्जित-तैल-पूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्त कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु ।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मि
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं
ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय शङ्करत्वात् ।
धातासि धीर शिव-मार्ग-विधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रय-जात-गर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ।।२७।।

उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ।।२८।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता-वितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्र-रश्मेः ।।२९।।

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् ।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।३०।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैःस्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् ।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ३१।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-सङ्गम-भूति-दक्षः ।
सद्धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।३२।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपरिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा ।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते ।
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ति ।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-सख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः
सद्धर्म-तत्व-कथनैक-पटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्य-ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः-प्रयोज्यः ॥३५॥

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुञ्ज-कान्ती
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ता-फल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः ।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ।।३९।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघित्सुमिव संमुखमापतन्तं
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ।।४०।।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त-शंक-
स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ।।४१।।

वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ।।४२।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे ।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षा-
स्त्वत्पाद-पंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते ।।४३।।

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।।४४।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः ।
त्वत्पाद-पंकज-रजोमृत-दिग्ध-देहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपाः ॥४५॥

आपाद-कण्ठमुरु-शृंखल-वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जङ्घाः ।
त्वन्नाम-मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
सङ्ग्राम वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं
तं 'मानतुङ्ग'मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

卐——卐

तत्त्वार्थसूत्र

(आचार्य उमास्वामि-विरचित)

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं नव-पद-सहितं जीव-षट् काय-लेश्याः ।
पंचान्ये चास्तिकाया व्रत-समिति-गति-ज्ञानचारित्र-भेदाः ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवन-महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः ।
प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः ॥१॥

सिद्धे जयप्पसिद्धे चउविहाराहणाफलं पत्ते ।
वंदित्ता अरहंते वोच्छं आराहणा कमसो ॥२॥

उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं ।
दंसण-णाण-चरित्तं तवाणमाराहणा भणिया ॥३॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥४॥

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष-मार्गः ॥१॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥ नाम-स्थापना-द्रव्य-भाव-तस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाण-नयैरधिगमः ॥६॥ निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥ सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥ मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम् ॥९। तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्य-नर्थान्तरम् ॥१३॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥ अव-ग्रहेहावाय-धारणाः ॥१५॥ बहु-बहुविध-क्षिप्रानिःसृतानुक्त-ध्रुवाणां

सेतराणाम् ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यञ्जनास्यावग्रहः ॥१८॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥ श्रुतं मति-पूर्वं द्वयनेक-द्वादश-भेदम् ॥२०॥ भवप्रत्ययो-ऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥ क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥ ऋजु-विपुलमती मनः-पर्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥ विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः ॥२५॥ मति-श्रुत-योर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७॥ तद-नन्त-भागे मनः पर्ययस्य ॥२८॥ सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मति-श्रुता-वधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्त-वत् ॥३२॥ नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जु-सूत्र-शब्द-समभिरूढैवंभूतानयाः ॥३३॥

इति तत्वार्थाधिगमे-मोक्षशास्त्रे प्रथमोध्यायः ॥१॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ॥१॥ द्वि-नवाऽष्टादशैकविंशति-त्रिभेदा यथा-क्रमम् ॥२॥ सम्यक्त्व-चारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पञ्च-भेदा सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च ॥५॥ गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्-भेदाः ॥६॥ जीव-भव्याभव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणम् ॥८॥ स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ता-श्च ॥१०॥ समनस्कामनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्रस-स्था-वराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजो-वायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयास्त्रसाः ॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावे-

न्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि ॥१९॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ॥२०॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥ वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥ कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥ अनुश्रेणि गतिः ॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥ एक-समयाऽविग्रहा ॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ॥३०॥ संमूर्छन-गर्भोपपादा जन्म ॥३१॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥ जरायुजाण्डज-पोतानां गर्भः ॥३३॥ देव-नारकाणामुपपादः ॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥ औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ॥३८॥ अनन्त-गुणे परे ॥३९॥ अप्रतीघाते ॥४०॥ अनादिसम्बन्धे च ॥४१॥ सर्वस्य ॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥४३॥ निरुपभोगमन्त्यम् ॥४४॥ गर्भ-संमूर्च्छनजमाद्यम् ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥४७॥ तैजसमपि ॥४८॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति-चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥ नारक-संमूर्च्छनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥ औपपादिक-चरमोत्तमदेहाऽसंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पंचविंशति-पंचदश-दश-त्रि-पंचोनैक-नरक शतसहस्राणि पंचचैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारका नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरित-दुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरित-

दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेक-त्रिसप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जंबूद्वीप-लवणोदादयः शुभ-नामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरु-नाभिर्वृत्तो योजन-शतसहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरतहैम-वत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वा-परायता हिमवन्महाहिमवन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ॥११॥ हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ॥१२॥ मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ॥१३॥ पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केशरि-महापुण्डरीक-पुंडरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दश-योजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥ तद्-द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्यो-पमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः ॥१९॥ गङ्गा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नर-कान्ता-सुवर्ण-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥ शेषा-स्त्वपरगाः ॥२२॥ चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गंगा-सिंध्वादयो नद्यः ॥२३॥ भरतः षड्विंशति-पंच-योजन-शत-विस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥२४॥ तद्‌द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्ष-धर-वर्षा विदेहांताः ॥२५॥ उत्तरा दक्षिण-तुल्याः ॥२६॥ भरतैरावतयोर्वृद्धि-ह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥ एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुरवकाः ॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु-संख्येय-कालाः ॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य

नवति-शत-भागः ॥३२॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥ आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥ भरतैरावत-विदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥३९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ॥२॥ दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पा कल्पोपपन्न पर्यन्ताः ॥३॥ इन्द्र सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीक--प्रकीर्णकाभि-योग्य-किल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यंतर-ज्योतिष्काः ॥५॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥ काय-प्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥ शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः प्रवीचाराः ॥८॥ परेऽप्रवीचाराः ॥९॥ भवनवासिनोऽसुरनाग—विद्युत्सुपर्णाग्नि-वातस्तनितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः ॥१०॥ व्यन्तरा किन्नर-किंपुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च ॥१२॥ मेरु-प्रद-क्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः काल विभागः ॥१४॥ बहिर-वस्थिताः ॥१५॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः कल्पाती-ताश्च ॥१७॥ उपर्युपरि ॥१८॥ सौधर्मेशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ट-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युत-योर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त जयन्तापरा-जितेषु सर्वार्थ-सिद्धौ च ॥१९॥ स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषयतोऽधिकाः ॥२०॥ गतिशरीर-परिग्रहाभि-मानतो हीनाः ॥२१॥ पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः ॥२४॥ सारस्वतादित्य वह्न्यरुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च

॥२५॥ विजयादिषु द्वि-चरमः ॥२६॥ औपपादिक—मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥ स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीपशेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योप-मार्द्ध-हीन-मिताः ॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२९॥ सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु ॥३१॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपममधिकम् ॥३३॥ परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यन्तराणां च ॥३८॥ परा पल्योपममधिकम् ॥३९॥ ज्योतिष्काणां च ॥४०॥ तदष्ट-भागोऽपरा ॥४१॥ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अजीव-काया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः ॥१॥ द्रव्याणि ॥२॥ जीवाश्च ॥३॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥५॥ आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥ निष्क्रियाणि च ॥७॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥८॥ आकाशस्यानन्ताः ॥९॥ संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥ नाणोः ॥११॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥ धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥ एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ॥१४॥ असंख्येय-भागादिषु जीवानाम् ॥१५॥ प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥ गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ॥१७॥ आकाशस्यावगाहः ॥१८॥ शरीर-वाङ्-मनः-प्राणापाना पुद्गलानाम् ॥१९॥ सुख-दुख-जीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥ वर्तना-परिणाम-क्रिया-परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छाया-

तपोद्योतवन्तश्च ।।२४।। अणवः स्कन्धाश्च ।।२५।। भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते ।।२६।। भेदादणुः ।।२७।। भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ।।२८।। सद् द्रव्य-लक्षणम् ।।२९।। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत् ।।३०।। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।।३१।। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।।३२।। स्निग्ध-रुक्षत्वाद्बन्धः ।।३३।। न जघन्य-गुणानाम् ।।३४।। गुण-साम्ये सदृशानाम् ।।३५।। द्व्यधिकादि-गुणानां तु ।।३६।। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।।३७।। गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् ।।३८।। कालश्च ।।३९।। सोऽनन्तसमयः ।।४०।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।४१।। तद्भावः परिणामः ।।४२।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

काय-वाङ्-मनः कर्म-योगः ।।१।। स आस्रवः ।।२।। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ।।३।। सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्या-पथयोः ।।४।। इन्द्रिय-कषायाव्रत-क्रियाः पञ्च-चतुःपञ्च-पञ्च-विंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः ।।५।। तीव्र-मन्द-ज्ञाताज्ञात-भावाधि-करण-वीर्य-विशेषभ्यस्तद्विशेषः ।।६।। अधिकरणं जीवाजीवाः ।।७।। आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भयोग कृत-कारितानुमत-कषाय-विशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ।।८।। निर्वतना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतुर्द्वि-त्रिभेदाःपरम् ।।९।। तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोप-घाता ज्ञान-दर्शना-वरणयोः ।।१०।। दुःख-शोक-तापाक्रन्दन-वध-परिदेवनान्यात्म-परोभय-स्थानान्यसद्वेद्यस्य ।।११।। भूत-व्रत्यनु-कम्पादान-सरागसंयमादि-योगः क्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।।१२।। केवलि-श्रुत-संघ-धर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।।१३।। कषायोद-यात्तीव्र-परिणामश्चारित्रमोहस्य ।।१४।। बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ।।१५।। माया तैर्यग्योनस्य ।।१६।। अल्पारम्भ-परि-ग्रहत्वं मानुषस्य ।।१७।। स्वभाव-मार्दवं च ।।१८।। निःशील-

श्रितत्वं च सर्वेषाम् ।।१६।। सरागसंयम-संयमासंयमाकामनिर्जरा-बालतपांसि दैवस्य ।।२०।। सम्यक्त्वं च ।।२१।। योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।।२२।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।२३।। दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता--शील--व्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्ण--ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्य-करणमर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्ग-भावना प्रवचन वत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ।।२४।। परात्म-निन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचै गोत्रस्य ।।२५।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।२६।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।२७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।।१।। देश सर्वतोणु-महती ।।२।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च-पञ्च ।।३।। वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपण-समित्यालोकितपान-भोजनानि पञ्च ।।४।। क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्या-नान्यनुवीचि-भाषणं च पञ्च ।।५।। शून्यागार-विमोचितावास-परोपरोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धि-सद्धर्माविसंवादाः पञ्च ।।६।। स्त्री राग कथा श्रवण-तन्मनोहरांग निरीक्षण पूर्व-रतानु स्मरण-वृष्येष्ट-रस-स्वशरीर-संस्कार-त्यागाः पञ्च ।।७।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष वर्जनानि पञ्च ।।८।। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ।।९।। दुःखमेव वा ।।१०।। मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्यमानाविनयेषु ।।११।। जगत्काय-स्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम् ।।१२।। प्रमत्तयोगात्प्राण-व्यपरोपणं हिंसा ।।१३।। असदभिधानमनृतम् ।।१४।। अदत्तादानं स्तेयम् ।।१५।। मैथुनमब्रह्म ।।१६।। मूर्छा परिग्रहः ।।१७।। निःशल्यो व्रती ।।१८।। अगार्यनगारश्च ।।१९।। अणुव्रतोऽगारी ।।२०।। दिग्देशानर्थदण्ड-विरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोगपरिभोग-परिमाणातिथि-संविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च ।।२१।।

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥ शंका-कांक्षाविचिकित्सा-न्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥२३॥ व्रत-शीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥२४॥ बन्धवध-च्छेदातिभारारोपणान्न-पान-निरोधाः ॥२५॥ मिथ्योपदेश-रहो-भ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकारमन्त्रभेदाः ॥२६॥ स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥ परविवाहकरणेत्वरिका - परिगृहीतापरिगृहीता - गमनानङ्गक्रीड़ा-कामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥ क्षेत्रवास्तु-हिरण्यसुवर्ण-धन-धान्य-दासीदास-कुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२९॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यंतराधानानि ॥३०॥ आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः ॥३१॥ कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्यासमीक्ष्या-धिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥३२॥ योग-दु-प्रणिधानाना-दर-स्मृत्यनुपस्थानानि ॥३३॥ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्य नुपस्थानानि ॥३४॥ सचित्त-संबंध-सम्मिश्राभिषव-दुःपक्वा हाराः ॥३५॥ सचित्त-निक्षेपापिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध-निदानानि ॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्याति-सर्गो दानम् ॥३८॥ विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥ प्रकृति-स्थित्यनुभाग-प्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायाः ॥४॥ पञ्च-नव-द्वयष्टा-विंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद् द्वि-पञ्च भेदा यथाक्रमम् ॥५॥ मति-श्रुतावधि-मनः पर्यय केवलानाम् ॥६॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां

निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचलाप्रचलाप्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ दर्शनचारित्र-मोहनीयाकषाय-कषायवेदनीयाख्यास्त्रि-द्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्यरत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्नपुंसक-वेदा अनन्तानुबन्ध्य-प्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोधमान-माया-लोभाः ॥९॥ नारकतैर्यग्योन-मानुष-दैवानि ॥१०॥ गति-जाति-शरीराङ्गोपाङ्ग-निर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन - स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास - विहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय यशः कीर्ति-सेत-राणि तीर्थकरत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ॥१३॥ आदितस्तिसृणा-मंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नाम-गोत्रयोः ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥ अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥ नाम-गोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१॥ स यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा॥२३॥ नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योग-विशेषात्-सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह-स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः ॥२४॥ सद्वेद्यशुभायुर्नाम-गोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥२६॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आस्रव-निरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्ति-समिति-धर्मानु-प्रेक्षा-परीषहजय-चारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥ उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-सत्य - शौच-संयमतपस्त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव-

संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ धर्म-स्वाख्यातत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासा-शीतोष्णदंश-मशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या- शय्याक्रोश-वध-याच-नालाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल- सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानादर्श नानि ॥९॥ सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ बादरसाम्पराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कारपुरस्काराः ॥१५॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थापना - परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यातमिति चारित्रम् ॥१८॥ अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रस-परित्याग-विविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित-विनय वैयावृत्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम् ॥२०॥ नवचतुर्दश-पञ्च द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥२१॥ आलोचना-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद परिहारोपस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्यग्लानगण-कुल-संघ-साधु - मनोज्ञानाम् ॥२४॥ वाचना-पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय-धर्मोपदेशाः ॥२५॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥ उत्तम-संहननस्यै-काग्र-चिन्ता-निरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आर्त्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥ आर्तंमनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयो-गाय स्मृति-समन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च ॥३३॥ तदविरत-देश-विरत-प्रमत्तसंयतानाम् ॥३४॥ हिंसानृत-स्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देशविरतयोः ॥३५॥ आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्व-विदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्क-सूक्ष्म-

क्रियाप्रतिपाति-व्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥३९॥ त्र्येकयोग-काय-योगा योगानाम् ॥४०॥ एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥४२॥ वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥ वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन-योगसंक्रान्तिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशम - कोपशान्त - मोहक्षपक-क्षीणमोह-जिनाः क्रमशोऽसंख्येय-गुण-निर्जरा ॥४५॥ पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४६॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिङ्ग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः ॥४७॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥९॥

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥१॥ बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ॥३॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद् बन्धच्छे-दात्तथागतिपरिणामाच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रवद्-व्यपगतलेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्र-काल-गति-लिङ्ग-तीर्थ-चारित्र प्रत्येकबुद्धबोधित - ज्ञानावगाहनान्तर - संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

अक्षर-मात्र पद-स्वर-हीनं, व्यंजन-संधि-विवर्जित-रेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥१॥
दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुंगवैः ॥२॥
तत्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्ध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वन्दे गणीन्द्र - संजातमुमास्वामि - मुनीश्वरम् ॥३॥

इति श्रीमदुमास्वामिविरचितं तत्त्वार्थसूत्रं समाप्तम् ।

卐——卐

महावीराष्टक-स्तोत्रम्

[कविवर भागचन्द]

शिखरिणी छन्द

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्य व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः ।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥२॥

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भाजालजटिलं
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥३॥

यदर्च्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुखनिधिः ।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥४॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः ।

अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोद्भुत-गतिर्
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥६॥
अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजितः ।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥७॥
महामोहातंक-प्रशमन-पराकस्मिक-भिषक्
निरापेक्षो बन्धुर्विदित-महिमा मंगलकरः ।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥८॥

अनुष्टूप छन्द

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या 'भागेन्दु'ना कृतम् ।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिम् ॥९॥

卐—卐

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

दोहा

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय ।
कहूँ काण्ड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥१॥

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वंदौं भाव-भगति उर धार ॥२॥

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस, भावसहित बदौं निश-दीस ॥३॥

वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद ।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, बंदौं भावसहित कर जोड़ि ॥४॥

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ।
संबु-प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय ॥५॥

रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर ।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौं निरधार ॥६॥

पांडव तीन द्रविड-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान ।
श्रीशत्रुंजय-गिरि के सीस, भावसहित वंदौं निश-दीस ॥७॥

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये ।
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल ॥८॥

राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील ।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान ॥९॥

नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान ।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस ।।१०।।

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार ।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास ।।११।।

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट ।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोड़ि वंदौं भव पार ।।१२।।

बड़वानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग ।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सायर तर्ण ।।१३।।

सुवरण-भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मंझार ।
चेलना-नदी-तीरके पास, मुक्ति गये वंदौ नित तास ।।१४।।

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ ।।१५।।

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय ।
श्रीअष्टापद मुक्ति मंझार, ते वंदौं नित सुरत संभार ।।१६।।

अचलापुर की दिश ईसान, जहाँ मेंढगिरि नाम प्रधान ।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय ।।१७।।

वंसस्थल वनके ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय ।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम ।।१८।।

जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँचसौ लहे ।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान ।।१९।।

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज ।।२०।।

तीन लोकके तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय ॥२१॥

संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥२२॥

卐——卐

निर्वाणकाण्ड भाषा

पद्यानुवाद—आर्यिका ज्ञानमती

चाल—हे दीन बन्धु..........

वृषभेष गिरिकैलाश से निर्वाण पधारे।
चंपापुरी से वासुपूज्य मुक्ति सिधारे॥
नेमीश उर्जंयत से निर्वाण गये हैं।
पावापुरी से वीर परमधाम गये हैं॥१॥

इंद्रादिवंद्य बीस जिनेश्वर करम हने।
सम्मेद गिरि शिखर से शिवगये नमूँ उन्हें॥
इन चार बीस जिन की सदा वंदना करूं।
निर्वाण सौख्य प्राप्ति हेतु अर्चना करूं॥२॥

बलभद्र सात और आठकोटि बताए।
यादवनरेन्द्र आर्ष में हैं साधु कहाये॥

गजपंथगिरिशिखर से ये निर्वाण गये हैं।
इनको नमूं ये मुक्ति में निमित्त कहे हैं ।।३।।

वरदत्त औ वरांग सागरदत्त मुनिवरा।
ऋषि और साढ़े तीन कोटि भव्य सुखकरा ।।

ये तारवरनगर से मुक्तिधाम पधारे।
मैं नित्य नमूं मुझको भी संसार से तारें ।।४।।

श्री नेमिनाथ औ प्रद्युम्न शंभु कुमारा।
अनिरुद्धकुमर पा लिया भवदधिका किनारा ।।

मुनिराज बाहत्तर करोड़ सात सौ कहे।
ये उर्जयत गिरि से सभी मुक्ति को लहें ।।५।।

दो पुत्र रामचंद्र के औ लाडनृपादी।
ये पांचकोटि साधुवृंद निजरसास्वादी ।।

ये पावागिरीवर शिखर से मोक्ष गये हैं।
भविवृंद के निर्वाण में ये हेतु कहे हैं ।।६।।

जो पांडुपुत्र तीन और द्रविडनृपादी।
ये आठ कोटि साधु परम समरसास्वादी ।।

शत्रुंजयाद्रि शिखर से ये सिद्ध हुये हैं।
इनको नमूं ये सिद्धि में निमित्त हुये हैं ।।७।।

श्रीराम हनूमान औ सुग्रीव मुनिवरा।
जो गव गवाख्य नील महानील सुखकरा ।।

निन्यानवे करोड़ तुंगीगिरि से शिव गये।
उन सब की वंदना से सर्व पाप धुल गये ।।८।।

जो नंग औ अनंग दो कुमार हैं कहे।
वे साढ़े पांच कोटि मुनि सहित शिव गये ॥
सोनागिरी शिखर है सिद्धक्षेत्र इन्हीं का।
इनको नमूँ इन भक्ति भवसमुद्र में नौका ॥९॥

दशमुखनृपति के पुत्र आत्म तत्त्व के ध्याता।
जो साढ़े पांच कोटि मुनी सहित विख्याता ॥
रेवा नदी के तीर से निर्वाण पधारे।
मै नित्य नमूँ मुझको भवोदधिसे उबारें ॥१०॥

चक्रीश दो दश कामदेव साधुपद धरा।
मुनि साढ़े तीन कोटि मुक्तिराज्य को वरा ॥
रेवा नदी के तीर अपरभाग में सही।
मै सिद्धवरसुकूट को वंदूँ जो शिवमही ॥११॥

वड़वानि वरनगर में दक्षिणी सुभाग में।
है चूलगिरी शिखर जो सिद्धक्षेत्र नाम में ॥
श्री इन्द्रजीत कुंभकरण मोक्ष पधारे।
मैं नित्य नमूँ उनको सकल कर्म विडारे ॥१२॥

पावागिरि नगर में चेलनानदी तटे।
मुनिवर सुवर्णभद्र आदि चार शिव बसे ॥
निर्वाण भूमि कर्म का निर्वाण करेगी।
मैं नित्य नमूँ मुझको परम धाम करेगी ॥१३॥

फलहोड़ी श्रेष्ठ ग्राम में पश्चिम दिशा कही।
श्री द्रोणगिरि शिखर है परमपूत भू सही ॥

गुरुदत्त आदि मुनिवरेन्द्र मृत्यु के जयी ।
निर्वाण गये नित्य नमूं पाऊं शिव मही ॥१४॥

श्री बालि महाबालि नागकुमर आदि जो ।
अष्टापदाद्रि शिखर से निर्वाण प्राप्त जो ॥

उनको नमूँ वे कर्म अद्रि चूर्ण कर चुके ।
वे तो अनंत गुण समूह पूर्ण कर चुके ॥१५॥

अचलापुरी ईशान में मेढ़ागिरी कही ।
मुनिराज साढ़े तीन कोटि, उनकी शिव मही ॥

मुक्तागिरी-निर्वाण भूमि नित्य नमूँ मैं ।
निर्वाण प्राप्ति हेतु अखिल दोष वमूँ मैं ॥१६॥

वंशस्थली नगर के अपरभाग में कहा ।
कुंथलगिरी शिखर जगत में पूज्य हो रहा ॥

श्री कुलभुषण औ देशभूषण मुक्ति गये है ।
मैं नित्य नमूँ उनको वे कृतकृत्य हुए है ॥१७॥

जसरथनृपति के पुत्र और पांच सौ मुनी ।
निर्वाण गए है कलिंग देश से सुनी ॥

मुनिराज एक कोटि कोटिशिला से कहे ।
निर्वाण गए उनको नमूँ दुःख ना रहे ॥१८॥

श्री पार्श्व के समवसरण में जो प्रधान थे ।
वरदत्त आदि पांच ऋषी गुण निधान थे ॥

रेसिंदिगिरि शिखर से वे निर्वाण पधारे ।
मैं उनको नमूँ वे सभी संकट को निवारें ॥१६॥

जिस जिस पवित्र थान से जो जो महामुनी।
निर्वाण परम धाम गये हैं अतुलगुणी ॥
मैं उन सभी की नित्य भक्ति वंदना करूं।
त्रिकरण विशुद्ध कर नमूं शिवांगना वरूं ॥२०॥

मुनिराज शेष जो असंख्य विश्व में कहे।
जिस जिस पवित्र थान से निर्वाण को लहें ॥
उन साधुओं की, क्षेत्र की भी वंदना करूं।
संपूर्ण दुःख क्षय निमित्त प्रार्थना करूं ॥२१॥

श्री पार्श्वनागद्रह में कहे उनको मैं नमूं।
श्री मंगलापुरी में अभिनंदनं नमूं ॥
पट्टण सुआशारम्य में मुनिसुव्रतेश को।
है बार बार वंदना इन श्री जिनेश को ॥२२॥

पोदनपुरी में बाहुबली देव को नमूँ।
श्री हस्तिनापुरी में शांति, कुंथु, अर नमूं ॥
वाराणसी में श्री सुपार्श्व पार्श्व जिन हुये।
उनको करूं मैं वंदना वे सौख्यकर हुये ॥२३॥

मथुरा में श्री वीर को नाऊं सुभाल मैं।
अहिछत्र में श्री पार्श्व को वंदूं त्रिकाल मैं ॥
जंबूमुनीन्द्र जंबुविपिनगहन में आके।
निर्वाण प्राप्त हुये नमूँ शीश झुकाके ॥२४॥

जो पंचकल्याणक पवित्र भूमि कही है।
इस मर्त्यलोक में महान तीर्थ सही है ॥

मनवचसुकायशुद्धि सहित शीश नमाके ।
मैं नित्य नमस्कार करूं हर्ष बढ़ाके ॥२५॥

श्री वरनगर में पूज्य अर्गलदेव को वंदूं ।
उनके निकट श्री कुंडली जिनेश को वंदूं ॥
शिरपुर में पार्श्वनाथ को मैं भाव से नमूं ।
लोहागिरी के शंखदेव नेमि को नमूं ॥२६॥

जो पांच सौ धनुष प्रमाण तुंग तनु धरे ।
केशर कुसुम की वृष्टि जिनपे देवगण करे ॥
उन गोमटेश देव की मैं वंदना करूं ।
निज आत्म सौख्य प्राप्ति हेतु अर्चना करूं ॥२७॥

निर्वाणथान मर्त्यलोक में भी जो कहे ।
अतिशय भरे अतिशय स्थान जगप्रथित रहें ॥
इन सिद्धक्षेत्र सर्व को ही शीश झुकाके ।
मैं बारबार नमन करूँ ध्यान लगाके ॥२८॥

जो भव्य जीव भावशुद्धिसहित नित्य ही ।
निर्वाणकाण्ड को पढ़े त्रिकाल में सही ॥
चक्रीश इन्द्रपद के वे सुखानुभव करें ।
पश्चात् परमानन्दमय निर्वाणपद वरें ॥२९॥

अंचलिका—कुसुमलताछंद

भगवन् ! परिनिर्वाण भक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके ।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूं मैं रुचि से ॥
इस अवसर्पिणि में चतुर्थ शुभ, काल उसी के अंतिम में ।
तीन वर्ष अर आठ मास इक, पक्ष शेष था जब उसमें ॥१॥

पावानगरी में कार्तिक शुभ, मास कृष्ण चौदश तिथि में।
रात्रिअंत नक्षत्र स्वाति सह, उषाकाल की बेला में॥
वर्धमान भगवान् महति महावीर सिद्धि को प्राप्त हुये।
तीनलोक के भावन व्यंतर, ज्योतिष कल्पवासिगण ये॥२॥

निज परिवार सहित चउविध सुर, दिव्य गंध दिव पुष्पों से।
दिव्यधूप दिव चूर्णवास औ, दिव्य स्नपन विधी करते॥
अर्चे पूजे वंदन करते, नमस्कार भी नित करते।
परिनिर्वाण महा कल्याणक, पूजा विधि रुचि से करते॥३॥

मैं भी यहीं मोक्ष कल्याणक, को नित ही अर्चना करूँ।
पूजन वंदन करूं भक्ति से, नमस्कार भी पुनः करूँ॥
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुणसंपति होवे॥४॥

卐——卐

शांतिभक्ति:

(पूज्यपाद कृत)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः ।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः, संसारघोरार्णवः ॥
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकर-व्याकीर्ण-भूमण्डलो ।
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रविः ॥१॥

क्रुद्धाशीर्विषदष्टदुर्जयविष-ज्वालावलीविक्रमो ।
विद्याभैषजमन्त्रतोयहवनै-र्याति प्रशांतिं यथा ॥
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् ।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो ! विस्मयः ॥२॥

संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्द्धिगौरद्युते !
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडाः प्रयान्ति क्षयं ॥
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशत-व्याघातनिष्कासिता ।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी ॥३॥

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यन्तरौद्रात्मकान् ।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः ॥
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानलान्-
नस्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल-स्तुत्यापगावारणम् ॥४॥

लोकालोकनिरन्तरप्रवतित-ज्ञानैकमूर्ते ! विभो ! ।
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिर-श्वेतातपत्रत्रय ! ॥
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः ।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः ॥५॥

शांति भक्ति

(पद्यानुवाद)

भगवन् ! सब जन तव पद युग की शरण प्रेम से नहिं आते ।
उसमें हेतु विविधदुःखों से भरित घोर भववारिधि है ।।
अतिस्फुरित उग्र किरणो से व्याप्त किया भूमडल है ।
ग्रीषम ऋतु रवि राग कराता इंदुकिरण, छाया, जल में ।।१।।

कुद्धसर्प आशीविष डसने से विषाग्नियुत मानव जो ।
विद्या औषध मंत्रित जल हवनादिक से विष शांति हो ।।
वैसे तव चरणाम्बुज युग स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो ।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र अति शांत हुये आश्चर्य अहो ।।२।।

तपे श्रेष्ठ कनकाचल की शोभा से अधिक कांतियुत देव ।
तव पद प्रणमन करते जो पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव ।।
उदित रवो की स्फुट किरणों से ताड़ित हो झट निकल भगे ।
जैसे नाना प्राणी लोचन द्युतिहर रात्रि शीघ्र भगे ।।३।।

त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन अतिरौद्रात्मक मृत्युराज ।
भव भव में संसारी जन के सन्मुख धावे अति विकराल ।।
किस विध कौन बचे जन इससे काल उग्र दावानल से ।
यदि तव पाद कमल की स्तुति नदी बुझावे नहीं उसे ।।४।।

लोकालोक निरन्तर व्यापी ज्ञानमूर्तिमय शांति विभो ।
नानारत्न जटित दण्डेयुत रुचिर श्वेत छत्रत्रय हैं ।।
तव चरणाम्बुज पूतगीत रव से झट रोग पलायित हैं ।
जैसे सिंह भयंकर गर्जन सुन वन हस्ती भगते हैं ।।५।।

दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुलश्रीमेरुचूडामणे ! ।
भास्वद्‌बालदिवाकर द्युतिहर ! प्राणीष्टभामंडल ! ।।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतं ।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगल—स्तुत्यैव संप्राप्यते ।।६।।
यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्री भास्करो भासयं—
स्तावद् धारयतीह पंकजवनं, निद्रातिभारश्रमम् ।।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदय—
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत् ।।७।।
शांतिं शान्तिजिनेन्द्र ! शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात् ।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शांत्यर्थिनः प्राणिनः ।।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो ! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु ।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः ।।८।।
शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ।।९।।
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्र-नरेन्द्रगणैश्च ।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ।।१०।।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ।।११।।
तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं, शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं मह्यमरं पठते परमां च ।।१२।।
येभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः ।
शक्रादिभिः सुरगणैःस्तुतपादपद्माः ।।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः ।
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु ।।१३।।

दिव्यस्त्रीदृगसुन्दर विपुला श्रीमेरू के चूड़ामणि।
तव भामंडल बाल दिवाकर द्युतिहर सबको इष्टअति ॥
अव्याबाध अचिंत्य अतुल अनुपम शाश्वत जो सौख्य महान्।
तव चरणारविंदयुगलस्तुति से ही हो वह प्राप्त निधान ॥६॥

किरण प्रभायुत भास्कर भासित करता उदित न हो जब तक।
पंकजवन नहिं खिलते निद्राभार धारते है तब तक ॥
भगवन् ! तव चरणद्वय का हो नही प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके महत् पाप धारें तब तक ॥७॥

शांति जिनेश्वर शांतचित्त से शांत्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले शांत हुये है पृथिवी पर ॥
तव पदयुग की शांत्यष्टकयुत स्तुति करते भक्ति से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न करो भगवन् ! करुणा करके ॥८॥

शशि सम निर्मल वक्त्र शांतिजिन शीलगुण व्रत संयम पात्र।
नमूं जिनोत्तम अंबुजदृग को अष्टशतार्चित लक्षण गात्र ॥९॥

चक्रधरो में पंचमचक्री इन्द्र नरेन्द्र वृंद पूजित।
गण की शांति चहूँ षोडश तीर्थंकर नमूं शांतिकर नित ॥१०॥

तरुअशोक सुरपुष्पवृष्टि दुंदुभि दिव्यध्वनि सिंहासन।
चमर छत्र भामंडल ये अठ प्रातिहार्य प्रभु के मनहर ॥११॥

उन भुवनार्चित शांतिकरं शिर से प्रणमूं शांति प्रभु को।
शांति करो सब गण को, मुझको पढने वालों को भी हो ॥१२॥

मुकुटहारकुंडल रत्नों युत इन्द्रगणों से जो अर्चित।
इन्द्रादिक से सुरगण से भी पादपद्म जिनके संस्तुत ॥
प्रवरवंश में जन्में जग के दीपक वे जिन तीर्थंकर।
मुझको सतत शांतिकर होवें वे तीर्थेश्वर शांतिकर ॥१३॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ॥१४॥
क्षेमं सर्वप्रजानां, प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशं ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां, मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं, प्रभवतु सततं, सर्वसौख्यप्रदायि ॥१५॥
तद्द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः, संतन्यतां प्रतपतां सततं स कालः ।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण, रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षवर्गे ॥१६॥
प्रध्वस्तघातिकर्माणः, केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतां शांतिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥१७॥*
अंचलिका—

इच्छामि भंते ! संतिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिमउडमत्थयमहिदाणं बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइअणगारोवगूढाणं थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

---

* शांनि शिरोधृतजिनेश्वरशासनानाम् । शांतिर्निरन्तरतपोभवभावितानाम् ॥
शांतिः कषायजयजृंभितवैभवानाम् । शांति स्वभावमहिमानमुपागतानाम् ॥
जीवतु संयमसुधारसपानतृप्ता । नदंतु शुद्धसहसोदयसुप्रसन्नाः ॥
सिद्ध्यंतु सिद्धिसुखसगकृताभियोगाः । तीव्रं तपंतु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञा ॥
शांति शं तनुतां समस्तजगतः संगच्छतां धार्मिकैः ।
श्रेयः श्रीः परिवर्धतां नयधुरा धुर्यो धरित्रीपतिः ॥
सद्विद्यारसमुद्गिरंतु कवयो नामाप्यघस्यास्तु मा ।
प्रार्थ्यं वा कियदेक एव शिवकृद्धर्मो जयत्वर्हताम् ॥

संपूजक प्रतिपालक जन यतिवर सामान्य तपोधन को।
देशराष्ट्र पुर नृप के हेतू हे भगवन् ! तुम शांति करो ।।१४।।
सभी प्रजा में क्षेम नृपति धार्मिक बलवान् जगत में हो।
समय समय पर मेघवृष्टि हो आधि व्याधि का भी क्षय हो ।।
चौर मारि दुर्भिक्ष न क्षण भी जग में जन पीड़ा कर हो।
नित ही सर्व सौख्यप्रद जिनवर धर्मचक्र जयशील रहो ।।१५।।
वे शुभद्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव वर्ते नित वृद्धि करें।
जिनके अनुग्रह सहित मुमुक्षु रत्नत्रय को पूर्ण करें ।।१६।।
घातिकर्म विध्वंसक जिनवर केवलज्ञानमयी भास्कर।
करें जगत में शांति सदा वृषभादि जिनेश्वर तीर्थंकर ।।१७।।

अंचलिका—

हे भगवन् ! श्री शांतिभक्ति का कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा करना चाहूँ मैं रुचि से ।।
अष्टमहा प्रातिहार्य सहित जो पंचमहाकल्याणक युत।
चौतिस अतिशय विशेष युत बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित ।।
हलधर वासुदेव प्रतिचक्री ऋषि मुनि यति अनगार सहित।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से वीर प्रभू तक महापुरुष ।।
मंगल महापुरुष तीर्थंकर उन सबको शुभ भक्ति से।
नित्यकाल में अर्चूं पूजूं वंदूं नमूं महामुद से ।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपति होवे ।।

वज्रनाभि चक्रवर्ती की

वैराग्य भावना

दोहा

बीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जग माँहि।
त्यौं चक्री नृप सुख करे, धर्म विसारै नाँहि ॥१॥

जोगीरासा वा नरेन्द्र छंद।

इहविधि राज करै नरनायक, भोगै पुण्य विशालो।
सुखसागरमें रमत निरन्तर, जात न जान्यो कालो ॥

एक दिवस शुभ कर्म-संजोगे क्षेमंकर मुनि वंदे।
देख शिरीगुरु के पदपंकज, लोचन अलि आनन्दे ॥२॥

तीन प्रदिक्षण दे शिर नायो, कर पूजा थुति कीनी।
साधु-समीप विनय कर बैठ्यो, चरननमें दिठि दीनी ॥

गुरु उपदेश्यो धर्म-शिरोमणि, सुन राजा वैरागे।
राजरमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे ॥३॥

मुनि-सूरज-कथनी-किरणावलि, लगत भरम बुधि भागी।
भव-तन-भोग-स्वरूप विचार्यो, परम धरम अनुरागी ॥

इह संसार महावन भीतर, भरमत ओर न आवै।
जामन मरन जरा दव दाहै जीव महादुख पावै ॥४॥

कबहूँ जाय नरक थिति भुंजै, छेदन भेदन भारी।
कबहूँ पशु परजाय धरै तहँ, बध बंधन भयकारी ॥

सुरगति में परसंपति देखे राग उदय दुख होई।
मानुषयोनि अनेक विपतिमय, सर्वसुखी नहिं कोई ॥५॥

कोई इष्ट वियोगी बिलखैं, कोई अनिष्ट संयोगी।
कोई दीन-दरिद्री बिलखें, कोई तन के रोगी॥

किसही घर कलिहारी नारी, कै बैरी सम भाई।
किसही के दुख बाहिर दीखें, किसही उर दुचिताई ॥६॥

कोई पुत्र बिना नित झूरै, होय मरै तब रोवै।
खोटी संततिसों दुख उपजै, क्यों प्रानी सुख सोवै॥

पुण्य उदय जिनके तिनके भी नाहिं सदा सुख साता।
यह जगवास जथारथ देखे, सब दीखै दुखदाता ॥७॥

जो संसार विषै सुख होता, तीर्थङ्कर क्यों त्यागैं।
काहे को शिवसाधन करते, संजमसो अनुरागैं॥

देह अपावन अथिर घिनावन, यामें सार न कोई।
सागर के जलसों शुचि कीजे, तो भी शुद्ध न होई ॥८॥

सात कुधातुभरी मलमूरत, चर्म लपेटी सोहै।
अंतर देखत या सम जग में, अवर अपावन को है॥

नव-मल-द्वार स्रवैं निशि-वासर, नाम लिये घिन आवै।
व्याधि-उपाधि अनेक जहाँ तहँ, कौन सुधी सुख पावै ॥९॥

पोषत तो दुख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावै।
दुर्जन-देह-स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावै॥

राचन-जोग स्वरूप न याको विरचन-जोग सही है।
यह तन पाय महातप कीजे यामें सार यही है ॥१०॥

भोग बुरे भवरोग बढ़ावैं, बैरी हैं जग जीके ।
बेरस होंय विपाक समय अति, सेवत लागें नीके ।।
वज्र-अगिनि विषसे विषधरसे, ये अधिके दुखदाई ।
धर्म-रतन के चोर चपल अति, दुर्गति-पंथ सहाई ।।११।।

मोह-उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जानै ।
ज्यों कोई जन खाय धतूरा, सो सब कंचन माने ।।
ज्यों ज्यों भोग संजोग मनोहर, मन-वांछित जन पावें ।
तृष्णा नागिन त्यों-त्यों डके, लहर जहर की आवे ।।१२।।

मैं चक्रीपद पाय निरन्तर, भोगे भोग घनेरे ।
तौ भी तनक भये नहिं पूरन, भोग मनोरथ मेरे ।।
राजसमाज महा अघ-कारण, बैर बढ़ावन-हारा ।
वेश्या-सम लछमी अतिचंचल, याका कौन पत्यारा ।।१३।।

मोह-महा-रिपु बैर विचार्यो, जग-जिय संकट डारे ।
घर-कारागृह वनिता बेड़ी, परिजन जन रखवारे ।।
सम्यकदर्शन ज्ञान चरण तप, ये जियके हितकारी ।
येही सार असार और सब, यह चक्री चितधारी ।।१४।।

छोड़े चौदह रत्न नवों निधि, अरु छोड़े संग साथी ।
कोटि अठारह घोड़े छोड़े चौरासी लख हाथी ।।
इत्यादिक संपति बहुतेरी जीरण-तृण-सम त्यागी ।
नीति विचार नियोगी सुतकों, राज दियो बड़भागी ।।१५।।

होय निशल्य अनेक नृपति संग, भूषण बसन उतारे ।
श्रीगुरु चरण धरी जिन मुद्रा, पंच महाव्रत धारे ।।
धनि यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम, धनि यह धीरज-धारी ।
ऐसी संपति छोड़ बसे वन, तिन पद धोक हमारी ।।१६।।

दोहा

परिग्रहपोट उतार सब, लीनों चारित पंथ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निरग्रंथ ।।

इति श्री वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना।

卐--卐

बारहभावना (श्री मंगतराय जी कृत)

दोहा छन्द

वंदूं श्री अरहंतपद, वीतराग विज्ञान।
वरणूं बारह भावना, जगजीवन-हित जान ।।१।।

विष्णुपद छन्द

कहां गये चक्री जिन जीता, भरतखंड सारा।
कहाँ गये वह राम-रु-लक्ष्मण, जिन रावण मारा ।।

कहां कृष्ण रुक्मिणि सतभामा, अरु संपति सगरी।
कहां गये वह रंगमहल अरु, सुवरन की नगरी ।।२।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रनमें।
गये राज तज पांडव वन को, अगनि लगी तनमें ।।

मोह-नींदसे उठ रे चेतन, तुझे जगावन को।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु, बारह भावन को ।।३।।

१. अथिर भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु, फिर फिर कर आवै।
प्यारी आयू ऐसी बीतै, पता नहीं पावै॥

पर्वत-पतित-नदी-सरिता-जल बहकर नहिं हटता।
स्वास चलत यों घटै काठ ज्यों, आरे सों कटता॥४॥

ओस-बूंद ज्यों गलै धूप में, वा अंजुलि पानी।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्रानी॥

इंद्रजाल आकाश नगर सम जग-संपति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर अरु नारी॥५॥

२. अशरण भावना

काल-सिंहने मृग-चेतन को घेरा भव वनमें।
नहीं बचावन-हारा कोई यों समझो मनमें॥
मंत्र यंत्र सेना धन संपति, राज पाट छूटे।
वश नहिं चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटै॥६॥

चक्ररत्न हलधर सा भाई, काम नहीं आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की विनश गई काया॥

देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहीं कोई।
भ्रम से फिरै भटकता चेतन, यूंही उमर खोई॥७॥

३. संसार भावना

जनम-मरन अरु जरा-रोग से, सदा दुखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव-परिवर्तन सहता॥

छेदन भेदन नरक पशूगति, बध बंधन सहना।
राग-उदय से दुख सुरगति में, कहां सुखी रहना॥८॥

भोगि पुण्यफल हो इकइंद्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली॥

मानुष-जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिलै शुभाशुभको मेटो लेखा॥९॥

४. एकत्व भावना

जन्मै मरै अकेला चेतन, सुख-दुख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी॥

कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं, पिता पुत्र दारा॥१०॥

ज्यों मेले में पंथीजन मिल नेह फिरैं धरते।
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा पंछी आ करते॥

कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थक थक हारै।
जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारै॥११॥

५. भिन्न भावना

मोह-रूप मृग-तृष्णा जग में मिथ्या जल चमकै।
मृग चेतन नित भ्रम में उठ उठ, दौडैं थक थककै॥

जल नहिं पावैं प्राण गमावैं, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेव नहीं करता॥१२॥

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले-अनादि यतनतैं बिछुडैं, ज्यों पय अरु पानी॥

रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जौलों पौरुष थकै न तौलों उद्यमसों चरना॥१३॥

६. अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखे ज्यों, धोवै त्यों मैली ।
निश दिन करै उपाय देह का, रोग-दशा फैली ॥
मात-पिता-रज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी ।
मांस हाड़ नश लहू राध की, प्रगट व्याधि घेरी ॥१४॥

काना पौंडा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै ।
फलै अनंत जु धर्म ध्यान की, भूमि-विषै बोवै ॥
केसर चंदन पुष्प सुगन्धित, वस्तु देख सारी ।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी ॥१५॥

७. आस्रव भावना

ज्यों सर-जल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मनको ।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब पुद्गल भरमनको ॥
भावित आस्रवभाव शुभाशुभ, निश दिन चेतनको ।
पाप पुण्य के दोनों करता, कारण बंधनको ॥१६॥

पन-मिथ्यात योग-पंद्रह द्वादश-अविरत जानो ।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो ॥
मोह-भावकी ममता टारै, पर परणत खोते ।
करै मोखका यतन निरास्रव, ज्ञानी जन होते ॥१७॥

८. संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावै, तब जल रुक जाता ।
त्यों आस्रवको रोकै संवर, क्यों नहिं मन लाता ॥
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर वचन काय मनको ।
दशविध-धर्म परीषह-बाइस, बारह भावनको ॥१८॥

यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रवको खोते ।
स्वप्न दशा से जागो चेतन, कहां पड़े सोते ॥
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध-भावन-संवर पावै ।
डाँट लगत यह नाव पड़ी मझधार पार जावै ॥१६॥

६. निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़ै भारी ।
संवर रोकै कर्म, निर्जरा ह्वै सौखनहारी ॥
उदय-भोग सविपाक-समय, पक जाय आम डाली ।
दूजी है अविपाक पकावै, पालविषै माली ॥२०॥

पहली सबके होय, नहीं कुछ सरै काम तेरा ।
दूजो करै जु उद्यम करकै, मिटै जगत फेरा ॥
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकत रानी ।
इस दुलहिन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी ॥२१॥

१०. लोक भावना

लोक अलोक अकाश माँहि थिर, निराधार जानो ।
पुरुष रूप-कर-कटी भये षट्, द्रव्यनसों मानों ॥
इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है ।
जीवरु पुद्गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है ॥२२॥

पापपुण्यसों जीव जगत में, नित सुख दुख भरता ।
अपनी करनी आप भरै शिर, औरन के धरता ॥
मोहकर्म को नाश, मेटकर सब जग की आसा ।
निज पद में थिर होय लोक के, शीश करो बासा ॥२३॥

११. बोधि-दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोदसे थावर, अरु त्रस गति पानी ।
नरकाया को सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी ।।
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना ।
दुर्लभ सम्यक् दुर्लभ संयम, पंचम गुण ठाना ।।२४।।

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन दीक्षा का धरना ।
दुर्लभ मुनिवर के व्रत पालन, शुद्धभाव करना ।।
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन, बोधिज्ञान पावै ।
पाकर केवलज्ञान, नहीं फिर इस भव में आवै ।।२५।।

१२. धर्म भावना

षट् दर्शन अरु बौद्धअरु नास्तिक ने जग को लूटा ।
ईसा मूसा और मुहम्मद का मजहब झूठा ।।
हो सुछन्द सब पाप करें शिर करता के लावे ।
कोई छिनक कोई करता से जग में भटकावे ।।२६।।

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्री जिन की वानी ।
सप्त तत्व का वर्णन जामें, सबको सुखदानी ।।
इनका चितवन बार बार कर, श्रद्धा उर धरना ।
'मंगत' इसी जतनतैं इकदिन, भव-सागर-तरना ।।२७।।

।।इति मुलतानपुर निवासी मंगतरायजी कृत बारह भावना ।।

卐——卐

बारह-भावना

(कविवर भूधरदास जी कृत)

दोहा

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ॥१॥

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार ।
मरती बिरियां जीवको, कोई न राखनहार ॥२॥

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान ॥३॥

आप अकेला अवतरै, मरै अकेलो होय ।
यूँ कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय ॥४॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय ।
घर संपति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ॥५॥

दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह ।
भीतर या सम जगतमें, अवर नहीं घिन-गेह ॥६॥

सोरठा

मोह-नींद के जोर, जगवासी घूमै सदा ।
कर्म-चोर चहुं ओर, सरवस लूटैं सुध्र नहीं ॥७॥

सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमै ।
तब कछु बनै उपाय, कर्म-चोर आवत रुकैं ॥८॥

दोहा

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विध बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर ॥९॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्रिय-विजय, धार निर्जरा सार ॥१०॥
चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान ।
तामें जीव अनादितै, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥११॥
धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान ।
दुर्लभ है संसारमें, एक जथारथ ज्ञान ॥१२॥
जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिंतत चिंता रैन ।
बिन जांचै बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ॥१३॥

卐——卐

मेरी भावना

(रचयिता—आचार्य जुगलकिशोर जी मुख्तार)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया ।
सब जीवोंको मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ॥१॥
विषयों की आशा नहिं जिनके साम्य-भाव धन रखते हैं ।
निज-परके हित-साधन में जो निश-दिन तत्पर रहते हैं ॥

स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख-समूह को हरते हैं ॥२॥

रहे सदा सत्संग उन्ही का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उनहीं जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूठ कभी नहिं कहा करूँ ।
परधन-वनिता[१] पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥

अहंकार का भाव न रक्खूं नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ ।
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ ॥४॥

मैत्रीभाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे ।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्रोत बहे ॥
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग-रतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे ।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥५॥

गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे ।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥

कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे ।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे ॥७॥

---

१. स्त्रियाँ वनिता के स्थान पर 'परनर' पढ़ें ।

होकर सुख में मग्न न फूले दुख में कभी न घबरावे ।
पर्वत-नदी-श्मशान भयानक अटवी से नहीं भय खावे ।।
रहे अडोल-अकंप निरंतर यह मन दृढ़तर बन जावे ।
इष्ट-वियोग-अनिष्ट-योग में सहन-शीलता दिखलावे ।।८।।

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे ।
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मङ्गल गावें ।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावे ।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना मनुज-जन्म-फल सब पावें ।।९।।

ईति भीति व्यापे नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे ।।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शांति से जिया करे ।
परम अहिंसा-धर्म जगत में फैल सर्व हित किया करे ।।१०।।

फैले प्रेम परस्पर जगत में मोह दूर ही रहा करे ।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करे ।।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से देशोन्नति-रत रहा करें ।
वस्तु-स्वरूप-विचार खुशी से सब दुख संकट सहा करें ।।११।।

卐——卐

समाधि मरण (भाषा)

गौतम स्वामी बन्दों नामी मरण समाधि भला है।
मैं कब पाऊँ निश दिन ध्याऊँ गाऊँ वचन कला है॥
देव धर्म गुरु प्रीति महा दृढ़ सप्त व्यसन नहिं जाने।
त्याग बाइस अभक्ष संयमी बारह व्रत नित ठाने॥१॥

चक्की उखरी चूलि बुहारी पानी त्रस न विराधै।
बनिज करै पर द्रव्य हरै नहिं छहों कर्म इमि साधै॥
पूजा शास्त्र गुरुनकी सेवा संयम तप चहुं दानी।
पर उपकारी अल्प अहारी सामायिक विधि ज्ञानी॥२॥

जाप जपै तिहुँ योग धरै दृढ़ तनकी ममता टारै।
अन्त समय वैराग्य सम्हारै ध्यान समाधि विचारै॥
आग लगै अरु नाव डुबै जब धर्म विघन तब आवै।
चार प्रकार आहार त्यागिके मन्त्र सु-मन में ध्यावे॥३॥

रोग असाध्य जरा बहु देखे कारण और निहारै।
बात बड़ी है जो बनि आवे भार भवन को टारै॥
जो न बने तो घर में रहकरि सबसों होय निराला।
मात पिता सुत तियको सौंपै निज परिग्रह इहि काला॥४॥

कुछ चैत्यालय कुछ श्रावकजन कुछ दुखिया धन देई।
क्षमा क्षमा सब ही सों कहिके मनकी शल्य हनेई॥
शत्रुनसों मिल निज कर जोरै मैं बहु कीनी बुराई।
तुमसे प्रीतम को दुख दीने क्षमा करो सो भाई॥५॥

धन धरती जो मुखसों मांगै सो सब दे संतोषै ।
छहों कायके प्राणी ऊपर करुणा भाव विशेषै ।।
ऊँच नीच घर बैठ जगह इक कुछ भोजन कुछ पै लै ।
दूधाधारी क्रम क्रम तजिके छाछ अहार पहेलै ।।६।।
छाछ त्यागिके पानी राखै पानी तजि संथारा ।
भूमि मांहि थिर आसन मांडै साधर्मी ढिग प्यारा ।।
जब तुम जानो यह न जपै है तब जिनवाणी पढ़िये ।
यों कहि मौन लियो संन्यासी पंच परम पद गहिये ।।७।।
चार अराधन मनमें ध्यावै बारह भावन भावै ।
दशलक्षण मुनि-धर्म विचारै रत्नत्रय मन ल्यावै ।।
पैंतीस सोलह षट पन चारों दुइ इक वरन विचारै ।
काया तेरी दुख की ढेरी ज्ञानमयी तू सारै ।।८।।
अजर अमर निज गुणसों पूरै परमानन्द सुभावै ।
आनन्दकन्द चिदानन्द साहब तीन जगतपति ध्यावै ।।
क्षुधा तृषादिक होय परीषह सहै भाव सम राखै ।
अतीचार पाँचों सब त्यागै ज्ञान सुधारस चाखै ।।९।।
हाड़ मांस सब सूख जाय जब धर्मलीन तन त्यागै ।
अद्‌भुत पुण्य उपाय स्वर्ग-में सेज उठै ज्यों जागै ।।
तहाँ तै आवै शिवपद पावै विलसै सुक्ख अनन्तो ।
'द्यानत' यह गति होय हमारी जैन धर्म जयवन्तो ।।१०।।

卐——卐

जम्बूद्वीप चालीसा

—कु० माधुरी शास्त्री

दोहा

वंदूं सोलह जिनभवन, गिरि सुमेरु के सिद्ध ।
अट्ठत्तर जिनबिम्बयुत, जम्बूद्वीप प्रसिद्ध ॥१॥

आचार्यों के वचन को, किया जहाँ साकार ।
हस्तिनागपुर में करो, चालीसा सुखकार ॥२॥

महा आर्यिका ज्ञानमती, ज्ञान गुणों की खान ।
जिनके शुभ आशीष से, निर्मित द्वीप महान ॥३॥

शांति कुंथु अरनाथ का, कर वंदन शत बार ।
चालीसा चालीस दिन, कर भवि हों भवपार ॥४॥

चौपाई

जम्बूद्वीप महान कहाता, उमास्वामि के वचन सुनाता ।
मोक्षशास्त्र की है यह कथनी, मध्यलोक जो सबकी जननी ॥५॥

दोय सहस वर्षों की घटना, है यतिवृषभ ऋषी का कहना ।
है तिलोयपण्णत्ति पुराणा, जिसमें मुनिवर करें बखाना ॥६॥

तीन लोक का वर्णन सारा, इनसे जाने सब संसारा ।
अधो ऊर्ध्व में नरक स्वर्ग हैं, मध्यलोक में द्वीप जलधि हैं ॥७॥

द्वीप समुद्र असंख्य कहाए, मध्यलोक की महिमा गाएँ ।
उनमें जम्बूद्वीप प्रधाना, जिसको जाने सकल जहाना ॥८॥

उन्निस सौ पैंसठ की घटना, कर्नाटक में सच्चा सपना ।
श्रवणबेलगुल विंध्यगिरी पर, बाहुबली के चरणनिधि पर ॥६॥
ज्ञानमती ने किया निवासा, संघ आर्यिका सहित प्रवासा ।
चातुर्मास वहीं पर कीना, हुआ तभी इक कार्य नवीना ॥१०॥
एक दिवस ध्यानस्थ मात ने, किया दर्श मंगल प्रभात में ।
जम्बूद्वीप अकृत्रिम रचना, नग चैत्यालय मणियों से बना ॥११॥
बीचों बीच सुमेरु बखाना, स्वयंभुवा प्रतिमा युत माना ।
गंगासिन्धु नदी बहती हैं, प्रभु के मस्तक पर गिरती हैं ॥१२॥
माँ ने ध्यान विसर्जित कीना, अद्भुत आनंद अनुभव कीना ।
विंध्यगिरी से नीचे आकर, देखा सब शास्त्रों को जाकर ॥१३॥
ज्यों का त्यों वर्णन जब पाया, समझीं बाहुबली की माया ।
वीतराग का अतिशय भारी, वह प्रतिमा है जग में न्यारी ॥१४॥
ज्ञानमती का ज्ञान तभी से, हुआ विलक्षण उस क्षण ही से ।
जम्बूद्वीप कहाँ निर्मित हो, यह विचार करती प्रमुदित हों ॥१५॥
पच्चिस सौ निर्वाण दिवस पर, दिल्ली में था सत समागम ।
ज्ञानमती माताजी का संघ, पहुँचा जहाँ उपस्थित चउ संघ ॥१६॥
हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर, जहं जन्मे थे शांति कुंथु अर ।
तीनों तीर्थंकर औ चक्री, कामदेव त्रय पद के शक्री ॥१७॥
कोड़ा कोड़ी वर्ष पूर्व में, लिया जहाँ आहार प्रभु ने ।
आदिवृषभ का अतिशय भारी, अक्षयतृतिया तिथि सुखकारी ॥१८॥
दान तीर्थ प्रारंभ जगत में, किया तभी श्रेयांस नृपति ने ।
नृप ने स्वप्न सुमेरु देखा, किया अतिथि सत्कार समेता ॥१९॥
अनहोना संयोग जहाँ पर, बन गया उच्च सुमेरु वहाँ पर ।
जम्बूद्वीप की सुंदर रचना, जिस मधि गिरि सुमेरु की गणना ॥२०॥

गोलाकार द्वीप कहलाता, लवणोदधि से शोभा पाता।
जल विहार करते नर नारी, जम्बूद्वीप देखें सुखकारी ॥२१॥
चारों तरफ मनोहर प्रतिमा, स्वयंसिद्ध अठसत्तर गणना।
सिद्धकूट जिनमंदिर माने, शेष देवभवनों के जाने ॥२२॥
अट्ठत्तर की गणना सुनिये, नतमस्तक हो प्रभु को नमिये।
स्वयं सिद्ध का वंदन कर लो, प्रभु श्रद्धा को मन में धर लो ॥२३॥
प्रथम सुदर्शन मेरु गिरी है, सोलह प्रतिमा सौख्य श्री हैं।
भद्रसाल नंदन सौमनसं, पांडुक वन सोहे गिरि शीसं ॥२४॥
चार वनों की चारों दिश में, चार चार प्रतिमा उन सबमें।
चौरासी फुट ऊँचा सुन्दर, दर्शन की सुविधा जहाँ अंदर ॥२५॥
क्रम क्रम से सीढ़ी चढ़ करके, पर्वत की चोटी पर पहुंचे।
क्या अतिशय है इस पर्वत में, किंचित् श्रम नहिं होता तन में ॥२६॥
मेरु की चारों विदिशा में, चार कहे गजदंत सु तामें।
तिनमें चार सिद्ध की प्रतिमा, अकृत्रिम की जानो महिमा ॥२७॥
जम्बू शाल्मलि वृक्ष सुशोभें, देवकुरु उत्तरकुरु में हैं।
उनमें भी अकृत्रिम प्रतिमा, जिनमंदिर शाश्वत सुख कर्मा ॥२८॥
पूर्व अपर बत्तिस विदेह में, सोलह गिरि वक्षार कहे हैं।
जिनमें एक एक जिनमंदिर, जिनप्रतिमा को नमत पुरन्दर ॥२९॥
चौंतिस गिरि विजयार्ध नाम के, विद्याधर श्रेणी सुथान के।
बत्तिस गिरि बत्तिस विदेह के, दो भरतैरावत सुगेह के ॥३०॥
इन चौंतिस पर चौंतिस आलय, जिनवर प्रतिमा जजूँ सुखालय।
हिमवन आदि कहे षट् कुलगिरि, जिनमें रहतीं श्री आदिक सुरि ॥३१॥
मेरु के दक्षिण में त्रय हैं, उत्तर के त्रयमिल सब छह हैं।
उनमें स्वयंभुवा जिनमंदिर, अकृत्रिम जिनप्रतिमा सुन्दर ॥३२॥

हुई अठत्तर गणना सारी, जिनका वंदन जग सुखकारी ।
इनसे जम्बूद्वीप सुशोभे, नग चैत्यालय युत मन मोहे ॥३३॥

इक सौ तेइस देवभवन हैं, जिनमें चैत्य सु मनभावन हैं ।
सब मिल दो सौ इक जिनप्रतिमा, सौम्य छवी की अद्‌भुत महिमा ॥३४॥

यही प्राकृतिक रचना सारी, बनी हस्तिनापुर में प्यारी ।
वन उद्यान पुष्प फल युत है, विद्युत प्रभा आदि संयुत है ॥३५॥

गोमुख से गिरती धाराएँ, मानो प्रभु का न्हवन कराएँ ।
गंगा सिन्धु नदी बहती हैं, लवणोदधि में जा मिलती हैं ॥३६॥

सारे जग में एक अनोखी, रचना जम्बूद्वीप अनूठी ।
पौराणिक संस्कृति दिग्दर्शक, विश्वशांति पथ करे प्रदर्शन ॥३७॥

आत्मशांति की इच्छा लेकर, दर्शन वंदन करते जो नर ।
लौकिक संपत्ती लभते हैं, स्वयंसिद्धि वे ही वरते हैं ॥३८॥

कुरुजांगल शुभ देश का, चमत्कार चहुंओर ।
फैला भारत देश में, ज्ञानज्योति का शोर ॥३९॥

सुदी छट्‌ठ आषाढ़ की, वीर गर्भकल्याण ।
किया "माधुरी" पूर्ण यह, चालीसा धरध्यान ॥४०॥

卐——卐

स्वयंभू स्तोत्र भाषा

चौपाई

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राजत्याग भवि शिवपद लियो ।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, बंदौं आदिनाथ गुणखान ।।१।।
इन्द्र क्षीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय ।
मदनविनाशक सुखकरतार, बंदौंअजित अजित-पदकार ।।२।।
शुक्लध्यानकरि करमविनाशि, घाति अघाति सकलदुखराशि ।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बंदौं संभव भव दुख टार ।।३।।
माता पश्चिम रयनमंझार, सुपने देखे सोलह सार ।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनंदन मनलाय ।।४।।
सब कुवाद वादी सरदार, जीते स्यादवाद धुनि धार ।
जैनधरम परकाशक स्वामि, सुमतिदेवपद करहुँ प्रणाम ।।५।।
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय ।
बरसे रतन पंचदश मास, नमों पदमप्रभु सुख की राश ।।६।।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होंहि खुशाल ।
द्वादश सभा ज्ञानदातार, नमों सुपारसनाथ निहार ।।७।।
सुगुन छियालीस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं ।
मोहमहातम नाशक दीप, नमों चंद्रप्रभु राख समीप ।।८।।
द्वादश विध तप करम विनाश, तेरह विध चारित्र प्रकाश ।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बंदौं पुष्पदंत मन आन ।।९।।
भविसुखदाय सुरगतैं आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय ।
आप समान सबनि सुख देह, बंदौं शीतल धर्मसनेह ।।१०।।

समता सुधा कोपविष नाश, द्वादशांग वानी परकाश।
चारसंघ-आनंद-दातार, नमों श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥११॥

रतनत्रय चिरमुकुट विशाल, शोभै कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य बंदौं धर ध्यान ॥१२॥

परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, बंदौं विमलनाथ भगवंत ॥१३॥

अन्तर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगंबरव्रत को धारि।
सर्वजीवहित-राह दिखाय, नमों अनंत वचन-मनलाय ॥१४॥

सात तत्त्व पंचासतिकाय, नव पदार्थ छह द्रव्य बताय।
लोक अलोक सकलपरकाश, बंदौं धर्मनाथ अविनाश ॥१५॥

पंचम चक्रवर्ति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरण सोलम जिनराय, शांतिनाथ बंदौं हरषाय ॥१६॥

बहुथुति करे हरष नहिं होय, निंदे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बंदौं कुंथुनाथ शिवभूप ॥१७॥

द्वादशगण पूजें सुखदाय, थुति बंदना करें अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुँ न होय, बंदौं अरजिनवर-पद दोय ॥१८॥

परभव रतनत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह समय वैराग।
बाल ब्रह्म-पूरन व्रत धार, बंदौं मल्लिनाथ जिनसार ॥१९॥

बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकांत करैं पगलाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, बंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥२०॥

श्रावक विद्यावंत निहार, भगति भावसों दियो अहार।
बरसी रतनराशि तत्काल, बंदौं नमिप्रभु दीनदयाल ॥२१॥

सब जीवन की बंदी छोर, रागद्वेष द्वै बंधन तोर।
राजुल तज शिवतियसों मिले, नेमिनाथ बंदौं सुखनिले ॥२२॥

दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनधार।
गयो कमठ शठ मुखकरश्याम, नमो मेरुसम पारसस्वाम ॥२३॥
भवसागरतें जीव अपार, धरम पोत में धरे निहार।
डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान वंदौं बहुबार ॥२४॥

दोहा

चौबीसों पदकमलजुग, बंदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ैं सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥

卐——卐

सामायिक प्रयोग विधान

त्रिकाल में विधिवत् देववंदना करना ही सामायिक है

त्रिसंध्यं वन्दने युंज्याच्चैत्यपंचगुरुस्तुती।
प्रियभक्ति वृहद्भक्तिष्वन्ते दोषविशुद्धये ॥१॥
(अनगार धर्मामृत)

तीनो सन्ध्या सम्बन्धी जिनवन्दना में चैत्यभक्ति और पंचगुरुभक्ति तथा सभी वृहद्भक्तियों के अन्त में वन्दना पाठ की हीनाधिकतारूप दोषों की विशुद्धि के लिये प्रियभक्ति (समाधिभक्ति) करना चाहिये।

इस देववन्दना में छह प्रकार का कृतिकर्म भी होता है। यथा—

स्वाधीनता परीतिस्त्रयी निषद्या त्रिवारमावर्ताः।
द्वादश चत्वारि शिरांस्येवं कृतिकर्म षोढेष्टम् ॥२॥

तथा—आदाहीणं, पदाहीणं" तिक्खुत्त, तिऊणदं, चदुस्सिरं, वारसावत्तं, चेदि।

(१) वन्दना करने वाले की स्वाधीनता, (२) तीन प्रदक्षिणा। (३) तीन भक्ति सम्बन्धी तीन कायोत्सर्ग, (४) तीन निषद्या—१ ईर्यापथ कायोत्सर्ग के अनन्तर बैठकर आलोचना करना और चैत्यभक्ति सबधी क्रिया–विज्ञापन करना, २. चैत्य-भक्ति के अन्त में बैठकर आलोचना करना और पंचमहागुरुभक्ति सम्बन्धी क्रिया विज्ञापन करना, ३. पचमहागुरुभक्ति के अन्त में बैठकर आलोचना करना, (५) चार शिरोनति, (६) बारह आवर्त। यही सब आगे सामायिक विधि में आता है।

वन्दना योग्य मुद्रा

मुद्रा के ४ भेद है—जिन मुद्रा, योग मुद्रा, वन्दना मुद्रा, मुक्ताशुक्ति मुद्रा। इन चारों मुद्राओं का लक्षण क्रम से कहते है।

जिन मुद्रा—दोनो पैरो में चार अंगुल प्रमाण अन्तर रखकर और दोनो भुजाओ को नीचे लटकाकर कायोत्सर्ग रूप से खड़े होना सो जिनमुद्रा है। योग मुद्रा—पद्मासन, पर्यकासन और वीरासन इन तीनो आसनो की गोद मे नाभि के समीप दोनो हाथो की हथेलियो को चित्त रखने को जिनेन्द्रदेव योग मुद्रा कहते हैं। वन्दना मुद्रा—दोनो हाथो को मुकुलितकर और कुहनियो को उदर पर रखकर खड़े हुए पुरुष के वन्दना मुद्रा होती है। मुक्ताशुक्ति मुद्रा—दोनो हाथों की अगुलियो को मिलाकर और दोनो कुहनियों को उदर पर रखकर खड़े हुए आचार्य मुक्ताशुक्ति मुद्रा कहते है।

इस प्रकार सामायिक विधि मे चैत्यभक्ति, पचगुरुभक्ति पढने का विधान मुनियो के आचारशास्त्र अनगारधर्मामृत, चारित्रसार, धवला के वेदनाखण्ड आदि ग्रन्थो में लिखा है तथैव श्रावको के लिये भी इसी तरह षट्प्राभृत, भावसग्रह, वसुनदिश्रावकाचार आदि ग्रन्थों में लिखा है अतः यही विधि प्रामाणिक है।

देववदना के लिये जिनमंदिर में पहुँचकर हाथ-पैर धोकर 'निःसहि' का तीन बार उच्चारण कर जिनेद्रदेव को नमस्कार करे। अनन्तर "दृष्टं जिनेद्रभवन भवतापहारि" इत्यादि स्तोत्र को पढ़ते हुये चैत्यालय की तीन प्रदक्षिणा देवे। पुनः "निःसगोऽहृ जिनाना" इत्यादि दर्शनस्तोत्र पढकर यदि बैठकर सामायिक करना है तो बैठकर अथवा खड़े होकर 'ईर्यापथशुद्धि पाठ' से सामायिक शुरू करे।

卐——卐

सामायिक पाठ

(देववंदना)

卐 ईर्यापथ शुद्धि 卐

दोहा

हे भगवन् ! ईर्यापथिक दोष विशोधन हेतु ।
प्रतिक्रमण विधि मैं करूँ श्रद्धा भक्ति समेत ।।१।।

चौबोल छन्द

गुप्ति रहित हो षट्कायों की मैं विराधना जो करता ।
शीघ्र गमन प्रस्थान ठहरने चलने में अरु भ्रमण किया ।।२।।

प्राणिगण पर गमन, बीज पर गमन, हरित पर चला कहीं ।
मल मूत्रादि नासिका मल कफ थूक विकृति को तजा कहीं ।।३।।

एकेन्द्रिय द्वीइन्द्रिय त्रयइन्द्रिय चउइन्द्रिय पंचेंद्री ।
जीवों को स्वस्थान गमन से रोका या अन्यत्र कहीं ।।४।।

रखा परस्पर पीढ़ित कोना एकत्रित कीना घाता ।
ताप दिया या चूर्ण किया कूटा मूच्छित कीना काटा ।।५।।

ठहरे चलते फिरते को छिन-भिन्न विराधित किया प्रभो ।
गुणहेतु प्रायश्चित हेतु उन्हें विशोधन हेतु प्रभो ।।६।।
जब तक भगवत् अर्हत् के णवकार मंत्र का जाप्य करूँ ।
तब तक पापक्रिया अरु दुश्चरित्र का बिल्कुल त्याग करूँ ।।७।।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य)

卐 आलोचना 卐

बैठकर—

दोहा

ईर्यापथ से गमन में मैने किया प्रमाद ।
एकेन्द्रिय आदिक सभी जीवों का जो घात ।।१।।
किया यदि चउ हाथ प्रेम नहीं भूमि को देख ।
गुरु भक्ति से पाप सब हो मिथ्या मम देव ! ।।२।।

भगवन् ! ईर्यापथ आलोचन करना चाहूँ मैं रुचि से ।
पूर्वोत्तर दक्षिण पश्चिम चउदिस विदिशा में चलने से ।।३।।
चउकर देख गमन भव्यों का होता पर प्रमाद से मैं ।
शीघ्र गमन से प्राण भूत अरु जीव सत्व को दुःख दीने ।।४।।
यदि किया उपघात कराया अथवा अनुमति दी रुचि से ।
श्री जिनवर की कृपा दृष्टि से सब दुष्कृत मिथ्या होवे ।।५।।

नमोस्तु भगवन् ! देववंदनां करिष्यामि ।

सभी भव्य को अर्थ सिद्ध के कारण उत्तम सिद्ध समूह ।
प्रशस्त दर्शन ज्ञान चरित के प्रतिपादक मैं तुम्हें नमूं ।।१।।
सुरपति के शेखर से चुम्बित पाद पद्म अरुणित केशर ।
तीन लोक के मगल जिनवर महावीर का करूँ नमन ।।२।।
सभी जीव पर क्षमा करूँ मैं सब मुझ पर भी क्षमा करो ।
सभी प्राणियों से मैत्री हो वैर किसी से कभी न हो ।।३।।
राग बंध अरु प्रदोष हर्ष, दीन भाव उत्सुकता को ।
भय अरु शोक रती अरती को त्याग करूँ दुर्भावों को ।।४।।
हा ! दुष्कृत किये हा ! दुश्चिन्ते हा ! दुर्वचन कहे मैंने ।
कर कर पश्चाताप हृदय में झुलस रहा हूँ मैं मन में ।।५।।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से कृत अपराध विशोधन को।
निन्दा गर्हा से युत हो प्रतिक्रमण करूं मन वच तन सों ॥६॥
सभी प्राणियों में समता हो संयम हो शुभ भाव रहे।
आर्तरौद्र दुर्ध्यान त्याग हो यही श्रेष्ठ सामायिक है ॥७॥

भगवन् नमोस्तु ! प्रसीदंतु प्रभुपादो वंदिष्येऽहं एषोऽहं सर्वसावद्ययोगाद् विरतोऽस्मि।

अथ पौर्वाह्णिक[1] देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा, वंदनास्तवसमेतं चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।
(पचांग नमस्कार करे)

खड़े होकर तीन आवर्त एक शिरोनति करके मुक्ताशुक्ति मुद्रा के द्वारा सामायिक दंडक पढ़े।

卐 सामायिक दंडक 卐

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं सिद्ध मंगलं साहू मंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरहंत सरणं पव्वज्जामि सिद्ध सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

ढाई द्वीप अरु दो समुद्र गत पन्द्रह कर्म भूमियों में।
जो अर्हंत भगवत आदिकर तीर्थंकर जिन जितने हैं ॥१॥
तथा जिनोत्तम केवलज्ञानी सिद्ध शुद्ध परि निर्वृतदेव।
पूज्य अंतकृत, भवपारंगत धर्माचार्य धर्म देशक ॥२॥

---

१. मध्यान्ह सामायिक के समय माध्यान्हिक' बोले और सायंकाल की सामायिक के समय 'आपराह्णिक' बोलें।

धर्म के नायक धर्मश्रेष्ठ चतुरंग चक्रवर्ती श्रीमान् ।
श्री देवाधिदेव अरु दर्शन ज्ञान चरित गुण श्रेष्ठ महान ।।३।।
करूँ वंदना मैं कृतिकर्म विधि से ढाई द्वीप के देव ।
सिद्ध चैत्य गुरुभक्ति पठन कर नमूं सदा बहुभक्ति समेत ।।४।।
भगवन् सामायिक करता हूँ सब सावद्य योग तज कर ।
यावज्जीवन वचन कायमन त्रिकरण से न करूँ दुःखकर ।।५।।
नहीं कराऊं नहि अनुमोदूँ हे भगवन् ! अतिचारों को ।
त्याग करूँ निंदूँ गहूँ अपने को मम आत्मा शुचि हो ।।६।।
जब तक भगवत् अर्हद्देव की करूँ उपासना हे जिनदेव ।
तब तक पापकर्म दुश्चारित का मैं त्याग करूँ स्वयमेव ।।७।।

तीन आवर्त एक शिरोनति करके ६ बार महामंत्र का जाप्य, पुनः पंचांग नमस्कार—तीन आवर्त एक शिरोनति करके खड़े होकर मुक्ताशुक्ति मुद्रा द्वारा—

卐 थोस्सामि स्तवन 卐

स्तवन करूँ जिनवर तीर्थंकर केवलि अनंत जिन प्रभु का ।
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज मल से रहित महात्मन् का ।।
लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर श्री जिन का मैं नमन करूँ ।
जिन चउवीस अर्हंत तथा केवलि गण का गुणगान करूँ ।।१।।

ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमतिनाथ का कर वंदन ।
पद्मप्रभ जिन श्री सुपार्श्व प्रभु चन्द्रप्रभ का करूँ नमन ।।
सुविधि नामधर पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन सदा नमूं ।
वासुपूज्य जिन विमल अनंत धर्म प्रभु शान्तिनाथ प्रणमूं ।।२।।
जिनवर कुन्थु अरह मल्लि प्रभु मुनि सुव्रत नमि को ध्याऊँ ।
अरिष्ट नेमि प्रभु श्री पारस वर्धमान पद शिर नाऊँ ।।

इस विध संस्तुत विधुत रजोमल जरा मरण से रहित जिनेश ।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर मुझ पर हों प्रसन्न परमेश ॥३॥

कीर्तित वंदित महित हुए ये लोकोत्तम जिन सिद्ध महान् ।
मुझको दें आरोग्यज्ञान अरु बोधि समाधि सदा गुणखान ॥
चन्द्र किरण से भी निर्मलतर रवि से अधिक प्रभाभास्वर ।
सागर सम गंभीर सिद्धगण मुझको सिद्धि दें सुखकर ॥४॥

(३ आवर्त १ शिरोनति करके वंदनामुद्रा के द्वारा)

卐 चैत्य भक्ति 卐

जय हे भगवन् ! चरण कमल तव कनक कमल पर करें विहार ।
इन्द्र मुकुट की कांति प्रभा से चुंबित शाभें अति सुखकार ॥
जात विरोधी कलुषमना क्रुध मान सहित जन्तु गण भी ।
ऐसे तव पद का आश्रय ले प्रेम भाव को धरें सभी ॥१॥

जय हो श्रेयस्कर धर्मामृत वृद्धिगत महिमाशाली ।
कुगति कुपथ से प्राणिगण को निकालकर दे सुख भारी ॥
नय को मुख्य गौन करने से बहुत भेद युत सुखदाता ।
ऐसे जिनवचनामृतमय हे धर्म ! करो जग से रक्षा ॥२॥

जय हो जैनी वाणी जग में सप्तभंगमय गंगा है ।
व्यय उत्पाद ध्रौव्ययुत द्रव्यों के स्वभाव को प्रगट करे ॥
अनुपम शिवसुख द्वार खोलती अव्यय सुख को देती है ।
विघ्न रहित अरु कर्म धूलि से रहित मोक्ष को देती है ॥३॥

अर्हंत सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुगण सुर वंदित ।
त्रिभुवन वंदित पंच परम गुरु नमोऽस्तु तुमको मम संतत ॥
मोहारि के घातक द्वयरज आवरणों से रहित जिनेश ।
विघ्न-रहस विरहित पूजा के योग्य अर्हंत को नमूं हमेश ॥४॥

क्षमादि उत्तम गुण गण साधक सकल लोक हित हेतु महान् ।
शुभ शिवधाम धरे ले जाकर जिनवर धर्म नमूं सुख खान ॥
मिथ्याज्ञान तमोवृत जग में ज्योतिर्मय अनुपम भास्कर ।
अंगपूर्वमय विजयशील जिनवचन नमूं मैं शिर नत कर ॥५॥

भवनवासि व्यन्तर ज्योतिष वैमानिक में नर लोक में ये ।
जिनभवनों की त्रिभुवन वंदित जिनप्रतिमा को वंदूं मैं ॥
भुवनत्रय में जितने जिनगृह भव विरहित तीर्थंकर के ।
भवाग्नि शांति हेतु नमूं मैं त्रिभुवनपति से अर्चित ये ॥६॥

इस विध प्रणुत पंचपरमेष्ठी श्री जिनधर्म जिनागम को ।
विमल चैत्य चैत्यालय वंदूं बुधजन इष्ट बोधि मम दो ॥
द्युतिकर जिनगृह में अकृत्रिम कृत्रिम अप्रमेय द्युतिमान ।
नर सुर पूजित भुवनत्रय के सब जिनबिंब नमूं गुणखान ॥७॥

द्युति मंडल भासुर तनु शोभित जिनवर प्रतिमा अप्रतिम है ।
जग में वैभव हेतु, उन्हें वंदूं अंजलिकर शिर नत मैं ॥
आयुध विक्रिय भूषा विरहित जिनगृह में प्रतिमा प्राकृत ।
कांति से अनुपम हैं कल्मष, शांति हेतु मै नमूं सतत ॥८॥

परम शांति से कषाय मुक्ति को कहती मनहर अभिरूप ।
भव के अंतक जिनकी प्रतिमा प्रणमूं मन विशुद्धि के हेतु ॥
दुष्कृत पथ रोधक मम सिद्ध भक्ति से हुआ पुण्य जो भी ।
भव-भव में जिनधर्म हि में दृढ़ भक्ति रहे फल मिले यही ॥९॥

सब पदार्थवित् दर्श ज्ञान सम्पत् युत अर्हंत की प्रतिमा ।
यथा बुद्धि मनशुद्धि हेतु गुण कीर्तन करूं अतुल महिमा ॥
श्रीमद् भवनवासि के गृह में भासुर जिनमूर्ति स्वयमेव ।
परम सिद्धगति करें हमारी वंदूं उन्हें करूं नित सेव ॥१०

इस जग में जितनी प्रतिमा हैं कृत्रिम अकृत्रिम सबको ।
मैं वंदूं शिव वैभव हेतु सब जिन चैत्य जिनालय को ।।
व्यंतर के विमान में जिनगृह उनमें अकृत्रिम प्रतिमा ।
संख्यातीत कही हैं वंदूं दोष नाश के हेतु सदा ।।११।।

ज्योतिष देवों के विमान में अद्‌भुत संपत् युत जिनगेह ।
स्वयंभुवा प्रतिमा भी अगणित उन्हें नमूं निज वैभव हेतु ।।
सुरपति के नत मुकुटमणि-प्रभ से अभिषेक हुआ जिनका ।
वैमानिक सुर सेवित प्रतिमा सिद्धि हेतु मैं नमूं सदा ।।१२।।

इस विध स्तुति पथातीत अन्तर बाहिर श्रीयुत अर्हन् ।
चैत्यों के संकीर्तन से मम सर्वास्रव का हो रोधन ।।
अर्हद्‌देव महानद उत्तम तीर्थ अलौकिक हैं जग में ।
त्रिभुवन भविजन तीर्थस्नान से पापों का क्षालन करते ।।१३।।

लोकालोक सुतत्त्व प्रकाशक दिव्यज्ञान जल नित बहता ।
शीलरु सद्व्रत विशाल निर्मल, दो तट से शोभित दिखता ।।
शुक्लध्यानमय राजहंस स्थिर राजत हैं इस नद में ।
मंत्रघोष स्वाध्याय, विविधगुणसमिति गुप्ति बालू चमके ।।१४।

क्षमादि हैं आवर्त सहस्त्रों सर्वदयामय कुसुम खिले ।
लता शोभतीं, दुःसह परिषह भंग तरंगित हैं लहरें ।।
रहित कषाय फेन से, राग-द्वेष आदि शैवाल रहित ।
रहित मोह कीचड़ से, मरणादिक जलचर मकरादि रहित ।।१५।।

ऋषि प्रधान के मधुर स्तव हो विविध पक्षी के शब्द सदृश ।
विविध साधुगण तट हैं आस्रव रोध निर्जरा जल निःसृत ।।
गणधर चक्री इन्द्र आदि जो भव्य प्रवर बहु पुरुष प्रधान ।
कलिमल कलुष दूर करने हित भक्ति से यहां किया स्नान ।।१६।।

इस विध श्री अर्हंत महाप्रभु महातीर्थ गणधर कहते ।
भविजन पाप मल क्षालन हित इसमें अवगाहन करते ।।
अति पावन यह तीर्थ अन्य से अजेय अनुपम है गम्भीर ।
मैं स्नान हेतु उतरा हूँ मम दुष्कृत मल करिये दूर ।।१७।।

क्रोधाग्नि को जीत लिया नहिं नेत्र कमल लालिमा प्रभो !
नहिं विकार उद्रेक अतः प्रभु दृष्टि कटाक्ष रहित तुम हो ।।
मद विषाद से रहित अतः स्मित मुख सदा रहे भगवन् ।
कहता है यह मंदहास्य तब अतंःकरण शुद्धि पूरण ।।१८।।

रागोद्रेक रहित होने से बिन आभूषण शोभित हो ।
प्रकृति रूप निर्दोष तुम्हारा प्रभु निर्वस्त्र मनोहर हो ।।
हिंसा हिंस्य भाव विरहित से आयुध रहित सुनिर्भय हो !
विविध वेदना के क्षय से बिन भोजन तृप्त सदा प्रभु हो ।।१९।।

वृद्धि रहित नख केश प्रभो ! रजमल स्पर्श न हो तन को ।
विकसित कमल, सुचंदन सम है दिव्य सुगन्धित देह विभो !
रवि शशि वज्र दिव्य लक्षण से शोभित तव शुभरूप महान ।
कोटि सूर्य से अधिक चमक फिर भी दर्शकको प्रिय सुखदान ।।२०।।

मोहराग से दूषित, हितपथ द्वेषीजन के सुन उपदेश ।
कलुषमना जन हुये जगत में, शुचि होते वे तुमको देख ।।
अतिशय युत तव मुख दर्शक जन को अपने सन्मुख दिखता ।
शरद् विमल शशि मंडलसम तव आस्यचन्द्र है उदितहुआ ।।२१।।

अमरेश्वर के नमस्कार से मुकुट मणिप्रभ किरणों से ।
चुम्बित चरण सरोरुह भगवन् ! तव शुभ रूप मनोहर है ।।
अन्य देव गुरु तीर्थ उपासक सकल भुवन यह अन्ध समान ।
उन सबको तव रूप पवित्र करे अरु नेत्र करे अमलान ।।२२।।

卐 अंचलिका 卐

बैठकर—

भगवन् चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोष।
उनकी आलोचन करने को इच्छुक हूँ धर मन सन्तोष॥
अधो मध्य अरु उर्ध्वलोक में अकृत्रिम कृत्रिम जिनचैत्य।
जितने भी हैं, त्रिभुवन के चउविध सुर करें भक्ति से सेव॥१॥

भवनवासि व्यंतर ज्योतिष वैमानिक सुर परिवार सहित।
दिव्य गंध दिव चूर्णवास से दिव्य न्हवन करते नितप्रति॥
अर्चें पूजें वंदन करते नमस्कार वे करें सतत।
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं पूजूं वन्दूं नमूं सतत॥२॥

दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय होवे बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं मम जिण गुण संपत् होवे॥३॥

अथ पौर्वाह्लिक-देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्म-क्षयार्थं भावपूजावंदनास्तव—समेतं पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(पंचांग नमस्कार करके खड़े होकर तीन आवर्त एक शिरोनति करें, मुक्ताशुक्तिमुद्रा से पूर्ववत् 'सामायिक दंडक' पढ़कर ३ आवर्त १ शिरोनति पूर्वक कायोत्सर्ग (९ जाप्य) करे पुनः साष्टांग नमस्कार करके खड़े होकर ३ आवर्त १ शिरोनति कर मुक्ताशुक्तिमुद्रा से 'थोस्सामि स्तवन' पढ़कर पुनरपि ३ आवर्त १ शिरोनति करके वंदना-मुद्रा से 'पंचमहागुरु' भक्ति पढ़ें।)

卐 पंचगुरु भक्ति 卐

सुरपति नरपति नागइन्द्र मिल तीन छत्र धारें प्रभु पर।
पंचमहाकल्याणक सुख के स्वामी मंगलमय जिनवर॥

अनंत दर्शन ज्ञान वीर्य सुख चार चतुष्टय के धारी।
ऐसे श्री अर्हंत परमगुरु हमें सदा मंगलकारी ॥१॥

ध्यान अग्निमय बाण चलाकर कर्मशत्रु को भस्म किये।
जन्म जरा अरु मरणरूप त्रय नगर जला त्रिपुरारि हुये॥
प्राप्त किये शाश्वत शिवपुर को नित्य निरंजन सिद्ध बने।
ऐसे सिद्धसमूह हमें नित उत्तम ज्ञान प्रदान करें॥२॥

पंचाचारमयी पंचाग्नि में जो तप तपते रहते।
द्वादश अंगमयी श्रुतसागर में नित अवगाहन करते॥
मुक्तिश्री के उत्तम वर हैं ऐसे श्री आचार्य प्रवर।
महाशील व्रत ज्ञान ध्यान रत देवें हमें मुक्ति सुखकर॥३॥

यह संसार भयंकर दुखकर घोर महावन है विकराल।
दुखमय सिंह व्याघ्र अति तीक्षण नख अरु डाढ़ सहित विकराल॥
ऐसे वन में मार्गभ्रष्ट जीवों को मोक्षमार्ग दर्शक।
हित उपदेशी उपाध्याय गुरु का मैं वंदन करूं सतत॥४॥

उग्र उग्र तप करें त्रयोदश क्रिया चरित में सदा कुशल।
क्षीण शरीरी धर्मध्यान अरु शुक्ल ध्यान में नित तत्पर॥
अतिशय तप लक्ष्मी के धारी महासाधुगण इस जग में।
महा मोक्षपथ गामी गुरुवर हमको रत्नत्रय निधि दें॥५॥

इस संस्तव से जो जन पंचपरमगुरु का वंदन करते।
वे गुरुतर भव-लता काटकर सिद्ध सौख्य संपत् लभते॥
कर्मेन्धन के पुंज जलाकर जग में मान्य पुरुष बनते।
पूर्ण ज्ञानमय परमाह्लादक स्वात्म सुधारस को चखते॥६॥

दोहा

अर्हत् सिद्धाचार्य अरु पाठक साधु महान ।
पंचपरमगुरु हों मुझे भव-भव में सुखखान ॥

卐 अंचलिका 卐

बैठकर— दोहा

भगवन् पंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्ग ।
करके आलोचन विधि करना चाहूं सर्व ॥१॥

अष्ट महाशुभ प्रातिहार्य संयुत अर्हंत जिनेश्वर हैं ।
अष्ट गुणान्वित ऊर्ध्वलोक मस्तक पर सिद्ध विराज रहे ॥
अठ प्रवचन माता संयुत हैं श्री आचार्य प्रवर जग में ।
आचारादिक श्रुतज्ञानामृत उपदेशी पाठक गण हैं ॥२॥

रत्नत्रय गुण पालन में रत सर्वसाधु परमेष्ठी हैं ।
नितप्रति अर्चूं पूजूं वंदूं नमस्कार मैं करूं उन्हें ॥
दुःखों का क्षय, कर्मों का क्षय होवे बोधि लाभ होवे ।
सुगतिगमन मुझ समाधिमरणं हो जिनगुण सम्पति होवे ॥३॥

अथ पौर्वाह्णिक देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं चैत्य-पंचगुरु-भक्ती कृत्वा तद्धीनाधिक-दोषविशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(पूर्ववत् पंचांग नमस्कार, सामायिक दंडक, ९ जाप्य । थोस्सामि स्तवन करके समाधिभक्ति पढ़े ।)

卐 समाधि भक्ति 卐

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।

शास्त्रों का अभ्यास, जिनेश्वर नमन सदा सज्जन संगति ।
सच्चरित्र के गुण गाऊँ अरु दोष कथन में मौन सतत ॥

सबसे प्रियहित वचन कहूँ निज आत्मतत्त्व को नित भाऊँ ।
यावत् मुक्ति मिले तावत् भव-भव में इन सबको पाऊँ ॥१॥

तव चरणाबुज मुझ मन में, मुझ मन तव लीन चरण युग में ।
तावत् रहे जिनेश्वर यावत् मोक्ष प्राप्ति नहिं हो जग में ॥

अक्षर पद से हीन अर्थ मात्रा से हीन कहा जो मैं ।
हे श्रुत मातः ! क्षमा करो सब मम दुःखों का क्षय होवे ॥२॥

卐 अंचलिका 卐

बैठकर—

दोहा

भगवन् ! समाधि भक्ति अरु करके कायोत्सर्ग ।
चाहूँ आलोचन करन दोष विशोधन हेतु ॥१॥

रत्नत्रय स्वरूप परमात्मा उसका ध्यान समाधि है ।
नितप्रति उस समाधि को अर्चूं पूजूँ वंदूँ नमूँ उसे ॥
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय होवे बोधि लाभ होवे ।
सुगति गमन हो समाधिमरणं मम जिनगुण संपत् होवे ॥२॥

(अनंतर यथावकाश आत्मध्यान, जाप्य आदि करे)

卐——卐

अथ ऋषिमण्डल स्तोत्र

शंभु छंद

आदी अक्षर 'अ' अंताक्षर 'ह्' इन दो को ले लेने में।
'ख' से लेकर 'व' पर्यंते सब अक्षर आ जाते इनमें॥
अग्नी ज्वाला 'र' बीजाक्षर ऊपर यह बिंदु सहित सुंदर।
'अर्हं' यह मंत्र बना सुंदर यह मंत्र मनोमल शोधनकर॥१॥

ॐ अर्हंतों को नमस्कार, ॐ सिद्धों को द्वय नमस्कार।
ॐ सर्वसूरि को नमस्कार, ॐ पाठक गण को नमस्कार॥
ॐ सर्व साधु को नमस्कार, ॐ सम्यग्दृग् को नमस्कार।
ॐ शुद्ध ज्ञान को नमस्कार, ॐ चारित को द्वय नमस्कार॥२॥

इन अरहंतादि आठपद को निज निज बीजाक्षर तक करके।
अठ दिशमें स्थापन करते, ये लक्ष्मीप्रद हैं सुख करते॥
पहला पद शिर का रक्षक हो, दूजा मस्तक का त्राण करे।
तीजा पद दोनों दृग् रक्षे, चौथा पद नासा त्राण करे॥३॥

पंचम मुख का रक्षाकर हो, छट्ठा पद ग्रीवा को रक्षे।
सप्तम पद नाभितक रक्षे, अष्टम पद पादों तक रक्षे॥
पहले प्रणवाक्षर ॐ पुनः 'ह्' को रकार औ बिंदु सहित।
दूजी तीजी पंचम छट्ठी सप्तम अष्टम दशवीं द्वादश॥४॥

इन मात्रा युत करके पाँचों, पद के पहले पहले अक्षर।
फिर सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्र विभक्ती युत सुखकर॥
हो ह्रीं नमः बस इसविध से अतिशायी मंत्र बना सुन्दर।
यह ऋषिमंडल स्तवनयंत्र का, मूलमंत्र है श्रेयस्कर॥५॥

नव बीजाक्षर युत सिद्धमंत्र, अष्टादश शुद्धाक्षर इसमें ।
आराधक को शुभफलदायी, अति भक्ती से जपिये नितमें ।।
जंबूतरुधारी प्रथमद्वीप यह लवणोदधि से वेष्टित है ।
आठों दिश अधिपति अर्हदादि इन आठ पदों से शोभित है ।।६।।

इस जंबूद्वीप मध्य मेरु, जो लाखों कूटों से शोभे ।
ऊपर ऊपर ज्योतिर्वासी, देवों के भ्रमणों से शोभे ।।
इसपर स्थापित ह्रीं मंत्र, उसपर अर्हंत बिंब सुन्दर ।
उनको ललाट में स्थित कर मैं नमूं नित्य कर्माञ्जनहर ।।७।।

अर्हंतदेव ये अक्षय हैं, निर्मल विशाल अज्ञानरहित ।
निर्मान शांत इच्छाविरहित, शुभ सार सारतर औ सात्विक ।।
राजस कर्मानिराश हेतु तामस है विरस शुद्ध तैजस ।
ज्योत्स्नासम साकार तथापी, निराकार औ सरस विरस ।।८।।

पर उत्तम हैं उत्तमतर औ, उत्तमतम सर्वोत्तम इससे ।
पर तथा परापर परातीत, पर का परपरापरं कहते ।।
तनसहित सकल तनरहित निकल, संतुष्ट पूर्णभृत भ्रांतिरहित ।
निर्लेप निरंजन निराकांक्ष, संशय विरहित क्षण भंगरहित ।।९।।
ब्रह्मा ईश्वर औ बुद्ध शुद्ध, वे महादेव ज्योतीस्वरूप ।
सब लोकालोकप्रकाशी है, अर्हंत जिनेश्वर चित्स्वरूप ।।
जो सांत सरेफ बिन्दुमंडित, चौथे स्वर से युत होता है ।
वह 'ह्रीं' बीज ध्यानादि योग्य अर्हंत नामका होता है ।।१०।।

वह श्वेत वर्ण है श्याम वर्ण है लाल वर्ण औ नील वर्ण ।
औ पीतवर्ण भी है उत्तम, सर्वोत्तम माना महावर्ण ।।
इस ह्रीं बीज में स्थित हैं, निज निज वर्णों से युक्त सभी ।
वृषभादि जिनेश्वर इस स्तोत्र में संस्थित ध्यानयोग नित भी ।।११।।

सित अर्धचंद्रसम नाद बिन्दु नीली मस्तक है लालवर्ण।
सब तरफ हकार स्वर्णसम 'है' ईकार कहा है रहित वर्ण ॥
इस तरह 'ह्रीं' है पंचवर्ण, उन उन वर्णों के तीर्थंकर।
उस उस थल में स्थापित कर, उनसबकोनमनकरोसुखकर ॥१२॥

श्री चंद्रप्रभ औ पुष्पदंत, शशिसदृश नाद में स्थित हैं।
श्री नेमिनाथ औ मुनिसुव्रत, बिन्दू के मध्य विराजित है ॥
श्री पद्मप्रभू औ वासुपूज्य मस्तक के मध्य अधिष्ठित हैं।
श्री जिनसुपार्श्व औ पार्श्वनाथ, ईकार वर्ण के आश्रित हैं ॥१३॥

सोलह तीर्थंकर शेष सभी, ह और रकार में राजित हैं।
मायाबीजाक्षर ह्रीं मध्य, चौबीसों जिनवर आश्रित हैं ॥
ये रागद्वेष औ मोह रहित, सब पाप रहित चौबिस जिनवर।
संपूर्ण लोक में भव्यों के हेतू होवें वे नित सुखकर ॥१४॥

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, सर्पों से मुझे न हो बाधा ॥
देवाधिदेव…। गोहों से मुझे न हो बाधा ॥१५॥

देवाधिदेव…। बिच्छू से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव…। नागिनी से हो न मुझे बाधा ॥१६॥

देवाधिदेव…। काकिनी से हो न मुझे बाधा।
देवाधिदेव…। डाकिनी से हो न मुझे बाधा ॥१७॥

देवाधिदेव…। साकिनी से हो न मुझे बाधा।
देवाधिदेव…। राकिनी से हो न मुझे बाधा ॥१८॥

देवाधिदेव…। लाकिनी से हो न मुझे बाधा।
देवाधिदेव…। शाकिनी से हो न मुझे बाधा ॥१९॥

देवाधिदेव....। हाकिनी से हो न मुझे बाधा।
देवाधिदेव....। भैरव से मुझे न हो बाधा ।।२०।।

देवाधिदेव....। राक्षस से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। व्यंतर से मुझे न हो बाधा ।।२१।।

देवाधिदेव....। भेकस से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। लीनस से मुझे न हो बाधा ।।२२।।

देवाधिदेव....। ग्रहों से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। चोरों से मुझे न हो बाधा ।।२३।।

देवाधिदेव....। अग्नी से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। सींगवालों से नहिं हो बाधा ।।२४।।

देवाधिदेव....। दाढ़वालों से नहिं हो बाधा।
देवाधिदेव....। पक्षी से मुझे न हो बाधा ।।२५।।

देवाधिदेव....। दैत्यों से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। मेघों से मुझे न हो बाधा ।।२६।।

देवाधिदेव....। सिंहों से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। सूकर से मुझे न हो बाधा ।।२७।।

देवाधिदेव....। चीतों से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। हाथी से मुझे न हो बाधा ।।२८।।

देवाधिदेव....। राजा से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। शत्रु से मुझे न हो बाधा ।।२९।।

देवाधिदेव....। ग्रामिण से मुझे न हो बाधा।
देवाधिदेव....। दुर्जन से मुझे न हो बाधा ।।३०।।

देवाधिदेव....। रोगों से मुझे न हो बाधा ।
देवाधिदेव....। सब जन से मुझे न हो बाधा ॥३१॥

श्री गौतम गुरु की जो मुद्रा, उससे जग में श्रुत ज्ञान लाभ ।
उनसे भी अधिक ज्योतिधारी, अर्हंत सर्व निधि ईश ख्यात ॥
पातालवासि भावन व्यंतर, भूपीठवासि ज्योतिष सुरगण ।
ये देव करें रक्षा मेरी, दिव के भी कल्पवासि सुरगण ॥३२॥

जो अवधिज्ञान ऋद्धीयुत मुनि, जो परमावधि ऋद्धियुत हैं ।
वे मेरी रक्षा करें सर्वतरफी वे सभी दिव्य मुनि हैं ॥
ॐ श्री ह्री धृति लक्ष्मी गौरी, चंडी सरस्वती जया अम्बा ।
विजया क्लिन्ना अजिता नित्या औ मदद्रवा औ कामांगा ॥३३॥

कामवाणा देवी सानंदा सुरि नंदमालिनी औ माया ।
मायाविनि रौद्री कलादेवि, कालीदेवि औ कलिप्रिया ॥
जिनशासन रक्षाकर्त्री ये, सब महादेवियां हैं जग में ।
ये मुझको कांति लक्ष्मी धृति, मति देवें क्षेम करें जग में ॥३४॥

दुर्जन वेताल पिशाच भूत, औ क्रूर दैत्य गण हैं जितने ।
देवाधिदेव के प्रभाव से, वे सब उपशांत रहें जग में ॥
श्री ऋषिमंडल स्तोत्र दिव्य यह गोप्य तथा अतिदुर्लभ है ।
जगरक्षाकृत निर्दोष तीर्थंकृत, वीरप्रभू से भाषित है ॥३५॥

रण नृपदरबार अग्नि जल गज औ दुर्ग सिंह के संकट में ।
शमसान विपिनमें मंत्र जाप्य, मनुजों का त्राण करे सच में ॥
जो राज्यभ्रष्ट निज राज्य लहे, पदभ्रष्ट मनुज निज पद पाते ।
इसमें सन्देह नहीं लक्ष्मी, से च्युत निजलक्ष्मी भी पाते ॥३६॥

भार्या अर्थी भार्या लभते, सुत अर्थी सुत को पा जाते ।
स्तोत्र स्मरण मात्र से ही, धन अर्थी धन भी पा जाते ॥

कांचन रूपा अथवा कांसे, पर लिखकर जो पूजे इसको ।
उसके घर शाश्वत अष्टमहा, सिद्धी रहती है यह समझो ।।३७।।

यह मंत्र भूर्जपत्रे पर लिख, मस्तक ग्रीवा या बाहू में ।
जो धारे दिव्य यंत्र उसके, सब भय विनाश होते क्षण में ।।
वह भूत प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य, औ पिशाच गण के कष्टों से ।
छुट जाता नहिं संशय इसमें, कफ वात पित्त के रोगों से ।।३८।।

जो अधो मध्य औ ऊर्ध्वलोक में जिनप्रतिमायें शाश्वत हैं ।
उनके दर्शन स्तुति वंदन से, जो फल वह स्तुति पठन का है ।।
यह महास्तोत्र अति गोपनीय, जिस किसको नहिं देने का है ।
मिथ्यादृष्टी को देने से, शिशुघात पाप पद पद पर है ।।३६।।

आचाम्ल आदि तप कर चौबिस, जिनवर की पूजाविधि करके ।
आठ हजार करे विधिवत्, सब कार्य सिद्ध होते उसके ।।
जो प्रतिदिन प्रातः इसी मंत्र की एक सौ आठ जप करते हैं ।
उनके शरीर में व्याधि न हो, सुख संपत्ती वो लभते हैं ।।४०।।

जो आठ मास तक नित प्रातः, इस महास्तोत्र को पढ़ते हैं ।
वे निजमें तेजपुंज अर्हंत, बिम्ब का दर्शन करते हैं ।।
अर्हंतबिंब दर्शन होनेपर निश्चित ही सप्तम भव में ।
वे मुक्तीपद पा लेते है, परमानंद संपति युत सच में ।।४१।।

दोहा

स्तोत्र महास्तोत्र यह, सब स्तुति में सर्वोच्च ।
स्मरण पठन और जाप से, जन हों अघ से मुक्त ।।२४।।

卐—卐

आरती पंचपरमेष्ठी की

इह विधि मंगल आरति कीजे
पंच परमपद भज सुख लीजे।

पहली आरति श्रीजिनराजा
भवदधि पार उतार जिहाजा ।।इह विधि०

दूजी आरति सिद्धन केरी
सुमिरन करत मिटे भवफेरी ।।इह विधि०

तीजी आरति सूरिमुनिन्द्रा
जन्म मरण दुख दूर करिन्दा ।।इह विधि०

चौथी आरति श्री उवझाया
दर्शन देखत पाप पलाया ।।इह विधि०

पाचवीं आरति साधु तिहारी
कुमति विनाशन शिव अधिकारी ।।इह विधि०

छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी
श्रावक वन्दों आनन्दकारी ।।इह विधि०

सातवीं आरति श्रीजिनवाणी
द्यानत स्वर्ग मुक्ति सुखदानी ।।इह विधि०

संध्या करके आरति कीजे
अपनों जन्म सफल कर लीजे ।।इह विधि०

जो यह आरति पढ़ें पढ़ावें
सो नर मन वांछित फल पावें ।।इह विधि०

卐—卐

आरती भगवान् महावीर स्वामी की

ॐ जय तिहुं लोक पती, स्वामी जय तिहुं लोक पती।
वर्धमान महावीरा, सन्मति बालयती ॥ॐ...॥

काश्यप कुल के भूषण, त्रिशला मात ललन।
राय सिद्धारथ प्यारे, अतिवीरा भगवन ॥ॐ...॥

धन्य हुआ कुन्डलपुर, जन्मे आप जहाँ।
हुवा चैत सित तेरस, मंगलगान वहाँ ॥ॐ...॥

ममता माया बन्धन, तोड़ विराग लिया।
नव यौवन सुख त्यागे, मुनि पद धार लिया ॥ॐ...॥

सत्य अहिंसा करुणा, जग में विस्तारी।
परम ज्योति ने मेटा, मिथ्यातम भारी ॥ॐ...॥

जिओ और जीने दो, जग सन्देश दिया।
कार्तिक कृष्ण अमावस, मोक्ष प्रवेश किया ॥ॐ...॥

शुभ भावों से वंदे, पूजें गुण गाएँ।
तीन लोक निधियाँ ले, 'प्रभु' सा बन जाएँ ॥ॐ...॥

卐——卐

आरती श्री शान्तिनाथ भगवान् की

आरति करो रे,

श्री शांतिनाथ सोलहवें जिनकी आरति करो रे।
प्रभु आरति से सब जन का मिथ्यात्व तिमिर नश जाता है।
भव भव के कल्मष धुलकर सम्यक्त्व उजाला आता है।।

आरति करो रे,

श्री मोहमहामदनाशक प्रभु की आरति करो रे।
प्रभु ने जन्म लिया जब भू पर नरकों में भी शांति मिली।
ऐरा देवी के आँगन में आनन्द की इक लहर चली।।

आरति करो रे,

जय विश्वसेन के प्रिय नंदन की आरति करो रे।
शान्तिनाथ निज चक्ररत्न से षट्खंडाधिपती बने।
इस वैभव में शांति न लख कर रत्नत्रय के धनी बने।।

आरति करो रे,

श्रीशांतिनाथ पंचम चक्री की आरति करो रे।
जो प्रभु के दरबार में आता इच्छित फल को पाता है।
आत्मशक्ति को विकसित कर 'माधुरी' मोक्षपद पाता है।।

आरति करो रे,

मुक्तिश्री के अधिनाथ की आरति करो रे।

卐——卐

आरती भगवान् बाहुबली की

—कु० माधुरी शास्त्री

[तर्ज—जयति जय जय माँ सरस्वती जयति वीणा वादिनी]

जयति जय जय गोम्मटेश्वर, जयति जय बाहूबली ।
जयति जय भरताधिपति विजयी अनूपम भुजबली ।।
श्री आदिनाथ युगादिब्रह्मा त्रिजगपति विख्यात हैं ।
गुणमणि विभूषित आदिप्रभु के भरत और बाहूबली ।।
जयति जय०

वृषभेश जब तप वन चले तब न्याय नीति कर गए ।
साकेतनगरीपति भरत पोदनपुरी बाहूबली ।।
जयति जय०

षट्खंड जीता भरत ने मन की नहीं आशा बुझी ।
निज चक्ररत्न चला दिया फिर भी विजयि बाहूबली ।।
जयति जय०

सब अखिर राज्य विभव तजा कैलाशगिरि पर जा बसे ।
इक वर्ष का ले योग तब निश्चल हुए बाहूबली ।।
जयति जय०

तन से प्रभू निर्मम हुए वन जन्तु क्रीड़ा कर रहे ।
सिद्धी रमा वरने चले प्रभु वीर बन बाहूबली ।।
जयति जय०

प्रभु बाहुबलि की नग्न मुद्रा सीख यह सिखला रही ।
सब त्याग करके 'माधुरी' तुम भी बनो बाहूबली ।।
जयति जय०

卐——卐

आरती चौबीस भगवान् की

मैं तो आरती उतारूँ रे चौबीसों जिनवर की ।
जय जय चौबीसों जिनवर, जय जय जय ।।
पहली आरती करूँ कैलाश, गिरिवर अनुपम की ।
गिरिवर अनुपम की ।

मुक्ति पाये जहाँ वृषभेश, नाभि के नन्दन की ।
तीर्थ करतार कहे, युग के आधार रहे, महिमा है अपरम्पार,
हो हो जिनकी महिमा है अपरम्पार । मै तो……

दूजी आरती करूँ सिद्ध क्षेत्र, चम्पापुरिवर की । चम्पापुरिवर की ।
वासुपूज्य जिनेश्वर ध्याय, वसुपूज्य नंदन की । वसुपूज्य नंदन की ।
भक्ति करो झूम-झूम, नृत्य करो घूम-घूम, जीवन सुधारो रे,
हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारो रे । मैं तो ….

तीजी आरती महागिरिराज, गिरनार पर्वत की ।
गिरनार पर्वत की ।

राजुल त्याग चले नेमिनाथ, सिद्धि को वरने को ।
सिद्धि को वरने को ।

दीक्षा ले साधु बने, मुक्ति के कांत बने, सिद्ध लोक विराजे जा ।
हो हो सिद्ध लोक विराजे जा ।मैं तो……।

चौथी आरती करूँ निर्वाण पावापुरिवर की ।
पावापुरिवर की ।

त्रिशलानन्दन है वीर महावीर, मुक्ति के स्थल की ।
मुक्ति के स्थल की ।

कुण्डलपुर जन्म हुआ, कण-कण पवित्र हुआ, सिद्धार्थ के दरबार ।
हो हो राजा सिद्धार्थ के दरबार ।मैं तो.......

पंचम आरती करूँ उस तीर्थ, अद्भुत अनुपम की ।
अद्भुत अनुपम की ।

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र, बीस जिनेश्वर की ।
बीस जिनेश्वर की ।

'माधुरी' गुणगान करे, मन में यह आश धरे, भक्ति करूँ दिन रात ।
हो हो प्रभु भक्ति करूँ दिन रात ।मैं तो.......

卐——卐

आरती ज्ञानमती माताजी की

ॐ जय जय ज्ञानमती, माता जय जय ज्ञानमती ।
धन्य धरा हो गई तुम्हें पा, विदुषी बालयती ।।ॐ जय०
जन्मभूमि टिकैतनगर की सचमुच भाग्यवती । माता०
जाने कितने बना दिये हैं, तुमने बालयती ।।ॐ जय०
छोटेलाल पिता ने तुमको, पाकर सब पाया । माता०
धन्य मोहिनी माँ जिनका यश, जग भर में छाया ।।ॐ जय०
जो भी आया चरण शरण में, आकर के हरषा । माता०
आठों याम किया करती हो, ज्ञानामृत बरषा ।।ॐ जय०
हे जगमाता ज्ञानप्रदाता, अब न अबार करो । माता०
हम सब शरण तुम्हारी, हमको पार करो ।।ॐ जय०
यही हमारी अटल कामना, सुनिये बालसती । माता०
'सरस' तुम्हारी सेवा करके, पाऊँ परमगती ।।ॐ जय०

卐——卐

आरती जम्बूद्वीप की

ॐ जय जम्बूद्वीप जिनं, स्वामी जय जम्बूद्वीप जिनं ।
इसके बीचोंबीच सुशोभित स्वर्णाचल अनुपम ॥ॐ जय०॥
जम्बू द्रुम से सार्थक, जम्बूद्वीप कहा । स्वामी०
मणिमय नग चैत्यालय-२, से युत शोभ रहा ॥ॐ जय०॥
मेरु सुदर्शन पूर्व अपर में, बत्तिस हैं नगरी । स्वामी०
तीर्थंकर की सतत जहाँ पर-२, दिव्यध्वनि खिरती ॥ॐ जय०॥
सिद्धकूट अरु सुरगृह में भी, जिन प्रतिमा शाश्वत । स्वामी०
सिद्धि सहित ऋषि वंदन करके-२, पीते परमामृत ॥ॐ जय०॥
सर्व केवली तीर्थंकर अरु, परमेष्ठी होते । स्वामी०
इस ही भू पर जन्मे-२, अरु शिव भी पहुंचे ॥ॐ जय०॥
इसी हेतु यह द्वीप जगत में, पावन पूज्य कहा । स्वामी०
तीर्थंकर जन्माभिषेक भी-२, करते इन्द्र जहाँ ॥ॐ जय०॥
हस्तिनागपुर में यह रचना, वैभवपूर्ण बनी । स्वामी०
ज्ञानमति की अमरकृति यह-२, सुन्दर सौख्यघनी ॥ॐ जय०॥
अठसत्तर जिनगेह अकृत्रिम, अतिशय युत शोभें । स्वामी०
लहें "माधुरी" क्रम से शिवपुर-२, जो जिनवर पूजें ॥ॐ जय०॥

卐——卐

श्री आदिनाथ भरत बाहुबली भगवान की आरती

—प्रवीण चंद्र शास्त्री

तर्ज—ॐ जय वर्धमान प्रभो—

ॐ जय जय अवतारी, स्वामी जय जय अवतारी ।
आदिनाथ भरतेश नमूँ मैं—२, बाहुबली दुःखहारी ॥
ॐ जय जय·······

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ जिन, भरत प्रथम चक्री ॥स्वा०
कामदेव हैं पहले—२, बाहुबली जित चक्री ॥
ॐ जय जय·······

आदि सु ब्रह्मा, मोक्ष विधाता, सहस अष्ट नामा ॥स्वा०
तीनों शिवपथ स्वामी २, अनन्त गुण धामा ॥
ॐ जय जय·······

तीनों ही त्रिपुरारी जानों, तीन भुवन स्वामी ॥स्वा०
पाप निकंदन मानो—२, हैं अन्तर्यामी ॥
ॐ जय जय·······

सब दुःखहारी आनन्दकारी, सहजानन्द विभो ॥स्वा०
अनन्त चतुष्टय धारी—२, परमानन्द प्रभो ॥
ॐ जय जय·······

दीन बंधु दुःख हरण जिनेश्वर, दीनन प्रतिपाला ॥स्वा०
पाप ताप छयकारी—२, त्रिभुवन में आला ॥
ॐ जय जय·······

रिद्धि सिद्धि नव निधि समंवित, आरति दुःखहारी ॥स्वा०
जो करते भक्ति से—२, होते सुखधारी ॥
ॐ जय जय·······

卐——卐

श्री शांति कुन्थ अरनाथ भगवान की आरती

—प्रवीण चंद्र शास्त्री

ॐ जय अन्तर्यामी, स्वामी जय अन्तर्यामी ।
शांति कुंथ अर वंदूं–२, त्रिभुवन के स्वामी ॥१॥
ॐ जय.......

गजपुर नगर में प्रभु के, चार कल्याण हुए ।स्वामी०
गर्भ जन्म तप केवल–२, सुख की खान हुए ॥२॥
ॐ जय.......

पंचम चक्री द्वादश रतिपति, सोलम तीर्थेश्वर ।स्वामी०
पंच कल्याणक भर्ता–२, सबके जगदीश्वर ॥३॥
ॐ जय.......

षष्टम चक्री मकरध्वजपति, सतरम् कुंथ जिनम् ।स्वामी०
मन वच तन से वंदूं–२, त्रय पद धार जिनम् ॥४॥
ॐ जय.......

सप्तं चक्री अर जिन, मीनकेतु धारी ।स्वामी०
अष्टादशम् जिनेश्वर–२, मोह मल्ल मारी ॥५॥
ॐ जय.......

त्रयपद धारी आनन्दकारी, सब मंगलकर्ता ।स्वामी०
शांति कुंथ अर देवा–२, भुव भव अघ हर्ता ॥६॥
ॐ जय.......

आरति सब दुःख टारत, मंगलरूप सदा ।स्वामी०
मन वांछित फलदाई–२, दुःख न होत कदा ॥७॥
ॐ जय.......

卐——卐

श्री नेमिनाथ भगवान की आरती

—प्रवीणचंद्र शास्त्री

तर्ज—मन डोले मन मेरा डोले………नागिन

नेमी स्वामी अन्तर्यामी करुणानिधि अवतार रे,
प्रभु आज उतारूँ आरतियाँ ।
चरण कमल में नेमी जिन के, हरि परिकर सह आया,
मणिमय दीप रतनमय वाती, स्वर्णथाल मन भाया ।
हो स्वामी….
भवभार हरो, सुखसार भरो, करो मोहतिमिर का नाश रे ॥
प्रभु….
नेमी स्वामी—……—

समुद्रविजय सुत शिवा के नंदन, वंदन कर हर्षाया,
कार्तिक सुदी छट्ठी के दिन, में गर्भ मंगल गाया ।
हो स्वामी—
श्रावण शुक्ला, छट्ठी शुकला, लियो जन्म द्वारिकानाथ रे ॥
प्रभु….
नेमी स्वामी………—

पशुओं के क्रंदन को सुनकर, प्रभु अतिशय घबराये,
राजुल को तजकर के प्रभु ने, पशुअन बंध छुड़ाये ।
प्रभु ने—
श्रावण शुक्ला, छटवीं सुकला, प्रभु तप को गये गिरनार रे ॥
प्रभु—….
नेमी स्वामी….—……

आश्विन शुक्ला एकम् सुन्दर, केवलज्ञान प्रकाशा,
अषाढ़ शुक्ला सप्तमि के दिन, अष्ट कर्म को नाशा ।
प्रभु ने........

गिरनार गिरी, लहमुक्त श्री, भये त्रिभुवन कृपा निधान रे ।
प्रभु........

नेमी स्वामी........

इनकी आरति सुखसंचारी, रोग शोक परिहारी,
भव्य प्रवीन सब मिल करते, लहते वांछित सारी ।
प्रभु जी........

हम सब ध्यावें, वांछित पावें, शिव लहें महा सुख कार रे ।
प्रभु........

नेमी स्वामी........

卐——卐

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

—प्रवीण चंद शास्त्री

पारस प्रभु के चरणकमल की, आरति है सुखकार।
मणिमय दीपक लेकर करते-२, आरति हम दुःखहार ।।कि स्वामी
जिनवर हो पारस प्यारे वामा के राजदुलारे,
हम सब उतारें तेरी आरती, हो बाबा हम सब..........
पारस..............

वैशाख कृष्ण द्वितीया काशी में, वामा ने उर धार,
विश्वसेन नृप के घर आये-२, त्रिभुवन मंगलकार ।।हो स्वामी
काशी के तुम हो स्वामी, तुम ही हो अन्तर्यामी ।।हम०
पारस............

पौष कृष्ण ग्यारस को जन्मे, हर्षे इन्द्र अपार,
मेरु शिखर पर हरि ले जाकर-२, कीन्हा न्हवन संभार ।।हो०........
इसी दिन तप को धारा, कमठ का मान विदारा ।।हम०........
पारस..............

धरणेन्द्र और पद्मावति मां ने, नाग का छत्र लगाया,
चरण कमल की सेवा करके-२, पाप को दूर भगाया ।।हो०........
संकट मिटाने वाले, वांछित दिलाने वाले ।।हम०....
पारस..............

चैत्रकृष्ण चतुर्थी पाया, प्रभु ने केवलज्ञान,
सावन सुदी सप्तमी पाया-२, श्री सम्मेद निर्वान ।।हो०.....
चिंतामणि कल्पतरू हो, त्रिभुवन में आप गुरु हो ।।हम०......
पारस..............

पाप ताप और रोग शोक भय, हरते तुम्हीं प्रवीन,
चरण शरण में हम सब आये-२, करो हमें स्वाधीन ।।हो०........
सम्मेद वाले बाबा, सहस्त्रफणा बाबा ।।हम०........

卐——卐

पू० आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माता जी की आरती

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आये तेरे द्वार पे
शुभ मंगल दीप प्रजाल लिया

शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं ।
उन्निस सौ चौंतिस में माता मोहिनी भी हरषाईं, हो माता....
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे
शुभ मंगल दीप प्रजाल लिया ।।हे बाल०

बाल्यकाल से ही मैना के मन वैराग्य समाया ।
तोड़ जगत के बन्धन सारे छोड़ी ममता माया, हो माता....
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे
शुभ मंगल दीप प्रजाल लिया ।।हे बाल०

प्रथम देशभूषण गुरुवर से लिया क्षुल्लिका दीक्षा ।
वीरसागर आचार्य से पाई आत्मज्ञान की शिक्षा, हो माता....
बन वीरमती से ज्ञानमती उपकार किया संसार पे
शुभ मंगल दीप प्रजाल लिया ।।हे बाल०

यथा नाम गुण भी हैं वैसे तुम हो ज्ञान की दाता ।
तुम चरणों में आकर के हर जनमानस हरषाता, हो माता....
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण कर चलीं स्वात्म विश्राम पे
शुभ मंगल दीप प्रजाल लिया ।।हे बाल०

मंगल आरति करके माता यही याचना करते ।
अपने से गुण मुझको देकर ज्ञान की सरिता भर दे, हो माता....
भव पार करो, उद्धार करो "माधुरी" यही जग सार है
शुभ मंगल दीप प्रजाल लिया ।।हे बाल०

卐——卐

पारसनाथ स्तुति

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।तुमसे०

निशदिन तुमको जपूं, पर से नेहा तजूं, जीवन सारा,
तेरे चरणों में बीते हमारा ।तुमसे०

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा देवी के सुत प्राण प्यारे ।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा, संयम धारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।तुमसे०

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आए, देवी पद्मावती मंगल गाए ।
आशा पूरो सदा, दुःख नहिं पावे कदा, सेवक थारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।तुमसे०

जग के दुःख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जामन मरण, होवे ऐसा जतन, पारस प्यारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।तुमसे०

बारम्बार तुम्हें शीश नमाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ ।
"पंकज" व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।तुमसे०

卐——卐

सुदर्शनमेरु वंदना

—ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकरस्नपननीरपवित्रजातः,
तुङ्गोऽस्ति यस्त्रिभुवने निखिलाद्रितोऽपि ।
देवेन्द्रदानवनरेन्द्रखगेन्द्रवंद्यः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं स्तवीमि ॥१॥

यो भद्रसालवननंदनसौमनस्यैः, भातिह
पांडुकवनेन च शाश्वतोऽपि ।
चैत्यालयान् प्रतिवनं चतुरो विधत्ते,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं स्तवीमि ॥२॥

जन्माभिषेकविधये जिनबालकानाम्,
वंद्याः सदा यतिवरैरपि पांडुकाद्याः ।
धत्ते विदिक्षु महनीयशिलाश्चतसृः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं स्तवीमि ॥३॥

योगीश्वराः प्रतिदिनं विहरन्ति यत्र,
शान्त्यैषिणः समरसैकपिपासवश्च ।
ते चारणर्द्धिसफलं खलु कुर्वतेऽत्र,
तं श्री सुदर्शनगिरिं सततं स्तवीमि ॥४॥

ये प्रीतितो गिरिवरं सततं स्तुवन्ति,
वंदन्त एव च परोक्षमपीह भक्त्या ।
ते प्राप्नुवंति किल ज्ञानवतीं श्रियं हि,
तं श्री सुदर्शनगिरिं सततं स्तवीमि ॥५॥

卐——卐

कोटि कोटिशः वन्दनीय, जिनतीर्थ हस्तिनापुर है।

—कल्याणकुमार जैन 'शशि'

गौरव के पृष्ठों में इसकी महिमा अकथ अगम है,
इस केवलज्ञानी वसुधा का कण-कण देवोपम है,
जो मुमुक्षु है हुआ उन्हें, इसका यश हृदयंगम है,
घोर अशुभकर्मों का होता, यहाँ सहज उपशम है।
इसकी आत्म-रश्मियों से होता आलोकित उर है,
कोटि कोटिशः वन्दनीय, जिनतीर्थ हस्तिनापुर है।

इस रमणीक शांति नगरी की, रचना नैसर्गिक है,
यह जिनबिम्ब प्रतिष्ठाओं का केन्द्र ऐतिहासिक है,
जम्बूद्वीप कलाओं का उद्घोषक स्वाभाविक है,
तीर्थङ्कर बिहार की धरती, चर्चित आध्यात्मिक है।
चक्रवर्तियों का गौरव एकत्रित यहाँ प्रचुर है,
कोटि कोटिशः वन्दनीय जिनतीर्थ हस्तिनापुर है।

श्री अकम्पनाचार्य संत ने, बलि को यहाँ हराया,
मुनि रक्षार्थ विष्णु मुनिवर ने ऋद्धिशौर्य दरशाया,
यहाँ ऋषभ को प्रथम बार, आहार हेतु पड़गाया,
जिन मत का इक्ष्वाकु वंश ने विजय केतु फहराया।
दिव्य सुदर्शन मेरु नये निर्माणों का अंकुर है,
कोटि कोटिशः वन्दनीय जिनतीर्थ हस्तिनापुर है।

इसका अतिशय बाह्य रूप जो नेत्रों के सन्मुख है,
यह उससे भी अधिक गहन, रत्नाकर अन्तर्मुख है,
कर्म प्रकृतियों की निवृत्ति का, इसमें स-स्वादन है,
धर्म-वृत्तियों के पुष्पों का महक रहा उपवन है।
आत्म रूप दरशाने वाला यह आलोक मुकुट है,
कोटिकोटिशः वन्दनीय जिनतीर्थ हस्तिनापुर है।

卐——卐

सुमेरु वंदना

—कु० माधुरी शास्त्री

सब द्वीपों में पहला जम्बूद्वीप देखकर आएँगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएँगे॥
सोलह चैत्यालय से शोभित गिरि की छटा निराली है।
चारों वन के चार तरफ में सिद्ध मूर्तियाँ प्यारी हैं॥

इनके दर्शन वंदन करके अतिशय पुण्य कमाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे॥
शांति कुंथु अर तीर्थङ्कर के गर्भ जन्म तप हुए जहाँ।
उनकी पावन स्मृतियाँ चक्री पद का साम्राज्य जहाँ॥

पावापुरी सरवर जल मंदिर बाहुबली ढिग जाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे॥
तीन टोंक तीर्थंकर त्रय की शोभ रहीं जनमन हारी।
चौबीस जिनवर की टोंको पर पूजा भक्ति करें भारी॥

आदिनाथ का इक्षुरस आहार देखने जाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएगे॥
वीर जिनालय वीर प्रभू का शुभ संदेश सुनाता है।
भाक्तिक प्रभु के चरणों में जा इच्छित फल को पाता है॥

जिओ और जीने दो यह "माधुरी" वीर गुण गाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे॥

卐——卐

जिनवाणी स्तुति

—कु० माधुरी शास्त्री

हे सरस्वती माता, अज्ञान दूर कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो ॥

श्रुत का भण्डार भरा, तेरे ज्ञान की गंगा में।
जन मन शृंगार करा, गुरुवर मुनि चन्दा ने ॥
शृंगार सहित माता, श्रुतज्ञान पूर्ण कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो ॥हे सरस्वती० (१)

प्रभु वीर की वाणी सुन गणधर ने संवारा है।
मुनिगण उस पथ पर चल निजज्ञान सुधारा है ॥
निज ज्ञान किरण दाता, आलोक ज्ञान भर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो ॥हे सरस्वती० (२)

चन्दन चन्दा गंगातन शीतल कर सकते।
मुक्ता मालायें भी नहि मन को हर सकते ॥
मन शान्त सुरभि दाता, शारद माँ का वर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो ॥हे सरस्वती० (३)

卐——卐